तिमर हरण मंगल करण सूर्य भयो प्रकाश । सकल अन्धेरा मिट गया धरती धवल आकाश ।।

पंचांगदिवाकर

२०३४

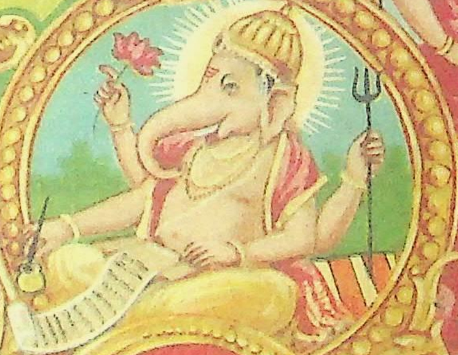
राजा सूर्य

मंत्री बुध





पं. देवी दयालु मशहूर आलम ज्यो.
पंचांगदिवाकर कर्ता लाहौर वाले





पं. शिव राम दत्त ज्यो.



पं. मोहन लाल ज्यो.

पं० देवी दयालु, मशहूर आलम ज्योतिषी लाहौर ने प्रकाशित किया पंचांग दर्जा अव्वल ।

सम्पादक व प्रकाशकः- पन्ना लाल शर्मा एम. ए.

मशहूर आलम पं० देवी दयालु ज्योतिषी ऐण्ड सन्ज़ (लाहौर वाले)

माई हीरां गेट, जालन्धर शहर.

मूल्य 3 रु. 75 पै.

पञ्चाँग दिवाकर कार्यालय माई हीरां गेट जालंधर शहर से प्राप्त होने वाली सर्वोपयोगी पुस्तकें

पञ्चांग दिवाकर कार्यालय के नियम

हमारे इस 'पंचांग दिवाकर' कार्यालय में ज्योतिष सम्बन्धी प्रत्येक कार्य शास्त्रानुसार सूक्ष्मरीति से सन्तोष जनक किए जाते हैं। जन्म पत्री वर्षफल, टेवा इत्यादि का पूरा २ विचार प्रमाणानुसार लिखा जाता है।

जन्मपत्री टेवा–जन्मपत्री, टेवा अथवा वर्षफल बनवाना हो तो अपने जन्म का समय, प्रविष्टे, मास, सम्वत वार और जन्म स्थान लिख कर भेजें। टेवा अर्थात् जन्म लग्नपत्र बनाने का पारिश्रमिक १५)रु० भारत से बाहर अन्य देशों में उत्पन्न हुए बालकों के शुद्ध जन्मेष्ट और जन्म लग्न पत्र बनाने की फीस ३१)रु०है। बड़ीजन्म पत्री बनाने की फीस २१)रु० से ५१)रु० तक ली जाती है। डाक खर्च अलग

वर्ष फल विचार

अपने आने वाले वार्षिक शुभाशुभ समाचार, विवाह, कारोबार, लाभ हानि, सुख, सन्तान, तबदीली, तरक्की इत्यादि प्रत्येक कार्य का विचार और वर्ष भर का मासिक फलादेश जानने के लिए आप अपना जन्म समय के अभाव में प्रश्न प्रविष्टे, सम्वतादि अथवा जन्म समय के अभाव में प्रश्न का समय व तारीख लिख कर भेजें, और अपने वर्षभर के आने वाले समाचार मगवाकर लाभ उठये।

वर्षफल बनवाने की फीस – १५)रु० तक।

प्रश्न मुहूर्तादि

जिनकी जन्म कुन्डली न हो अथवा जिनको जन्म समय ज्ञात न हो वह प्रश्न द्वारा अपने समाचार जानने के लिए प्रश्न का समय तारीख लिख कर भेजे एक प्रश्न की फीस१०)रु. है। विवाहादि मुहूर्त पर शास्त्रानुसार व्यवस्था बतलाने की फीस ११)रु. है। ग्रह मिलापक कुण्डली मिलान की फीस ७)रु. है।

ज्योतिष तथा कर्मकाण्ड सम्बन्धी अमूल्यपुस्तक

सरल ज्योतिष प्रवेशिका :–ज्योतिष जैसे दुर्गम व दुरुह विषय को इस पुस्तक में अत्यन्त सरल तथा वैज्ञानिक ढग से प्रस्तुत किया गया है। यद्यपि पुस्तके का विस्तार अधिक नहीं तथापि ज्योतिष के जातक, प्रश्न, जन्मपत्री निर्माण, वर्षफल एंव मुहूर्तादि अनेक मुख्य विषयों पर सारगर्भित तथा नवीन दृष्टिकोण से प्रकाश डाला गया है पुस्तक प्रकाशनार्थ प्रैस में है। मूल्य ५रु०। (ले. पन्नालाल शर्मा एम.ए.)

तन्वादि भाव प्रकाश :–जन्म कुण्डली के द्वादश भाव मानव जीवन के सम्पूर्ण पहलुओं पर विभिन्न रूप से प्रकाश डालते हैं। हमारे कार्यालय से तनु, धन, सहज, सुत, स्त्री व कर्मादि भावों पर अलग अलग पुस्तकें उपलब्ध हैं जिनमें प्रत्येक भाव का अत्यन्त सूक्ष्म, सरल तथा प्रामाणिक विवेचन किया गया है। प्रत्येक पुस्तक का मूल्य ४।।) रुपए।

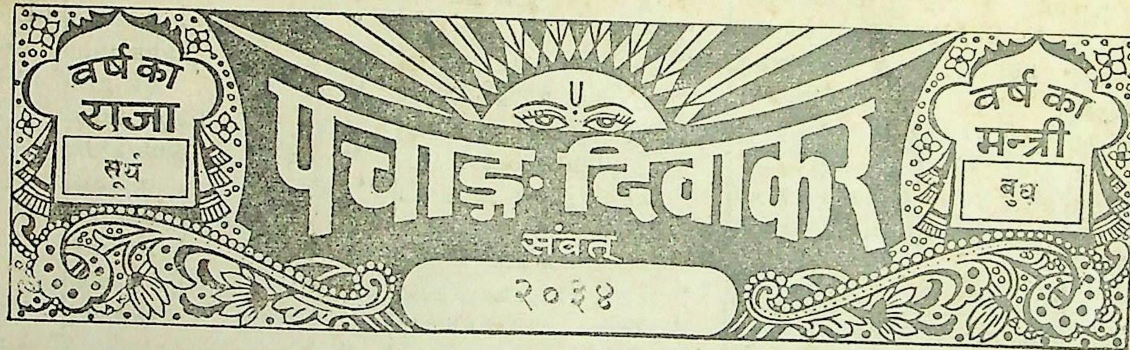
विवाह पद्धति (भा. टी.) :–यह विवाह पद्धति पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा व जम्मू कश्मीर के प्रदेशों में प्रचलित विवाह-प्रणालियों को सम्मुख रख कर तैयार की गई है। मूल्य केवल ५) रु०

श्रीदुर्गा सप्तशती (भा. टी.): हवन विधि सहित चिरकाल से अनुपलब्ध देवी भगवती पर यह पुस्तक अब प्राप्त है मू. ७)रु

नोट – प्रत्येक आर्डर के साथ अग्रिम राशि भेजें डाक व्यय पृथक लगेगा।

पन्ना लाल शर्मा एम. ए. (सम्पादक)
पंचांग दिवाकर (कार्यालय)
वितरक जनरल बुक डिपो जालन्धर शहर

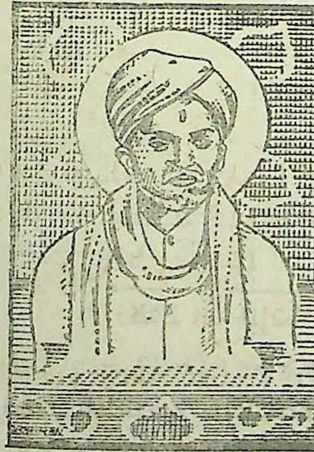
गर्वनमैंट आफ इण्डिया से हस्तजावता रजिस्टरी शुदा



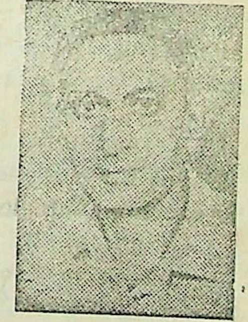
सूची

श्री गणेशाय नमः   प० देवी दयालु मशहूर आलम ज्योतिषी   श्रीसरस्वत्यै नमः









स्मृति में स्वर्गीय पिता
पं० चूनी लाल ज्यो.

पं. देवी दयालु मशहूर आलम ज्योतिषी पंचाँग दिवाकर कर्ता लाहौर वाले

(१९७७-७८) (के पद्चिन्हों पर)

प्रकाशक तथा गणितकर्त्ता—पं. पन्नालाल ज्योतिषी एम.ए. (संस्कृत व हिन्दी) सुपुत्र पं० चूनीलाल ज्यो० (प्रपौत्र) पं० देवीदयालु ज्यो० लाहौर
मुख्य वितरक—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर (पंजाब)

धोखे से बचें :—असली "पचाँग" खरीदते समय प० पन्नालाल शर्मा ज्यो० एम.ए. का नाम तथा प० चूनी लाल जी का फोटो अवश्य देख लें।

सम्वत् २०३४ में पर्व, व्रत, त्योहार व जयन्तियां इत्यादि

नोट *इन चिन्हों वाले त्योहारों में केन्द्रीय व प्रान्तीय छुट्टियां होगी

नवरात्रे शुरू	२० मार्च
गणगौरी व्रत	२२ ,,
स्कन्द षष्ठी	२५ ,,
दुर्गाष्टमी	२८ ,,
श्रीराम नवमी *	२९ ,,
कामदा ११ व्रत	३१ ,,
श्री अनंग १३	२ अप्रैल
महावीर जयंती*	२ ,,
व्रत गणेश ४	७ ,,
गुड फ्राईडे*	८ ,,
मे० वैशाखी*	१३ ,,
वरूथनी ११	१४ ,,
वल्लभाचार्य जयंती	१४ ,,
सोमवती अमावस	१८ ,,
सूर्य ग्रहण	१८ ,,
शिवाजी जयती	२० ,,
अक्षया ३	२१ ,,
परशुराम जयंती	२१ ,,
शंकराचार्य जयंती	२३ ,,
रामानुजाचार्य जयंती	२४ ,,
गंगा उत्पत्ति	२५ ,,
मोहिनी ११ व्रत	३० ,,
नृसिंह चौदश	२ मई
बुद्ध पूर्णिमा*	३ ,,
नारद जयंती	४ ,,
टैगोर जयंती	७ ,,
भद्रकाली ११	१३ ,,
रम्भा ३	२० ,,
प्रताप जयंती	२१ ,,
गंगा दशहरा	२८ ,,
निर्जला ११	२९ ,,
वटसाविन्नी व्रत	१ जून
योगिनी ११ व्रत	१२ जून
रथ यात्रा पुरी	१८ ,,

सूर्य दक्षिणायन शुरु	२१जून
चातुर्मास व्रत शु.	२७ ,,
गुरु पूर्णिमा	१ जुलाई
व्यास पूजा	१ ,,
जन्म हजरत अली*	१ ,,
हरियालीअमावस	१६ ,,
मलमास शुरु	१७ ,,
तिलक जयंती	१ अगस्त
मलमास समाप्त	१४ ,,
स्वतन्त्रता दिवस *	१५ ,,
मधुस्त्रवा तीज	१७ ,,
नाग पंचमी	१९ ,,
तुलसी जयंती	२१ ,,
दूर्वाष्टमी	२२ ,,
रक्षा बन्धन*	२८ ,,
ऋषि तर्पण	२८ ,,
कज्जली ३	३१ ,,
बहुला चतुर्थी (संकट चौथ)	१ सितम्बर
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी*	६ ,,
गुग्गा नवमी	७ ,,
हरतालिका ३	१६ ,,
पत्थर चौथ	१६ ,,
ईदुलफितर	१६ ,,
ऋषि पंचमी	१७ ,,
सूर्य षष्ठी	१८ ,,
महालक्ष्मी व्रत आरम्भ	१९ सित.
राधाष्टमी	२० ,,
वामन जयंती	२४ ,,
अनन्त चौदश	२६ ,,
श्राद्ध शुरू	२८ ,,
गांधी जयंती*	२ अक्तू.
महालक्ष्मी व्रत समा.	५ ,,
सर्वपितृश्राद्ध	१२ ,,

शरद नवरात्रारंभ	१३ अक्तू.
दुर्गाष्टमी	१९ ,,
दशहरा*	२१ ,,
भरत मिलाप	२२ ,,
शरद पूर्णिमा	२६ ,,
ज. दि. वाल्मीकि*	२६ ,,
व्रत करवा ४	३० ,,
अहोई ८	४ नवबंर
गोवत्स द्वादशी	८ ,,
धन १३	९ ,,
नरक चतुर्दशी	१० ,,
दीपावली*	१० ,,
हनुमान जयंती	१० ,,
गोवर्धन पूजा	११ ,,
भाई दूज	१२ ,,
विश्वकर्मा पूजन	१२ ,,
नेहरू जयती *	१४ ,,
कार्तिकेय पूजन	१६ ,,
शहीदी लाजपत राय	१७ ,,
गोपाष्टमी	१८ ,,
अक्षय नवमी	१९ ,,
चातुर्मास व्रत समाप्त	२१ ,,
तुलसी विवाह	२१ ,,
भीष्मपंचक शुरु	२१ ,,
ईदुलजुबा (बकरीद) *	२२ ,,
जन्म दि. वीर वैरागी	२३ ,,
बैकुण्ठ चौदश	२४ ,,
गुरू नानक जयंती*	२५ ,,
मेला पुष्कर (रामतीर्थ	२५ ,,
काल भैरव अष्टमी	३ दिसम्बर
शहीदी गुरु तेग बहादुर	१४ ,,
गीता जयंती	२१ ,,
मुहर्रम*	२१ ,,
सूर्य उत्तरायणे	२२ ,,

दत्तात्रेय जयंती	२५ ,,
क्रिसिमस डे	२५ ,,
लोहड़ी*	१३ जनवरी
मकर संक्रांति	१४ ,,
गोबिंद सिंह जयंती*	१५ ,,
ज.दि. नेताजी	२३ ,,
गणतन्त्र दिवस*	२६ ,,
गणेश संकट चौथ	२७ ,,
ज. दि. लाजपतराय	२८ ,,
ज. दि. विवेकानन्द	३१ ,,
मौनी अमावस	७ फर
तिल चतुर्थी	१० ,,
बसन्त पंचमी	१२ ,,
भीष्माष्टमी	१५ ,,
ईदे मिलाद*	२० ,,
गुरु रविदास जयं.*	२२ ,,
माघी पूर्णिमा*	२२ ,,
महाशिव रात्रि व्रत	७ मार्च
ज. रामकृष्ण परमहंस	१० ,,
होलाष्टक शुरू	१७ ,,
सावतिल्ला	१२ मार्च
होलिका दहन* (होली)	२४ ,,
चन्द्र ग्रहण	२४ ,,

जम्मू व कश्मीर के मुख्य मेले

मेला बाहुफोर्ट	२८ मार्च
,, क्षीर भवानी	२६ मई
जन्म दि गुरु हरगोबिंद	२ जून
मे० शरीक भवानी	२४ जून.
शहीदी दिन	१३ जुलाई
मे० रामबण (जम्मू)	१६ अग.
यात्रा श्रीअमरनाथ	२८ ,,
कैलाश यात्रा	११/१२ सित
मेला पट्ट (भद्रवाह)	१७/१९ ,,
आशापतियात्रा(भद्रवाह)	११,१२अक.
मे० कृष्णाष्टमी(कठुआ)	६ सित
मे० पुरमंडल	९-१० दिसं

पंजाब व हरियाणा के मेले

मेला मनसा देवी	२८ मार्च
,, वैशाखी	१३ अप्रैल
,, पिंजौर (हर)	१८ ,,
,, भद्रकाली(शे पुरा)	१३ मई
,, जोड़ (पंजाब)	२२ मई
,, गु.पूर्णिमा(गु.पुर)	१ जुलाई
,, कृष्ण जन्मष्टमी	६ सित.
,, सुथरेशाह (देहली)	१३ ,,
,, वामन जयंती अम्बाला	२४ ,,
,, बावा सोढल(जाल)	२६ ,,
,, छपार (अहमदगढ़)	२६ ,,
,, गोइन्दवाल	२७ ,,
,, बाल मेला	१४ नवम्बर
,, वीर वैरागी(नको.)	२३ नवं
,, जोड़ (फतेहगढ़)	२६-२८ दिस.
,, हरवल्लभसंगीतजालधर	२८ ३०
,, गुरु महाराज गु.पुर	१४ जन
,, श्रीनारायणजंयपिडोरी	२८मार्च
,, गु. राम राय(देहारादून)	२९
होला आनन्दपुर साहब	२५ मार्च
शीतला पूजन	३१ ,,
,, पिहोवा तीर्थ	६ अप्रैल

नकलों से बचें !!

भारत के समस्त पब्लिशर्ज, पुस्तक विक्रेताओं तथा पाठक बन्धुओ

सावधान ! सावधान !

आपका हमारी फर्म के साथ बहुत पुराना सम्बन्ध है और आप मेरी मुफीद आलम जन्त्री व पंचाग को जिस श्रद्धा और विश्वास के साथ बेचते आए हैं —उसके हम हृदय से अभारी हैं १९७७ (२०३४) की जन्त्री व पंचाँग दिल्ली की एक नामालूम फर्म ने मेरी गत वर्ष की पंचाँग संवत् २०३३ के अनेक पृष्ठों की नकल के साथ साथ मेरे पूज्य स्वर्गीय पं० चूनी लाल जी का नाम व फोटो देकर—हमारी प्रतिष्ठा को हानि और ग्राहकों को गुमराह करके उनके विश्वास को ठेस पहुँचा रहे है। मैंने इस सम्बन्ध में उनको नोटिस दे दिया है। चूंकि आपके हमारे सम्बन्ध अच्छे हैं अत एव जन्त्री—पंचाँग खरीदते समय ध्यान रखें कि कहीं आप नकली पंचाँग तो नहीं खरीद रहें —अन्यथा बाद में आपको पछताना पड़े।

पं० देवी दयाल ज्यो० (लाहौर) के नाम से छपने वाली उक्त नकली पंचाँग में आपको गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी बहुत सी गम्भीर व भ्रामक अशुद्धियां पाएंगे जैसे :—

स्थानीय सुर्योदयास्त, चन्द्रोदयास्त, चन्द्रादिग्रह स्पष्ट, ग्रहण निर्णय, एवं संक्रांति सम्बन्धी अनेक नगण्य दोष जिनको कोई **साधारण ज्योतिषी** भी नजर अन्दाज (दृष्टिविगत) नहीं कर सकता।

मनुष्य यद्यपि गलतियों का पुतला है किन्तु ज्योतिष जैसे आर्ष, गहन व सूक्ष्म शास्त्र के साथ मनमाना खिलवाड़ करना और भोले, भाले सामान्य पाठकों को भ्रमजाल में डालना—किसी तरह भी शोभनीय नहीं है। किसी प्रचलित पंचाँग के अनेकानेक पृष्ठों की अक्षरशः अथवा काँटछाँट करके नकल कर लेना यद्यपि आसान तो है किन्तु साथ ही प्रकाशक और सम्पादक महोदय की मानसिक दुर्बलता का प्रत्यक्ष प्रमाण भी है। ....विद्वान् पाठक गण व विक्रेताओं से यही विनम्र निवेदन है कि वे पं० देवीदयाल ज्यो० (लाहौर) वालों की शुद्ध प्रमाणिक एवं सूक्ष्म रीति से तैयार की हुई पंचाँग व जंत्री खरीदने से पूर्व गणितकर्ता पं० पन्ना लाल ज्यो० एम० ए० सुपुत्र स्वार्गीय पं० चूनी लाल ज्यो० का नाम मुख्य पृष्ठ पर अवश्य देख लिया करें। सही माल न मिलने पर सीधे हमारे साथ पत्र व्यवहार करें। पृष्ठ १६ पर भी देखें।

धन्यवाद,

शुभ चिन्तक

पं० पन्ना लाल ज्यो० एम० ए० (संस्कृत हिन्दी)

माई हीरां गेट, जालन्धर शहर।

मेला बाला सुन्दरी (जि० सिरमौर)	२० मार्च से ४ अप्रै
,, ललवाड़ (सुन्दरनगर)	२२ मार्च से २८ मार्च
,, नयना देवी (विलासपुर)	२० मार्च से २८ मार्च
,, बाबा बालकनाथ (जि. हमीरपुर)	१४मार्चसे१२अप्रै
,, कनिहारा (धर्मशाला.)	,, ,, ,,
,, साहब सिंह (ऊना)	,, ,, ,,
,, दुर्गाष्टमी (कांगड़ा)	२८ मार्च
,, रिवाल्सर (जि. मंडी)	१३ अप्रैल
,, क्लेश्वर महादेव (,,)	१३ ,,
,, मारकण्डा	१२ से १५ ,,
,, बिशु (विभिन्न भागों में)	१३ अप्रै से १३ मई
,, रोहड़ू (महासू)	३१मार्च १अप्रैल
,, राजगढ़ (सि. मौर)	१३-१६ ,,
,, लाहौल (मंडी)	२७ मार्च
,, माहुनाग (करसोग)	२२-२३ अप्रैल
,, हरि देवी घुमारवीं)	२९-३० ,,
,, श्यामाकाली (सरकाघाट)	१० मई
,, नारकण्डा (कुमार सेन)	८।१० ,,
,, शीतला देवी (सु. नगर)	१९ ,,
,, पीपलू (हमीर पुर)	२९ मई
,, सोलन (Solan)	३१ से१ जून
मेला त्रिभोणी (सिरमौर)१६,२६	जून ३ से१ जुलाई
,, मिंजर (चम्बा)	४ से ८ जुलाई
,, नागनी (नूरपुर)	१६ जुलाई
,, चिन्तपूर्णी (जि. कांगड़ा)	२२ अगस्त
,, नैना देवी	२२ ,,
,, गुग्गा (विलासपुर)	७ सितम्बर
,, वामन १२ (सिरमौर)	२४ सितम्बर
,, चामुण्डा (कांगड़ा)	१३ से २० अक्तू
,, रामलीला (नदौन)	१३-२१ अक्त
,, दशहरा (विभिन्न भागो में)	२१ अक्तू.
,, ,, (कुल्लू)	२१—२६,,
,, तारा देवी (शिमला)	१९अक्तू.
,, लावी (तै. राम पुर व चिच्चौट)	२८अक्तूसे ८नवं
,, काली बाड़ी (शिमला)	१०-११ नव
,, रेणुका (सिरमौर)	२०-२२ नवंबर
,, बाबा रूद्रानन्द (ऊना)	२५ ,,
,, जोगी पांगा (,,)	२५ ,,
,, बसन्त पंचमी (बिलासपुर)	२२ फर १९७८
,, स्वर्गाश्रम (नूरपुर)	८ मार्च
,, शिवरात्रि (जि.मण्डी)	८ मार्च
,, बैजनाथ (जि. कांगड़ा)	६ ,,
,, बाबा बडभाग सिंह (ऊना)	२१/२३ ,,
,, होली (पांओंटा साहब)	२५ ,,
,, सुजानपुर टिहरी (हमीरपुर)	२४—२८ ,,

गुरु पर्व बाबत संवत २०३४

गुरु	जन्म तारीख	बलिदान दिवस
गुरु नानक देव	२५ नवम्बर	७ अक्तूबर
गुरु अंगद देव	१९ अप्रैल	२३ मार्च
गुरु अमर दास	२ मई	२७ सितम्बर
गुरु राम दास	२९ अक्तूबर	१६ ,,
गुरु अर्जुन देव	१० अप्रैल	२२ मई
गुरु हरगोबिन्द	२ जून	२५ मार्च
गुरु हरि राय	२० फरवरी (७८)	५ नवम्बर
गुरु हर किशन	९ जुलाई	३ अप्रैल
गुरु तेग बहादुर	८ अप्रैल	१५ दिसम्बर
गुरु गोबिन्द सिंह	१५ जनवरी७८	१५ नवम्बर
गुरु ग्रंथ साहिब का प्रथम प्रकाश		२४ सितम्बर

जैन पर्व और त्योहार २०३४

आयंविल ओलीं तप शुरू	२६ मार्च
श्री महावीर जयन्ती	२ अप्रैल
आयंविल ओली समाप्त	४ अप्रैल
वर्षी तप का पारणा	२१ ,,
चौमासा प्रारम्भ	३० जून
पर्युषणा पर्वारम्भ	९ सितम्बर
सम्वत्सरी पर्व	१७ सितम्बर
आयंविल ओली शुरू (सिद्ध चक्र)	१९ अक्त
मेला श्री चक्रेश्वरी देवी सरहिन्द	२५-२६ अक्तू
आयंविल ओली समा०	२६ अक्तू
महावीर निर्वाण	१० नवम्बर
वीर संम्वत २५०२ शुरु	१२ नवम्बर
ऋतु पंचमी	१५ नवम्बर
चौमासा सम्पूर्ण	२४ नवम्बर
मौन एकादशी	२१ दिसम्बर
मेरु त्योदशी	५ फरवरी १९७८
जैन तीर्थ कांगड़ा	२२-२४ मार्च
वर्षीतप शुरू	१ अप्रैल

मुस्लिम त्योहार २०३४

ग्यारवीं शरीफ	१ अप्रैल
ज. दि. हजरत अली	१ जुलाई
शब्बे मिराज	१५ जुलाई
शब्बे वारात	२ अगस्त
रमदान	१७ ,,
शहादत हजरत अली	६ सितम्बर
जुमतुलविदा	९ सितम्बर
शब्बे कदर	१२ ,,
ईदुल फितर	१६ ,,
ईदुल जुहा (बकरीद)	२२ नवम्बर
मुहर्रम	२१ दिसम्बर
चेहलम	२९ जनरवी (७८)
शहा. ईमाम हसन	७ फरवरी
आखिरी चहार	८ ,,
ईदे मिलाद	२० ,,
ईदे मौलाद	२५ ,,
ग्यारवीं शरीफ	२१ मार्च

नोट :—जो सज्जन किसी अन्य मेले अथवा छुट्टी को सम्मिलित करवाना चाहे, वह उसके सम्बन्ध में पत्र व्यवहार करें।

विंशोतरी मत से लाभ-व्यय चक्र संवत्-२०३४

जिस राशि का वर्ष मे लाभ-खर्च देखना हो, उस राशि के नीचे लाभ-खर्च के अंकों को जोड़कर १ कम कर दो और फिर ८ से भाग दो। यदि शेष १ बचे तो धन लाभ, २ बचें सुख प्राप्ति, ३ बचे तो क्लेश रहे, ४ बचें तो रोगोत्पत्ति ५ बचें तो झूठारोप, ६ बचें तो सम्मान, ७ से विजय प्राप्ति और ८ एवं शून्य बचने से तद् वर्ष में हानि रहती है।

लाभ—व्यय चक्र (विंशोत्तरी मतेन)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	१४	८	१४	८	११	१४	८	१४	११	५	५	११
खर्च	११	५	२	१४	११	२	५	११	२	५	५	२

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का वर्ष फल श्रवण तथा महात्म्य २०३४

श्रीं स्वस्ति श्री गणेशाय नमः। अचिन्त्याव्यक्त-रूपाय निर्गुणाय गुणात्मने समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥१॥ गणनाथ नमस्कृत्य प्रणाम्यहं स्वपूर्वजान्। चन्द्रमिश्रं तथा रामजीदरूम् सुत बृद्धम् ॥२॥ तत् सूनं स्वप्रपितामहं परम पूज्य देवीदयालपण्डित स्मरन् भक्त्या लोकहितार्थाय सुखसम्पत्ति हेतवे। प्रमोदनामाब्दे विक्रमे संवत्सरे शुभे पन्ना लाल शर्मा एम. ए. ज्यो. सुपुत्र पं. चूनीलाल (पौत्र पं देवीदयाल मशहूर आलम ज्यो) कुर्वे पंचांग दिवाकरम्। राजा सूर्यः, मंत्री बुधः ॥

चैत्र शुक्ल सम्वत्सर को नूतन सम्वत्सर प्रारम्भ होता है, उस दिन घर पर ध्वज लगावे, तोरणादि से गृह सुशोभित करें, मंगलस्नान करें। देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा करें। स्त्रियां, शिशु आदि वस्त्र आभूषण धारण कर उत्सव मनावें। ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे संवत्सर का फल श्रवण करे। पंचांग का दान करे— इसे घर में रखने से वर्ष भर धन-धान्य व सुख की वृद्धि होती है।

प्रातःकाल में कटुनीम के कोमल पत्ते और पुष्प लेकर उस में काली मिर्च, हींग नमक (सेंधा) अजवायन जीरा और खांड मिलाकर चूर्ण बनावें, कुछ इमली भी मिलावें और उसका सेवन करें। इसके प्रयोग से अनेक रोगों की शान्ति होती है और वर्ष पर्यन्त ज्वरादि रोग नहीं होते है।

पंचांगस्थ गणेश और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को यथाशक्ति दानादि से प्रसन्न करें, मिष्टान्नादि भोजन करावें.कथादि श्रवणकर सम्पूर्ण दिन आनन्द से व्यतीत करें। उस दिन शुभविचार रखें ईश्वर की भक्ति और कीर्तन आदि करें।

★परायण मनुष्यों कोनिषिद्ध कर्मों को त्याग कर पाठ-पूजन, दान-पुण्यादि कर्मों का सम्पादन करना चाहिए।

ग्रहण का फल—मेष, सिंह, वृश्चिक व मीन राशि वालों को ग्रहण-फल शुभ एवं लाभदायक रहेगा जबकि वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धन, मकर, तथा कुम्भ राशि वालों को चिन्ता प्रद एवं हानिकारक रहेगा।

सम्वत २०३४ में ग्रहण विचार

सम्वत्-२०३४ में पृथ्वी पर (कुल चार ग्रहण लगेंगे) ४ अप्रैल (खण्ड चन्द्र-ग्रहण), १८ अप्रैल (कंकण सूर्य ग्रहण), १२ अक्तूबर (पूर्ण-सूर्य ग्रहण), २४ मार्च (७८) चन्द्र-ग्रहण ॥ इनमें से केवल दो ग्रहण ही भारत में दिखलाई देंगे।

(१) कंकण सूर्य ग्रहण (Annular) =यह ग्रहण १८ अप्रैल सोमवार भारतीय समयानुसार दोपहर १ बजकर ३ मिनट पर शुरू होकर सायं ६ बजकर ५९ मिनट पर समाप्त होगा। स्पर्श काल=दोपहर १ बजकर ३ मिनट

मध्य=४ बजकर १ मिनट अवधि=५ घ०-५६ मि०

मोक्ष=६ बजकर ५९ मिनट

ग्रहण का सूतक— प्रातः ४ बजकर १ मिनट पर आरम्भ होगा। इस काल में धर्म-परायण मनुष्य छल-कपट, नवीन योजना, व्यर्थ-यात्रा, भोजन मैथुनादि कार्य विशेष-रूपेण त्याग कर भजन, पाठ-पूजन, मन्त्र सिद्धि, स्नानदानादि शुभ कार्यों का सम्पादन करें। ग्रहणानन्तरे स्नानादि करे और बिम्ब दर्शन करके भोजनादि कर्म कर सकते हैं। बाल, वृद्ध और रोगियों को क्षम्य है।

ग्रहण का फल—यह ग्रहण सोमवार अश्विनी नक्षत्र एवं मेष के चन्द्रमा कालीन लगेगा। प्रजा में सौख्य की वृद्धि होगी। चावल, चांदी, तिल, तैल, शहद, कपड़ा, मूग, मसूर, पशुचारा व धातुओं में घटा बढ़ी होकर तेजी आवेगी। व्यापारी वर्ग में परेशानी बढ़ेगी। मेष, वृष, कन्या, मकर व मीन राशि वालों को ग्रहण-फल शुभ रहेगा जबकि अन्य राशि वालों को मध्यम।

भारत के निम्न लिखित मुख्य शहरों में सूर्यास्त कालीन ग्रहण दिखाई देगा

नाम शहर	घंटे मिंट	नाम शहर	घंटे मिंट	नाम शहर	घंटे मिंट
अलाहाबाद	१७।४३	भोपाल	१७।२०	भुवनेश्वर	१७।१७
अलीगढ	१७।४२	बम्बई	१७।२३	बंगलौर	१६।५३
अहमदाबाद	१७।१३	जबलपुर	१७।३४	कलकत्ता	१७।२९
अलवर	१७ ४६	जोधपुर	१७।१४	हैदराबाद	१७।०२
अजमेर	१७।४५	नागपुर	१६।५३	मद्रास	१६ ५६
आगरा	१७।४७	पूना	१७।००	त्रिवेन्द्रम	१६।४४
वाराणसी	१७।४३	उज्जैन	१७।१८	लखनऊ	१७।४८
मथुरा	१७।४५	रिवाड़ी	१७।३५	कानपुर	१७।४९
बीकानेर	१७।४०	पटना	१७।५०	कोलम्बो	१६ ४५

(२) खण्ड-ग्रास चन्द्रग्रहण=यह ग्रहण फाल्गुण सुदि पूर्णिमा तदनुसार २४ मार्च १९७८ शुक्रवार को सायं ८ बजकर २ मिनट पर शुरू होकर रात्रि ११बजकर३९मिनट पर समाप्त होगा। भारत के विभिन्न भागों में दिखाई देगा।

ग्रहण का सूतक—दोपहर ११ बजकर २मिनट पर शुरू हो जाएगा धर्म★

अथ श्री शुभसम्वत्सरेऽस्मिन् विक्रमादित्यराज्यात् २०३४, शकाब्द: १८९९, सन् ईसवी १९७७-७८, सन् फसली १३७४-७५, सन् हिजरी १३९७-९८, श्री कृष्ण जन्म सम्वत् ५२१३, कलि सम्वत्-५०७८, कल्पादि से गतवर्ष १९७२९४९०७८, सृष्टि गताब्द १९५५८८५०७८, श्री जैन निर्वाण सम्वत-२५०३-०४, श्री बुद्ध सम्वत् २६०१-०२ प्रारम्भ हुआ है। प्रभवादि सम्वत्सरों के मध्य प्रमोद नाम का सम्वत्सर आरम्भ होगा। मेषार्क समय से पूर्व भुक्त-मासादि ६।२५।५५।३२ एवं भोग्य-मासादि ५।४।४।२८ तदनुसार ११ नवम्बर (२७ कार्तिक) १९७३ वीरवार रात्रि ११ बजकर २५ मिनट पर कर्क लग्न में प्रवेश होगा। राजा सूर्य। मन्त्री बुध: ॥

प्रमोद नामक सवंत्सर: फलम्

प्रमोदाब्धे प्रमोदन्ते राजानो निखिला जना:।

वीतरोगा वीतभया इतिवैरिविर्वजिता: ॥

प्रमोद नामक संवत्सर आने पर सर्वत्र सुख की वृद्धि होती है तथा राजा लोग व समस्त प्रजा रोग, भय एवं शत्रुओं से रहित होती हैं। पहाड़ी स्थानों में नुकसान व कहीं छत्र-भग होगा। चैत्र व वैशाख में अनाज महंगा, ज्येष्ठ में रोग, आषाढ़, श्रावण व भादों में वर्षा कम, आश्विन में वर्षा अच्छी हो। कार्तिक से फाल्गुण तक तीव्र वायु अनाजादि महंगे हों। ऊनी, रेशमी आदि कपड़ों के भाव तेज। व्यापारियों को परेशानी रहेगी।

(१) **राजा सूर्य का फल** —सूर्ये नृपे स्वल्पजलाश्चमेघा: स्वल्पं पयो गोषु जनेषु पीड़ा। स्वल्पं सुधान्यं फलमल्प वृक्षाश्चौराग्निबाधा निधनं नृपाणाम् ॥ वर्ष का राजा सूर्य होने पर वर्षा कम होती है। वृक्षों पर फल कम लगेंगे। गौ आदि पशु दूध कम दें। धान्यादि की फसल भी कम रहेगी लोगों को चोरों अग्नि आदि से कष्ट एवं कहीं राजाओं का निधन होता है।

(२) **मन्त्री बुध का फल**—शशिसुते शुभमन्त्रि समागते स्वपतिना रमते मदनक्रियाम्। बहुधनं बहुवारि समन्वितं यवमसूर चणान्न महर्घता।

मन्त्री बुध होने पर स्त्रियां अपने पतियों के साथ भोग विलासादि कार्यों में अधिक प्रवृत्त रहें अर्थात् काम-वासना अधिक बढ़ेगी। धन-धान्य का विस्तार अधिक रहेगा। जौ, मसूर तथा चनों के भावों में तेज़ी रहेगी।

(३) **सस्येश शनि का फल**—वर्ष में सस्येश शनि होने पर लोग राज-भय (शासन) से पीड़ित रहें और रोगादि का भय हो। जौ, गेहूं धान्य आदि की फसलों को हानि पहुंचे तथा मनुष्य कटु (खोटे) वाद-विवाद में लगे रहें।

(४) **धान्येश गुरु का फल**—सभी प्रदेशों में जौ, अनाज चावल आदि वस्तुओं की फसल अच्छी होती है। ब्राह्मण यज्ञादि शुभकार्य करने वाले होते हैं।

(५) **मेघेश भौम का फल**—वर्ष में भौम मेघपति होने पर पृथ्वी पर मनुष्य आचार-विचार विहीन तथा वेदों द्वारा प्रशस्त शुभ कार्य करने से विमुख हो जाते हैं। खण्ड वृष्टि हो—अर्थात् कभी बहुत अधिक वर्षा होती है तो कभी बहुत कम

(६) **रसेश सूर्य का फल**—मेघ अल्प वृष्टि करें। वस्त्र, घी, तैलादि पदार्थ अधिक होंगे। शासक लोग सन्तुष्ट रहेंगे।

७) **नीरसेश शुक्र का फल**—धातु और व्यापार का स्वामी शुक्र होने पर कपूर, अगरादि सुगन्धित पदार्थ, सोना, मोती और कपड़ों के मूल्यों में वृद्धि होती है।

(८) **फलेश भौम का फल**—वृक्ष फल और फूलों से भरपूर हों। देश के लोग भयान्वित हों। राजा युद्धोन्मुख होंगे।

(९) **धनेश शुक्र का फल**—सब लोगों को समान रूप से धन मिले। क्रय-विक्रय (व्यापार) करने वाले समान रूप से सुख (लाभ) प्राप्त करेंगे-(अर्थात् छोटे व्योपारी भी लाभ उठाएंगे) शासक लोग प्रजा का पालन करने में तत्पर रहेंगे।

(१०) **दुर्गेश भौम का फल**—सेना का स्वामी मंगल होने पर लोग वियोगादि विविध दुखों से पीड़ित रहेंगे। वस्तुओं को क्रय-विक्रय करने में भयतीत होंगे और विशेष रूपेण कहीं भी फल (लाभ) न प्राप्त कर सकेंगे।

रोहिणी का निवास— समुद्र तट पर तथा समय (सम्वत्सर) का वास माली के घर में हुआ है। फलत: सर्व प्रदेशों में प्रचुर (भरपूर) वर्षा होती है। समय (सम्वत्सर) का वाहन अश्व (घोड़ा) है और शनि की दृष्टि दक्षिण की ओर है। फल—पूर्वी-दक्षिणी भागों एवं देशों में राजनैतिक अशान्ति, रोग, विद्रोह छत्र-भंग एवं दुर्घटना भूकम्पादि प्रकृति प्रकोप से हानि हो। सोमवती अमावस्याएं दो हैं :—वैशाख और पौष में।

वर्षादि विश्वे—वर्षा विश्वे १७, धान्य ११, तृण ७, समय (संवत) ५, तिनके ७, सत्यं ॥, धर्म १॥, पाप १८, शीत १७, तेज ५, वायु १३ तिथिक्षय १९, तिथिवृद्धि १३॥ श्रावण मास में अधिमास (मलमास) हुआ है।

आर्द्रा प्रवेश फल—सूर्य, आषाढ़ शु० चतुर्थी मंगलवार तदनुसार २१ जून को ४४।१८ घट्यादि इष्ट पर कुम्भ लग्न में आर्द्रा नक्षत्र में प्रविष्ट होगा। फल-उत्तर-पश्चिम देशों में राजनैतिक उपद्रव व युद्ध-विग्रह के समाचार मिलेंगे। पूर्व-पश्चिमी प्रदेशों में व्यापक वर्षा के योग हैं।

वर्षनाम कार्तिक का फल—लोग पापबुद्धि होकर नीच कर्मों में प्रवृत्त होते हैं। देवता लोग प्रार्थना से प्रसन्न नहीं होते है। तस्करों से राज्य को हानि पहुंचेगी।

शनि का सिंह राशि-प्रवेश सम्वत्—२०३४

इस वर्ष भाद्रपद वदि नवमी, आर्द्रा नक्षत्र एवं मिथुन के चन्द्रमा कालीन तदनुसार दिनांक ७ सितम्बर बुधवार ई० १९७७ को शनि सिंह राशि में प्रवेश करेंगे।

साढ़सति विचार—शनि जिनकी राशि से पहले, दूसरे और बारहवें भाव पर राशि-परिवर्तन करता है, उनको साढ़सति के कुटिल कुचक्र से गुजरना पड़ता है। ७ सितम्बर से कर्क, सिंह व कन्या राशि वालों को साढ़सति लगेगी। **कर्क राशि** वालों को साढ़सति पैरों पर (उतरती हुई) लगी है। उनको अढ़ाई वर्ष की अवधि में विशेषकर व्यवसाय एवं धन सम्बन्धी हानि, व्यर्थ-यात्रा अथवा कोई अप्रिय दुर्घटना, **सिंह राशि** वालों को मध्य के अढ़ाई वर्षों में गुप्त शत्रु, शरीर कष्ट, पेट-वायु विकार, कठोर परिश्रम करने पर भी असफलता, स्त्री कष्ट रहे। **कन्या-राशि** वालों को साढ़सति सिर पर चढ़ती हुई लगी है। अतः आरम्भ के अढ़ाई वर्षों में परिवार के प्रियजन का वियोग, आंखों को कष्ट, धन व मान हानि तथा रोजगार सम्बन्धी विशेष चिंता रहेगी। **मिथुन राशि** वालों को साढ़सति समाप्त है।

ढ्या विचार—जन्म अथवा प्रसिद्ध नाम राशि से चौथी या आठवीं राशि में शनि के आने पर अढ़ाई वर्ष पर्यन्त अढैया का विचार किया जाता है। इस अवधि में अढैया की राशि वालों को राजभय, व्यर्थ-यात्रा, झूठापवाद, निकट सम्बन्धी से झगड़ा, सन्तान चिन्ता शरीर कष्टादि का भय रहता है। इस वर्ष में **वृष राशि** तथा **मकर राशि** वालों को अढैया की दशा चलेगी।

मेष, कर्क, सिंह व वृश्चिक राशि वालों को शनि बहुधा एवं अनिष्ट अशुभ फल दायक होता है। मिथुन, कन्या, धन और मकर राशि वालों को मध्यमफली अर्थात्-कभी साधारण शुभ तथा कभी साधारण अरिष्टकर होता है। तुला, कुम्भ, मकर व वृष राशि वालों को क्रमशः अत्यन्त लाभप्रद फलदायक होता है। इसके अतिरिक्त जन्मकुण्डली में शनि की स्थिति, वक्रत्वादि गति, अंश दशादि का विचार अवश्य कर लेना चाहिए।

जीवन में शनि की साढ़सति प्रायः ३ बार या किसी-किसी को ४ बार आती है। पहली बार तो साधारण फल दिखलाती है।

दूसरी बार जीवन में विकट परिस्थितियों द्वारा महान् परिवर्तन लाती है। तीसरी बार तो ज़िंदगी के अस्तित्व को ही खतरे में डाल देती है। चौथी बार इसके कुचक्र से कोई विरला भाग्यवान् ही बच पाता है।

शनि के अनिष्ट फल—की शान्ति के लिए शनि के स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। हनुमान बाहुक या हनुमान चालीसा का पाठ करना शुभ रहता है इसके अतिरिक्त प्रत्येक कृष्ण-पक्षीय शनिवार अथवा अपने जन्म दिवस को काले माष (६) और चने, लौह बर्तन, काला कपड़ा, तिल तैल युक्त भोजन का दक्षिणा सहित दान तथा स्वयं उपयोग करना चाहिए। छाया-दान व नीलम धारण करना भी अरिष्ट निवारक व शुभ होता है। **शनैश्चर-यन्त्र** अथवा **शनि साढ़ेसति यन्त्र** पास रखने से भी अनेक अरिष्ट-दोषों की शान्ति होती है।

नोट :—हमारे कार्यालय में शुभ मुहूर्तों में तैयार किए हुए प्रभावकारी साढ़सति यन्त्र २१ रुपये मात्र दक्षिणा भेजकर आप घर बैठे मंगवा सकते हैं। पं० पन्ना लाल ज्योतिषीपुर अडडा होशियारपुर जालन्धर।

जन्म अथवा नाम नक्षत्र से शनि का शुभाशुभ फल

शनि जिस नक्षत्र पर हो उससे अपने नाम अथवा जन्म नक्षत्र तक गिनें। यदि वही नक्षत्र हो तो ३ मास १० दिन तक धन-हानि, कारोबार सम्बन्धी चिन्ता व परेशानी रहेगी। दूसरे से पांचवें नक्षत्र तक १३ मास १० दिन की अवधि में कार्य सफलता, धन लाभ व मुकद्दमे में विजय रहेगी। क्रमशः इसी तरह निम्न-लिखित चक्रानुसार अपने नक्षत्र के सामने का फल देखें—

शनि नक्षत्र	अवधि तक	फल
मघा	३ मास १० दिन	कारोबार की चिन्ता, धनहानि, परेशानी बढ़े
पूफा उफा दस्त चित्रा	१३ मास १० दिन	कार्य में सफलता, शत्रु पर विजय, धनलाभ
स्वा विशा अनुज्ये मूलापूषा	२० मास	स्थानान्तर-भ्रमण, कारोबारमेंपरिवर्तन, रोग
उषा० श्रव० धनि० शत०	१३ मास १० दिन	फिज़ूल खर्चा हो शरीर कष्ट रहे।
पू० भा० उभा० रेव०	१० मास	राज्यसम्मान हो धन सुखादि लाभ
अश्वि, भर०	६ मास २० दिन	पदोन्नति हो, कोई शुभ समाचार मिले
कृति रोहि०	६ मास २० दिन	स्वास्थ्य में खराबी, पेट में विकार हो
मृग आ०पुन, पुष्य श्ले०	१६ मास २० दिन	अवैध रुपेण धन लाभ, परेशानी बढ़ेगी।

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश संवत् २०३४ (अधिक फलादेश जानने के लिए १५रु० ७५ पैसे भेजकर बर्षफल बनवाएं)

राशि	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद
मेष	लाभअच्छा, कार्योंमें सफलता इज्जतमान, कारोबारअच्छा	क्रोध अधिक, स्त्रीकष्ट, लाभ कमव्यय अधिक, मनचिंतातुर	शत्रुनाश, कारोबार मेंउन्नति सफर से लाभ संतान सुख	कारोबार मध्यम, सम्बन्धियों सेबिगाड़, शत्रुभय, शरीरकष्ट	कारोबार मध्यम, संबन्धियों से बिगाड़, शत्रु भयधन हानि	शत्रु नाश, कारोबार में उन्नति, सफर से लाभ
वृष	कारोबार मध्यम शत्रु अधिक संसारिककार्यों मे चिन्ताविघ्न	कारोबार अच्छा, बिगड़ेकाम भीबनें, इज्जतमान संतानसुख	धनलाभ, कारोबार मेंउन्नति शत्रुनाश संतानसुख सफर हो	लाभ कम व्यय अधिक मान हानिकाभय, सम्बन्धी बिगाड़	कारोबार अच्छा, राजदरबार में इज्जत मान उन्नति हो	मन चिंतातुर बने काम बिगड़ें, धन का खर्च बढ़े।
मिथुन	संसारिक कार्यों से बेचैनी व चिन्तालाभ कमव्यय अधिक	राजदरबारमें मान, धनलाभ, शत्रुनाश, कारोबार मेंउन्नति	लाभ कम व्यय अधिक, आशाओं मेंअसफलता सफर हो	भाग्य में उन्नति कारोबार अच्छा, इज्जत मान बढ़े।	शत्रुनाश, मंगलकार्य, राजदरबार मेंमान कारोबारमेंवृद्धि	कारोबार मध्यम लाभ कम व्यय अधिक सफर हो।
कर्क	शत्रुओं कानाश, कारोबार में उन्नतिसफरसेलाभसंतानदुख	धन कालाभ, शत्रुनाश शरीर व संतानकष्टकारोबारअच्छा	शरीरकष्ट अचानक धन का खर्चसफर, धनहानिनया कार्य	कारोबार में उन्नति व लाभ संतान सुख, शत्रु नाश	कारोबार में लाभ उन्नति संतान सुख, व शत्रु नाश	राज दरबार में मान, धन का लाभ, कारोबार अच्छा
सिंह	शत्रु नाश, बिगड़े कामों में सफलता इज्जत मान बढ़े	कारोबार में बाधा लाभ कम मनस्थिरनरहे, स्त्रीसंतानदुख	कारोबार अच्छा मंगलकार्य होबिगड़े कामबने, संतानसुख	कारोबार मध्यम, लाभ कम शत्रुभय संबन्धियों से बिगाड़	क्रोध अधिक लाभ मध्यम व्यय अधिक शत्रुभय कष्ट	कारोबार में उन्नति व लाभ इज्जतमान निराशा मेंआशा
कन्या	स्त्री कष्ट, धन का खर्च, मन चिंतातुर लड़ाईझगड़े का भय	धनहानि, शरीरकष्ट मनकी चिंता कारोबार में हानि हो	मान इज्जत आय में वृद्धि आशाओंमें सफलता, शत्रुनाश	कारोबार मध्यम बिगड़े काम बनें लाभ अच्छा	कारोबार अच्छा, राजदरबार में इज्जत मान उन्नति हो	राजदरबार में मान, धन का लाभ कारोबार अच्छा
तुला	शरीर कष्ट व्यय अधिक, कारोबार मध्यम, शत्रु भय	कारोबार मध्यम आशाओं में सफलता, अचानक धन खर्च	क्रोध अधिक स्त्रीचिंता, लाभ कम, व्ययअधिक, मनचिंतातुर	शत्रुनाश, मंगल कार्य हो कारोबारमें लाभ, इज्जत बढ़े	मन चंचल सम्बन्धियों से बिगाड़, कारोबार में वृद्धि	मन चंचल, लड़ाई झगड़े का भय, शरीरकष्ट, शत्रु भय
वृश्चिक	कारोबार में उन्नति लाभ शत्रु नाश, इज्जत मान हो	कारोबार मध्यम, लाभ कम. मनस्थिरनरहे स्त्रीसंतानकष्ट	धन हानि, लाभ कम मन बेचैन, अचानक सफर	कारोबार अच्छा, मंगल कार्य हों, मान इज्जत हो	कारोबार मध्यम. बिगड़े काम बनें, स्त्रीसंबन्धियों सुख	शत्रु नाश कारोबार में उन्नति, सफर से लाभ रहे
धन	धन लाभ, शत्रु नाश, उच्चपद न्यायालयक्रोधयुक्त, कुछ रोग	शत्रु नाश, कारोबार अच्छा आशाओं में सफलतासफरहो	मन चिंतातुर बना बनाया काम बिगड़े धन का खर्च	कारोबार मध्यम, खर्च अधिक स्त्रीकष्ट। मनबेचैन	कारोबार अच्छा. शत्रुनाश आशाओं में सफलताप्राप्त	क्रोध अधिक स्त्रीकष्ट, लाभ कम, व्यय अधिक, मनबेचैन
मकर	लाभ मध्यम व्यय अधिक, अचानक धन का खर्च हो	कारोबारअच्छा, बिगड़े काम भीबने, इज्जतमान संतानसुख	कारोबार अच्छा, मंगलकार्य होबिगड़े कामबने, संतानसुख	मन चंचल कारोबार मध्यम संसारिक कार्यों में बेचैनीहो	लाभ, संतान स्त्री सुख शत्रु नाश, कारोबारअच्छा	स्त्री संतान कष्ट शत्रु नाश धनकालाभ शुभ समाचार
कुम्भ	संसारिक कार्यों में खुशी मनकी आशाओं में सफलता	धनका लाभ, शत्रुनाश शरीर वसंतानकष्ट कारोबारअच्छा	शत्रुनाश, कारोबार मेंउन्नति सफर से लाभ, संतान सुख	भाइयों से अनबन संतान सुख, वृद्धि शत्रु नाश, लाभ	धन का खर्च व हानि सफर हो, कारोबार मध्यम	लाभ कम, खर्च अधिक अचानकसफर पड़ेशरीरकष्ट
मीन	व्ययअधिक, धन की हानि चिन्ता, बने काम भी बिगड़ें	मन बेचैन, लड़ाई झगड़ें हों शत्रु भय, उन्नति में बाधा	कारोबार मध्यममनचिंतातुर लाभकम व्ययअधिक सफरहो	कारोबार अच्छा, उन्नति धन खर्च अधिक, कार्य सफल	कारोबार मध्यम, सफर हो धन का खर्च, शत्रु भय	कारोबार में उन्नति व लाभ इज्जतमान निराशा मेंआश

द्वादश राशियों का मासिक फलादेश संवत् २०३४

राशि	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गण
मेष	कारोबार में लाभ, शत्रु नाश आशाओंमेंसफलताशरीरकष्ट	शरीरसंतानकष्टखर्च अधिक भाईको कष्टकारोबारअच्छा	कारोबार अच्छा, बिगड़े काम बनें, राजदरबारमेंमान	कारोबारअच्छा, बिगड़े काम बनेसंतान सुख, मंगलकार्य हो	सफर हो. आशाओं में सफलता कारोबारमध्यय रहे	शुभ कार्य में खर्च शत्रु नाश कारोबार मध्य मित्रमिलाप
वृष	कारोबार अच्छाबिगड़े काम भी बने शत्रु नाश मातृ कष्ट	कारोबार अच्छा शत्रु नाश आशाओं व विद्या मेंसफलता	मन बेचैन, बना काम बिगड़े धन का खर्च व हानि हो	शत्रु नाश कारोबार अच्छा आशाओं में सफलता चिंता।	शरीर कष्ट संतान कष्ट धन हानि भय, मानहानि भय।	कारोबार अच्छा धन लाभ संतान सुख बने कामबिगड़े
मिथुन	शत्रुओं का नाश कारोबार में लाभ, इज्जत मान हो।	मन चंचल धन हानि शत्रु भय, लड़ाईझगड़ेमेंधन खर्च	शत्रु नाश कारोबार में उन्नति, सफर से लाभ।	कारोबार मध्यम आशाओं में निराशा सफरमें लाभ हो	धन का लाभ, राजदरबार में मान शरीरकष्ट, शत्रु नाश	कारोबार अच्छा धन लाभ सतानसुख, बने काम बिगड़ें
कर्क	शरीर कष्ट, लाभ कम व्यय अधिक, आशाओंमें निराशा	कारोबार अच्छाबिगड़े कार्य बनें राज दरबार से लाभ	सम्बन्धियों से बिगाड़, आशा में निराशा सफर हो।	राजदरबार में मान धन का लाभ, शत्रु नाश सफलता	अचानक स्त्री संतान कष्ट परन्तु लाभ ज्यादा रहे।	शरीर कष्ट, सम्बन्धियों से बिगाड़संतानकष्ट विद्याहानि
सिंह	धन का खर्च, आशाओं में पूर्ण सफलता न हो स्त्रीकष्ट	भाग्य उन्नति राज दरबार में मान कारोबार अच्छा	मन चंचल लड़ाई झगड़े का काम, कारोबार मध्यम	कारोबार अच्छा सफर से लाभ, शत्रु नाश पितृ कष्ट	सम्बन्धियों से बिगाड़, संतान कष्ट, शत्रु भय स्त्री कष्ट	क्रोध अधिक, सफर से लाभ कारोबार अच्छा, शत्रु नाश
कन्या	शरीरकष्ट, स्त्रीकष्ट, कारोबार में बाधा, लाभ कम।	शत्रु नाश धन लाभ बिगड़े काम बनें नया कार्य हो।	राजदरबार में मानधनलाभ कारोबार अच्छा शत्रु नाश	आशाओं में असफलता, लाभ कम खर्च ज्यादा रहे	चोरी का भय, क्रोध अधिक, शत्रु भय, कारोबार मध्यम	शत्रु भय धन का खर्च व नुकसान, सम्बन्धियोंसेबिगाड़
तुला	कारोबार अच्छा, बिगड़े काम बने, लाभ, मान बढ़े	शरीर कष्ट सम्बन्धियां से बिगाड़ धन हानि भय।	कारोबार में तरक्की वलाभ राजदरबार में मानशत्रु नाश	शत्रु नाश कारोबार अच्छा आशाओं में सफलता हो.	शत्रु भय, धन का खर्च नुकसान, बनते काम बिगड़े	बिगड़े काम बने, तरक्की हो संतान सुख धन लाभ।
वृश्चिक	कारोबार मध्यम, खर्चअधिक आशाओं में पूर्ण सफलता हो	कारोबार अच्छाबिगड़े कार्य बनें राज दरबार से लाभ	कारोबार मध्यम संसारिक कामों से चिंता स्त्री चिंता	राजदरबार में मन धन का लाभ, शत्रु नाश सफलता	शरीर कष्ट, संतानकष्ट, धन हानि भय, मानहानि भय।	आशाओं में सफलता, स्त्री सुख, कारोबार में तबदीली
धनु	कारोबार में लाभ शत्रु नाश आशाओंमेंसफलताशरीरकष्ट	लाभ कम व्यय अधिक धन हानि मन वेचैन।	क्रोध अधिक स्त्री कष्ट व चिंता धन का लाभ अधिक	शरीरकष्ट, धनहानि, संसारिक कार्योंमें अड़चन, मनवेचैन	संतान सुख, उन्नति धन लाभ, ज़मीन जायदाद सुख	स्त्री कष्ट, क्रोध धन हानि सफर हो, शत्रु भय।
मकर	धन का खर्च बनते कार्य में बिगाड़ मनचिंतातुर, सफरहो	मन वेचैन सम्बन्धियों और मित्रों से बिगाड़ स्त्री कष्ट	शत्रु नाश कारोबार में उन्नति, सफर से लाभ	कारोबार अच्छा धन कम, मन अस्थिर, स्त्री कष्ट	शत्रु भय, धन का खर्च व नुकसान बनते काम बिगड़े	कारोवार अच्छा स्त्री कष्ट शरीरकष्ट, नेत्रपीड़ा, धनखर्च
कुम्भ	कारोबार अच्छा बिगड़े काम बने, लाभ, मान बढ़े	बना बनायाकाम विगड़े धन का खर्च व हानि मनचिंतित	राजदरबार में मानधनलाभ कारोबार अच्छा शत्रु नाश	क्रोध अधिक, स्त्रीकष्ट, शत्रु भय अधिक कारोबारखराब	कारोबारकी तबदीली, क्रोध अधिक, धनहानि व खर्च	क्रोध, स्त्री कष्ट अचानक धनहानि कारोबार अच्छा।
मीन	मनअस्थिर, कारोबार मध्यम संबन्धियों सेबिगाड़ व हानि	शत्रुनाश धन लाभ, बिगड़े काम बनें नया कार्य हो।	शरीर कष्ट मन चंचल घरेल झगड़ों मेंधन का खर्च	कारोबार में लाभ सफर हो. धन खर्च शरीर कष्ट	स्त्री कष्ट, धन का खर्च बनते कामों में रुकावट।	बिगड़े काम बनें, तरक्की हो संतान सुख धन लाभ।

हिमाचल प्रदेश एवं भारत के कुछ प्रसिद्ध शहरों के सूर्योदयास्त

जालन्धर के सूर्योदयास्त में से २ मिनट घटाने से होश्यारपुर का एवं १-१/२ मिनट जमा करने से अमृतसर का सूर्योदयास्त निकलेगा कुल्लू-मण्डी के सूर्योदयास्त में ३ मिनट जमा करने से नंगल ऊना इत्यादि स्थानो का, १-१/२ मिनट जमा करने से जोगिन्द्रनगर का, और २ मिनट जमा करने से हमीरपुर का सूर्योदयास्त होगा। कांगड़ा के सूर्योदयास्त में २ मिनट जोड़ने से डल्हौजी का और १ मिनट कम करने से पालमपुर का सूर्योदयास्त होगा। शिमला के सूर्योदयास्त में डेढ मिनट कम करने से कोट खाई का और साढ़े तीन मिनट जमा करने से नालागढ का सूर्योदयास्त होगा।

ता	देहली		जम्मू उधपुर		शिमला सोलन		कांगड़ा धर्म		मंडी-कुल्लू		बंबई	ता	देहली		जम्मू उधपुर		शिमला सो०		कांगड़ा धर्मशा		मंडी-कुल्लू		बंबई
अप्रै	उद	अस्त	उद	अस्त	उद	अस्त	उद	अस्त	उद	अस्त	उद	जुल	उद	अस्त	उद	अस्त	उद	अस्त	उद	अस्त	उद	अस्त	उद
१अ	६।१४	१८।३८	६।२२	१८।४७	६।११	१८।३०	६।१५	१८।३७	६।११	१८।४०	६।३५	२३	५।३९	१९।१४	५।४२	१९।३०	५।३२	१९।२२	५।३३	१९।२४	५।३३	१६।२४	६।११
५	६।१०	१८।३८	६।१६	१८।५१	६। ६	१८।४२	६।१०	१८।४०	६। ६	१८।४३	६।३१	२७	५।४१	१९।१२	५।४५	१९।२७	५।३४	१९।२०	५।३५	१९।२२	५।३४	१९।२२	६।१२
९	६। ६	१८।३९	६।११	१८।५४	६। १	१८।४५	६। ६	१८।४३	६। २	१८।४६	६।२७	३१	५।४३	१९।१०	५।४७	१९।२५	५।३७	१९।१९	५।३८	१९।२५	५।३७	१९।२१	६।१३
१३	६। १	१८।४१	६। ८	१८।५६	५।५७	१८।५७	६। २	१८।४७	५।५८	१८।४८	६।२४	४अ	५।४५	१९। ७	५।४९	१९।२३	५।४०	१९।१२	५।४१	१९।१६	५।४१	१९।१४	६।१४
१७	५।५७	१८।४३	६। ४	१८।५८	५।५३	१८।४९	५।५१	१८।५१	५।५४	१८।५०	६।२१	८	५।४७	१९। ४	५।५२	१९।१८	५।४१	१९। ७	५।४२	१९।१३	५।४३	१६। ९	६।१५
२१	५।५१	१८।४७	५।५९	१९। ०	५।४९	१८।५२	५।५५	१८।५५	५।४९	१९।५३	६।१८	१२	५।४९	१९। ०	५।५५	१९।१५	५।४५	१९। ४	५।४६	१९। ९	५।४५	१६। ६	६।१७
२५	५।४७	१८।४८	५।५४	१९। ४	५।४४	१८।५५	५।५१	१८।५८	५।४५	१८।४६	६।१५	१६	५।५२	१८।५६	५।५८	१९।१०	५।४९	१८।५४	५।५०	१९। ५	५।५०	१८।५९	६।१८
२९	५।४४	१९।५०	५।५०	१९। ७	५।४१	१८।५८	५।४६	१९। २	५।४२	१८।५१	६।१३	२०	५।५४	१८।५३	६। २	१९।०६	५।५३	१८।५८	५।५४	१६। १	५।५३	१८।५६	६।१९
३म	५।४१	१८।५३	५।४६	१९। ९	५।३७	१९।००	५।४०	१९। ५	५।३८	१९। १	६।१०	२४	५।५९	१८।४९	६। ४	१९।०२	५।५६	१८।४०	५।५८	१८।५६	५।५७	१८।५१	६।२०
७	५।३१	१८।५५	५।४४	१९।१०	५।३३	१९। ३	५।३५	१९। ७	५।३४	१९। ५	६। ८	२८	६।५८	१८।४५	६। ७	१८।५८	५।५९	१८।४५	६। १	१८।५२	६। ०	१८।४५	६।२१
११	५।३७	१८।५८	५।४०	१९।१३	५।३०	१९। ६	५।३३	१९।११	६।३१	१९। ८	६। ७	सि	६। १	१८।४१	३।१०	१८।५३	६। २	१८।४२	६। ५	१८।४८	६। ३	१८।४४	६।२२
१५	५।३२	११। ०	५।३७	१९।१५	५।२७	१९। ८	५।३१	१९।११	५।२८	१९।१०	६। ५	५	६। २	१८।३८	६।१२	१८।४९	६।०५	१८।३८	६। ८	१८।४४	६। ६	१८।४०	६।२३
१९	५।३१	१९। ३	५।३४	१९।१८	५।२४	१९।११	५।२९	१९।१३	५।२५	१९।१३	६। ३	९	६। ५	१८।३२	६।१५	१८।४४	६।०६	१८।३४	६।१०	१८।४०	६। ८	१८।३५	६।२४
२३	५।२७	१९। ५	५।३१	१९।२२	५।२३	१९।१३	६।२६	१९।१६	५।२३	१९।१५	६। २	१३	६। ४	१८।२७	६।१७	१८।३९	६।०९	१८।२८	६।१३	१८।३५	६।११	१८।२६	६।२५
२७	५।२६	१९। ७	५।२९	१९।२५	५।२०	१९।१५	५।२४	१६।१६	५।२०	१९।१७	६। १	१७	६। ९	१८।२२	६।१९	१८।३३	६।१३	१८।२३	६।१७	१८।३०	६।१५	१८।२४	६।२६
३१	५।२५	१९। ८	५।२९	१९।२८	५।१९	१९।१८	५।२१	१९।२२	५।१९	१९।२०	६। १	२१	६।११	१८।१७	६।२१	१८।२८	६।१५	१८।१८	६।१९	१८।२६	६।१७	१८।२०	६।२७
५ज़	५।२४	१९।११	५।२६	१९।३०	५।१८	१९।२१	५।२०	१९।२४	५।१९	१९।२३	६। १	२५	६।१३	१८।१२	६।२३	१८।२२	६।१६	१८।१४	६।२०	१८।२२	६।१८	१८।१६	६।२८
९	५।२५	१९।१५	५।२६	१९।३२	५।१८	१९।२२	५।१९	१९।२५	५।१८	१९।२३	६। १	२९	६।१५	१८। ९	६।२५	१८।१७	६।१८	१८।१०	६।२२	१८।१७	६।२०	१८।१२	६।२९
१३	५।२४	१९।१६	५।२६	१९।३४	५।१८	१९।२४	५।१९	१९।२६	५।१८	१९।२६	६। १	३अ	६।१७	१८। ३	६।२८	१८।१२	६।१६	१८। ३	६।२३	१८।१३	६।२०	१८। ५	६।३०
१७	५।२४	१९।१७	५।२६	१९।३५	५।१८	१९।२६	५।१८	१९।२६	६।१९	१९।२८	६। १	७	६।१९	१७।५८	६।३०	१८।०७	६।२०	१७।५९	६।२४	१७। ६	६।२१	१७।५९	६।३१
२१	५।२५	१९।१८	५।२५	१९।३६	५।१९	१९।२७	५।१९	१२।२८	५।१९	१९।२९	६। २	११	६।२२	१७।५४	६।३३	१८। २	६।२२	१७।५४	६।२६	१८। ४	६।२३	१७।५६	६।३२
२५	५।२५	१९।१८	५।२७	१९।३७	५।१९	१९।२८	५।२०	१९।३०	५।२०	१९।३०	६। ३	१५	६।२४	१७।४९	६।३५	१७।५७	६।२५	१७।५०	६।२९	१७।५५	६।२६	१७।५२	६।३३
२९	५।२६	१९।१८	५।२९	१९।३७	५।२०	१९।२१	५।२२	१९।३०	५।२१	१९।३१	६। ४	१९	६।२६	१७।४५	६।३८	१७।५३	६।३०	१७।४५	६।३४	१७।५०	६।३१	१७।४७	६।३४
३ज़	५।२९	१९।२०	५।३१	१९।३७	५।२२	१९।२९	५।२३	१९।२९	५।२५	१९।३१	६। ५	२३	६।२८	१७।४१	६।४१	१७।४९	६।३२	१७।४०	६।३६	१७।४७	६।३३	१७।४२	६।३५
७	५।३०	१९।११	५।३३	१९।३६	५।२४	१९।२८	५।२४	१९।२८	५।२४	१९।३०	६। ६	२७	६।३०	१७।३८	६।४४	१७।४५	६।३४	१७।३२	६।३९	१७।४२	६।३५	१७।३३	६।३७
११	५।३२	१९।१७	५।३४	१९।३६	५।२६	१९।२६	५।२६	१९।२७	५।२६	१९।२८	६। ७	३१	६।३३	१७।३४	६।४७	१७।५१	६।३९	१७।२७	६।४३	१७।३७	६।४०	१७।२९	६।३८
१५	५।३५	१९।१६	५।३६	१९।३५	५।२८	१९।२५	५।२८	१९।२६	५।२८	१९।२७	६। ९	४न	६।३६	१७।३१	६।५०	१७।३७	६।४२	१७।२२	६।४६	१७।३३	६।४२	१७।२६	६।४०
१९	५।३७	१९।१५	५।३९	१९।३३	५।३०	१९।२४	५।३०	१९।२५	५।३१	१९।२६	६।१०	८	६।३९	१७।२८	६।५४	१७।३४	६।४४	१७।२१	६।४६	१७।३०	६।४५	१७।२२	६।४२

हिमाचलप्रदेश एवं भारत के कुछ प्रसिद्ध शहरों के सूर्योदयास्त

ता	देहली		जम्मू		शिमला सो		कांगड़ा धर्मशा.		मंडी कुल्लू		बम्बई
नव	उद	अस्त	उद	अस्त	उद	अस्त	उद	अस्त	उद	अस्त	उद
१२	६।४३	१७।२५	६।५८	१७।३१	६।४८	१७।२०	६।५३	१७।२७	६।४९	१७।२२	६।४४
१६	६।४६	१७।२७	७। २	१७।२८	६।५१	१७।१९	६।५७	१७।२४	६।५३	१७।२१	६।४६
२०	६।४९	१७।२५	७। ६	१७।२८	६।५४	१७।१९	७।००	१७।२३	६।५६	१७।२१	६।४८
२४	६।५२	१७।२४	७। ९	१७।२८	६।५६	१७।१८	७। ४	१७।२२	६।५९	१७।२०	६।५१
२८	६।५५	१७।२३	७।१२	१७।२८	७। ०	१७।२८	७। ७	१७।२१	७। ३	१७।२०	६।५३
२द	६।५७	१७।२३	७।१५	१७।२७	७। ३	१७।१७	७।१०	१७।२०	७। ६	१७।१९	६।५५
६	७। १	१७।२४	७।१८	१७।२७	७। ६	१७।१७	७।१२	१७।२०	७। ९	१७।१९	६।५८
१०	७। ४	१७।२०	७।२२	१७।२६	७। ९	१७।१६	७।१५	१७।१९	७।११	१७।१८	७। १
१४	७। ७	१७।२१	७।२४	१७।२७	७।१३	१७।१८	७।१९	१७।१९	७।१५	१७।१९	७। ३
१८	७।१९	१७।२२	७।२६	१७।२८	७।१५	१७।२०	७।२१	१७।२०	७।१७	१७।२२	७। ५
२२	७।११	१७।२३	७।२७	१७।३०	७।१६	१७।२३	७।२२	१७।२३	७।१८	१७।२३	७। ७
२६	७।१३	१७।२६	७।२९	१७।३२	७।१७	१७।२४	७।२३	१७।२६	७।१९	१७।२५	७। ९
३०	७।१४	१७।२८	७।२८	१८।३४	७।२०	१७।२७	७।२६	१७।२९	७।२२	१७।२७	७।११
३ज	७।१६	१७।३१	७।३[illegible]	१७।३६	७।२१	१७।३०	७।२७	१७।३२	७।२३	१७।३०	७।१२
७	७।१८	१७।३४	७।३३	१७।३८	७।२०	१७।३३	७।२७	१७।३५	७।२२	१७।३२	७।१३
११	७।१६	१७।३७	७।३३	१७।४२	७।२०	१७।३७	७।२६	१७।३९	७।२२	१७।३६	७।१४
१५	७।१६	१७।४१	७।३३	१७।५६	७।२०	१७।४०	७।२६	१७।४३	७।२३	१७।४१	७।१५
१९	७।१५	१७।४४	७।३२	१७।५०	७।२०	१७।४३	७।२६	१७।४६	७।२३	१७।४४	७।१४
२३	७।१४	१७।४७	७।३१	१७।५४	७।१९	१७।४८	७।२५	१७।५०	७।२२	१७।[illegible]	७।१४
२७	७।१०	१७।५१	७।३०	१७।५८	७।१७	१७।५१	७।३३	१७।५३	७।१९	१७।५२	७।१३
३१	७।१२	१७।५३	७।२७	१८।००	७।१५	१७।५३	७।२१	१७।५७	७।१६	१७।५४	७।१२
४फ	७। ९	१७।५८	७।२४	१८।०४	७।१३	१७।५७	७।२८	१८।०१	७।१४	१७।५८	७।११
८	७। ७	१८।०१	७।२०	१८।०९	७।१०	१८।००	७।२५	१८। ५	७।११	१८।०१	७।१९
१२	७। ३	१८।०४	७।१७	१८।१२	७। ७	१८। ३	७।१२	१८।०९	७।०८	१८।०५	७।५७
१५	७। ०	१८।०७	७।१३	१८।१५	७। ५	१८। ७	७।१०	१८।१३	७।०६	१८।०९	७। ४
२०	६।५६	१८।१०	७।१०	१८।१९	७।००	१८।१२	७।०५	१८।१७	७।०१	१८।१३	७। २
२५	६।५२	१८।१२	७।०६	१८।२३	६।५५	१८।१६	७।००	१८।२०	६।५७	१८।१५	७। ०
२८	६।४९	१८।१५	७।०१	१८।२७	६।४९	१८।२०	६।५३	१८।२१	६।५०	१८।२०	६। ७
४म	६।४४	१८।१७	६।५६	१८।३०	६।४३	१८।२३	६।४७	१८।२३	६।४४	१८।२३	६।५५
८	६।४०	१८।२०	६।५१	१८।२२	६।३८	१८।२७	६।४३	१८।२४	६।४१	१८।२८	६।५३
१२	६।३८	१८।२३	६।४७	१८।३५	६।२६	१८।२९	६।३८	१८।२५	६।३७	१८।३०	६।५०
१६	६।३२	१८।२५	६।४३	१८।३८	६।२८	१८।३१	६।३२	१८।२६	६।२९	१८।३२	६।४७
२०	६।२८	१८।२७	६।३९	१८।४०	६।२६	१८।३६	६।२८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

विश्व के प्रमुख शहरों के सूर्योदय

ति.	कलकत्ता	बनारस	लण्डन	न्यूयार्क	ति.	कलकत्ता	बनारस	लंडन	न्यूयार्क
जन.	सू.उ.	सू. उ.	सू.उ.	सू. उ.	३०	४।५९	५।१४	३।४५	४।२५
१	६।१९	६।४६	८।६	७।२१	जु५	५।१	५।१७	३।५०	४।३०
५	६।२१	६।४८	८।६	७।२१	१०.	५।३	५।१९	३।५५	४।३३
१०	६।२२	६।४९	८।४	७।२१	१५	५ ४	५।२१	४।००	४।३६
१५	६।२३	६।५०	८।१	७।२०	२०	५।७	५।२३	४।६	४।४०
२०	६।२२	६।४९	७।५७	७।१८	२५	५।९	५।२६	४।१३	४।४४
२५	६।२१	६।४७	७।५०	७।१५	३०	५।११	५।२९	४।२०	४।५०
३०	६।१९	६।४५	७।४३	७।१०	अ५	५।१४	५।३२	४।२७	४।५५
फ५	६।१७	६।४३	७।३५	७।४	१०	५।१५	५।३३	४।३६	५।००
१०	६।१५	६।४१	७ २६	६।५९	१५	५।१७	५।३७	४।४४	५।५
१५	६।१२	६।३८	७।१७	६।५३	२०	५।१९	५।३९	४।५२	५।१०
२०	६।९	६।३४	७।७	६।४२	२५	५।२१	५।४०	५।००	५।१४
२५	६।५	६।३०	६।५८	६।३८	३०	५।२२	५।४१	५।०८	५।२०
मा५	६।१	६।२६	६।३८	६।२५	सि५	५।२४	५।४५	५।१८	५।२६
१०	५।५७	६।२१	६।२७	६।१७	१०	५।२७	५।४६	५।२६	५।३१
१५	५।५०	६।१७	६।१५	६।८	१५	५।२७	५।४८	५।३१	५।३६
२०	५।४६	६।१०	६।४	६।००	२०	५।२८	५।५०	५।४२	५।४१
२५	५।४०	६।२	५।५२	५।५२	२५	५।३०	५।५२	५।५०	५।४६
३०	५।३४	५।५६	५।४१	५।४४	३०	५।३२	५।५४	५।५८	५।५१
अ५	५।२९	५।४९	५।२७	५।३५	५अक	५।३३	५।५७	६।७	५।५६
१०	५।२३	५।४२	५।१५	५।२६	१०	५।३५	५।५८	६।१४	६।२
१५	५।२०	५।३८	५।५	५.१८	१५	५।३७	५।५९	६।२३	६।७
२०	५।१६	५।३४	४।५४	५।१२	२०	५।४०	६।०१	६।३२	६।१२
२५	५।११	५।३०	४।४३	५।४	२५	५।४२	६।०४	६।४१	६।१८
३०	५।८	५।२६	४।३४	४।५६	३०	५।४४	६।०८	६।४९	६।२३
५मई	५।४	५।२१	४।२५	४।४९	न५वं	५।४६	६।११	७।००	६।३०
१०	५।१	५।१९	४।१७	४।४३	१०	५।४९	६।१५	७।०९	६।३७
१५	४।५[illegible]	५।१५	४।७	४।३८	१५	५।५२	६।१८	७।१८	६।४३
२०	४।५७	५।१३	४।००	४।३४	२०	५।५५	६।२१	७।२६	६।५०
२५	४।५५	५।११	३।५५	४।३०	२५	५।५८	६।२४	७।३४	६।५४
३०	४।५४	५।१०	३।५०	४।२६	३०	६।०१	६।२८	७।४२	७।००
जून५	४।५२	५।९	३।४६	४।२५	दि५	६।०४	६।३१	७।४९	७।५
१०	४।५२	५।९	३।४३	४।२४	१०	६.०८	६।३४	७।५५	७।१०
१५	४।५३	५।१०	३।४२	४।२३	१५	६।११	६।३८	८।००	७।१४
२०	४।५४	[illegible]	[illegible]	[illegible]					

प्राचीन काल में जो कार्य भौतिक साधनों द्वारा न सम्पन्न होता था उसको हमारे ऋषि-मुनि मन्त्रों द्वारा सिद्ध कर लिया करते थे। स्वयं में निहित शक्ति-युक्त वर्णों के समूह का नाम मन्त्र हैं। व्यष्टि और समष्टि मन की विराट एवं अव्यक्त शक्तियों को क्रियात्मक रूप प्रदान करने का महत्वपूर्ण कार्य आर्ष प्रदत्त मन्त्र करते हैं। मन्त्रज्ञों एवं विद्वानों ने मन्त्रों के अनुष्ठान तथा उनकी सिद्धि के लिए विभिन्न प्रकार के नियमों का पालन करने का निर्देश दिया, जिनमें मुख्य ये हैं–

१. भूत-प्रेत झारने का एक तन्त्र—

यदि किसी स्त्री को भूत सताता हो, तो पूरी सतर्कता से उसके पास जाकर उससे कुछ हट कर आसन लगावे। इसके पश्चात् गुग्गल घोड़े का नख और सूखी लाल मिर्चें जलतीं हुई आग में डाल कर भूत खेलने वाली स्त्री की नाक के सामने रख दें। यदि फिर भी भूत न जाये तो बेंत की पतली छड़ी को "ओं नमः रुद्राय हुँ हुँ फट्" मन्त्र से तीन बार आमन्त्रित करके भूत-ग्रस्त स्त्री की पीठ पर तीन बेंत मारे, तो भूत अवश्य निकल जाएगा।

ii) नौकरी प्राप्ति के लिये एक तन्त्र–

कुत्ते का नख ताम्बे के यन्त्र में रख कर रेशमी लाल धागे से पुरुष दाईं भुजा तथा युवती बाईं भुजा में बाँध कर जहाँ नौकरी के लिए खाली जगह हो, वहाँ पहुँच कर अधिकारी अथवा मालिक के पास जाये तो तुरन्त काम बने।

अधिक जानकारी के लिए हमारी पुस्तक मन्त्र शक्ति रहस्य मँगवा कर पढ़ें, मूल्य ५) रुपया पेशगी भेजें।

भागे हुए व्यक्ति को वापिस बुलाना—

एक कोरा घड़ा और कसोरा ले आएँ। उस पर कोई चिन्ह न हो। घड़े के बाहर और कसोरे के बीच नीचे लिखा मन्त्र लिखें। एक कागज पर लिख कर उसे घड़े के भीतर डाल दें और साथ में पूरे चार तांबे के पैसे भी डाल देवें। घड़े को कसोरे से ढक कर बाईं ओर घड़े को सात बार घुमाते हुए ये मन्त्र पढ़ें— 'ओं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै. विच्चे' —

ऐसा पृथक पृथक स्थानों पर सात दिन पर्यन्त करने से भागा हुआ व्यक्ति (चाहे स्त्री हो या पुरुष) अपने स्थान से अवश्य चल पड़ेगा या अपना पता भेज देगा।

ॐ

ऐं	ह्रीं	क्लीं
डा	मु	च
यै	वि	च्चै

यहां भागे हुए का नाम लिखें

१. रविवार और मंगलवार की संध्या को गाय के गोबर की कण्डी जलाकर माँ कामाक्षी के सम्मुख धूप जलावें और उस जली हुई कण्डी से भस्म झार कर उसे तीन बार नीचे लिखा मन्त्र पढ़ कर अभिमन्त्रित करें तत्पश्चात् उस भस्म को गर्भवती के शरीर पर छिड़क दें तो गर्भ स्थिर रहेगा।

ओं प्रकृति रूपिणी शक्ति स्वरूपिणी
मा कामाक्षा देव्यै नमः। ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा।

यन्त्र धारण करने की विधि—

रविवार को प्रातः उषाकालीन बासी मुख चिरचिरि की जड़ उखाड़ लावें और उसे "ओं नमः कामाक्षाय गर्भस्थ सन्तान रक्षा कुरू कुरू फट् स्वाहा"—इस मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करें। इसके पश्चात् ताम्बे के जन्त्र में उसको डाल कर रेशम की काली डोरी में पिरो कर गर्भवती स्त्री के गले में धारण करवा दे। जब तक सन्तान प्राप्ति न हो तब तक धारण किये रहे। ईश्वर की अनुकम्पा से अवश्य इष्ट सिद्धि होगी।

सब तरह के भय से मुक्ति के लिये—

'ओं ह्रिं पवननन्दनाय स्वाहा'

यह महावीर जी का मूल मन्त्र है। इसको सिद्ध करने की विधि यह है कि सूर्योदय से पूर्व उठ कर नदी पर जाकर स्नान करके खड़े होकर इस मन्त्र का आह्वान करे। फिर आठ बार मूल मन्त्र का जप कर बारह बार जल से शिर पर मार्जन करे। फिर दूसरे कपड़े पहन कर गंगा या नदी के किनारे बैठ कर अगन्यास करे। इसका छः हजार जप दैनिक करे। सातवें दिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक जप करे। रात्रि को महावीर जी का रुद्र रूप प्रत्यक्ष होकर निर्भयवर प्रदान करेगा।

व्यापार एवं कारोबार में लाभ के लिये—

ओं नमः मायाय, ओं नमः कामाक्षाय, ओं अं कं चं टं तं पं यं शं ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं३ श्री फट् स्वाहा।

दीपावली की रात को एकान्त कमरे में आसन लगा कर सामने दीप मालिका सजा कर उपर्युक्त मन्त्र का १०८ बार जाप करें, तो मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। व्यापार या कारोबार शुरू करने से पूर्व सात बार इस मन्त्र का जप करलें। व्यापार में सदा वृद्धि होगी।

भूत-प्रेत से ग्रस्त रोगी के लिये मन्त्र-तन्त्र—

(i) ओं पवन-पुत्राय नमः, ओं नमः कामाक्षाय ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं श्रीं श्रीं फट् स्वाहा।

इस मन्त्र को सरसों लेकर हाथ उलटा करके पढ़ें और भूत-प्रेत ग्रस्त रोगी (स्त्री अथवा पुरुष) के शरीर पर सरसों फेंके। तीन बार मन्त्र पढ़ कर सरसों फेंकें तो भूतादि का साया तुरन्त भाग जाएगा।

ज्योतिष शास्त्र के कुछ प्रसिद्ध एवं चमत्कारिक योग

(१२)

सन्तान प्राप्ति के योग—

(i) किसी व्यक्ति की जन्म कुण्डली में पंचम, सप्तम, नवम अथवा एकादश भावों के स्वामी जिस मास में लाभ भाव (११) में जाएं और जिस दिन वह भाव चन्द्रमा से दृष्ट या युक्त हो, उस मास में सन्तान लाभ होता है।

(ii) कुण्डली में लग्न, एकादश या नवम भाव में बृहस्पति हो और पंचम भाव पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो तो सन्तान सुख अवश्य होता है।

(iii) गुरु, चन्द्र लग्न—इन तीनों से पंचम स्थान के स्वामी की दशा-अन्तर्दशा में अथवा उस पंचम स्थान से नवम स्थान के स्वामी की दशा अन्तर्दशा में पुत्र-प्राप्ति की सम्भावना रहती है। इसके अतिरिक्त यदि लग्नेश पंचम-स्थान में हो और पंचमेश बलवान हो एवं गुरु भी पूर्ण बली हो अथवा पंचमेश अपनी उच्च राशि में हो और लग्नेश शुभ ग्रहों से युक्त हो तो बहु-पुत्र योग बनता है।

(iV) यदि पंचम स्थान शुक्र-चन्द्रमा से युक्त या दृष्ट हो अथवा पचम स्थान में समराशि व समवर्ग हो तो कन्या सन्तान होती है। यदि विषम (१,३,५, आदि) वर्ग हो पुत्र।

(v) यदि पचममेश अपनी नीच राशि में हो या दुष्ट स्थानों ६,८ १२, भावों में हो या शत्रु राशि में हो तथा पंचम भाव में केतु, राहु, निर्बली बुधादि हों तो कष्ट से पुत्र प्राप्ति होती है।

(vi) यदि चन्द्रमा पाप ग्रह की राशि में हो तथा पंचमेश नवम स्थान में हों और लग्नेश त्रिकोण ५, या ९वें भाव में हो अथवा चन्द्रमा पंचमेश होकर लग्न में स्थित हो तथा पंचम में शनि हो तो दत्तक-पुत्र का योग बनता है।

(vi) दशमेश पंचम स्थान में हो और पंचमेश भी ५वें भाव में हो, लग्न तथा पंचम में पाप ग्रह स्थित हों तो पितृशाप से पुत्र हानि होती है। अथवा शनि-सूर्य पंचम राहु तथा १२वें भाव में गुरु हो तो प्रेत शाप से संतान की हानि होती है। यदि पंचमेश पापग्रहों से पीड़ित या दृष्ट हो तो देवता के शाप से, यदि पंचमेश षष्ठेश से युक्त हो तो ब्राह्मण के शाप से पुत्र (सन्तान) की हानि होती है।

धनप्राप्ति के योग—

३,८ १२, भावों में धन-योग होने पर भी निष्फली होता है। (i) अपनी राशि का शुक्र लग्न में स्थित होकर शनि बुध से युक्त व दृष्ट हो तो मनुष्य धनी होता है अथवा पंचम भाव में धन या मीन राशि हो और वह गुरु से युक्त या दृष्ट हो तथा लाभ स्थान में चन्द्रमा-मंगल हो तो भी मनुष्य धनी होता है।

(ii) **शीघ्र धनि योग**—यदि दशम भाव का स्वामी धनेश से युक्त हो अथवा लाभेश कर्म्मेश के नवांश के स्वामी से युक्त हो तो शीघ्र धन प्राप्ति होती है।

(iii) भाग्येश लाभ स्थान में और लाभेश भाग्य स्थान में हो, या भाग्येश और धनेश का सम्बन्ध हो, या भाग्येश का लग्नेश, पंचमेश या चतुर्थेश या कर्मेश इनमें से किसी के साथ परस्पर दृष्टि सम्बन्ध या युति सम्बन्ध हो तो भी धनी योग होता है।

(iv) बलवान धनेश का सप्तमेश से सम्बन्ध हो तथा वह (धनेश) स्त्री कारक ग्रह (शुक्रादि) से युक्त या दृष्ट हो तो मनुष्य को स्त्री से धन प्राप्ति होती है।

(v) **दिशा-ज्ञान—**

लाभ भाव में अथवा लाभेश की जो राशि होगी अथवा सब ग्रहों की अपेक्षा जो ग्रह अधिक बली होगा—उस दिशा की ओर से धन-प्राप्ति होगी।

(vi) **समय ज्ञान—**

धन भाव (२रे) में जो ग्रह स्थित हो या धन भाव को जो ग्रह पूर्ण दृष्टि से देखे अथवा धनेश की दशा अन्तर्दशा के समय धन प्राप्ति होती है।

दरिद्र योग—

४, ७, १०) रिक्त हों (उनमें कोई ग्रह न हो) अथवा केन्द्र स्थानों में पाप ग्रह हों तो दरिद्र योग होता है। अथवा धन भाव सूर्य-मंगल राहु या क्षीण चंद्रमा से युक्त या दृष्ट हो तो मनुष्य निर्धनी होता है।

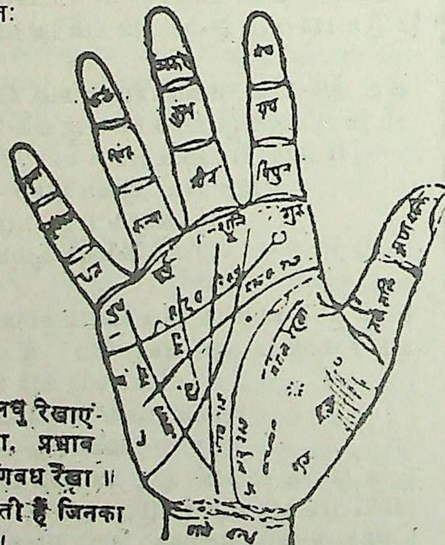
(ii) यदि लग्नेश या धनेश पाप ग्रहों से युक्त होकर ६,८,१२. भाव में स्थित हो और मारकेश से युक्त व दृष्ट हो तो धनी कुल में उत्पन्न हुआ भी दरिद्र हो जाता है।

केम द्रुम योग—यदि कुण्डली में चंद्रमा के दोनों ओर कोई भी ग्रह स्थित न हो तो केमद्रुम (दारिद्रय) योग बनता है केमद्रुम योग में उत्पन्न व्यक्ति हमेशा आर्थिक दृष्टि से दूसरों पर निर्भर रहता है।

सामुद्रिक एवं हस्त रेखा ज्ञान

ज्योतिष की भाँति सामुद्रिक शास्त्र भी स्वयं में सम्पूर्ण विज्ञान है। यह वह शास्त्र है जिसके द्वारा मनुष्य के तीनो काल—भूत काल, भविष्य और वर्तमान का सूक्ष्मता से अध्ययन किया जा सकता है।

व्यक्ति के हाथ पर रेखाओं के रूप में उसके जीवन की समस्त घटनाओं की छाप प्रतिबिम्बित रहती हैं, जिसके द्वारा उसकी रुचि, प्रवृत्ति, चरित्र एवं स्वभाव तथा उसमें छिपी क्षमताओं के बारे में ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। जिस प्रकार एक कुशल डाक्टर या हकीम केवल जीभ अथवा नाड़ी देख कर रोग जान लेता है उसी प्रकार रेखाएँ भी व्यक्ति के अन्तर्मन की अभिव्यक्ति प्रदर्शित करती हैं।



रेखाओं की संख्या - सामान्यत: विभिन्न हाथों में पाई जाने वाली सात बड़ी (मुख्य) रेखाएँ होती हैं और इनके अतिरिक्त सात छोटी (गौण) रेखाएँ भी होती हैं। सात मुख्य रेखाएं ये हैं—

(१) जीवन रेखा (Life line), (२) मस्तक रेखा (Head line), (३) हृदय रेखा (Heart line), (४) भाग्य रेखा (Fate line), (५) सूर्य रेखा (६) स्वास्थ्य रेखा (बुध रेखा) (७) शुक्र बन्धिनी रेखा (Ring of Venus) तथा अन्य सात लघु रेखाएं—चन्द रेखा, मंगल रेखा, विवाह रेखा, प्रभाव रेखा, निकृष्ट रेखा, सन्तान रेखा, मणिबध रेखा। इनके अतिरिक्त बहुत सी रेखाएं होती हैं जिनका आगे प्रसंग वश वर्णन किया जाएगा।

१ जीवनरेखा (Life Line)—इसे पितृ-रेखा व प्रगढ़ रेखा भी कहते हैं। यह रेखा तर्जनी अगुली और अंगूठे के बीच से (गुरु पर्वत के नीचे) आरम्भ होकर राहु और शुक्र पर्वत को घेरती हुई मणिबन्ध की ओर जाती है। यह रेखा विभिन्न व्यक्तियों के हाथों में समान रूप से नहीं होती। इस रेखा से जन्म काल, आयु, स्वास्थ्य, रोग, विभिन्न दुर्घटनाओं आदि का ज्ञान होता है। यदि यह रेखा स्पष्ट, उभरी हुई लम्बाई में पूर्ण तथा बिना कटी हुई हो तो वह व्यक्ति प्राण शक्ति धारण करने वाला होता है। जिन हाथों में स्पष्ट लम्बाई से पूर्ण किन्तु पतली हो उनमें प्राणशक्ति की कमी एवं मध्यम आयु होती है। यदि यह रेखा बीच में किसी स्थान पर टूटी हुई हो और वहाँ से किसी अन्य रेखा का सम्बन्ध न हो, तो उसी आयु में कोई कष्ट: दुर्घटना या मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। इसके ११ भेद हैं।

२. मस्तक रेखा—यह रेखा तर्जनी अगुली और अंगूठे के मध्य भाग से जीवन रेखा से मिलती हुई (द्वितीय मंगल क्षेत्र से शुरू होकर) अथवा कुछ अलग हटकर हथेली के मध्य भाग में चन्द्र अथवा राहु क्षेत्र की ओर जाती है। भारतीय विद्वानों के अनुसार इसे विभव रेखा, मातृ-रेखा या धन रेखा भी कहते हैं। इससे मानसिक शक्ति, जन्म मास, बुद्धि विद्या एवं माता आदि का विचार किया जाता है। यदि यह रेखा जीवन रेखा को स्पर्श करती हुई आगे बढ़े, तो ऐसे व्यक्ति विवेकशील बुद्धिमान, अवसरवादी सतर्क एवं सावधानी से काम करने वाले होते हैं। भारतीय आचार्यों ने इसके १८ भेद बतलाए हैं।

३. हृदय रेखा—यह रेखा मस्तक रेखा के ऊपर से तर्जनी के मूल गुरु पर्वत अथवा तर्जनी-मध्यमा के मध्य से निकल कर कनिष्ठा अंगुली के नीचे बुध पर्वत के पास समाप्त होती है। कुछ विद्वान् इसका उद्गम कनिष्ठा से तर्जनी मूल तक मानते हैं। इसे आयु रेखा भी माना जाता है। यह रेखा हृदय की संवेदनाओं एव प्रेम सम्बन्धों की प्रतीक है। यदि यह रेखा तर्जनी मूल से स्पष्ट व सुन्दर हो तो वे स्त्री या पुरुष आदर्श प्रेमी हुआ करते हैं। प्रेम स्वार्थ-हीन होता है। मस्तक रेखा की अपेक्षा अधिक स्पष्ट व सरल होने से व्यक्ति भावुकता के कारण हानि उठाता है। यदि इस रेखा को अन्य छोटी २ रेखाएं काटें तो निकट सम्बन्धों या मित्रों से हानि या निराशा होती है। सुन्दर व दीर्घ रेखा लम्बी आयु की परिचायक हैं। भारतीय आचार्यों ने इसके १६ भेद कहे हैं।

४ भाग्य रेखा—यह रेखा मणिबध या उसके पास से हथेली के मध्य से निकल कर प्राय: मध्यमा की ओर जाती है। कभी २ तर्जनी या अनामिका की ओर भी अग्रसर होती हैं। इसको ऊर्ध्व रेखा, प्रारब्ध रेखा, धन रेखा भी कहते है। इसके सम्बन्ध में कहा है—

सोर्ध्व रेखा विशेषण राज्यलाभकारी भवेत्।
खंडिता दुष्टफलदा क्षीणा क्षीण-फलप्रदा ॥

यदि यह रेखा बीच में कहीं कटी-फटी या खण्डित न हो तो मनुष्य भाग्यशाली, धनवान तथा उसे राज्य-लाभ होता है यदि खण्डित हो तो धन प्राप्ति में अनेक प्रकार की बाधाएं, एवं कार्य-परिवर्तन के संकेत हैं। इस रेखा के अभाव में सूर्य रेखा, जीवन रेखाओं आदि की स्थिति का अनुशीलन करना चाहिए। हमारे आचार्यों ने इसके ५ भेद कहे हैं।

५. सूर्य रेखा—इस का उद्गम स्थान चन्द्र पर्वत, भाग्यरेखा से, हथेली के मध्य भाग, मस्तक रेखा या हृदय रेखा, कहीं से भी हो सकता है। इसे पुण्य रेखा, विद्या रेखा या धन या यश रेखा भी कहते हैं। दीर्घ, स्पष्ट एवं अखंडित होने पर मनुष्य विद्वान् विद्या में पूर्ण सफलता, उत्साही व प्रतिष्ठित होता है। कहीं खंडित हो तो अपयश की द्योतक है। (शेष आगामी वर्ष के पचाँग में)

कुण्डली में मंगलीक योग विचार

लड़के या लड़की की जन्म कुंडली में यदि पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में मंगल पड़ जाए तो एक दूसरे के जीवन को अरिष्टकारी होते हैं। यदि बर और कन्या दोनों की कुंडलियां मंगलीक हों तो विवाह करने में कोई दोष नहीं। यद्यपि योनि, गुण नाड़ी गण इत्यादि का मिलान भी कर लेना चाहिए। कुछ अन्य दशाओं में भी मंगल दोष शान्त हो जाता है यदि —

(१) अन्य कुंडली में १, ४, ७, ८, १२ भाव में शनि हो तो उसका भौम दोष शान्त हो जाता है— यामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने व हिबुके तथा ।
अष्टमे द्वादशे चैव भौम दोषो न विद्यते ॥

(२) बली गुरु शुक्र-लग्न या ७ भाव में हो तो भी भौम दोष नहीं रहता।

(३) यदि कन्या की कुं.में जहां मंगल हो, उसी स्थान पर वर की कु. में कोई प्रबल पाप ग्रह हो तो भौम दोष नहीं रहता—

शनि भौमोऽथवा कश्चित्पापो वा तादृशो भवेत् ।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौम दोष विनाशकृत् ।

(४) मेष राशि का मंगल लग्न में , या बृश्चिक राशि का मंगल ४ भाव में या मकर का सातवें या कर्क का आठवें या धनु राशि का मंगल १२वें हों तो भौम दोष नहीं रहता।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे ।
द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमं दोषो न विद्यते ॥

(५) न मगली चन्द्र भृगु न मंगली पश्यति यस्य जीव ।
न मंगली केन्द्रगते च राहुर्न द्वितीये न मंगली मंगल-राहु योगो ॥

अर्थात् यदि दूसरे भाव में चन्द्र-शुक्र हो, मंगल-गुरु की युति हो या गुरु पूर्ण दृष्टि से भौम को देखता है केन्द्र भाव में राहु अथवा मंगल-राहु कहीं इकट्ठे हों। (मुहूर्त दीपक से)

(६) केन्द्र में चन्द्र या चन्द्र-मंगल की युति होने पर भी भौम दोश नहीं रहे।

(७) केन्द्र त्रिकोण में शुभ-ग्रह तथा ३, ६, ८, ११वें भाव में पाप ग्रह हों तो भी भौम दोष शान्त हो जाता है।

(८) षष्ठे च भवने भौमो राहुः सप्तम सम्भव ।
अष्टमे च यदा सौरितस्य भार्या न जीवति ॥

—अर्थात् वर की कु में छठे भाव में मंगल. सातवें में राहु, आठवें शनि हो तो उसकी पत्नी जीवित नहीं रहती। अर्थात् मंगलीक जैसा प्रभाव होता है।

(९) राशि मैत्रं यदायाति गणैक्यं वा यदा भवेत् ।
अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते ॥

—अर्थात् राशि मैत्री हो, गण भी एक हो या तीस से अधिक गुण मिलते हो तो भौम दोष का बिचार नहीं करना चाहिए।

(१०) बक्री, नीच, अस्त अथवा शत्रु क्षेत्री मंगल १,४,७ ८, १२वें भाव में हो तो भी भौम-दोष नहीं रहता है। शुभचिन्तक पन्नालाल ज्यो, एम.ए.

बालारिष्ट एव गण्डान्त नक्षत्र-विचार

ज्योतिष विदों ने बालारिष्ट तीन प्रकार से माना है।
१) गण्डान्तरिष्ट २) ग्रह-अरिष्ट ३) पताकी-अरिष्ट
(ग्रहारिष्ट जानने के लिए पृष्ठ १८ देखें)

गण्डारिष्ट—मघा, मूला और अश्विनी नक्षत्र के आदि की चार चार घड़ियां तथा आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती नक्षत्र की अन्तिम चार घड़ियां गण्डदोष युक्त मानी जाती है। इन्हीं को गण्डमूल नक्षत्र कहते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न बालक अथवा बालिका अपने शरीर के लिए अरिष्टकारी तथा माता, पिता एवं उनके धन का नाश करने वाली होती है। यदि किन्हीं उपायों से जीवित रहे तो धन, धान्य एवं सुख से सम्पन्न होता है। गण्डमूल में उत्पन्न सन्तान को छः मास अथवा २७ दिन तक पिता को देखना नहीं चाहिए। किसी विद्वान् ब्राह्मण द्वारा गण्डान्त नक्षत्र की विधिवत् शांति करवा कर मुख दर्शन करना शुभ रहता है।

मघा फलम्—प्रथम पाद में उत्पन्न हो तो माता या नानके पक्ष को हानि, द्वितीय पाद में पिता को भय, तीसरे पाद में शुभ, चतुर्थ में धन लाभ होगा।

ज्येष्ठा फलम्—प्रथम पाद में बड़े भ्राता को अरिष्टकारी, द्वितीय में लघु भ्राता का नाश, तृतीय में माता या नानी का नाश, चतुर्थ में पिता को कष्ट।

अश्विनी फल—प्रथम पाद में जन्म होने से पिता को कष्टकारी। शेष तीन चरणों में शुभ कहा गया है।

आश्लेषा फलम्—प्रथम चरण शुभ है। दूसरे में पिता के धन का नाश, तीसरे में सास या माता का नाश चतुर्थ चरण में पिता को कष्टकारी होता है।

रेवती फलम्—रेवती नक्षत्र के प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरण में जन्म हो तो शुभ किन्तु चतुर्थ चरण में गृह में भय और कष्टकारी होता है।

ज्येष्ठा अथवा मूला—नक्षत्र के मध्य, दिनमें जन्म हो तो पिता को कष्ट।

मूला अथवा आश्ले—नक्षत्र के मध्य, रात्रिमें जन्म हो तो माता को कष्ट।

रेवती अथवा अश्वि—नक्षत्र के मध्य संध्या में जन्म हो तो अपने शरीर को कष्ट जानें।

तिथि विचार—दोनों पक्षों की पचमी, दशमी, पूर्णिमा और अमावस्या की अन्तिम घट्यादि में जन्म होना अरिष्टाकारी होता है। कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी (१४) के किसी भी भाग में जन्म होना भी अशुभ माना गया है।

समान नक्षत्र जन्म फल—यदि पिता पुत्र, माता-कन्या अथवा दो भाईयों का जन्म नक्षत्र एक हो तो दोनों में से एक की अवश्य मृत्यु हो जाती है। कल्याण के लिए कुल देवता की पूजा तथा महामृत्युञ्जय का पाठ करें।

प्रश्न-फल विचार

फलित ज्योतिष के चार मुख्य विभाग हैं। जन्म कुण्डली विचार, वर्ष फल प्रश्न-फल तथा गोचर-फल। जन्म कुण्डली के पश्चात् प्रश्न-फल विचार को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है, क्योंकि इसमें वर्तमान कालिक गोचर-ग्रहों का भी स्पष्ट विवेचन रहता है। जन्मकुण्डली की भाँति प्रश्न कुण्डली का लग्न ज्ञात करने के लिए भी प्रश्नकर्त्ता द्वारा किए गए प्रश्न पूछने के समय को इस पचांग के अन्त में दी गई मासिक दैनिक लग्न सारिणी से लग्न देखलें तथा उसी तारीख के ग्रह-स्पष्टों मे दिये ग्रहों की स्थापना कर लेंवे। प्रश्न फल का विचार करने से पूर्व नीचे दिए कुछ महत्वपूर्ण नियमों को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए,

(१) विवाह सम्बन्धी प्रश्न—

(i) यदि प्रश्न कुण्डली में भाग्येश सप्तम स्थान में और सप्तमेश भाग्य स्थान में हो। अथवा सप्तमेश शुक्र भाग्य स्थान में हो. या भाग्येश शुक्र सप्तम, दूसरे, चतुर्थ या लग्न में निर्दोष होकर बैठा हो तो विवाह अवश्य होता है।

(ii) प्रश्न लग्न से सम स्थान (२,४ ६,८,१०,१२) में शनि हो तो वर को लाभ नहीं होगा। इसके विपरीत विषम स्थान में शनि हो तो स्त्री को वर लाभ होगा।

(iii) यदि प्रश्न लग्न से तीसरे, पाँचवे, छठे, सातवें अथवा ग्यारवें भाव में चन्द्रमा हो और उसके ऊपर गुरु, सूर्य या बुध की दृष्टि हो तो विवाह अवश्य

(२) गर्भ से लड़का होगा या लड़की—

(i) प्रश्नकाल में यदि शनि लग्न को छोड़ कर विषम स्थान (३,५,७, ९, ११) में बली होकर स्थित हो तो गर्भवती स्त्री को पुत्र उत्पन्न होगा और निर्बली होकर समस्थान (२,४,६,८,१०) में स्थित हो तो कन्या उत्पन्न होती है।

(ii) प्रश्न कुण्डली में यदि (१,३,५,७,९) वे स्थान पर पुरुष ग्रह बलवान होकर स्थित हों तो पुत्र-लाभ और स्त्री ग्रहों के बलवान होने पर कन्या का जन्म होता है। इन स्थानों शनि विशेषत: पुत्र-दायक होता है।

(iii) लग्नेश व पंचमेश, पुरुष राशियों पर पुत्र कारक और स्त्री राशियों पर कन्या दायक होते हैं। यदि लग्नेश पुरुष ग्रह. पुरुष राशि में बैठ कर पंचम भाव को देखता हो या पचंमस्थ राहु को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखताहो तो भी गर्भवती को पुत्रोत्पन्न होता है।

(३) नौकरी अथवा सर्विस का प्रश्न—

(i) प्रश्न कुण्डली में नौकरी के प्रश्न, पदोन्नति, धन, मान तरक्की इत्यादि का विचार नवें और दसवें भावों से करना चाहिए।

(ii) यदि भाग्येश दशम भाव में और दशमेश भाग्य स्थान में हो या एक दूसरे के भाव को मित्रपूर्ण दृष्टि से देखते हों तो बहुत अच्छी नौकरी मिलती हैं।

(४) चोरी हुई वस्तु मिलेगी या नही ?

(i) यदि प्रश्न लग्न में पूर्ण चन्द्रमा हो और उस पर गुरु या शुक्रादि शुभ ग्रहों की दृष्टि हो, तो गुम हुई वस्तु का शीघ्र लाभ होगा।

(ii) अथवा अति बलवान (स्थानादि बल युक्त) शुभ ग्रह ग्यारहवें भाव में हों तो भी नष्ट वस्तु की शीघ्र प्राप्ति होगी। (चन्द्रमा शुक्ल पक्ष की दशमी से कृष्ण पक्ष की पाँचवीं तक पूर्ण कहलाता है।)

(iii) यदि प्रश्नकाल मे लग्नेश सप्तम भाव में और सप्तमेश लग्न में हो या चन्द्रमा और सप्तमेश दोनों अस्त गत हों तो चोर धन सहित पकड़ा जाता है।

(iv) यदि स्थिर राशि का लग्न हो अथवा किसी भी लग्न में स्थिर नवाँश हो अथवा लग्न में वर्गोत्तम नवाँश हो तो गुम हुई वस्तु उसी स्थान में है और वह अपने घर के आदमी (सेवकादि) ने ली है।

(v) यदि मेष सिंह धन लग्न हो अथवा केन्द्र में सूर्य हो तो नष्ट वस्तु पूर्व दिशा में है। वृष, कन्या मकर प्रश्नलग्न हो या मंगल केन्द्रगत हो तो वस्तु दक्षिण दिशा में, यदि कर्क बृश्चिक मीन लग्न या बुध केन्द्र में हो तो वस्तु, उत्तर दिशा में तथा मिथुन, तुला, कुम्भ लग्न हो या शनि बली अथवा केन्द्रगत हो तो वस्तु पश्चिम दिशा में होगी। यदि एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली होगा, वही दिशा जानना।

(vi) प्रश्न लग्न में चार राशियाँ (मेष, कर्क, तुला, मकर) हों तो नष्ट वस्तु दूर चली गई समझें। यदि स्थिर राशि हो तो अभी गाँव मकानादि में ही माने। यदि सप्तमेश या सप्तम भाग में राहु केतु शनि आदि नीच ग्रह हों तो चोरी करने वाला कोई नीच जाति का कृष्ण वर्ण का निर्जन स्थान में रहने वाला, दाढ़ी, मूंछ, व केशधारी होता है। सप्तमेश वक्री होने पर या अस्टम में सूर्य मंगल होने पर भी नष्ट वस्तु नहीं मिलती है।

इसके अतिरिक्त रोहिणी पुष्य उत्तराषाढ़ा, विशा पूर्वाषा शत अश्विनी इन नक्षत्रों में खोई वस्तु शीघ्र मिलती है। मृग. अश्ले, हस्त, अनु, उ. भा. पू भा. नक्षत्रों में खोई वस्तु कष्ट से मिलती है। आर्द्रा ज्येष्ठा आदि मध्य लोचन नक्षत्रों में खोई वस्तु कभी नहीं मिलती।

खोए हुए पशु का विचार—

जब कोई व्यक्ति प्रश्न करे कि मेरा खोया हुआ पशु मिलेगा या नहीं तो पचाँग में देखें कि गुम होने के दिन सूर्य किस नक्षत्र पर था। सूर्य नक्षत्र से ९ नक्षत्र तथा खोया पशु बन में होता हैं। १० से १५ तक खोया पशु मार्ग में आ रहा है। १६ से २२ तक खोया पशु शीघ्र ही घर पर आया चाहता है। २२ से २७ नक्षत्र तक खोया पशु कभी वापिस नहीं मिलेगा—ऐसा कहना चाहिए।

भाग्य देखने का चक्र

आप किसी को कहें कि वह ३१ के अन्दर का कोई अंक दिल में सोच ले और बतलायें कि वह अंक किस नम्बर के खाने में है। जिस नम्बर के खाने में वह अंक सोचा हुआ बताये उनके ऊपर के दायें कोने के (हिन्दसों) अंको को जमा करलो बस उसका सोचा हुआ अंक निकल आयेगा और इस अंक पर उसके भाग्य का हाल बता दो।

उदाहरण :—किसी मनुष्य ने अपने दिल में ३१ का अंक सोचा है। अब देखो कि यह ३१ का अंक खाना नं० १, २, ३, ४, ५ में मिलता है। अब इन खानों के ऊपर के दायें कोने के अंकों १, २, ४, ८, १६ को जोड़ो तो ३१ का अंक बनता है अतः प्रश्नकर्ता ने ३१ का अंक सोचा है और इसके अनुसार देखा तो लिखा है, कि मत ख्याल करो कि तुम्हारी इच्छा पूरी नहीं होगी, तुम अपना पुरुषार्थ रखो सफलता के चिन्ह पाए जाते है।

नं०१

७	५	३	१
१५	१३	११	९
१७	१९	२१	२३
२५	२७	२९	३१

नं०२

७	६	३	२
५	१४	११	१०
२३	२२	१९	१८
३१	३०	२७	२६

नं०३

३०	२९	२८	४
२२	२१	२०	२३
१५	१३	१२	१४
५	६	७	३१

नं०४

३०	१०	२८	८
२६	२५	२४	३१
१४	१३	१२	२७
९	६	११	१५

नं०५

२९	३०	३१	१६
२६	२५	२४	२०
११	२२	२३	२७
१७	१८	१९	२८

(१) तुम्हारे मन की मुराद उस समय पूरी होगी, जब तुम को इस का ख्याल भी न होगा। (२) भाग्योदय होने वाला है। (३) किसी ऐसी जगह से तुम्हारी उम्मीद पूरी होगी जिसका तुम को ख्याल भी नहीं। (४) जिस बात के लिए परेशान हैं अब उसकी सफलता में और देर न होगी। (५) तुम्हारे लिए खुशी का समय आने वाला है। (६) घबराओ नहीं तुम्हारी बेहतरी का जरिया जल्द निकलेगा। (७) तुम्हारी मुश्किल जल्द ठीक हो जाएगी। (८) तुम्हारे भाग्य में रुपया लिखा है किन्तु देर से मिलेगा। (९) तुम्हारे सामने थोड़े दिनों में एक तजबीज रखी जाएगी इसे मान लेने से पहले आप को अच्छी तरह सोच लेना होगा। (१०) इस समय तुम्हारा वक्त गड़बड़ में है, जल्दी समय ठीक हो जाएगा। (११) तुम्हारे फिकर और गम का समय गुजर गया है अब तुम को आराम और खुशी मिलेगी। (१२) तुम्हारा काम नियत समय पर ठीक हो जाएगा अतः दूसरों की सलाह मत लो। (१३) तुम्हारी मुश्किल किसी तरीके से हल हो जाएगी। (१४) जिस काम के लिए हैरान हो रहे हो उसकी सफलता में रुकावटें पैदा होंगी। (१५) भाग्य की ठोकर तुम्हारे ख्याल को बदल देगी। (१६) सबर करो अभी कुछ दिन और बाकी हैं। (१७) जो समय तुम पर बीत रहा है आगे इसमें बेहतरी होगी विश्वास रखो। (१८) परेशानी को दूर कर दो अब समय आ गया है कि तुमको आराम व खुशी मिलेगी। (१९) पुरुषार्थ करते रहो लाभ अवश्य होगा। (२०) तुम्हें यह जानकार खुश होना चाहिए तुम्हारे हालात किसी जरिएसे ठीक होने वाले हैं। (२१) तुम्हारे हालात अजीब चक्र में हैं यह तकरीबन एक मास तक ठीक हो जायेंग। (२२) तुम को जल्द ही खबर मिलेगी जो तुम्हारे हक में होगी। (२३) तुम देर से परेशान हो तुम्हारा कारोबार थोड़े दिनों तक बनेगा जिससे तुमको लाभ होगा। (२४) समय आने वाला है तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाएगी। (२५) किसी भी जरिए तुम्हारा काम ठीक हो जाएगा। (२६) फिजूल बातों पर अपना समय और दिमाग खर्च न करो इज्जत व खुशी तुम्हारे साथ है। (२७) भाग्य का सितारा अच्छा है. जिन हालातों से तुम डरते हो वह पैदा नहीं होंगे। (२८) तुम अपने काम में लगे रहो जिन कामों में तुम को दखल नहीं, उनमें दखल न दो खुद ठीक हो जायेंगे। (२९) तुम को यह पता है कि तुम्हारे दिन गरदिश में हैं तो तुम उस मार्ग पर क्यों चल रहे हो जिसमें तुम को नुक्सान हो। (३०) जब तुम जानते हो कि तुम ठीक रास्ते पर हो तो ख्यालात पर पक्के रहो घबराओ नहीं। (३१) यह मत ख्याल करो कि तुम्हारी इच्छा पूरी नहीं होगी, अपना पुरुषार्थ जारी रखो सफलता के चिन्ह पाये जाते हैं।

सम्वत २०३४ के हमारे पचांग में कुछ नवीन विशेषताएं

(i) ग्रह रत्नों का चुनाव तथा उनको धारण करने की विधि।

(ii) संदिग्ध पूर्णिमा एकादशी तिथ्यादि व्रत निर्णय

(iii) हिमाचल प्रदेश तथा उसके निकटवर्ती प्रदेशों शहरों के उदयास्त, चक्र, चमत्कारी जन्त्र मन्त्र, हस्त रेखा ज्ञान-

(मंगलीक विचार और आप का भाग्य: अगामी वर्ष का पचांग और भी बहुत से ज्योतिष सम्बन्धी महत्व पूर्ण तथ्यों को समाविष्ट कर, आपके लाभार्थ प्रस्तुत किया प्रस्तुत किया जाएगा।

४. हमारे पचांग में सक्रांतियां ग्रह स्पष्ट उदय-अस्त आदि गलत नहीं दिए जाते बल्कि उनका निर्धारिण दृक्पक्षीय आधार लेकर शास्त्र सम्मत किया जाता है।

५. "पण्डित देवीदयालके नाम छप रहे अन्य पचांगोंमें सक्रांति सबंधी भ्रामक तथा गम्भीर अशुद्धियों को देख कर ही हमें कुछ सज्जनों ने उन अशुद्धियोंकी ओर संकेत किए है जिस से प्रातः स्मरणीय मेरे प्रपितामह पं देवी दयालजी ख्याति को धक्का पहुंचा है इसका हमें भी बहुत खेद है।

६. हमारा उद्धेश्य पचांग में यथा सम्भव शुद्ध प्रामाणिक तथ्यों तथा प्रत्येक वर्ष इसके विषय प्रतिपादन में वृद्धि करना तथा नवीनता लाना है इसमें हम कहां तक सफल रहे है इसका निर्णय स्वयं पाठक वृन्द करेंगे।

पन्ना लाल शर्मा एम० ए० (हिन्दी-संस्कृत)
सम्पा० पंचाग दिवाकर जालन्धर

मेष लग्न—कृश, भूरी आंख, बाल अधिक, गोल चेहरा, सुन्दर, ऊष्ण प्रकृति, वात बिकार, कठोर भाषण, मन की अनिश्चित स्थिति. क्रोधी, छोटा कद, माता का मुख पूर्व की ओर, मकान पुराना, स्त्रियें १, ५ व ७ पास हों, माता का वस्त्र लाल रंग का हो, पहले मीठा भोजन किया हो और बालक दीर्घ शब्द से रोया हो।

वृष लग्न—गौर वर्ण, स्थूल शरीर; काले नेत्र, निष्कपटी, स्थिर व शांत स्वभाव, गम्भीर, शीत प्रकृति, लम्बा, माता का शिर दक्षिण की ओर, मकान नया, ड्योढी का दरवाजा दक्षिण की ओर, माता का वस्त्र सफेद और चांदी के भूषण, पहले शाकादि भोजन किया हो, बालक दीर्घ शब्द से रोया हो।

मिथुन लग्न—कृश शरीर, बात-श्लेष्म-प्रकृति, भूरे नेत्र, अल्प बाल; लम्बा चेहरा, तीक्ष्ण विचार, शूर, अभिमानी, द्रव्यवान्, रोगयुक्त नेत्र, चचल स्वभावी, स्त्रियें ३ व ५, माता का मुख पश्चिम की ओर, स्तनों में दूध थोड़ा, पित्त पीड़ा, माता के दाहिने अग में लस न, पहले नमकीन भोजन लिया हो, वस्त्र पुराना, मकान का दरवाजा पश्चिम की ओर, बालक दीर्घ शब्द से रोया हो।

कर्क लग्न—स्थूल शरीर, गोल मुख, गौर वर्ण, बहुत बाल, तैरने में प्रवीण, दूरदर्शी, नि:स्वार्थी, लेखक, परिश्रमी, लोकनायक व हितवादी, कद लम्बा, कोमल शरीर, वात-श्लेष्म प्रकृति, नेत्र चंचल, माता पिता को कष्ट, माता का मुख उत्तर की ओर, पुराने वस्त्र, पहले कुछ थोड़ा भोजन किया हो, सोने का आभूषण हाथ में, स्त्रियें ३, ५ व ७ हों, बालक ने शब्द देर से किया हो।

सिंह लग्न—रक्त वर्ण, गोल व लाल नेत्र, केश बहुत, चौड़ा चेहरा, अस्थिर, मन कठोर, कद छोटा, माता का मुख दक्षिण की ओर रक्त वस्त्र, सोने के आभूषण, कसैला खट्टा भोजन किया हो, स्त्रियें ३, ५ व ७, नया मकान, बालक की पीठ पर चिह्न हो और दीर्घ शब्द से रोयें।

कन्या लग्न—स्थूल व मध्य देह, ऊंचा मस्तक, गौर-वर्ण, गोल चेहरा, चंचल वृत्ति, थोड़े बाल, स्वार्थी, पाप बुद्धि, स्त्री प्रिय, कंठ और वक्ष में चिह्न हो, माता का मुख उत्तर की ओर, स्त्रियें ४व५, माता लाल वस्त्र से युक्त हो, पिता घर से बाहर, बालक थोड़े शब्द से रोया हो।

तुला लग्न—साधारण प्रकृति, गौर वर्ण, लम्बा चेहरा काले नेत्र, बड़ा नाक, थोड़े बाल, तीक्ष्ण बुद्धि, रोगी, स्त्री अभिलाषी, व्यापार में निपुण, द्रव्य सम्पन्न, दुबला शरीर, माता कष्ट में, लड़ाई झगड़ा, माता का मुख पश्चिम की ओर, स्त्रियां ३ व ७ एक कंवारी कन्या भी हो, कषाय भोजन किया हो, पुराना वस्त्र, बालक दीर्घ शब्द से रोये।

वृश्चिक लग्न—ऊंचा कृश शरीर परन्तु मजबूत, भूरे नेत्र, कपटी, स्वार्थ के लिए दूसरे का नुकसान चाहने वाला, व्यवहार कुशल, स्वतन्त्र विचार, कपिल वर्ण, केश लम्बे, माता ने भूषण पहने हों, स्त्रियां ४ व ५, माता का सिर पूर्व को, माता पिता क्लेश में, पुराना रक्त वस्त्र, घर का दरवाजा उत्तर को, बालक की पीठ पर चिह्न, कंठ में पीड़ा, बालक देर से शब्द करे।

धन लग्न—स्थूल शरीर, गोल चेहरा, लम्बा नाक, लाल गौर वर्ण, स्थिर व शांत स्वभाव, द्रव्य अभाव का दुःख, विद्वान, वेदांत विषय प्रिय, आलसी, स्थिर बुद्धि, डरपोक, ऊंचा मस्तक, विशाल नेत्र, माता का मुख उत्तर की ओर, रक्त वस्त्र, चांदी के भूषण, स्त्रियें, ३व५, नया मकान दरवाजा दक्षिण की ओर, पक्वान्न भोजन किया हो, बालक के हृदय पर चिह्न और बालक दीर्घ शब्द से रोया हो।

मकर लग्न—कृश शरीर, बहुत केश, मोटा नाक, ऊंचा मस्तक, द्वेषी, आलसी लोभी, विचार हीन, बात विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना वस्त्र, कसैला भोजन व शीतल जल पिया हो, स्त्रियें ३, ४व६, पुराना घर, घर का दरवाजा उत्तर की ओर, बालक ने थोड़ा शब्द किया हो।

कुम्भ लग्न—कृश शरीर, बहुत केश, मोटा नाक, ऊंचा मस्तक द्वेषी, आलसी, लोभी, विचार हीन, वात विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना वस्त्र, कसैला भोजन व शीतल जल पिया हो, स्त्रियें ३, ४व६, पुराना भोजन किया हो, पिता घर में न हो और बालक ने थोड़ा रुदन किया हो।

मीन लग्न—स्थूल शरीर, गौर वर्ण, चपटी नाक ऊंचा मस्तक, कांजरे नेत्र, श्लेष्म प्रकृति, परोपकारी व दयालु, धर्मप्रिय, गम्भीर, द्रव्याभिलाषी, कीर्तिमान, माता का मुख उत्तर की ओर, पिता घर में, पहले २ स्त्रियां हों बाद में ३ व ५ स्त्रियां आई हों, पलंग का पाया टूटा हुआ हो, बालक देर से रोये।

पितृ परोक्ष ज्ञान

बालक के जन्म समय यदि लग्न को चन्द्रमा देखता हो और सूर्य जन्म लग्न से अष्टम, नवम, एकादश तथा द्वादश स्थान पर चर राशि का हो कर पड़ा हो और चन्द्रमा लग्न को न देखता हो तो पिता बालक के जन्म समय दूसरे देश में था। इन्हीं उपरोक्त स्थानों में सूर्य स्थिर राशि का हो तो पिता घर में नहीं था परन्तु देश में ही है। इसी प्रकार सूर्य के द्विस्वभाव में होने पर मार्ग में कहे। परन्तु इन योगों में चन्द्रमा लग्न को न देखता हो।

सुख और दुख के कारण ग्रह

गुरुशुक्र से सांपत्तिक स्थिति व द्रव्य लाभ का विचार, शुक्र से पैतृक सुख का, सूर्य चन्द्रमा से शारीरिक या मानसिक सुख का, गुरु से बुद्धि, विद्या व संगीत का, सूर्य गुरु और शनि से नौकरी, अधिकार, राजसम्मान का विचार, बुध, शुक्र से व्यापार का, लेन देन के धन्धे का, और मंगल से साहस, पराक्रम व यश का विचार करना चाहिए।

ग्रहों के रोग निदान ज्ञान

किन ग्रहों में रोग होते हैं। नीचे लिखे अनुसार जानना, गुरु चंद्र से कफ रोग, शुक्र-चन्द्रमा से वात कफात्मक, शनि-राहु-केतु से वात रोग, बुध से त्रिदोष, सूर्य मंगल से पित्त रोग।

अंग पीड़ा ज्ञान

कुंडली के द्वादश भावों से शरीर के किसी भाग में पीड़ा या रोग होना निश्चित है। प्रथम भाव से मुख, दांत, दाढ़, गला, जीभ, मस्तक में पीड़ा व रोग होता है। द्वितीय भाव से दाहिने नेत्र में, तृतीय भाव से दाहिना कान, गर्दन, हाथ में, चतुर्थ से पेट, गुदा, पचम से कमर के ऊपर का भाग, षष्ठ से गुप्त स्थान, दाहिना पांव, सप्तम से पेट का मध्यभाग नाभी, अष्टम से गुह्य स्थान, बायां पांव, नवम से कमर के ऊपर का भाग, दशम से पेट गुदा, एकादश से बायां हाथ, कान, गर्दन और द्वादश भाव से बाईं आंख और पैर के तलवे में रोग कहे।

जन्म कुण्डली में विचारणीय योग

बालक जन्म के समय मृत्यु योग

लग्न में व सप्तम में पापी ग्रह हों और चन्द्रमा पापी ग्रहों के साथ वहां स्थित हो उस चन्द्रमा को सौम्य ग्रह न देखते हों तो उत्पन्न हुआ बालक शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता है ॥१॥

चन्द्रमा पापी ग्रह से युक्त हुआ लग्न, द्वादश, सप्तम, अष्टम इन में से किसी स्थान में हो, शुभ ग्रह केन्द्रों में न हों, चन्द्रमा भी शुभ ग्रहों की दृष्टि से बर्जित हो तो जन्म वालि की मृत्यु को देने वाला होता है। क्षीण चन्द्रमा लग्न में हो, केन्द्रों में व आठवें घर पापी ग्रह हों इस योग में उत्पन्न हुआ बालक मृत्यु को प्राप्त होता है। इसी तरह पापी ग्रहों के मध्य चन्द्रमा शुभ लग्न में हो और सातवें आठवें पापी ग्रह हों यदि वलवान् शुभग्रह से चन्द्रमा दृष्ट न हो तो बालक माता-पिता के साथ मृत्यु को प्राप्त होता है। यदि बलवान शुभ ग्रहों करके चन्द्रमा देखा जाता हो तो माता की मृत्यु नहीं होती। द्वादश स्थान में शनि हो, सूर्य नवम में हो, चन्द्रमा लग्न में, मंगल अष्टम स्थान में हो यह सब ग्रह यदि बलवान गुरु से दृष्ट न हों तो उत्पन्न बालक की शीघ्र ही मृत्यु हो जाती है। यदि वलवान् गुरु किसी को देखे किसी को न देखे व बलहीन गुरु सब को देखे तो शीघ्र मृत्यु नहीं होती। यदि गुरु सब को देखता हो तो यह फल नहीं होता। पापी ग्रह से युक्त चन्द्रमा पंचम, सप्तम, नवम, द्वादश, लग्न और अष्टम स्थानों में हों, बलवान्, वुध, गुरु और शुक्र इनमें से किसी एक से भी युक्त दृष्ट न हो तो यह योग नहीं होता।

चन्द्रमा जन्म लग्न से आठवें स्थान में हो और पापी ग्रहों से दृष्ट हो तो शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है. इस चन्द्रमा को पापी ग्रह न देखते हों, शुभ ग्रह देखते हों तो आठ वर्ष तक जीवित रहता है। पापी ग्रह और शुभ ग्रह तीनों देखते हों तो चार वर्ष जीता रहता है। शुभ या पापी ग्रह कोई नहीं देखता हो तो यह योग नहीं होता। शुभ ग्रह से युक्त और शुभ क्षेत्र में छठे स्थान में चन्द्रमा हो तो मृत्यु को नहीं देता। कृष्ण पक्ष में जिन का जन्म हो शुक्लपक्ष में रात्रि का जन्म हो तो भी छठे आठवें स्थान में शुभ व पापी ग्रह से दृष्ट हो तो भी मृत्यु का देने वाला नहीं होता। छठे आठवें स्थान में शुभ ग्रह हों इनको बलवान् पापी ग्रह देखते हों तो उत्पन्न हुआ बालक महीना भर जीता है।

माता पिता का अरिष्ट योग

पिता के लिए सूर्य तथा दशम स्थान से, और माता के लिए चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से विचार करना चाहिए। यदि बालक की जन्म कुण्डली में सूर्य के साथ अथवा दशम स्थान में पापी ग्रह बैठे हों या देखते हों या सूर्य पाप ग्रहों के मध्य में पड़ा हो तो बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिए! यदि सूर्य से ४।६।८ स्थान में पापी ग्रह हों, शुभ कोई भी न हो, शुभ नवांश में स्थित शुभ ग्रहों करके देखे जा सकते हों तो भी पिता को कष्ट जानें।

इस प्रकार चन्द्रमा तथा चतुर्थ भाव से माता का विचार करे, चन्द्रमा के साथ २।१२वें स्थान व ४।६।८ स्थान में पापी ग्रह हों, शुभ न हों तो माता को कष्ट जाने।

अरिष्ट भंग योग

अति बलवान् गुरु लग्न में विराजमान हुआ अनेक प्रकार के अरिष्टों को दूर करता है। लग्नपति अति बलवान् केन्द्रस्थित शुभ ग्रहों करके देखा हुआ दीर्घ आयु देता है। पापी ग्रहों के वर्गों में स्थित हों तो अरिष्टों को दूर करते हैं।

नेत्र विकार योग

तनु १ धन २ व्यय १२ पति युत भृगु आये बसे त्रिक ३।८।१२ धाम। राशीश धन २ रवि युत माहि नेत्र को हान ॥ शुक्र सूर्य तनुनाथ युत जाए बसे त्रिकधाम, जन्म अन्ध का योग है भाषत बुध गुण ग्राम। मात, तात, भ्रात, पुत्र वासी कारी ग्रह नाथ। सूर्ययुत शुक्र त्रिकधाम बसे तिनं के नेत्र नहीं माथ ॥ चन्द्र भौम जो द्वादश वाम नेत्र का हान, भौम, राहु, दाहिनी नयन वुध जन कहत वखान।

मूक योग

छटे घर का स्वामी वुध के साथ लग्न में बैठा हो तो जवान तोतली या गूंगा होता है। चन्द्रमा लग्न में हो और छठे घर की ...

दूसरे घर का स्वामी बृहस्पति के साथ ६।८वें या १२वें घर में हो अथवा शुक्लपक्ष का चन्द्रमा मंगल के साथ लग्न में हो तो तोतली जबान और गूंगा होता है।

ऋणी मनुष्य का योग

धन स्थान में पापी ग्रह हों लग्नेश द्वादश स्थान में स्थित हो और नवमेश लाभेश से दृष्ट व युक्त हो तो ऋणी हो।

धनेश अस्तंगत नीच राशिगत हो, धन व अष्टम भाव पाप युक्त हों तो मनुष्य ऋण से दवा रहे।

लाभेश की राशि जिस नवांशक में हो उसका स्वामी दुष्ट भाव में पापयुक्त हो तथा क्रूर षष्ठांश में हो तो मनुष्य ऋण ग्रस्त होता है।

संन्यास योग

लग्नेश पर केवल शनि की दृष्टि हो अन्य की नहीं अथवा शनि को लग्नेश देखे और लग्नेश को शनि देखे, बल रहित हो तो संन्यास योग होता है।

कर्ण दोष

षष्ठेश बुध चौथे हो उसे शनि चतुर्थ दृष्टि (शत्रु दृष्टि से) देखे अथवा छठे भाव में बुध शनि से दृष्ट हो तो बधिर योग होता है कानों से नहीं सुनता। बुध छटे सुक्रूर दशम हो और रात्रि क. जन्म हो तो कान से नहीं सुनता।

जिह्वा दोष

बुध ७।८।१२ राशि में किसी में हो, सूर्य चौथे भाव में चन्द्रमा से दृष्ट हो षष्ठेश पापी ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य गूंगे स्वर वाला होता है। शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा लग्न में मंगल युक्त हो तो जीभ नष्ट हो। बुध १।११ राशि का गुरु से पूर्ण दृष्ट हो तो गतवाणी मनुष्य की हो।

कुब्जा दोष

चन्द्रमा पहले या पिछले नवाँशक के तीसरे भाव में हो, शनि चौथे हो, लग्नेश शत्रु राशि का हो और मंगल

राशि	स्वामी	शुभ अशुभ	स्त्री, पुरुष संज्ञा	सम विषम	जाति	धर्म	लक्षण	स्वभाव	अवस्था	वर्ण	गुण	तत्व	समय	विभाग	स्थान	निर्जल	दिशा	पहर
मेष	मंगल	अशुभ	पुरुष	विषम	क्षत्रिय	क्रूर	चंचल	चर	युवा	लाल	रज	अग्नि	रात्रि	मस्तक	पर्वत	निर्जल	पूर्व	२
वृष	शुक्र	शुभ	स्त्री	सम	ब्राह्मण	सौम्य	शांत	स्थिर	युवा	गोरा	तम	भूमि	,,	मुख	जमीन	,,	दक्षिणां	४
मिथुन	बुध	शुभ	पुरुष	विषम	वैश्य	क्रूर	चं+शां	द्विस्वभाव	बाल	हरा	सत	वायु	,,	स्तन	जंगल	,,	पश्चिम	३
कर्क	चन्द्र	शुभ	स्त्री	सम	शूद्र	सौम्य	चंचल	चर	बाल	गोरा	रज	जल	,,	हृदय	जल	सजल	उत्तर	१
सिंह	सूर्य	अशुभ	पुरुष	विषम	क्षत्रिय	क्रूर	शांत	स्थिर	बृद्ध	लाल गोरा	तम	अग्नि	दिन	उरु	पर्वत	निर्जल	पूर्व	१
कन्या	बुध	शुभ	स्त्री	सम	शूद्र	सौम्य	चं+शां	द्विस्वभाव	बाल	चित्र	सत	भूमि	,,	कमर	जमीन	,,	दक्षिण	१
तुला	शुक्र	शुभ	पुरुष	विषम	वैश्य	क्रूर	चंचल	चर	युवा	नीला	रज	वायु	,,	नाभि	जंगल	सजल	पश्चिम	४
वृश्चिक	मंगल	अशुभ	स्त्री	सम	ब्रह्माण	सौम्य	शांत	स्थिर	युवा	सुनहरा	तम	जल	,,	लिंग	जल	सजल	उत्तर	१
धन	गुरु	शुभ	पुरुष	विषम	क्षत्रिय	क्रूर	चं+शा	द्विस्वभाव	बाल	पीला	सत	अग्नि	रात्रि	जंघा	पर्वत	निर्जल	पूर्व	३
मकर	शनि	अशुभ	स्त्री	सम	शूद्र	सौम्य	चंचल	चर	बृद्ध	भूरा	रज	भूमि	,,	घुटना	जमीन	सजल	दक्षिण	४
कुम्भ	शनि	अशुभ	पुरुष	विषम	वैश्य	क्रूर	शांत	स्थिर	बृद्ध	काला	तम	वायु	दिन	पिंडुली	जंगल	सजल	पश्चिम	३
मीन	गुरु	शुभ	स्त्री	सम	ब्राह्मण	सौम्य	चं+शां	द्विस्वभाव	बृद्ध	कर्कट	सत	जल	रात्रि	पाँव	जल	सजल	उत्तर	४

ग्रह—गुणस्वभाव चक्र

ग्रह	स्वगृह राशि	मूल त्रिकोण	गुण	स्वभाव	वर्ण	रूप	अधिकार	शारीरिक भाग	शरीर के अंतर्भाग	जाति	तत्व	आप्तवर्ग सुख	स्त्री पुरुष	विद्या	शुभाशुभ	दिशा	बलाबल समय	भाग्योदय काल वर्ष
रवि	सिंह	सिंह	सत्व	स्थिर	लाल	गोल	सिर से मुख	आत्म	अस्थि	क्षत्रिय	अग्नि	पिता	पुरुष	राजविद्या	अशुभ	पूर्व	दिन	२२—२४
चन्द्र	कर्क	वृष	सत्व	चंचल	गोरा	सुन्दर	गले से हृदय	मन	रुधिर	वैश्य	जल	माता	स्त्री	ज्योतिष	बलीशुभ निर्बलीऽशु	वायव्य	रात्रि	२४—२५
मंगल	वृश्चिक	मेष	तम	उग्र	लाल	कृश	पेट से पीठ	सत्व	मज्जा	क्षत्रिय	अग्नि	बन्धु	पुरुष	मनु	ऽशुभ	दक्षिण	रात्रि	२८—३२
बुध	कन्या	कन्या	रज	मिश्र	हरा	प्रसन्न	हाथ पाँव	बाचा	त्वचा	वैश्य	भूमि	बन्धु	क्लीव नपुंसक	गणित	शुभाशुभ	उत्तर	सर्वकाल	३२—३६
गुरु	मीन	धन	सत्व	क्षिप्र	पीला	स्थूल	कमर से जंघा	जीव	चर्बी	ब्राह्मण	आकाश	संतान	पुरुष	वेदांत व्याकरण	शुभ	ईशान	दिन	१५—२२
शुक्र	वृष	तुला	रज	मृदु	सफेद	तेजस्वी	शिशन से वृषन	काम	वीर्य	ब्राह्मण	जल	स्त्री	स्त्री	गायन बादन	शुभ	आग्नेय	दिन	२६—२८
शनि	मकर	कुम्भ	तम	दारुण	काला	आलसी	पि घुटना	दुःख	स्नायु	अन्त्यज	वायु	नौकर	क्लीव	कायदा	अशुभ	पश्चिम	रात्रि	३६—४२
राहु	कन्या	कर्क	तम	दारुण	मिश्र	मलीन		दुःख	स्नायु	नीच		आजी		गारुडी	अशुभ	नैर्ऋत्य		२४—५०
केतु	मीन	मकर	तम	दारुण	मिश्र	मलीन		दुःख	स्नायु	नीच		आजी		तंत्रमंत्र	अशुभ			४८—५४

सूर्यादि ग्रहों का द्वादश भावों में गोचर फल

भाव	लग्न	धन	सहज	सुख	सुत	रिपु	स्त्री	मृत्यु	भाग्य	कर्म	लाभ	व्यय
सूर्य	स्थान हानि	भय	धन प्राप्ति	मान नाश	दीनता	शत्रु नाश	यात्रा	पीड़ा	पुण्य नाश	अभीष्ट सिद्धि	लाभ	व्यय
चन्द्र	उत्तम भोजन	धन क्षय	धन लाभ	कुक्षि में पीड़ा	कार्यनाश	लाभ	धनप्राप्ति	रोग बड़	राजा से भय	सुख	लाभ	शोक
मंगल	भय	हानि	सुख	शत्रु वृद्धि	द्रव्यनाश	धन हानि	शस्त्र घात	रोग	शोक	लाभ	द्रव्य प्राप्ति	व्यय
बुध	बन्धन	धन लाभ	शत्रु भय	द्रव्य प्राप्ति	मान	बुरी स्थिति	पीड़ा	धनप्राप्ति	चित्त में खेद	सुख	लाभ	धन हानि
गुरु	भय	धन लाभ	पीड़ा	शत्रु वृद्धि	सुख	शोक	राजमान	रोग वृद्धि	सुख	दीनता	प्रतिष्ठा	पीड़ा
शुक्र	शत्रु नाश	धन लाभ	प्रसन्न	धन लाभ	पुत्र सुख	शत्रुवृद्धि	शोक	धनलाभ	श्रेष्ठ	पीड़ा	धन वृद्धि	लाभ
शनि	बुद्धि भ्रम	क्लेश	सुख प्राप्ति	शत्रुवृद्धि	पुत्र कष्ट	सुखप्राप्ति	कलह	रोग	सुख	निर्धन	द्रव्य प्राप्ति	धन हानि
रा. के.	हानि	निर्धने	धन लाभ	वर	शोक	लाभ	कलह	पीड़ा	पाप कर्म	वैर	सुख	द्रव्य हानि

अथ जन्म कुण्डल्यां तन्वादि भावस्थ फलानि

ग्रह	१ तनु	२ धन	३ सहज	४ सुख	५ पुत्र	६ रिपु	७ स्त्री	८ मृत्यु	९ भाग्य	१० कर्म	११ लाभ	१२ व्यय
सूर्य	शूरवीर	बहुधन	सुमति	पीड़ा	असुता	बलवान्	पराजित	अल्पायु	पुत्रवान्	दैन्य	बहुधन	पतित
चन्द्र	जड़	कुटुम्ब	हिंसक	सुख	पुत्रवान्	अल्पाय	कामी	रोगी	सौभाग्य	धनी	धनी	अंगहीन
मंगल	वणी	कुटुम्ब	सुमति	असुखी	असुता	सुखी	पराजित	अल्पायु	पापी	सुखी	धनी	मतिभंग
बुध	व्रणी	धनी	खल	पीड़ा	मन्त्री	अशत्रु	गुणवान्	नीच	तपस्वी	सधन	लाभ	दुर्जन
गुरु	विद्वान	सुवाक्या	कृपण	सुखी	धीमान्	अशत्रु	गुणवान्	नीच	तपस्वी	सधन	लाभ	खल
शुक्र	कामी	कुल प्रीत	कृपण	सुखी	सुखी	अशत्रु	कलह	नीच	तपस्वी	सधन	लाभ	खल
शनि	कामी	बहुधन	बुद्धिमान्	असुखी	कुपत्र	बली	पराजित	अल्पायु	अधर्म	सुखी	बहुधन	पतित
राहु	कामी	धन हानि	पराक्रम	असुखी	कुमति	सबल	प्रमेही	रोगी	अधर्म	सुखी	बहुधन	पतित
केतु	सकाम	धन हानि	पराक्रम	असुखी	कुमति	अधर्मी	प्रमेही	रोगी	अधर्म	सुखी	बहुधन	खल

अथ सर्वघातचक्रम् रोगार्ते गमने रणे नीयंगलेषु

राशय:	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
सू. घा	४	८	१२	५	९	१	६	१०	७	११	२	६
चं. घा	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	२१
भौ. घा	५	९	१	६	१०	२	७	११	८	१२	३	७
बु. घा	२	३	१०	३	७	११	३	८	५	९	१२	१
गु. घा	६	१०	२	७	११	३	८	१६	९	१	४	५
शु. घा	७	१०	३	८	१२	४	९	१	१०	२	५	६
श. घा	३	७	११	४	८	१२	५	९	६	२०	१	२
रा. घा	८	७	६	४	५	१०	१२	१	२	९	११	३
के. घा	८	७	१०	१	११	५	६	४	२	२	१२	९
मा. घा	का	मा	पौ.	मा.	फ	चै०	वै०	ज्ये.	आ	श्रा	भा	आ
तिथि	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
घात	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५
बा. घा	सू०	श०	चं०	बु०	श०	श०	गु०	शु०	शु०	मं०	गु०	शु०
न. घा	म०	ह०	स्व	ऽनु	मू०	श्र०	श०	रे०	भ०	रो.	आ	श्ले
यो. घा	वि	शु०	प	धृ०	प्री	शु०	शु०	व०	वै०	ग०	व्या	व०
ल. घा	१	२	४	८	१०	१२	६	८	९	११	३	५
ग्र. घा	मं	श०	बु०	चं०	सू०	बु०	शू०	मं०	गु०	श०	श०	गु०
ब. घा	क्ष	वै	शु०	वि	क्ष.	ब०	शु०	वि	त्र.	१व	शु०	वि.
ब. घा	र०	श्वे	ह०	पा	धू०	चि	कृ०	क०	पी	कृ०	मधू	कुर्व
स्त्री	मे०	वृ	वी	क०	सि	क०	तु०	वृ०	ध०	मं०	कु०	मी
चं घा	१	८	७	९	६	६	४	२	१०	११	५	१२

राशी घातक चक्र

द्वादश राशि के प्रत्येक मनुष्य को घातक चक्र में दिए अनुसार प्रत्येक तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न, चन्द्रमा घातक हैं। अतः मनुष्य को चाहिए कि वे अपना कोई भी इष्ट और शुभ कार्य घातक समय व मुहूर्त पर आरम्भ न करें।

बाल–कथवली पूतना–विधान

जन्म से			पूतना नाम	ग्रसित लक्षण	मूर्ति द्रव्य	बलि द्रव्य तथा समय	धूप	मन्त्र
दि ०१	मा ०१	वर्ष ०१	१ योगिनी २ मातृका ३ नंदिनी	ज्वर गात्रशोष अनाहार वमन मूर्छा कांपना हीन ज्वर	नदी की मिट्टी का पुतला ३ दिन विधान	उबले चावल सफेद चन्दन का लेप सफेद फूल ध्वजा ५ (चिलड़ियां) पूड़े ५ दीपक ५ प्रातः समय पूर्व दिशा में तीन दिन बलि देवे।	सरसों बालछड़ आक बिल्व पत्र बिल्ली और मनुष्य के केश नीम के घी का धूप	ॐ नमो भक्तवत्सले मोचिनि स्वाहा
दि ०२	मा ०२	वर्ष ०२	१ सुनंदिनी २ योगिनी ३ स्तनदा	ज्वर हाथ पांव संकोच दाँतों का पसीना आंखें मींचना ज्वरादिरोदन आखें दुखना	सेर चावल की पीठी का पुतला २ दिन विधान	उबले चावल सेर भर आटे के पूड़े मछली और बकरे का मांस ध्वजा १३ दीपक १३ पश्चिम दिशा में सन्ध्या समय ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत् सब वस्तुओं का धूप देना	ॐ नमो भगवति स्वाहा
दि ०३	मा ०३	वर्ष ०३	१ पूतना	ज्वर कम्प प्रलाप अरुचि आंख मींचना वमन रोमांच	पूर्ववत् मूर्ति	लाल चावल लाल ध्वजा लाल चन्दन लाल फूल सायं काल उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और सांप की कांचली का धूप देना।	ॐ नमो भगवति स्वाहा
दि ०४	मा ०४	वर्ष ०४	१ मुखमंडलिका २ आकाशयोगिनी	ज्वर गात्रभंग आंख मींचना शिर झुकना श्वास श्यामता अरुचि नींद न आना	चावल के चूर्ण का पुतला बिल्व के कांटे से रेखा	सफेद चन्दन का लेप सफेद फूल सफेद ध्वजा सेर भर आटे के पूड़े तीनों सन्ध्या समय पश्चिम दिशा में बलि ३ दिन देवे।	लहसन नीम के पत्ते मनुष्य के और बिल्ली के बाल गोघृत का धूप देना।	ॐ नमो पूतनेमातिबलिं भक्षशुभोभने बालकं मुंच।
दि ०५	मा ०५	वर्ष ०५	विडालिका	ज्वर हिक्का श्वास शूल गात्र संकोच अरुचि	सेर भर चावलों की पीठी का पुतला	उबले चावल ध्वजा ५ दीपक ५ सफेद चन्दन सफेद फूल अपराह्न के समय वृक्ष के मूल में पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत् धूप देना।	ॐ सुभगे सुभले देवि सर्वशत्रुनिवारिणि। कुरु शांतिं शिशोः स्वास्थ्यं जीवदानेन रक्षसि।
दि ०६	मा ०६	वर्ष ०६	शकुनी	ज्वर गात्र संकोच अरुचि श्वास	सेर चावलों की पीठी का पुतला बनाना	कृष्णोदन ध्वजा ५ दीपक ५ काले फूल मछली का मांस बकरे का मांस पायस दूध आध सेर आटे के पूड़े अपराह्न पश्चिम दिशा में तीन दिन बलि देवे।	कुठ गुग्गुल सफेद चन्दन सरसों हाथी का दांत गोघृत का धूप देना।	ॐ रक्षसि त्वं महाभागे बालं मुंच शुभाद्य नः, वरं कुरु।
दि ०७	मा ०७	वर्ष ०७	शुष्करेवती	ज्वर देह संकोच अरुचि कांपना रोदन करना	पूर्ववत् मूर्ति	सफेद ध्वजा ७ दीपक ७ सफेद फूल सफेद चन्दन सायं काल पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और लहसन से पूर्ववत् धूप देना।	ॐ नमोपद्मपत्राक्षि विशालाक्षि वने शिवे। संगृह्यबलिमाषक्ष बालं मुञ्च सुशोभने।
दि ०८	मा ०८	वर्ष ०८	विडालिका	ज्वर गात्र संकोच आंखें मींचना रोना जिह्वा-शोष शिर पीड़ा अरुचि	पूर्ववत् मूर्ति	पायस (खीर) दूध घी लाजा मध्याह्न व पूर्व संध्या समय दक्षिण दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गुग्गुल में घृत मिला कर उपरोक्त धूप देना।	ॐ नमो सर्वभूतेशि शोभने त्वं पिशाचिनि। बलिं चैवोररीकृत्य त्वरितं मुंच बालकम्॥
दि ०९	मा ०९	वर्ष ०९	मदोन्मत्ता	ज्वर वमन तृष्णा श्वास अफारा देह संकोच शूल	पूर्ववत् मूर्ति	उबले चावल मछली का मांस पापड़ गन्ना संध्या समय उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग को घृत में घिस कर पूर्ववत् धूप देना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट् स्वाहा।
दि १०	मा १०	वर्ष १०	रेवती	ज्वर वमन तृष्णा श्वास पीड़ा	पूर्ववत् मूर्ति	गुड़ उबले चावल घी ध्वजा २५ पूड़े २५ लाल फूल २५ सफेद फूल ४४ संध्या समय दक्षिण में २ दिन बलि देवे	गोश्रृङ्ग लहसन को घृत में मिला कर धूप देना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट् स्वाहा।
दि ११	मा ११	वर्ष ११	सुदर्शना	ज्वर अरुचि मुखशोष गात्र पीड़ा रोदन	माष उड़द की पीठी की मूर्ति	उबले चावल सफेद चन्दन लेपन सफेद फूल ध्वजा २५ दीपक २५ पूड़े २५ संध्या समय दक्षिण दिशा में बलि देवे।	पूर्ववत् धूप देना।	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास वज्रहताय ॐ हुं फट् स्वाहा।
दि १२	मा १२	वर्ष १२	अद्भुता	ज्वर रोदन पसीना आंखें दुखना सन्ताप रोमांच	सेर चावल की पीठी का पुतला	ध्वजा १३ पूड़े मछली का मांस बकरे का मांस पापड़ सन्ध्या समय दक्षिण में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग को घृत में घिस कर पूर्ववत् धूप देना।	ॐ नमोनारायण प्रज्वल २ तापं हर २ शोषय २ मर्दय २ हन दुष्टान् हुं फट् स्वाहा

नक्षत्र-कष्टावली

नक्षत्र चरण	च १	च २	च ३	च ४	कष्टलक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप-संख्या	जपार्थ नक्षत्रमन्त्राणि	बलिदान
अश्विनी १	दि ०६	दि ११	दि १०	दि २०	अर्ध गात्रपीड़ा वात ज्वर निद्राभंग	अश्विनी देवता	घृत कुम्भ सुवर्ण ब्राह्मण भोजन	५००० हजार	ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् वाचेंद्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः ॥ १ ॥	कुंकुम चन्दन चम्पक पुष्प गंबुल मोदक नैवेद्य गुड़ोदन धूप तिल।
भरणी २	दि ००	दि ८०	दि ४०	दि ११	छर्दिरोग शीतज्वर तंद्रा अनेक रोग	यम देवता	शर्करा घृत अजा गौ महिषी छायापात्र दान	१००० हजार	ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे देवस्त्वा सविता मध्वा नक्तु पृथिव्याः स ँ स्पृशस्पाहि अर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॥२॥	अगर गन्ध करवीर पुष्प गुग्गुल धूप गुड़ोदन नैवेद्य धूप दीप क्षेत्रपाल पूजा।
कृत्तिका ३	दि ०६	दि ११	दि १६	दि २८	रक्तनेत्र उरशूल नेत्र पीड़ा अतिदाह	अग्नि देवता	सुवर्ण गोदान ग्रह-शांति	१०००० हजार	ॐ अयमग्नि सहस्त्रिणो वाजस्य शांति ँ वनस्पतिः मूर्द्धा कवीरयीणाम् ॥३॥ अग्नये नमः ॥	चन्दन गंध पुष्प नैवेद्य गुग्गुल धूपघृत दीप तिलमाष गुड़ोदन पायस नैवेद्य।
रोहिणी ४	दि ०७	दि ०६	दि १८	दि ३०	शिरदर्द ज्वर पीड़ा कुक्षिशूल प्रलाप	प्रजापति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्ण गौ दुग्ध खंड	१००० हजार	ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः सबुध्न्या उपमा अस्यविष्ठा. सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥४॥	चन्दन गन्ध पुष्प असगन्ध धूप मोदक घृत क्षीर नैवेद्य।
मृगशिर ५	दि ०६	दि ०५	दि ०७	दि १०	अर्द्ध शरीर पीड़ा महाघोर कष्ट	सोम देवता	दधि तंडुल गोवत्स दान ब्राह्मण भोजन	१०००० हजार	ॐ सोमो धनु ँ सोमो अवन्तुमाशु ँ सोमो वीरः कर्मण्यन्दधाति यदस्यविदथ्य ँ सभेयम्पितृ श्रवणयो ददाश दस्तस्मै नमः ॥५॥	चन्दन गन्ध सौरभ पुष्प गुग्गुल धूप पायस नैवेद्य मधु घृत दुग्ध दध्योदन।
आर्द्रा ६	दि ००	दि १८	दि ००	दि ००	ज्वर सर्वाङ्ग पीड़ा निद्रानाश त्रिदोष	रुद्र देवता	कृष्ण वस्तु दान कृष्ण वस्त्रादि	१०००० हजार	ॐनमस्ते रुद्रमन्यव उतोत इषवे नमः बाहुभ्यमुत ते नमः ॥६॥ ॐ रुद्राय नमः।	हरिद्रा कुंकुम गन्ध सवन्तिकापुष्प अष्टगन्ध तिलपिष्ट धूप नैवेद्य घृत-क्षीरान्ननैवेद्य।
पुनर्वसु ७	दि ०७	दि १४	दि ०२	दि २१	अर्ध शरीर पीड़ा शिरपीड़ा ज्वर	अदिति देवता	सुवर्ण कमलदान ५ कन्या भोजन वस्त्र	१०००० हजार	ॐअदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता सपिता सपुत्रः। विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥७॥	कुंकुम गन्ध वारिज पुष्प गुग्गुल पुष्प घृत पायस नैवेद्य मोदक गुड़ घृत।
पुष्य ८	दि ०७	दि ०७	दि १०	दि ४१	ज्वर पीड़ा शूल अति कठिनरोग	बृहस्पति देवता	पीत वस्त्र सुवर्ण गोदान पक्वान्न दान	१०००० हजार	ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु यद्दीदयच्छवसऋतप्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ॐगुरवे नमः ॥८॥	कुंकुम अगर गंध अगस्त पुष्प घृत गुग्गुल धूपसार नैवेद्य दध्योदन।
आश्लेषा ९	दि ००	दि ००	दि ४१	दि ००	सर्व गात्र पीड़ा पाद पीड़ा	सर्प देवता	कुलमातृ योगिनी पूजा गो शय्यादान	१०००० हजार	ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥९॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः ॥	चन्दन गंध चम्पक पुष्प गुग्गुल घृत पुष्प मिष्टान्न हवि नैवेद्य तिल घृत दुग्ध।
मघा १०	दि १५	दि ०७	दि १७	दि २०	अर्ध गात्र पीड़ा शीतजन्य रोगभय	पितर देवता	तिल तंडुल माष वस्त्र दान	१०००० हजार	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्न पितरोऽमीमदन्त: पितरोऽतीतृपन्त पितरः शुन्धध्वम् ॥१०॥	चन्दन गंध चम्पक पुष्प गुग्गुल घृत पुष्प मिष्टान्न हवि नैवेद्य तिल घृत दुग्ध।
पूर्वाफाल्गुनी ११	दि ००	दि १५	दि ००	दि ३०	सर्वगात्र पीड़ा ज्वर अर्धशिर रोग	भग देवता	पित्तल पात्र यव माष गो स्वर्ण दान	१०००० हजार	ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मांधियमुदवाददन्नः भगप्रजन्नाय गोभिरश्वैर्भगप्रणेतृभिर्नृवन्तः स्याम ॥११॥ भगाय नमः ॥	चन्दनगन्ध चम्पक पुष्प गुग्गुल घृत धूप शर्करा मोदक पूपादान घृत-पायस नैवेद्य।
उत्तरा फा० १२	दि ०७	दि १४	दि ०७	दि ६०	शिर रोग महाज्वर कुक्षि शूल रोग	अर्यमा देवता	सुवर्ण रजत अन्न गौ वस्त्र दान	२००० हजार	ॐ देवावध्वर्यू आगत ँ रथेन सूर्यत्वचा। मध्वायज्ञ ँ समञ्जाथे प्रत्नथायं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥१२॥ अर्यमणे नमः ॥	कपूर कुंकुम गन्ध अर्कपुष्प घृत गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य घृतान्न होम।
हस्त १३	दि १५	दि १७	दि १५	दि ००	सर्वाङ्ग पीड़ा उदर शूल प्रस्वेद अफरा	सविता देवता	गोदान छाया पात्र रक्तवस्त्र सुवर्ण	१००० हजार	ॐ विभ्राड्बृहत्पिबतु सौम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम् वातजूतो यो अभिरक्षतित्मना प्रजा पुपोष पुरुधा विराजति ॥१३॥	कुंकुम [illegible] चन्दन गन्ध कमल पुष्प सुगंध गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य।
चित्रा १४	दि ११	दि ०६	दि ०६	दि १६	विविध रोग भय महादारुण कष्ट	त्वष्टा देवता	विचित्र वृषभ गुड़ तिल छाया पात्र	५००० हजार	ॐ त्वष्टातुरीयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदाछन्द इन्द्रियमुक्षा गौर्नवयोदधुः ॥१४॥ त्वष्ट्रे नमः ॥	कुंकुम अगरगन्ध विचित्र पुष्प गुग्गुल धूप मोदक घृत विचित्रान्न हवि नैवेद्य।

नक्षत्र	च १	च २	च ३	च ४	कष्टलक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप-संख्या	जपार्थं नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदानद्रव्याणि
स्वाति १५	दि ६०	दि १७	दे ३०	दि ००	अनेक तरह के रोग पैदा होवें	वायु देवता	रक्तगो स्वर्णपक्वान्न दान	५००० हजार	ॐवायोऽन्नरयिं वृद्धः सुमेधः श्वेतः सिषक्तिनि यूनामभिश्री ॐतेवायवेसमनसा विस्युरविश्वनरः स्वपन्था निचक्रः ॥१५॥	नन्दनगन्ध कमल पुष्प अगर गुग्गल धूप पायस शर्करा घृत नैवेद्य ।
विशाखा १६	दि १५	दि ००	दि ०४	दि १३	कुक्षिशूल रोग सर्व गात्र पीड़ा	इन्द्राग्नि देवता	रक्तपित्त वस्त्र कृष्ण वृषभ दान	२००० हजार	ॐइन्द्राग्नि आगतं सुतङ्गीर्भिर्नभोवरेण्यं । अस्य पादन्धियविता ॥१६॥	श्रीखण्ड चंदन गंध कमलपुष्प देवदारु धूप घृत पायस नैवेद्य ।
अनुराधा १७	दि ६०	दि १२	दि ३६	दि ३०	तीव्र ज्वर महारोग शिर पीड़ा	मित्र देवता	अन्न सुवर्ण गोदान छायापात्र	१००० हजार	उँ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवाय तदृतं सपर्यत दूरेदृशं तादेवजातायकेतवे दिवस्पुत्राय सूर्यायशंसत॥१७।	कुंकुम गन्ध कमल पुष्प चंदनधूप पायस घृत पुष्प मोदक नैवेद्य ।
ज्येष्ठा १८	दि ५६	दि ०९	दि ०६	दि ०४	पित्तरोग शरीर कांपना व्याकुलता	इन्द्र देवता	सुवर्ण नीलवस्त्र छायात्र दान	५००० हजार	ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवे हवे सुहवं शूरमिन्द्रम । ह्वयामि शक्रम्पुरहूतमिन्द्रं स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्र;॥१८।	चदन गन्ध सुगन्ध पुष्प कपूर धूप विचित्रान्न नैवेद्य ।
मूला १९	दि ००	दि ०६	दि १५	दि ०६	ज्वर शूल सन्निपात महा कठिन रोग	निर्ऋति देवता	सप्तधान्य सुवर्णकृष्ण गौछायापात्र दान	५००० हजार	ॐ मातेव पुत्रं पृथ्वी पुरीष्यामग्निं स्वेयोनावभारुखा तां विश्वैर्देवैर्ऋतुभिःसंविदानःप्रजापतिर्विश्वकर्माविमुञ्चतु १९	कृष्ण अगर गंध नीलपद्म पुष्पकृष्ण अगरधूप मिष्टान्नहवि माष नैवेद्य
पूर्वाषाढ़ा २०	दि ००	दि १५	दि २४	दि १०	शरीरपीड़ कंपरोग शिररोग महाकष्ट	आप देवता	श्वेतवस्त्र तंडुलस्वर्ण जलकुम्भ १०००	२००० हजार	ॐ अपाधमप किल्विषमपकृत्यामपोरप, अपामार्गत्वमस्म-दपटुः दुश्वप्न्यं सुव; ॥२०॥	चन्दन गन्ध पद्म गुग्गल धप घृत पायस नैवेद्य ।
उ० षाढ़ा २१	दि ३०	दि २४	दि २६	दि १६	कटि पीड़ा प्रलापउरु शूल रोग युक्त	विश्वेदेवा देवता	ब्राह्मण भोजन अन्न सुवर्ण दान	१००० हजार	ॐ विश्वे अद्यमरुतो विश्व ऊति विश्वे भवत्यग्नः समिद्धः विश्वे नोदेवा अवसागमन्तु विश्वमस्तु द्रविणवाजा अस्मे २१	चन्दन गंध मालती पुष्प गुग्गल पायस नैवेद्य ।
श्रवण २२	दि ६०	दि २४	दि ०६	दि ०६	वात पित्त कफ रोग अतिसारसर्वगात्रपीड़ा	गोविन्द देवता	सुवर्णगोदान ब्राह्मण भोजन छायापात्र	१०००० हजार	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोश्नप्त्रे स्थोविष्णोस्यूरसि विष्णो ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥२२॥ ॐ विष्णवे नमः ।	चन्दन गंध मालतीपुष्पकपूर गुग्गल धूप ओदन पायसषड्रस नैवेद्य ।
धनिष्ठा २३	दि १५	दि ०७	दि २०	दि २१	मत्रकच्छ कंप ज्वर रक्त अतिसार	वसू देवता	छत्री जूतों स्वर्ण गौ छायापात्र दान	१००० हजार	ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारंवसोःपवित्रमसि सहस्रधारम् देवस्त्वासविता पुनातुवसोः पवित्र नशधारेणशुप्वाकामधुक्षः	अगर गंध कमलपुष्प अगर धूप घृत पायस नैवेद्य ।
शतभिषा २४	दि ००	दि ४५	दि ०३	दि २२	वायु रोग से भय सन्निपात ज्वर पोड़ा	वरुण देवता	तिल सुवर्ण घृत तेल अजा गोदान	१०००० हजार	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थोवरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्यशऋतसदनमसिवरुणस्यऋतसदनमासीद	कुंकुम अगर गंध कमलपुष्प अगर धूप घृत नैवेद्य ।
पूर्वाभाद्र पदा२५	दि ००	टि १२	द ३१	दि १६	सर्वगात्र पीड़ासर्दी चिन्ता व्याकुलता	अजकपाद देवता	सुवर्ण रजतश्वेतवस्त्र घृत दूध	५००० हजार	ॐउतनाऽहिर्बुध्न्यः शृणात्वजएकपात्पृथिवि समुद्रः । विश्वे देवा ऋतावधो हुतानां स्तुतामंत्रा कविशस्ता अवन्तु ।:२५।	कुंकुम चंदन गंध श्वेताकपुष्प सर्वो-[illegible]न्नमिश्र धूप दधि पायस नैवेद्य ।
उ० भाद्र पदा२६	दि १०	दि २०	दि ०६	दि १५	कामलारोग अतिसग ज्वर वायु शूल भ्रम	अहिर्बुध्न्य देवता	रजत कृष्णवस्त्र तिल सुवर्ण दान	१००० हजार	ॐशिवोनामासिस्वधितिस्तेपितानमस्तेऽस्तु मामा सीनिव तंयाम्यायूषेऽन्नाद्याय प्रजनेताय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय [सवीर्याय ॥२६॥	कपूर चन्दन गन्ध पद्मपुष्प बिल्व गुग्गल धूप दधि पायस नैवेद्य ।
रेवती २७	दि १८	दि १०	दि ६	दि २०	वातपित्त ज्वर भ्रम ऊरुशूल पीड़ा	पूषा देवता	पित्तलपात्र रक्तवृषभ वस्त्र छायापात्र दान	१०००० हजार	ॐ पूषं तव [illegible] वयन्तरिष्येम कदाचन । स्तोतारस्त इहमस्मि ॥२७॥	रक्त चन्दन गन्ध सम्पर्क पुष्प घृत गुग्गल पायस नैवेद्य ।

सूर्यादि ग्रहों के लिए दान

	सूर्यादि ग्रहों के लिए दान												संख्या	मन्त्र	अवस्था
सूर्य	कनक	मनि	धन	गुड़	सुवर्ण	ताम्र	कमल	रक्तवस्त्र	रक्तचन्दन	चामर	दक्षिगा	जप	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं स: सूर्याय नम:	वर्ष २२
चन्द्र	मोती	चांदी	सिता	शंख	वंशपात्र	चावल	कपूर	श्वेतवस्त्र	श्वेत चन्दन	श्वेतवस्त्र	दक्षिगा	जप	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौ स: चन्द्रमसे नम:	वर्ष २४
भौम:	मूंगा	कनक	गुड़	सुवर्ण	ताम्र	रक्तवस्त्र	रक्तचन्दन	रक्तवृषभ	मसूर	रक्तपुष्प	दक्षिणा	जप	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौ स: भौमाय नम:	वर्ष २८
बुध:	हरितवस्त्र	मूंगी	कांस्य	घृत	मिश्री	गजदन्त	सवर्ण	पन्ना	पुष्प	कपूर	दक्षिणा	जप	८०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौ स: बुधाय नम:	वर्ष २२
गुरु:	हरिद्रा	घोड़ा	खाण्ड	सुवर्ण	सिता	पुष्पराग	पीतवस्त्र	लवण	पीतपुष्प	मोदक	दक्षिगा	जप	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौ स: गुरवे नम:	वर्ष १६
शुक्र:	श्वेतवस्त्र	श्वेतवस्त्र	घृत	श्वेतचन्दन	हीरा	चांदी	चावल	खाण्ड	दुग्ध	श्वेतपुष्प	दक्षिणा	जप	११०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौ स: शुक्राय नम:	वर्ष २५
शनि:	तिल	तेल	माष	नीलम	कृष्णपुष्प	कृष्णवस्त्र	कृष्ण गौ	महिषी	लोहा	सुरंग	दक्षिगा	जप	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौ स: शनये नम:	वर्ष ३६
राहु	गुलमेद	घोड़ा	खड्ग	नीलम	कम्बल	सुवर्ण	तिल	तेल	नरेल	सप्तधान्य	दक्षिणा	जप	१८०००	ॐ छ्रां छ्रीं छ्रौं स: राहवे नम:	वर्ष ४२
केतु	कस्तूरी	कम्बल	खण्ड	बकरा	तिल	सवर्ण	खण्ड	सप्तधान्य	खोपा	कृष्णवस्त्र	दक्षिणा	जप	७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं स: केतवे नम:	वर्ष ४३

सूर्यादि ग्रह पीड़ासु स्नानार्थमौषधानि —(यथा सिद्धौषधै रोगान्नश्य युर्मन्त्रतो भयम् । तथा स्नान विधानेनग्रह दोष प्रणश्यति ॥)

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मन शिला	पञ्चगव्य	बिल्व छाल	गोबर	मालती	इलायची	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गजमद	रक्तचन्दन	अक्षत	पुष्प	मनशिला	सुरमा	तिलपत्र	तिलपत्र
देवदारु	शंख	धमनी	फल	श्वेतसरसों	सूवृक्षमुल	लोबान	मुत्थरा	मुत्थरा
केशर	सिपी	रक्त पुष्प	गोरोचन	मुलट्ठी	केशर	धमनी	गजदन्त	गजदन्त
खश	श्वेतचन्दन	सिगरफ	मधु	मधु		सौंफ	कुस्तूरी	छागमूत्र
मुलट्ठी	स्फटिक	मालकंगनी	मोती	मालती		मुत्थरा		
रक्त पुष्प		मौलसरी	सुवर्ण			खिला		
रक्त कनेर								

ग्रहपीड़ा निवृत्ति के लिये यन्त्र

सूर्ययन्त्रम			चन्द्रयन्त्रम			भौमयन्त्रम			बुधयन्त्रम			गुरुयन्त्रम			शुक्रयन्त्रम			शनियन्त्रम			राहुयन्त्रम			केतुयन्त्रम		
६	१	८	७	२	९	८	३	१०	९	४	११	१०	५	१२	११	६	१३	१२	७	१४	१३	८	१५	१४	९	१६
७	५	३	८	६	४	९	७	५	१०	८	६	११	९	७	१२	१०	८	१३	११	९	१४	१२	१०	१५	१३	११
२	९	४	३	१०	५	४	११	६	५	१२	७	६	१३	८	७	१४	९	८	१५	१०	९	१६	११	१०	१७	१२

नवदल मुद्रा

बुध-पन्ना	शुक्र-हीरा	चन्द्र मोती
गुरु-पुखराज	सूर्य-मणि	मं०-मूंगा
केतु-लस्न	शनि-नीलमे	रा०-गुल्मे

अदरक के लाभ :—अदरक को नमक लगा कर खाने से हाजिमा को तेज करता है । जबान औरगले को साफ करता है । कब्ज को दूर करके भूख को बढ़ाता है । अदरक के रस में मधु मिलाकर प्रयोग करने से खांसी दमा और जिगर के रोगों को दूर करता है । अदरक घी में भून कर कुछ नमक मिलाकर खाने से अफारा दूर होता है । अदरक का रस निबु के रस में नमक डाल कर पीने से बदहजमी दूरहोती है । चाए कीतरह जल में पका कर दूध मिलाकर पीने से सर्दी, खांसी,जुकाम को लाभ होताहै ।

रोग त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पू. फा.	उ. फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत	भर.	कृ.	प्रथम
पुन	मघा	हस्त	विशा.	मूल	श्रवण	पू. भा	अश्विन	रो	द्वितीय
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वा	पू षा	उ षा	उ. भा	रेव.	मृ.	अन्त

सूर्य नक्षत्र, दिन नक्षत्र, जन्म नक्षत्र अथवा नाम नक्षत्र रोग त्रिनाड़ी चक्र में जब एक ही नाड़ी पर हो तो असाध्य होता है रोगी का मरण होता है । यह रोग त्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय भी वर्जित है ।

मंगलवार १।६।११ तिथि कृतिक, नक्षत्र बुधवार २।७।१९ तिथि अश्लेषा नक्षत्र, गुरुवार ३।८ १३ तिथि मघा हस्त नक्षत्र, शुक्रवार ४।९।१४ तिथि आर्द्रा धनिष्टा नक्षत्र, शनिवार ५।१०।१५ तिथि भरणी नक्षत्र इन तिथि वार और नक्षत्रों के योग में रोग का आरम्भ हो तो मृत्यु व मृत्यु तुल्य कष्ट जानें :

कालस्य मुखदंष्ट्राज्ञानम्

रोग के दिन नक्षत्र से नाम का नक्षत्र ५।१३।२३ संख्या पर हो तो काल मुख होता है, और १०।१८ नक्षत्र काल की दंष्ट्र (दाढ़) होती है, मुख या दष्ट्र में जिस दिन नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रसित पुरुष को मृत्यु तुल्य कष्टजाने ।

गुरु का मिथुन राशि में प्रवेश का फल २०३४

गुरू १८ जुलाई १९७७ को मिथुन राशि में प्रवेश करेंगे । मिथुन-रशि में संचार कालीन मेषादि राशियों पर शुभाशुभ फल भिन्न भिन्न प्रकार का होगा जो इस प्रकार है—

मिथुन राशिस्थ गुरू का शुभाशुभ फल

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धन	मकर	कुंभ	मीन
मध्यम	शुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	अशुभ

गुरु का शुभाशुभ फल—गुरु जिन राशि वालों को शुभ फलदायक है, उन्हें विद्या में सफलता, संतान, स्त्री अथवा पति का सुख, धन लाभ, पदोन्नति आदि शुभ फल प्राप्त होंगे । **मध्यम फल** वाले व्यक्ति को वर्ष में कभी कष्ट की प्राप्ति तो कभी सुख प्राप्ति होगी । **अशुभ फल** वाले व्यक्ति को विपरीत फल अर्थात् विद्या में असफलता, स्त्री (पति) या सन्तान सम्बन्धी दुःख, मान-हानि, शारीरिक व मानसिक कष्ट प्राप्त होंगे । इनके अतिरिक्त अपनी जन्म-पत्री में गुरू की स्थिति, दशा आदि का भी विचार कर लेना असंगत न हो होगा । **गुरू के अशुभ** फल के निवारणार्थ वृहस्पतिवार का व्रत करना, पीले वस्त्रों को स्वयं धारण करना तथा पीले वस्त्रों, गुड़ लड्डू, हल्दी आदि पीत वस्तुओं के दान सहित किसी वृद्ध ब्राह्मण को भोजन करवाना शुभ रहता है ।

कन्या-राशिस्थ राहु का फल २०३४

३० अप्रैल सन् १९७७ को राहु कन्या राशि में प्रवेश करेगा । मेषादि राशि में प्रवेश करेगा । मेषादि राशि पर इसका शुभाशुभ फल निम्नानुसार है ।

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धन	मकर	कुंभ	मीन
शुभ	मध्यम	अशुभ	मध्यम	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	मध्यम	अशुभ	मध्यम

राहु का शुभाशुभ फल—राहु जिस राशि वाले को शुभ होता है उसको डेढ़ वर्ष पर्यन्त अकस्मात् धन-प्राप्ति, परिवार में वृद्धि, शत्रुओं पर विजय मकान, जमीन का सुख, स्वास्थ्य लाभ आदि शुभ फल होते हैं । मध्यम फल वाले को बीच में धन हानि मिथ्यापवाद, गृह कलह, व्यर्थ यात्रा, कभी लाभ तो कभी हानि देता है । **अशुभ** फल वालों को शत्रुओं का भय, अचानक धन का भारी नुकसान, किसी प्रिय का वियोग, दुर्घटना आदि का भय रहता है । राहु की शान्ति के लिये शनिवार को तैल से पकी हुई रोटी काले कुत्तों को अथवा गरीबों में दक्षिणा सहित बांटना तथा पक्षियों को सतनाजा डालना भी शुभ रहता है । राहु-यन्त्र पास रखना भी श्रेयकर होगा ।

मेषादि राशियों का पाया विचार २०३४ (1977-78)

शनि ७ सितम्बर १९७७ को मिथुन के चन्द्रमाकालीन सिंह राशि में प्रवेश करेगा । उसके परिवर्तत पर विभिन्न राशियों पर सुवर्णादि पाया का फल-

मेष राशि को शनि ताम्बे के पाया पर राशि बदलेगा । व्यवसाय अथवा नौकरी में तरक्की, धन लाभ, कोई शुभ समाचार मिलेगा ।

वृष राशि वालों को शनि चान्दी के पाया पर राशि बदलेगा । किसी शुभ कार्य पर खर्च हो, यात्रा में लाभ, कारोबार में परिवर्तन का विचार आए ।

मिथुन राशि वालों को शनि सोने के पाया पर राशि परिवर्तन करेगा । स्वास्थ्य में खराबी, स्त्री को कष्ट, व्यवसाय में हानि, व्यर्थ की यात्रा पड़े ।

कर्क राशि वालों को शनि लोहे के पाया पर राशि बदलेगा किसी अप्रिय घटना का शिकार हों धन व स्वास्थ्य की हानि, करोबार की चिन्ता रहे । व्यर्थ की यात्रा पड़े ।

सिंह राशि वालों को शनि सोने के पाया पर राशि बदलेगा धन का खर्च आमदन से अधिक रहे, सगे सम्बन्धियों से बिगाड़, गुप्त शत्रु बढ़े, कोई झूठारोप लगे ।

कन्या राशि वालों को शनि तांबे के पाया पर राशि बदलेगा रोजगार सम्बन्धी चिन्ता हो किन्तु गुजारे अनुकूल आमदन बनी रहेगी । भूमि जायदाद का सुख प्राप्त हो । कोई शुभ समाचार मिलेगा ।

तुला राशि वालों को शनि चांदी के पाया पर राशि परिवर्तन करेगा । संतान का सुख मिले । धन-लाभ होगा । बिगड़े हुए कामों में सुधार । सम्बन्धी से मिलाप होगा ।

वृश्चिक राशि को शनि लोहे के पाया पर राशि बदलेगा शरीर में रोग होगा, कोई अशुभ समाचार मिलेगा । गुप्त शत्रुओं का भय बढ़ेगा धन का अपव्यय पढ़ेगा ।

धन राशि वाले को शनि तांबा के पाया पर राशि बदलेगा बिगड़े हुए काम बनें, कारोबार अथवा सर्विस में तरक्की, अकस्मात्-धन प्राप्ति के योग, स्त्री (पति) सुख मिलेगा ।

मकर राशि वालों को शनि सोने के पाया पर राशि बदलेगा गुप्त रोग से शरीर को कष्ट, मानसिक परेशानी बढ़ेगी । निकट सम्बन्धी से बिगाड़, धन की हानि हो । (शेष पृष्ठ ३२)

बारह राशियों का वार्षिक फलादेश सम्वत् २०३४

नोट : नीचे लिखा फलादेश प्रसिद्ध नाम राशि के आधार पर दिया गया है । अधिक व्यापक फलादेश के लिए १५)७५ रुपये पेशगी भेजकर वर्षफल बनवाएं । **पं० पन्ना लाल ज्यो एम.ए. जालन्धर ।**

मेष राशि—इस राशि वालों को आगामी वर्ष सामान्यत: शुभ रहेगा । यद्यपि वर्ष के आरम्भ के दो मास स्वास्थ्य और रोजगार की दृष्टि से अशुभ रहेंगे । इनमें स्त्री को कष्ट, व्यय अधिक लाभ कम तथा परेशानी रहेगी । ३० अप्रैल के पश्चात् केतु इस राशि से स्थान परिवर्तन करके मीन राशि में प्रवेश कर जाएंगे । अप्रैल-मई में सूर्य इस राशि के उच्चांश पर स्थित रहेंगे तथा मई के बाद भौम स्वराशि में होंगे । अतएव, इस अवधि में मान प्रतिष्ठा बढ़े, पदोन्नति हो, नए कारोबार से लाभ, कोई शुभ समाचार मिलेगा १५ जून के पश्चात् किसी निकट सम्बन्धी से बिगाड़ और शरीर में कष्ट रहेगा । यात्रा में हानि हो । ६ सितम्बर को शनि इस राशि को तांबा के पाया पर राशि बदलता है व्यवसाय में अचानक लाभ, कोई मंगल कार्य, शत्रु का नाश और कोई बिगड़ा हुआ काम बने । भौमवार का व्रत और श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना शुभ रहेगा ।

वृष राशि—वर्ष के प्रथम तीन मास शुभ हैं । इनमें रोजगार में वृद्धि, धन लाभ, विद्या में सफलता और कोई रुका हुआ कार्य बनेगा । सन्तान व स्त्री का सुख प्राप्त होगा । ८ जुलाई के पश्चात् तीन महीने का समय अच्छा नहीं । इस अवधि में शरीर कष्ट, दुर्घटना व चोटादि का भय, स्त्री या पति से अनबन, धन का अपव्यय, और परेशानी बढ़ेगी । कोई अप्रिय समाचार मिले । सितम्बर के बाद ११ नवम्बर तक का समय अपेक्षाकृत शुभ रहेगा । अचानक धन लाभ भूमि आदि का सुख प्राप्त हो । नवम्बर-दिसम्बर में पुन: शरीर-कष्ट, परिवार में गृह-कलह व सन्तान की ओर चिन्ता, धन की हानि हो । २० फरवरी के बाद स्थिति में पुन: सुधार होने की आशा है । शुक्रवार का व्रत विधिपूर्वक करना श्रेयकर रहेगा ।

मिथुन राशि—वर्षारम्भ के डेढ़ मास कारोबार एवं धन-सम्बन्धी कार्यों के लिए चिन्ताजनक हैं । बाद के चार मास (मई से अगस्त तक) आर्थिक दृष्टि से शुभ रहेंगे । १८ जुलाई से वृहस्पति इस राशि में संचार करेंगे । इस अवधि में कोई नया व्यवसाय करने से लाभ, पदोन्नति, कोई शुभ समाचार मिलेगा गत वर्षों के बिगड़े हुए काम ठीक होंगे. मान व प्रतिष्ठा बढ़ेगी । इस राशि वालों पर से शनि साढ़सति समाप्त प्राय है । ६ सितम्बर के बाद शनि सोने के पाया पर राशि बदलता है । तथा २० अक्तूबर से बृहस्पति इस राशि पर वक्री होंगे इस काल में व्यर्थ की यात्रा पड़े, अचानक धन का नुकसान, परिवार सम्बन्धी [illegible]

की आवश्यकता है । विष्णुसहस्त्रनाम का जाप व बुधवार का व्रत करना श्रेय कर है ।

कर्क राशि—वर्ष के पहिले पांच मास शुभ हैं । इनमें रोजगार में वृद्धि, सन्तान या सुख, शत्रुओं का नाश, पदोन्नति और नया काम करने से लाभ रहेगा । ज्येष्ठ मास में शरीर को कष्ट और अकस्मात् धन हानि का योग है । किन्तु बाद के तीन मास शुभ हैं । इस राशि पर शनि की साढ़सति अभी चलेगी अत: सितम्बर के बाद वर्षान्त तक परिवारिक तथा व्यवसाय की स्थिति संघर्षमय रहेगी । इस अवधि में राज्य सरकार से भय, शिरादि में चोट, मिथ्यारोप, धन का अपव्यय और झगड़े-फिसाद का डर है । शरीर अस्वस्थ और स्त्री(पति), संतान की तरफ से चिन्ता रहेगी । सोमवार का व्रत और शिवपूजन करना कल्याणकारी रहेगा ।

सिंह राशि—पूर्वार्द्ध के चार मास शुभ रहेंगे । इनमें कोई शुभ समाचार मिले, बिगड़े कामों में सुधार, मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, कारोबार में लाभ व सन्तान सुख मिलेगा श्रावण मास में (१६ जुलाई से १५ अगस्त तक) क्रोध अधिक, फिजूलखर्ची बढ़ेगी, शरीर कष्ट हो और धन का नुकसान होगा । (१६ अग० से १५ सित०) तक का समय पुन: कुछ शुभ फलदायक रहेगा । इस में कोई शुभ उत्सव हो. नए काम से लाभ रहेगा । सितम्बर में शनि इस राशि को सोने के पाया पर राशि बदलेगा । अतएव अक्तूबर से विशेषकर ११ दिसंबर के बाद की अवधि इस राशि वालों के लिए विशेष कष्टदायी प्रमाणित होगी । इसमें सगे सम्बन्धियों से बिगाड़, गुप्तशत्रुओं और झगड़े इत्यादि का भय है, स्त्री को कष्ट और संतान की तरफ से चिन्ता रहेगी । धन के अपव्यय के कारण चिन्ता बढ़ेगी । रविवार का व्रत और माणिक्य धारण करना शुभ रहेगा ।

कन्या राशि—वर्ष के प्रथम अढ़ाई मास विशेष अशुभ हैं । इनमें शरीर कष्ट, रोजगार सम्बन्धी चिन्ता, व्यवसाय में धन हानि, कोई अप्रिय घटना घटे, परिवार में अनबन रहे । इस राशि में ३० अप्रैल से राहु वर्ष पर्यन्त रहेगा । १६ जुलाई से अक्तूबर तक का समय शुभ है । अचानक धन प्राप्ति के योग हैं पदोन्नति, रोजगार में वृद्धि, बिगड़े हुए काम बनें, कोई शुभ समाचार मिलेगा । नवम्बर से फरवरी १९७८ तक अवधि में उतार चढ़ाव बहुत रहेंगे । सोचे हुए कामों में बाधा उत्पन्न हो, पेट में विकार, स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है । मंगलवार का व्रत रखना । पन्ना धारण करना श्रेयकर रहेगा ।

तुला राशि—वर्ष के आरम्भिक छ: मास अशुभ हैं । इनमें नौकरी अथवा रोजगार की ओर से चिन्ता, परिवार में अशान्ति, धन का नुकसान, निकट मित्र द्वारा धोखा, व्यर्थ का झगड़ा-फिसाद और फिजूलखर्ची बढ़ेगी । शरीर अस्वस्थ और मन में परेशानी रहेगी । सितम्बर में शनि का इस राशि को चांदी के पाया

ग्रहों की आकाशी कौंसिल का विश्व पर प्रभाव

सं० २०३४ (ई० १९७७-७८)

वर्षेश (जगत) लग्न ३४।५० वर्ष प्रवेश लग्न ४३।४२ आर्द्रा प्रवेश लग्न ४४।१८

सर्वशक्तिमान परमात्मा की असीम अनुकम्पा एवं पाठकों के निरन्तर सहयोग से "पंचांग दिवाकर" को प्रकाशित होते हुए आज १०२ वर्ष व्यतीत हो चुके है। प्रवर्त्तक परम पूज्य पं॰ देवीं दयाल जी से आद्यपर्यन्त की दीर्घ अवधि मे इस पचाँग को जो लोकप्रियता एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती रही है— वह सर्वविदित ही है। वेद-चक्षु ज्योतिष-शास्त्र के पुरातन सांस्कृतिक मूल्यों को सामाजिक क्षेत्र में एक शताब्दी तक प्रवाहित करते रहना—इसकी निजी देन है।......भगवती देवी की कृपा से प्रत्येक वर्ष इसकी भविष्यवाणियाँ अधिकांशत: सत्य निकलती आई हैं। गत वर्षों की—भविष्योक्तियों के कुछ अंश उदाहरणार्थ सप्रमाण नीचे दी जाती हैं—

(१) पश्चिमी पाकिस्तान का पूर्वी पाक से अलग होना (सम्वत् २०२७)
(२) याहिया सरकार के पांव उखड़ जाना और बंगला देश की अलग सत्ता (सं० २०२९)
(३) अरब-इज़राइल युद्ध (२०३०) तथा मन्त्रीमण्डल में श्रीमति इन्दिरा गान्धी का प्रभुत्व कायम रहना (सम्वत् २०३१)—। (४) फरवरी से जुलाई पर्यन्त केन्द्रीय सरकार के लिए विशेष संघर्षपूर्ण—संसद में अनेक परिवर्तनों के पश्चात्—पुन: स्थिरता आ जाना— संवैधानिक नियमों में संशोधन—श्रीलंका, पाक, ईरान, अफगान आदि देशों के साथ नए व्यापारिक सम्बन्ध कायम होना—अंतरिक्ष विज्ञान में नवीन खोजों की उपलब्धि—इत्यादि (पृष्ठ ३१-३२ सवंत २०३२)—(५) और सम्वत् २०३३ में पूर्वी राष्ट्र पारस्परिक **मत-भेद समाप्त** करने को प्रयत्नशील होंगे। **अनेक विरोधी राष्ट्र भी परस्पर मित्रता का हाथ बढ़ायेंगे** (जैसा कि हिन्द-पाक के मध्य हुआ) अनेक विरोधी राष्ट्रों के साथ मित्रता—भारत पृष्ठ २६। **चीन में किसी विशिष्ट नेता की मृत्यु होगी** (चाऊ एन लाई की मृत्यु हुई) **भूकम्प अतिवृष्टि तूफान** बाढ़ादि से जन व धन हानि होना पृष्ठ २६ कालम I। इत्यादि अनेक भविष्योक्तियां सत्य साबित हुई हैं जिनकी पाठक स्वयं जांच कर सकते हैं।

ग्रह—स्थिति और विश्व के हालात २०३४

इस वर्ष ग्रहों के दस अधिकारों में से छ: अधिकार क्रूर ग्रहों को और ४ अधिकार शुभ ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। राजा का अधिकार सूर्य को और मन्त्री का अधिकार बुध को मिला है। रसों का अधिकार भी सूर्य के पास है। मेघ (वर्षा), फल, दुर्ग (सेना)—ये तीन अधिकार मगल के पास गए हैं। धान्याधिकार गुरु को मिला है। धन-सम्बन्धी तथा धातुओं (नीरसेश) के अधिकार शुक्र को, और सस्य (खेती) का अधिकार शनि को मिला है। चन्द्रमा को कोई अधिकार नहीं प्राप्त हुआ है। प्रमोद नामक सम्वत्सर होना शुभ है।

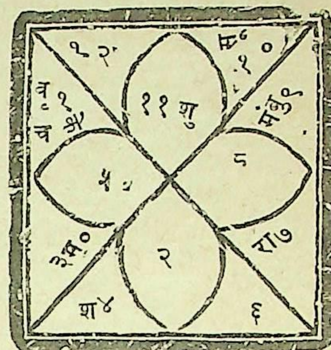
जगत-कुण्डली में तुला लग्न उदय हुआ है। लग्नेश शुक्र षष्ठ भाव मैं उच्चराशिस्थ है। पूर्व दिशा का स्वामी नृप सूर्य सप्तम भाव (पश्चिम दिशा में मन्त्री बुध के साथ उच्च राशि का होकर पड़ा है। शनि की स्थिति दक्षिण-स्थित देशों पर और नीच दृष्टि पश्चिमीं गोलार्ध स्थित देशों की ओर है। वर्ष-प्रवेश कु. में बृहस्पति व नैपचून की परस्पर दृष्टि पड़ रही है। मंगल-शनि का षडाष्टक योग दोनों कुण्डलियों मे परिलक्षित होता है। ग्रहों के अधिकार-विभाजन तथा जगत्-लग्न व वर्ष प्रवेश कुण्डलियों में स्थित ग्रहों के विवेचन से स्पष्ट होता है कि आगामी बर्ष दक्षिणी व पश्चिमी देशों में राजनैतिक वातावरण निक्षुब्ध रहेगा। तानाशाही और सैनिक शक्तियां आगे बढ़ेंगी। संसार की शान्ति भग होती हुई दिखाई देगी। विश्व की प्रमुख शक्तियों जैसे रूस, अमरीका व फ्रांस, ब्रिटेन आदि के मध्य तनाव की स्थिति पैदा होगी। ४ अप्रैल और १८ अप्रैल—एक ही सायन मास में दो ग्रहणों का होना—अनेक अप्रत्याशित घटनाओं के संकेत हैं। १४ जून से १४ अक्तूबर तक यदा-कदा काल-सर्प योग बनेगा। इस अवधि में विश्व के बहुत से देशों में शान्ति का सन्तुलन बिगड़ जाएगा। ब्राजील, अर्जनटाईना, न्यूज़ीलैंड, इण्डोनेशिया, डैनमार्क, कांगो, टांगानीका इत्यादि दक्षिणी अफ्रीकाई देशों तथा पश्चिमोत्तर में अन्दरूनी हालात बिगड़ उठेंगे। विरोधी तत्त्व शासक वर्ग को अपदस्थ करने के लिए गम्भीर छापामार षडयन्त्रों का प्रयोग करेंगे। कहीं छत्रभंग होने के योग हैं।

शनि का सिंह राशि में प्रवेश और उसका फल—

७ सितंबर १९७७ को शनि सिंह राशि में प्रवेश करेगा। विश्व के अनेक देशों मे भीतरी व बाहरी हालात बिगड़ जाएंगे। अनुभव में देखने में आया है कि जब भी शनि (लगभग ३० वर्षों के बाद) सिंह राशि में प्रविष्ट हुआ—विश्व के अनेक देशों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। युद्ध, विद्रोह, छत्र-भंग (राज्यपरिवर्तन), भूकम्पादि से जन व धन की हानि हुई। जैसे सन् ई० १८८९-१९१८ व १९४८ में विश्व-युद्ध व अनेक राष्ट्रों में शासन परिवर्तन, उत्पात्त व रक्त-क्रान्ति आदि की घटनाएं हुई — ये सर्वविदित हैं। ७ सितम्बर १९७७ को शनि सिंह राशि में सूर्य-बुध के साथ इकट्ठे होंगे। तुला कुंभ व वृष राशि वाले देशो पर उसकी नजर होगी। फलस्वरूप सिंह राशि वाले देश जैसे फ्रांस, इटली, ईराक, रूमानिया, तुला राशि वाले जापान, चीन, बर्मा, आस्ट्रिया, तिब्बत, कोरिया, कुंभ राशि वाले देश अरबादि मुस्लिम देश वृष राशि वाले ईरान, साईप्रस इत्यादि देशो में राजनैतिक परिवर्तन तथा अन्दरूनी गड़बड़ के प्रबल योग पाए जाते हैं। विश्व के अनेक देशों मे स्थिति अत्यन्त विस्फोटक हो सकती है। यूनान और तर्की, उत्तरी कोरिया तथा दक्षिणी कोरिया, अमरीका व फ्रांस के मध्य राजनैतिक सम्बन्ध बिगड़ जाएंगे। अनेक देशो में लूटमार, उत्पात्त व मारधाड़ की घटनाएं अधिक रहेंगी। जगत् कु० में शनि की स्थिति दक्षिण दिशा में और नीच दृष्टि पश्चिमी दिशा की ओर है अत: दक्षिणी गोलार्द्ध के देशों—जैसे कांगो, सूडान, टांगानीका, अंगोला, जैम्बिया इत्यादि दक्षिणी अफ्रीकाई देश, दक्षिणी अमरीका तथा पश्चिमी राष्ट्रों जैसे प० जर्मनी, इंग्लैण्ड, स्काटलैण्ड, ग्रीस, टर्की, कैनेडा आदि में बेरोजगारी, निम्न आय, जातीय, रंग-भेद, तोडफोड़ व हिंसा की घटनाएं उग्र रूप धारण कर लेंगी विश्व में गुट-निरपेक्ष देशों का प्रभुत्व बढ़ेगा। फलस्वरूप एशिया व यूरोप में बहुत से विरोधी राष्ट्र भी बाहरी तौर पर नजदीक आयेंगे। साम्राज्यवादी शक्तियां गुट निरपेक्ष राष्ट्रों में फूट डालने का प्रयत्न करेंगी। उत्तर-पश्चिमी एवं अरब देशों के लिए भी आगामी वर्ष शुभ नहीं रहेगा। लैबनान में फिलस्तीनी तथा दक्षिण पंथी सैनिकों में जबरदस्त टकराव रहेगा। इजरायल व सीरिया की फौजें फिलस्तीनियों की जंग में हस्तक्षेप करेंगी। अक्तूबर १९७७ में गुरू के वक्री होने पर पूर्वोत्तरी राष्ट्रों में शान्ति भंग होने का भय है। ११ दिसम्बर को सिंह राशि में ही शनि के वक्रगति होने पर विश्व के बहुत से राष्ट्रों विशेषकर उत्तर-पश्चिम व दक्षिणी देशों के आन्तरिक व बाहरी ढांचे अस्तव्यस्त हो जाएंगे। उत्तर-पूर्वी देश एवं चीन, रूस कोरिया, तिब्बत, नेपाल, भूटान, बर्मा, जापान, पाक, तथा भारत के पहाड़ी प्रदेशों में बाढ़,अग्निकांड,भूकम्प,दुर्भिक्ष,बस-रेल हवाई दुर्घटनाओं आदि प्रकृति प्रकोपों से जन व धन की हानि होने के योग हैं। चीन, रूस,उत्तरी अमरीका व दक्षिणी अमरीका व ब्रिटेन आदि देशों में कहीं पार्टी नेता के प्रश्न पर अन्दरूनी हालात बिगड़ जाएंगे। छत्र भंग एवं शासन सरकार में आमूल परिवर्तन के योग हैं। किन्हीं दो प्रमुख नेताओं के अपदस्थ या मृत्यु के भी संकेत पाये जाते हैं। एशिया में हिन्द महासागर को शान्ति क्षेत्र बनाए जाने पर बड़ी शक्तियों के साथ तनाव रहेगा। यद्यपि युद्ध भय वर्षांत तक बना रहेगा किन्तु शुभ ग्रहों के प्रभाव के धारण तथा प्रमोद (नामक) सम्वत्सर होने से अभी किसी बड़े महायुद्ध की सम्भावना नहीं है। फरवरी १९७८ में गुरू और अप्रैल में शनि के मार्गी होने से विश्व राजनीतिक क्षेत्र में पुन: स्थिरता उत्पन्न हो जाएगी।

भारत—भारत सन् ई० १९७७ में स्वतन्त्रता के ३१वें वर्ष में तथा गणतन्त्र (२६ जनवरी) के २८वें वर्ष कुम्भ लग्न में प्रवेश करेगा। शुक्र नवम भाव (विकास वैधानिक आदि) का स्वामी होकर केन्द्र (नितृत्व भाव) में स्थित है। दशमेश भौम (संसद, विदेशी व्यापार तथा राज्यदरबार) लाभ स्थान में मन्त्री बुध के साथ योग कारक होकर पड़ा हुआ है। साथ ही दोनों मुंथा से दृष्ट है। भारत की प्रभाव राशि मकर नृप सूर्य द्वारा अधीष्ठित एवं च शनि द्वारा वीक्षित है। पंचम भाव में अपने स्वामी द्वारा दृष्ट मुंथा शुभ है। प्रस्तुत गृह-स्थिति के अनुसार भारत सरकार द्वारा कुशल शासन प्रणाली का पालन किया जावेगा। देश के अन्दर राष्ट्र-विरोधी तत्त्वों जैसे तस्करी, भ्रष्टाचार, चोरबाजारी, काला धन आदि के उन्मूलन में सरकार पहले की भान्ति कठोर पग उठाएगी। देश के विकास और आर्थिक उन्नति के लिए नवीन योजनाएं बनाई जायेंगी। प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी के २० सूत्रीय कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए देश के समस्त राज्य भरपूर सहयोग देंगे। आर्थिक विषमता कुछ सीमा तक दूर होगी। नई योजनाओं से साधारण एवं दलित वर्ग भी लाभान्वित होगा। नवम भाव में राहु होने से योजनाओं को पूर्ण-रूपेण लागू करने में विलम्ब हो सकता है। पंचम भाव में मुंथा शुभ है—शिक्षा कृषि, उद्योग के क्षेत्र में नए प्रयोग एवं सुधार किए जायेंगे। शिक्षा-प्रणाली में आमूल परिवर्तन करने की योजना तैयार होगी।

कु० २६ जनवरी इष्टं २।५८



संवत २०३४ में ग्रहों की आकाशी कौंसिल और भारत

डाक-संचार, वायुयान, रेल, ट्रांसपोर्ट तथा अन्य परिवहन के क्षेत्रों में विस्तार होगा। कृषि अनाजादि की पैदावार में आशानुकूल वृद्धि नहीं होगी। विद्वान Intellcctuals लोगों को सम्मान मिलेगा।

विश्व के रंगमंच पर भारत की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। विदेशी-सम्बन्धों में विस्तार होगा। बहुत से पड़ोसी देशों जैसे अफगानिस्तान, ईरान, पाकिस्तान, श्रीलंका, नैपाल, चीन, रूस आदि के साथ राजनैतिक सम्बन्ध और सुदृढ़ होंगे। जैसा कि हमने **पिछले वर्ष के पंचांग में लिखा था कि अनेक विरोधी राष्ट्रों (जैसे चीन, पाक, अमरीका आदि) के साथ मित्रता बढ़ेगी—यह भविष्यवाणी हिन्द, पाक व चीन के सम्बन्ध में सत्य प्रमाणित हुई।** ई० १९८१ तक भारत विश्व की प्रथम पांच शक्तियों में से गिना जावेगा।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि से विदेशी-मुद्रा का समुचित लाभ होगा। विदेशों में रहने वाले भारतीय पुनः भारत की ओर आकृष्ट होंगे। गुट निरपेक्ष राष्ट्रों में भारत का स्थान सर्वोच्च रहेगा। विरोधी तत्वों (शत्रुओं) का दमन होगा। भारत की विदेश नीति पूर्णतः सफल सिद्ध होगी। बंगला देश के साथ सम्बन्ध बिगड़ेंगे।

जून से अक्तूबर तक यदा-कदा गोचर में काल-सर्प योग बनता है। १६ जुलाई से १५ अगस्त तक कर्क राशि में तथा ७ सितंबर से १५ सितंबर तक सिंह राशि पर सूर्य-शनि की युति, सिंह राशिस्थ ११ दिसम्बर से २४ अप्रैल (१९७८) तक शनि का वक्री होना– इन अवधियों में भारत सरकार को कठिन एवं विषम परिस्थितियों में गुजरना पड़ सकता है। सामाजिक व राजनैतिक क्षेत्र में अव्यवस्था या गड़बड़ और किसी प्रमुख व्यक्तित्व की अकाल मृत्यु या अपदस्थ होने के संकेत हैं। राजनैतिक क्षेत्र में अनेक परिवर्तन एवं उतार चढ़ाव देखने को मिलेंगे। **पहाड़ी स्थानों** जैसे आसाम, कश्मीर, हिमाचल प्र० बंगाल आदि में भूकम्प अग्निकाण्ड, भूस्खलन बाढ़, दुर्भिक्ष, आन्धी, रेल-यान दुर्घटनाएं, इत्यादि प्रकोपों से शीतोष्ण जन, धन व कृषि आदि की हानि का भय रहेगा। प्रजा में वायु आंखें, पित्तोष्ण गर्मी आदि के रोग अधिक फैलेंगे।

२५ अप्रैल (७८) को शनि मार्गी होने से देश के राज वातावरण में पुनः शान्ति व स्थिरता आ जावेगी।

भारत के मुख्य प्रान्त

हिमाचल प्रदेश— ३० अप्रैल १९७७ के पश्चात् इसकी प्रभाव राशि मीन पर वर्ष के अन्त तक केतु रहेंगे। सप्तम प्लूटो और अष्टम हर्षल इसकी प्रशासनीय व्यवस्था के लिए शुभ है। सामाजिक तौर पर प्रजा के हितार्थ कृषि, बड़े एवं लघु उद्योगों की सरकार समुचित सहायता करेगी जिससे साधारण व्यापारी को भी लाभ पहुंचेगा। खाद्यान्न, बिजली, जंगलात, फलों आदि के उद्योग को विशेष बढ़ावा मिलेगा। रोजगार व शिक्षा के क्षेत्र में भी पर्याप्त सुधार होगा। किन्तु बेरोजगारी और बड़े उद्योगों में पूर्ण सफलता नहीं मिलेगी। प्रदेश में उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में २० अक्तूबर के पश्चात् हिमपात अग्निकाण्ड उलाकपात, भूस्खलन, भूकम्प, हिमपात आदि प्राकृतिक प्रकोपों से जन-जीवन भूमि-फसलें व धन की विशेष हानि होगी। हि० सरकार मुनाफाखोरी चोर बाजारी के विरुद्ध कठोर कदम उठाएगी। सामान्य व्यापारी वर्ग में असंतोष रहेगा।

पंजाब हरियाणा—ये दोनों राज्य आगामी वर्ष में एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धात्मक रूप में तरक्की करेंगे। चूंकि पंजाब की प्रभाव राशि मीन तथा हरियाणा की प्रभाव राशि मिथुन मानी जाती है। मीन राशि में केतु वर्षान्त उच्चराशिस्व रहेगा। जबकि जुला. से गुरु मिथुन राशि में प्रवेश करेंगे। इसके अतिरिक्त इस राशि पर से साढ़सति चक्र समाप्त होगा। औद्योगिक क्षेत्र में हरियाणा पंजाब की अपेक्षा अधिक उन्नति करेगा। भ्रष्टाचार, तरक्की, चोर-बाजारी व राष्ट्र-विरोधी तत्वों को सरकार सख्ती से कुचलेगी। साधारण व गरीब जनता को ऋण देने की प्रणाली में सुधार होगा। पंजाब व हरियाणा की दोनों राज्य सरकारों के मध्य कटु सम्बन्धों में सुधार होगा। अनिश्चित वर्षा और बाढ़ादि प्रकृत प्रकोपों से जन व धन की हानि होगी।

जम्मू-काश्मीर—इसकी प्रभाव राशि तुला पर हर्षचल, दूसरे स्थान पर नैपचून, शनि दशम भाव तथा एकादश भाव में रहेंगे। राहु ३० अप्रैल से राहु द्वादशस्थ रहेगा। ग्रहस्थिति अनुसार राज्य में सत्ता सरकार की शक्ति बढ़ेगी। जैसा कि गतवर्ष लिखा था कि इस राज्य के वैधानिक नियमों में आमूल परिवर्तन होंगे। इस वर्ष भी प्रशासन नियमों में महत्वपूर्ण संशोधन किए जाएंगे। खाद्यान्न की समस्या में सुधार तथा बेरोजगारी में वृद्धि होगी। तोड़ फोड़ की घटनाएं कम होंगी। फलों फूलों मेवों की फसलों से आशानुकूल लाभ न होगा। पर्यटन-विभाग (Tourism) रेल संचारादि व्यवस्था में विशेष उन्नति होगी। फलों आदि के विक्रय के लिए राज्य सरकार विशेष सुविधा देगी। बर्फ़ व कुसमय पर वर्षा व बाढ़ आदि के कारण फसलों को नुकसान पहुंचे। वर्षान्त में किसी प्रमुख व्यक्ति की आकस्मिक मृत्यु के योग हैं।

राजस्थान—इसकी प्रभाव राशि भी तुला है। यह राज्य कृषि शिक्षा, विद्युत्, परिवहन व लघु-उद्योगों के क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति करेगा। मन्त्रि-मण्डल में विस्तार किया जायेगा। गरीब व दलित वर्ग को आसान शर्तों पर कर्जे दिये जाएंगे। जोधपुर, बीकानेर, आदि स्थानों पर ग्रहण दृष्टि से रहने से वहां पर अनावृष्टि दुर्भिक्ष आन्धी आदि के कारण लोगों को हानि पहुंचे। राष्ट्र विरोधी

तत्वों को कुचलने में सरकार पर्याप्त रूपेण सफल रहेगी। सितम्बर के पश्चात् कोई अशुभ घटना घटेगी।

भारत में व्यापारिक स्थिति

भारत का वायु-मण्डल तथा वर्षा विचार—

आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य आदि से स्वाती नक्षत्र तक ये दस वर्षा के नक्षत्र हैं जो कि १८ से २७ जून तक रहेंगे। यदि इन तारीखों में बारिश हुई हो तो आगामी वर्षा ऋतु में बारिश की कमी रहेगी अथवा कई स्थानों पर भीषण वर्षा से बाढ़ादि के कारण सर्वत्र हानि होगी। यदि आकाश निर्मल रहा और बारिश न हुई तो शुभ है। तब २१ जून से सूर्य-आर्द्रा प्रवेश कालीन बरसात का मौसम शुरू हो जायेगा जो कि सितम्बर मास तक रहेगा। आर्द्रा कुंडली में मेघेश भौम स्वराशिगत होकर जलीय ग्रह शुक्र के साथ पड़ा है। उस पर यूरेनस (हर्षल) की सातवीं दृष्टि पड़ रही है इस वर्ष **रोहिणी का निवास** भी समुद्र तट पर हुआ है। इसके अतिरिक्त कु० में नृप सूर्य मिथुन राशि (पश्चिम दिशा) में स्थित है। इस ग्रह स्थिति और कूर्म चक्र के अनुसार ज्येष्ठ आषाढ़ में भारत के पूर्वी पश्चिमी भागों जैसे बिहार, बंगाल, यू० पी० देहली, हरियाणा तथा पंजाब के विभिन्न प्रदेशों में भीषण गर्मी पड़ेगी। लू, आन्धी, उष्ण लहर आगजनी आदि के प्रकोप से जन-जीवन व फसलों को नुकसान पहुंचेगा। उत्तरी भारत में मौनसून हवाएं इस वर्ष देर से आएंगी। जुलाई के अन्त तथा अगस्त में व्यापक वर्षा के कारण हरियाणा, हिमाचल व पंजाब के अनेक क्षेत्रों में जानी नुकसान, मकानों को क्षति, दुर्घटनाएं व फसलों को नुकसान पहुंचेगा। सातवें गृह में जलीय-ग्रह चन्द्रमा राहु और शनि के मध्य आक्रान्त हैं—अतः भारत के पश्चिमी-दक्षिणी तथा पूर्वी भागों पर अनिश्चित वर्षा एवं अतिवृष्टि अथवा अनावृष्टि से बाढ़, आन्धी, तूफानादि प्रकृति प्रकोपों से धन व जन की हानि होगी। सितम्बर में सिंहस्थ शनि होने से इस वर्ष सर्दियों में ओलावृष्टि शीत लहर, कुसमय वर्षा से जम्मू, काश्मीर, हिमाचल, राजस्थान व यू०पी० के पहाड़ी स्थानों पर कृषि, भूकम्प, भूस्खलन, बर्फबारी आदि से जन व धन की हानि रहेगी। अग्निकाण्ड, परिवहन व यान दुर्घटाएं अधिक होंगी।

भारत में व्यापारिक स्थिति २०३४—

गणतन्त्र कु० में ग्रहस्थिति अनुसार आगामी वर्ष अनाज व फलों आदि की उपज अच्छी होगी। चैत्र में धान्य भाव मन्दा रहेगा। वैशाख और ज्येष्ठ में धान्यादि का भाव मध्यम भादों में पुनः मंदा होगा। व्यापार का स्वामी शुक्र होने से कपूर, कपास, पटसन, मोती, कस्तूरी, केसरादि सुगन्धित पदार्थ तीव्र होंगे। सिंहस्थ शनि होने से भारत को तैल, खनिज पदार्थों की खोज में नवीन उपलब्धि प्राप्त होगी; लघु उद्योगों व छोटे व्यापारियों को सरकार की ओर

सम्पा. पं० पन्ना लाल ज्यो. एम. ए.

(पृष्ठ २७ का शेष) **बारह राशियों का वार्षिक फलादेश २०३४**

पर राशि बदलना शुभ है। अतः सितम्बर के पश्चात् स्थिति में सुधार आ जावेगा। किसी मित्र की सहायता से नए कार्य की योजना बनेगी। कोई शुभ समाचार मिलेगा। श्वेत मोती धारण करना और शुक्रवार का व्रत शुभ है।

वृश्चिक राशि—वालों को यह वर्ष शुभ रहेगा। इसमें गत वर्ष के अनेक बिगड़े हुए काम बनेंगे, स्त्री व सन्तान सुख, पदोन्नति, और कारोबार में लाभ रहेगा। मान व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। शनि इस राशि को लोहे के पाया पर राशि बदलता है अतः अक्तूबर के पश्चात् दिसम्बर तक का समय शुभ नहीं है। इसमें गुप्त रोग, शत्रुओं का भय, दुर्घटना और धन का नुकसान होगा। कोई अप्रिय समाचार भी सुनने को मिलेगा बनते हुए कामों में रुकावट पैदा हो। श्री दुर्गासप्तशती का पाठ और मंगलवार का व्रत रखना शुभ रहेगा।

धन राशि—वालों को १७ जुलाई तक उतार चढ़ाव बहुत रहेंगे। बनते हुए कार्यों में रुकावट, व्यर्थ की यात्राएं, धन-हानि, गुप्त शत्रुओं से मानसिक परेशानी बढ़ेगी। निकट सम्बन्धी से बिगाड़, स्त्री व संतान की चिन्ता रहे। १९ जुलाई से १९ अक्तूबर तक स्थिति आशाजनक रहेगी। रुके हुए काम बने, धन-लाभ और कोई शुभ समाचार मिलेगा, पदोन्नति व मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। २० अक्तूबर को गुरु के वक्री होने पर मानसिक तनाव में वृद्धि स्वास्थ्य में खराबी और अचानक धन का अपव्यय होगा। बृहस्पतिवार का व्रत और पुखराज धारण करना शुभ है।

मकर राशि वालों को वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ रहेगा। इस अवधि में धन-लाभ, रोजगार एवं सर्विस में तरक्की, बिगड़े हुए कामों में सुधार और कोई शुभ समाचार मिलेगा। किसी नए काम की योजना भी बनेगी। भूमि व जायदाद का सुख मिलेगा। इस राशि का पाया सोना है। जुलाई अगस्त में व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। अगस्त के बाद का समय स्वास्थ्य और धन की दृष्टि से शुभ नहीं है। इसमें किसी सहयोगी से तकरार, धन का नुकसान और चोटादि का भय है। शनिवार किसी काले कुत्ते को तैल की कचौड़ी और श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना शुभ है।

कुंभ राशि—वर्ष के प्रथम तीन मास शुभ हैं। इनमें स्त्री व संतान का सुख, विद्या में सफलता, बिगड़े हुए कामों में सुधार, कारोबार में लाभ मध्यम, भाईयों से बिगाड़, धन का अपव्यय कोई बना बनाया काम बिगड़े। अगस्त से नवम्बर तक का समय पुनः अच्छा रहेगा, धन लाभ व कोई शुभ समाचार मिलेगा। वर्ष के अन्तिम तीन मास विशेष संघर्षमय होंगे। रोजगार में परिवर्तन क्रोध, (पति) स्त्री से कलह, शरीरकष्ट और चिन्ता बढ़ेगी। धन का नुकसान या चोरी का डर है। श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ और शनिवार को काली वस्तुओं का दान शुभ है।

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

सम्वत् २०३४ में सूर्यादि ग्रहों का राशि नक्षत्र पाद प्रवेश

ग्रहों का राशि प्रवेश

सू०रा०प्र०
१३ अप्रैल मेष
१४ मई वृष
१४ जून मिथुन
१६ जुलाई कर्क
१६ अग. सिंह
१६ सितं कन्या
१६ अक्तू. तुला
१५ नवं. वृश्चि.
१५ दिस. धन
१४ जन ७८मकर
१२ फर. कुंभ
१४ मार्च मीन

मंगल
१९ अप्रैल मीन
२८ मई मेष
८ जुलाई वृष
२१ अग. मिथु.
१२ अक्तू. कर्क
१६ फर मिथुने (वक्री)
१७ मार्च कर्क

बुध
३० मार्च मेष
६ जून वृष
२३ जून मिथुन
७ जुला. कर्क
२३ ,, सिंह
३० सितं. कन्या
१७ अक्तू. तुला
२ नव. वृश्चि.
२५ ,, धन
२६ दिस. धन
३१जन७८मकर
१८ फर. कुंभ
७ मार्च मीने
२६ ,, मेष

वृहस्पति
१८ जुला. मथुने
२० अक्तू. वक्री
२८ जन. ,,
२० फर. मार्गी

शुक्र (वक्री)
२३ मार्च मीन
२७ अप्रैल मार्गी
२९ मई मेष
३० जून वृष
२८ जुला. मिथुन
२३ अग. कर्क
१७ सित. सिंह
११ अक्तू. कन्या
४ नवं तुला
२८ ,, वृश्चिक.
२२ दिस. धन
१५ जन. मकर
८ फर. कुंभे
४ मार्च मीन
२८ ,. मेष

शनि
७ सित. सिंहे
११ दिस. वक्री
२५ अप्रै. मार्गी

राहु केतु
३०अप्रैलराहुकन्या
३० अप्रै. केतु मीने

ग्रहों का उदयास्त (२०३४)

बुध
२६ मार्चपूर्म. उदय
२३ अप्रै. पू. अस्त
१२ मई प. उदय
१९ जून प. अस्त
१९ जुला.पू. उदय
२३ अग. पू. अस्त
११ सित. प. उदय
५ अक्तू.प. अस्त
११ नव. पू. उदय
१६ दिस. पू. अस्त
२६ ,, प. उदय
६ फर ७८ पू.अ.
१० मार्च प. उदय
४ अप्रै. प. अस्त

गुरू
२२ मई प. अस्त
१८ जून पू. उदय
२४ अक्तू. वक्री
२० फर.७८ मार्गी

शुक्रोदयास्त
२ अप्रं. प. अस्त
६ ,, पू. उदय
२५ दिस.पू. अस्त
१६ फर. प. उदय

शनि अ.वक्री मार्गी
११ अप्रै. मार्गी
२६ जुला. प.अस्त
३१ अग. पू. उदय
११ दिस. वक्री
२५ अप्रैल मार्गी

सू. न. प्रे. ता० नक्ष पाद
२० मा.उभा.२
२४ ,, ,, ३
२७ ,, ,, ४
३० ,, रेव १
२ अप्रै.,, २
६ ,, ,, ३
१० ,, ,, ४
१३ ,, अश्वि१मे
१६ ,, ,, २
२० ,, ,, ३
२३ ,, ,, ४
२७ ,, भर १
३० ,, ,, २
४ मई ,, ३
७ ,, ,, ४
११ ,, कृति१
१४ ,, ,, २वृषे
१७ ,, ,, ३
२१ ,, ,, ४
२४ ,,रोहि १
२८ ,, ,, २
३१ ,, ,, ३
४ जून ,, ४
७ ,, मृगे १
११ ,, ,, २
१४ ,, ,, ३ मि
१८ ,, ,, ४
२१ ,,आर्द्रा १
२४ ,, ,, २
२८ ,, ,, ३
२ जुल ,, ४
५ ,,पुर्न १
९ ,, ,, २

सूर्य नक्षत्र प्रवे. ता. नक्ष. पाद.
१२ जुल.पुर्न ३
१६ ,, ,, ४कर्क
१९ ,, पुष्य१
२३ ,, ,, २
२६ ,, ,, ३
३० ,, ,, ४
२ अग.श्ले १
६ ,, ,, २
९ ,, ,, ३
१३ ,, ,, ४
१६ ,, मघा १सिं.
२० ,, ,, २
२३ ,, ,, ३
२६ ,, ,, ४
३० ,,पूफा १
२ सित ,, २
६ ,, ,, ३
९ ,, ,, ४
१३ ,,उफा १
१६ ,, ,, २ क.
१९ ,, ,, ३
२३ ,, ,, ४
२६ ,,हस्त १
३० ,, ,, २
३ अक्तू,, ३
६ ,, ,, ४
१० ,,चित्रा १
१३ ,, ,, २
१६ ,, ,, ३ तु.
२० ,, ,, ४
२३ ,, स्वा १
२७ ,, ,, २
३० ,, ,, ३
२ नव स्वा.४
६ नव विशा१
९ ,, ,, २
१२ ,, ,, ३
१५ नव ,. ४ वृ.
१९ ,, अनु. १
२२ ,, ,, २
२५ ,, ,, ३
२९ ,, ,, ४
२ दिस.ज्ये.१
५ ,, ,, २
९ ,, ,, ३
१२ ,, ,, ४
१५ ,, मूला१धन
१८ ,, ,, २
२२ ,, ,, ३
२५ ,, ,, ४
२९ ., पूषा १
३१ ,, ,, २
४जन७८,, ३
७ ,, ,, ४
१० ,, उषा.१
१४ ,, ,, २ म.
१७ ,, ,, ३
२० ,, ,, ४
२३ ,, श्रव. १
२७ ,, ,, २
३० ,, ,, ३
२ फर ,, ४
५ ,,धनि. १
९ ,, ,, २
१२ ,, ,, ३कं
१५ ,, ,, ४
१९ ,,शत. १
२२ ,, ,, २
२५ फर शत ३
१ मा. ,, ४
४ ,,पूभा.१
७ ,, ,, २
११ ,, ,, ३
१४ ,, ,, ४ मी
१७ ,, उभा१
२१ ,, ,, २
२४ ,, ,, ३
२७ ,, ,, ४
३१ ,, रेव १
३ अप्रै ,, २
७ ,, ,, ३

भौम. न. प्र.
२० मा. शते १
२४ ,, ,, २
२८ ,, ,, ३
२अप्रै. ,, ४
६ ,,पूभा १
१० ,, ,, २
१५ ,, ,, ३
१९ ,, ,, ४ मी
२३ ,,उ.भा. १
२७ ,, ,, २
१ मई ,, ३
६ ,, ,, ४
११ ,, रेव १
१५ ,, ,, २
१९ ,, ,, ३
२४ ,, ,, ४
२८ ,, अश्वि१
२ जून ,, २
६ ,, ,, ३
११ ,, ,, ४
१५ ,, भर. १
२० जून भर २
२४ ,, ,, ३
२९ ,, ,, ४
३ जुलकृति १
८ ,, ,, २
१२ ,, ,, ३
१७ ,, ,, ४
२२ ,,रोहि १
२७ ,, ,, २
१ अग ,, ३
६ ,, ,, ४
११ ,, मृग. १
१६ ,, ,, २
२१ ,, ,, ३
२६ ,, ,, ४
१ सित आर्द्र१
७ ,, ,, २
१२ ,, ,, ३
१७ ,, ,, ४
२३ ,, पुर्न. १
२९ ,, ,, २
५ अक्तू ,, ३
१२ ,, ,, ४
१९ ,, पुष्ये १
२७ ,, ,, २
४ नव. ,, ३
१४ ,, ,, ४
२८ ,,श्ले. १
१३ दिस.वक्री.
२६ ,, पुष्य ४
७ जन. ,, ३
१६ ,, ,, २
२५ ,, ,, १
३ फर.पुर्न. ४
१६,, ,, ३ मि.
२ मा.मार्गी.
१७ ,, पुर्न ४
३१ मा. पु. १

बुध. न. प्र.
२३ मा.रेव. १
२५ ,, ,, २
२९ ,, ,, ४
३० ,, अश्वि १
१ अप्रै. ,, २
५ ,, ,, ४
७ ,, भर. १
१५ ,, ,, ३
२० ,, वक्री
२४ ,,भर. २
१ मई भर. १
६ ,, अश्वि४
१४ ,, मार्गी
२१ ,, भर.१
२९ ,, ,, ३
१ जून ,, ४
४ ,, कृति१
६ ,, ,, २
११ ,, ,, ४
१३ ,, रोहि १
१६ ,, ,, ३
१८ ,, ,, ४
२० ,, मृग १
२३ ,, ,, ३
२४ ,, ,, ४
२६ ,,आर्द्रा १
२९ ,, ,, ३

बुध (सर्योदि ग्रहों का राशि नक्षत्रादि प्रवेश २०३४) शुक्र न. प्र.

बुध	बुध	बुध	शुक्र न० प्र०	शुक्र न०प्र	शुक्र न. प्र.	शनि
३० जून आर्द्र४	२१अक्त स्वा१	१३ फर श्रव ४			३०दिस.मूला४	
२ जुला पुर्न१	२५ ,, ,, ३	१४ ,, धनि १	२३ मार्च रेव४	५ ,,श्ले. १	२ जन.पू.षा१	२५ मार्च पुष्य४
५ ,, ,, ३	२७ ,, ,, ४	१८ ,, ,, ३	३० ,, ,, ३	११ ,, ,, ३	७ ,, ,, ३	११ अप्रै. मार्गी
,, ,, ४	२९ ,,विशा १	२० ,, ,, ४	४ अप्रै. ,, २	१४ ,, ,, ४	१० ,, ,, ४	२६ ,. श्ले. १
,, पुष्ये १	२ नव ,, ४	२२ ,, शत. १	१० ,, ,, १	१७ ,,म.घा.१	१२ ,,उ.षा.१	१५ जून ,, २
,, ,, ३	५ ,, ,, २	२७ ,, ,, ४	१६ ,. उ.भ ४	२२ ,, ,, ३	१५ ,, ,, २	१५जुला श्ले.३
,, ,, ४	७ ,,अनु. १	१ मा.पूभा १	७ मई रेव. १	२५ ,, ,, ४	२० ,, ,, ४	२६ ,, अस्त
,, श्ले. १	९ ,, ,, २	५ ,, ,, ३	१४ ,, ,, २	२८ ,,पू.फ. १	२३ ,, श्रव १	११ अग. श्ले ४
,, ,, ३	१४ ,, ,, ४	७ ,, ,, ४	२४ ,, ,, ४	३ अक्तू ,, ३	२६ ,, ,, २	३१ ,, उदय
,, ,, ४	१६ ,,ज्ये. १	८ ,,उभा १	२९ ,, अश्वि १	६ ,, ,, ४	३१ ,, ,, ४	७सित मघा १
,, मघा १	२० ,, ,, ३	१२ ,, ,, ३	२ जून ,, २	९ ,,उ,फा१	३ फर.धनि १	५ अक्तू ,, २
,, ,, २	२३ ,, ,, ४	१४ ,, ,, ४	९ ,, ,, ४	११ ,, ,, २	८ ,, ,, ३	१९ नव. ,, ३
,, ,, ४	२५ ,, मूल.१	१५ ,, रेव १	१३ ,, भर. १	१७ ,, ,, ४	११ ,, ,, ४	११ दिस वक्री
अगपू.फा१	१ दिस. ,, ३	२२ ,, ,, ४	१७ ,, ,, २	१९ ,, हस्त १	१३ ,, शते १	३० ,, मघा २
,, ,, ३	४ ,, ,, ४	२६ ,, अश्वि १	२४ ,, ,, ४	२२ ,, ,, २	१९ ,, ,, ३	१९ फर ,, १
,, ,, ४	८ ,,पू.षा १	१ अप्रै. वक्री	२७ ,, कृति१	२८ ,, ,, ४	२१ ,, ,, ४	
,,उ.फा.१	१२ ,, वक्री	२५ ,, मार्गी	३० ,, ,, २	३० ,,चित्रा १	२४ ,,पूभा १	
,, वक्री	१४ ,,मूला ४	बृह. न. प्र.	३ जुला ,, ३	२ नव. ,, २	१ मार्च ,, ३	
,,पू.फा.४	१८ ,, ,, ३	४ अप्रै.कृति.४	६ ,, ,, ४	४ ,, ,, ३	४ ,,पू.भ.४	राहु केतु
,, ,, ३	२६ ,, ,, १	२० ,,रहि.१	९ ,, रोहि.१	१० ,, स्वा.१	७ ,,उ.भा १	
सित ,, २	२९ ,, ज्ये. ४	५ मई ,, २	१२ ,, ,, २	१३ ,, ,, २	१२ ,, ,, ३	
,, ,, १	१ जन.७८मा	२० ,, ,, ३	१९ ,, ,, ४	१८ ,, ,, ४	१५ ,, ,, ४	३० अप्रै रा.चि.२
,, मार्गी	८ ,, मूला.१	३ जून ,, ४	२२ ,, मृग १	२० ,, वि.	१७ ,, रेव. १	३० अप्रै.के.रेव४
,. पूफा २	१४ ,, ,, ३	१८ ,, मृग १	२८ ,, ,, ३	२३ ,, ,, २	२३ ,, ,, ३	२ जुलरा चि.१
,, ,, ४	१७ ,, ,, ४	२ जुला,, २	३१ ,, ,, ४	२८ ,, ,, ४	२५ ,, ,, ४	२ ,, ,,के रेव३
२८ ,,उ.फा १	२० ,, पूषा १	१८ ,, ,, ३	३ अग. आर्द्रा	१ दिसअनु १	२८ ,, अश्वि १	३सि.रा.हस्ते२
३० ,, ,, २	२५ ,, ,, ३	३ अग. ,, ४	५ ,, ,, २	४ ,, ,, २	३ अप्रै. ,, ३	३ सितके.रेव २
२अक्तू. ,, ३	२७ ,, ,, ४	२१ ,, आ. १	११ ,, ,, ४	९ ,, ,, ४	५ ,, ,, ४	५ नव.रा.ह. ३
६ ,,हस्त १	२९ ,,उ.षा.१	१३ सि. ,, १	१४ ,, पुर्न. १	१२ ,, ज्येष्ठ१	★★	५,, के रेव १
१० ,, ,, ३	३१ ,, ,, २	२४ अक्तू. वक्री	१७ ,, ,, २	१४ ,, ,, २	★★	७ जन राह. २
१२ ,, ,, ४	३ फर. ,, ३	३ दिस.आर्द्र१	२३ ,, ,, ४	२० ,, ,, ४	★★	—के.उभा ४
१३ ,,चित्रा १	५ ,, ,, ४	२९ ,, मृग ४	२५ ,, पुष्य १	२२ ,, मूला१	★★	११ मा.रा.हस्.१
१७ ,, ,, ३	७ ,,श्रव. १	२८ जन. ,, ३	२८ ,, ,, २	२५ ,, ,, २	★★	११ ,,के.उभ. ३
२९ ,, ,, ४	१२ ,, ,, ३	२४ मार्च मृग४	३सित पुष्य४	२८ ,, ,, ३		

(पृष्ठ ३० का शेष) द्वादशराशि फल

मीन राशि—राशि वालों को वर्ष के आरम्भिक अढ़ाई मास अशुभ हैं। इसमें धन की हानि,बेचैनी,उन्नति में बाधा, झगड़े फिसाद का डर। कारोबार में मन्दा रहेगा। १६ जून से ८ सितम्बर तक का समय कुछ बेहतर रहेगा। रोजगार में कुछ सुधार किन्तु लाभ मध्यम होगा। अगस्त में अचानक लाभ में वृद्धि होगी। इसका पाया लोहा है, अत: सितम्बर के बाद पुन: हालात बिगड़ जाएंगे। बनते कामों में बाधा,स्त्री को कष्ट और धन का व्यय अधिक रहेगा स्वास्थ्य में खराबी चिन्ता बढ़े, भलाई करने पर भी बुराई मिलेगी। फरवरी 1978 के बाद का समय शुभ है। बृहस्पतिवार का व्रत और पुखराज धारण करना श्रेयकर होगा।

पायाविचार (पृष्ठ २५ का शेष)

कुंभ राशि को शनि चांदी के पाया पर राशि परिवर्तन करेगा। भाग्योदय होगा, व्यवसाय कारोबार) मे उन्नति हो, धर्म कर्म में रुचि बढ़ेगी। नई योजना से धन लाभ होगा।

मीन राशि वालों को शनि लोहे के पाया पर राशि बदलेगा जो कि अशुभ है रोजगार में कमी (मन्दा) रहे। किसी अफसर से मनमुटाव बढ़े।

भारत की व्यापारिक स्थिति (शेष पृष्ठ 30 का)

से प्रोत्साहन दिया जाएगा। साईंस के आविष्कारों मशीनी पुरजों तथा इस्पात के उत्पादन में भारत आत्मनिर्भर होगा। लाल रंग की वस्तुओं की उपज अधिक होगी। गुड़, शक्कर, घी, तैल, लाल मिर्च, अनारदाना, तोरिया.पटसन,केभावों मे तेजी रहेगी। चीनी, चावल, श्वेत कपड़ा तथा अन्य सफेद रंग की वस्तुओं में मन्दा होगा। सोना, चांदी, पीतल, तांबा, जिस्त,लोहा,पारा आदि के भावों में साधारण तेजी आवेगी। अनेक जीवनोपयोगी वस्तुओं के उत्पादन के क्रय-विक्रय के अधिकार सरकार स्वयं ले लेगी। अन्य वस्तुओं के भावों में अधिक उतार चढ़ावन होंगे विदेशी व्यापार में अत्याधिक वृद्धि

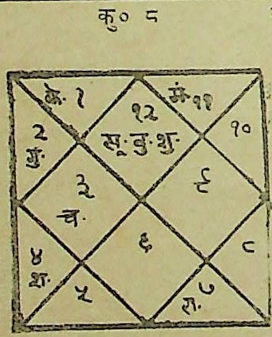
नोट : नीचे लिखा तिथि नक्षत्र के घंटे मिनट का समय भा. स्टे. टाईम का है ।

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घंटे	मि.	नक्ष	घ.	प.	घंटे	मि.	यो	घ.	प.	क.	व.	प.	शा.	मु.	मर्च	चैत्र	व्याघात ५५।०२ — सूर्य उत्तरायणे वसन्ततु:	नि.	सू.	स्प.	इट.	सू.	उ.
३०	००	१	रव	४६	४८	२५	१५	उभ	३७	३८	२१	३५	शुक	२३	५५	कि	१५	५	२	२९	२०	७	नूतन सम्वत्सरारम्भ: नवरात्रे शुह घटस्थापने स.सि. योग: ‖	११	६	२९	२६	६	३२
३०	५	२	चंद्र	५१	३	२६	५६	रेव	४३	५	२३	४५	ब्रह्म	२४	१३	बा	१८	५६	३०	३०	२१	८	मेषेन्द. ४३।०५ चन्द्रदर्शन, पंचक समाप्त । महाफलादि:	११	७	२८	३	६	३१
३०	१०	३	मंग	५६	२५	२९	०४	अश्व	४९	३८	२६	२१	ऐंद्र	२५	२३	तै	२३	४४	वै	रव	२२	९	गणगौरीतीज मत्स्य जयन्ती, शाकाचैत्रारम्भ: १८९९ अ.सि.योग:	११	८	२७	३८	६	३०
३०	१४	४	बुध	६०	००	००	००	भर	५६	५७	२९	१८	वैधृ	२७	१७	व	२९	३८	२	२	२३	१०	भ २९।३३ उ. वक्री शुक्र: मीन में ११।२७ रेव (१) बुध १४।०५	११	९	२७	११	६	२९
३०	१८	४	बृह	२	३८	७	३२	कृत	६०	०	०	०	विष	२९	४०	वि	२	३८	३	३	२४	११	वृषेन्दु: १३।५५ भ २ ३८ या. ‖ शते (१) भौम: १९।३८	११	१०	२६	४३	६	२८
३०	२३	५	शुक्र	९	१३	१०	८	कृत	४	४५	८	२१	प्री	३२	१३	बा	९	१३	४	४	२५	१२	पुष्ये (४) वक्री गति: ३५।२४ स्कन्दषष्ठी	११	११	२६	१३	६	२७
३०	२८	६	शन	१५	४०	१२	४२	रोह	१२	२५	११	२४	आयु	३४	३०	तै	१५	४०	५	५	२६	१३	मिथुनेन्दु: ४६।०८ पूर्वोदय: बुध: २५।३१	११	१२	२५	४१	६	२६
३०	३३	७	रव	२१	२५	१४	५८	मृग	[illegible]	३०	१४	१२	सौ	३६	१३	व	२१	२५	६	६	२७	१४	भ २१।२५ उ. ५३।४२ या K कांगड़ा मेंला बाहु फोर्ट जम्मू	११	१३	२५	७	६	२४
३०	३७	८	चंद्र	२५	५८	१६	४६	आर्द्र	२५	२३	१६	३२	शो	३६	५३	व	२५	५८	७	७	२८	१५	श्रीदुर्गाष्टमी मे० मनसादेवी, भवान्युत्पति: मे० तारा देवी वK	११	१४	२४	३१	६	२३
३०	४०	९	मंग	२८	५५	१७	५६	पुनं	२९	४५	१८	१६	अत	३६	१८	कौ	२८	५५	८	८	२९	१६	कर्केन्दु: १३।४९ श्री राम नवमी व्रतादौ महापुण्यदा	११	१५	२३	५३	६	२२
३०	४५	१०	बुध	२९	५९	१८	२०	पुष्य	३२	१५	१९	१५	सुक	३४	१३	ग	२९	५९	९	९	३०	१७	भ ४९।३० उ. अश्वि मेषे: बुध पूर्वोदयी बुध २२।०९	११	१६	२३	१३	६	२१
३०	५०	११	बृह	२९	००	१७	५६	श्ले	३२	४८	१९	२७	धृत	३०	३५	वि	२९	०	१०	१०	३१	१८	सिंहेन्दु: ३२।४८, भ २९।०० या कामदा ११ व्रतं सर्वे. M	११	१७	२२	३१	६	२०
३०	५५	१२	शुक्र	२६	५	१६	४५	मघ	३१	३३	१८	५६	शूल	२५	२८	बा	२६	५	११	११	अप्रै	१९	प्रदोष व्रत M रेव (१) सूर्य: ०।४३	११	१८	२१	४७	६	१९
३१	००	१३	शन	२१	३०	१४	५४	पूफ	२८	४०	१७	४६	गंड	१८	१	तै	२१	३०	१२	१२	२	२०	कन्येन्दु: ४२।३९ अनंग १३ महावीर जय.शुक्रास्त:पश्चि.३५।१०	११	१९	२१	१	६	१८
३१	५	१४	रव	१५	३३	१२	३०	उफ	२४	२३	१६	२	वृद्ध	११	२०	व	१५	३३	१३	१३	३	२१	भ १५।३३ उ. ४२।०२ या: पूर्णिमा व्रतादौ स. सि. योग:	११	२०	२०	१२	६	१७
३१	१०	१५	चंद्र	८	३०	९	४०	हस्त	१९	५	१३	५४	ध्रुव	२	५०	व	८	३०	१४	१४	४	२२	तुलेन्दु: ४६।०८ पूर्णिमा स्नानादौ कृतिका (४) गुरु: २८।५६	११	२१	१९	२२	६	१६

२८ मार्च चन्द्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट: इष्टं ४४।०२

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	०२	१०	११	१	११	३	६	०
[illegible]	२३	१३	२६	५	२७	१६	१	१
[illegible]	५४	१३	५५	२०	४५	३४	४४	४४
[illegible]	३२	४४	४६	९	५	३१	५९	५९
[illegible]	7/2 3	४६	1/3 1	११	३०	१	३	३
[illegible]		४९	१	१९	५५	२२	११	११
[illegible]	श्री	शते	रेव	कृत	रेव	पुष्य	चि	अश
[illegible]		३	३	३	४	४	३	१
		मा	मा	मा	व	व	व	व
		उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

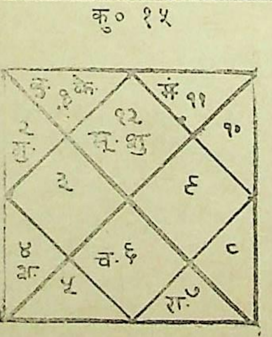
कु० ८



४ अप्रैल चन्द्रे पूर्णम्यां ग्रहस्पष्ट: इष्टम् ४४।२२

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
११	५	१०	०	१	११	३	६	०
२१	२९	१८	९	६	२३	१६	१	१
१९	३४	४१	७	४०	४२	२७	२२	२२
२२	५३	१४	५८	५९	८	११	४२	४२
५९	8/9 9	४६	६१	११	३७	०	३	३
७		४५	४१	५३	५४	३७	११	११
रेव	श्री	शते	अश	कृत	रेव	पुष्य	चि	अश
२		४	३	४	२	४	३	१
		मा	मा	मा	व	व	व	व
		उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कु० १५



पक्षफल

बार्हस्पत्यमानेन प्रमोद नामक सम्वत्सर प्रारम्भ हुआ हैं । अतएवं संकल्पादि के आरम्भ में इसी का प्रयोग रहेगा । चै. शु. प्रतिपदा को घटस्थापना, श्रीदुर्गा सप्तशती का पठन पाठन एवं देवी भगवती के समक्ष ज्योति प्रज्वलित करनी चाहिए ।

ग्रह स्थिति—पक्ष में भौम अभी कुंभ राशि में ही संचार करेंगे । २३ मार्च को वक्री शुक्र मीन में, तथा ३० मा. को बुध मेष में प्रवेश होंगे त्रयोदशी को शुक्रास्त हैं तदनुसार अनाज, रूई, तिल, तैल, चीनी, चांदी व बिनौले के भावों में प्रथम तेजी आकर मन्दी आवेगी सोना पीतल,ताम्बा,पशु व जवाहरात आदि के भाव तेज होंगे वृष,मिथुन,कन्या मकर व मीन राशिवालों को पक्षफल शुभ ।

चैत्र शुक्ल प्रदिपदा संवत्सरारम्भ: —नवरात्रोत्सव निम्बपत्रप्राशनं च कार्यम् ततः संवत्सरादिपादोनाफलश्रवणं च कार्यम् । चैत्र शुक्ल तु नवमीपुनर्वसुयुतायदि । सैव मध्याह्नयोगेन महापुण्यात्म भवेत् । चैत्र नवम्यां तु जातो राम स्वयं हरि: । पूर्वस्व भ संयुक्ता या तिथि: [illegible] चैत्र शुक्ल त्रयोदश्यांअनंगत्र्योदशी सा च मध्यान्ह व्यापिनी ग्राह्या ।

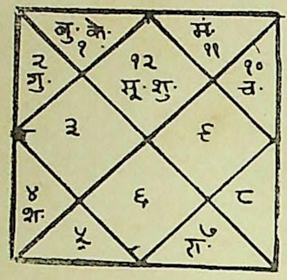
विक्रमी सम्वत २०३४ वैशाख कृष्ण पक्ष (वदि शाका १८९९ सन् ईस्वी १९७७ हिजरी सन १३९७ नित्य सूर्योदयस्पष्टाद भारतीय स्ट. टाईम जालन्धर ३४

दि.	मा.	ति.	वर	घ.	पल	घंटे	मि.	नक्ष	घ.	प.	घंट	मि.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	चैत्र	मु.	अप्रैल	चैत्र	अनुराधा ५५।२३ शिव ५५।२० सूर्य उत्तरायणे बसन्त ऋतु:	नि.	सू.	स्प.	ष्ट.	सू.	उ.
३१	[illegible]	१	मंग	०	४३	६	३२	चि	१३	१३	११	३२	हर्ष	४४	१०	कौ	०	४३	१५	१५	५	२३	Mचंद्रोदय रात्रि ९ बजकर २६ मिनट पर	११	२२	१८	१९	६	१५
०	[illegible]	२	मंग	५२	३७	२७	१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० Nपू० भा(१)भौम:२६।२७	०	०	०	०	०	०
३१	८	३	बुध	४४	३५	२४	२	स्व	६	५८	९	०	वज्र	३४	४३	व	१८	३५	१६	१६	६	२४	वृश्चिकेन्दु: ४८।२३ भ१८।३५उ.४४।३५यापूर्वोदयीशुक्र:४५।०८N	११	२३	१७	३५	६	१३
३१	२	४	बृह	३६	४८	२०	५५	वि.	०	५५	६	३४	सि.	२५	२८	ब	१०	४३	१७	१७	७	२५	श्री गणेश चतुर्थीव्रत भर(१ बुध ३६।३१ स.सि. योग:M	११	२४	१६	३५	६	१२
३१	७	५	शुक्र	२९	४३	१८	४	ज्ये	५०	२८	२६	२२	व्य.	१६	४३	कौ	३	१६	१८	१८	८	२६	धनुबेन्दु: ५०।२८ ज.दि.गु. तेगबहादुर	११	२५	१५	३४	६	११
३१	१	६	शन	२३	३८	१५	३६	मूल	४६	३८	२४	४८	वर	८	४३	व	२३	३८	१९	१९	९	२७	भ २३।३८ उ. ५१।०८ या	११	२६	१४	३०	६	९
३१	६	७	रव	१८	३८	१३	३५	पूष	४४	२	२३	४५	पर	१	३३	ब्र	१८	३८	२०	२०	१०	२८	मकरेन्दु: ५८।४१ स. सि. योग:४४।०२उ.वक्रीशुक्र रेव(१)४४।१८	११	२७	१३	२४	६	८
३१	०	८	चंद्र	१४	३५	१२	४	उष	४२	४५	२३	१२	सि.	५०	१८	कौ	१४	३५	२१	२१	११	२९	शनि मार्गी २३।१० स.सि.योग: ४२।४५ उ.	११	२८	१२	१६	६	६
३१	५	९	मंग	१२	३३	११	६	श्रव	४२	४३	२३	१०	सध	४६	२०	ग	१२	३३	२२	२२	१२	३०	भ ४२।०१ उ. Kमेला वैशाखी पुण्य१८।५०उ. पंचकारम्भ:१२।४५	०	२९	११	६	६	५
३१	५	१०	बुध	११	३०	१०	४०	धन	४२	४०	२३	४४	शुभ	४३	२८	वि	११	३०	२३	२३	१३	वैश	कुम्भेन्दु:१२।४५भ११।३०या:संक्रा सर्य अश्वि मेष में३४।५०मु.३०K	०	०	९	५४	६	४
३१	४	११	बृह	११	५२	१०	४८	शत	४६	४८	२४	४६	शुक्र	४१	३८	बा	११	५२	२४	२४	१४	२	वरुथिनी एकादशी व्रत वल्लभाचार्य जंयती	०	१	८	४१	६	३
३१	८	१२	शुक्र	१३	३५	११	२८	पूभ	५०	५	२६	२०	ब्रह्म	४०	४७	तै	१३	३५	२५	२५	१५	३	मीनेन्दु: ३४।१० प्रदोष व्रत	०	२	७	२७	६	२
३२	२	१३	शन	१६	२८	१२	३६	उभ	५५	४३	२८	१८	ऐंद्र	४०	५२	व	१६	२८	२६	२६	१६	४	भ १६।२८ उ. ४८।१० या. वक्री शुक्र: उ.भा(१) ४२।३७	०	३	६	११	६	१
३२	६	१४	रव	२०	१८	१४	६	रेव	६०	०	०	०	वैधृ	४१	४०	श	२०	१८	२७	२७	१७	५	×स्नानदानादौ	०	४	४	५२	५	५९
३२	१	३०	चंद्र	२५	१५	१६	४	रेव	१	४२	६	३९	विष	४३	१३	ना	२५	१५	२८	२८	१८	६	मेषेन्दु १।४२ सोमवती अमावस्या पंचक समाप्त। सूर्य ग्रहण ×	०	५	३	३१	५	५८

११ अप्रैल चन्द्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्टा: इष्ट ४४।४५

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
११	[illegible]	१०	०	१	११	३	६	०
२८	१	२४	१७	८	१९	१६	१	१
१२	३	८	२७	५	२५	२५	०	०
१६	५६	१९	४८	३८	३०	४	२५	२५
५८	७०९	४६	४३	१२	३२	०	३	३
५०		११	११	२३	५५	८	११	११
रेव	श्री	पूभ	भर	कृत	रेव	पुष्.	चि	अश
४		२	२	४	१	४	३	१
		मा.	मा	मा	व	मा	व	व
		उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

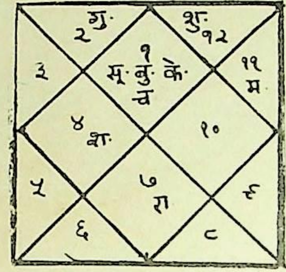
कु० ८



१८ अप्रैल चन्द्रे अमावस्यां ग्रहस्पष्टा: इष्ट ४५।०४

सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के
०	०	१०	०	१	११	३	६	०
५	८	२९	२१	९	१६	१६	०	०
३	५४	३४	७	३३	१४	२८	३८	३८
३१	३२	४३	४२	३७	१२	८	८	८
५८	७०८	४६	८	१२	१८	०	३	३
३८		३२	१०	५०	७	५०	११	११
अश्वि	श्री	पूभ	भर	कृ	उभ	पुष	चि	अश
२		३	३	४	४	४	३	१
		मा	मा	मा	व	मा	ब	व
		उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु० ३०



पक्षफलम् —तृतीया को शुक्र मीन राशि में ही पूर्व से उदय होगा। अतएव जनसाधारण में सुख शान्ति की वृद्धि होगी। अष्टमी को शनि मार्गी हुआ है। मेष संक्रान्ति ३० मुहूर्ति है। चावल जौ, घी, नारियल, गुड़, सुपारी, हींग, बादाम, मटर, गवार, उड़द के भावों से घटा. बड़ी हो कर तेजी आवेगी। ८ के बाद रूई चांदी सुवर्ण, पारा, स्टील इत्यादि में मन्दी रहे। मेष, वृष, कन्या, मकर व मीन राशि को पक्षफल शुभ रहेगा। आकाशलक्षण—हिमाचल, हरियाणा, व पंजाब के उत्तरी पश्चिमी भागोंमें८, ११; १३, १६, १८अप्रैल को साधारणवर्षाहै।

वैशाख मासे स्नानानन्तरे तिलै: पितृणां तर्पणं विधाय वहुतीयनाश्वत्थ मूलं सिंचेत प्रदक्षिणां च कुर्यात् अनेन कुलतारणफलंभवति। अत्रैव हविष्यान्न ,प्राशनंब्रह्मचर्यादयो नियमाश्च पालनीया इति। अत्रैव मासे कृष्ण गोराख्या तुलसीभि: विष्णुं त्रिकालमर्चयेत। व्यजनंछत्रमुपाह चंदनादि दानेन महाफलम।

दि	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घटे	मि.	नक्ष	घ.	प.	घटे	मि	यो.	घ.	प.	कर	घ.	प.	शा.	हि.	अप्रै	वैश	सूर्य उत्तरायणे ग्रीष्मर्तु:	नि	सू.	स्प.	ष्ट	सू.	उ.
३२	१५	१	मंग	३०	५७	१८	२१	अश्वि	८	२५	९	२०	प्री	४५	१३	ब	३०	५७	२९	२९	१६	७	मीने भौम: १८।०२ अ. सि. योग: ८।२५ या.	०	६	२	६	५	५८
३२	२०	२	बुध	३७	८	२०	४८	भर	१६	२२	१२	१६	आ	४७	३५	बा	४	३	३०	जम	२०	८	वृषेन्दु: ३२।४० चन्द्रदर्शन रोहिणी (१) गुरु: ३६।२१ स.सि.C	०	७	०	४५	५	५७
३२	२५	३	बृह	४३	३७	२३	२२	कृत	२३	३०	१५	१९	सौ	५०	१५	तै	१०	२३	वैश	२	२१	९	अक्षया तृतीया श्री परशुराम जयंती Cबुध वक्री १४।३८	०	७	५९	१०	५	५५
३२	२८	४	शुक्र	५०	१	२५	५४	रोह	३१	१३	१८	२३	शो	५२	४७	व	१६	४९	२	३	२२	१०	भ. १६।४९ उ. ५०।०१ या ×पूर्वोऽस्त बुध: २७।२६D	०	८	५७	४३	५	५४
३२	३१	५	शन	५५	५५	२८	१५	मृग	३८	३८	२१	२०	अ.	५४	५५	ब	२२	५८	३	४	२३	११	मिथुनेन्दु: ५।०२ उ.भा. (१) भौम:३७।२१ गु. शंकराचार्य ज.×	०	९	५६	१४	५	५३
३२	३५	६	रव	६०	०	०	०	अद्र	४५	१८	२३	५९	सुव	५७	१३	कौ	२८	५६	४	५	२४	१२	श्री रामानुजाचार्य जयंती D शिवाजी जयंती	०	१०	५४	४१	५	५२
३२	४०	६	चंद्र	०	५७	६	१४	पूर्न	५०	४५	२६	९	धृत	५७	१८	ग	०	५७	५	६	२५	१३	कर्केन्दु: ३४।३३ श्री गंगा सप्तमी (गंगोत्पत्ति)	०	११	५३	९	५	५१
३२	४५	७	मंग	४	४०	७	४२	पुष	५३	४८	२७	४४	शूल	५६	१०	व	४	४०	६	७	२६	१४	भ. ४।४० उ. ३५।४६ या. आश्ले (१) शनि ४६।४८	०	१२	५१	३४	५	५०
३२	४९	८	बुध	६	४५	८	३१	श्ले	५६	५५	२८	३५	गंड	५४	३	व	६	४५	७	८	२७	१५	सिंहेन्दु५६।५५भर(१) सूर्य: १४।१७ मार्गी शुक्र: १०।१३ सीता ६	०	१३	४९	५२	५	४९
[illegible]	५४	९	बृह	६	५५	८	३४	मघ	५७	१३	२८	४१	वृद्ध	५०	२०	कौ	६	५५	८	९	२८	१६		०	१४	४८	१५	५	४८
[illegible]	५९	१०	शुक्र	५	१२	७	५२	पूफ	५५	३८	२८	२	धृ	४५	५	ग	५	१२	९	१०	२९	१७	भ ३३।२१ उ. मोहिनी ११ व्र. समा.	०	१५	४६	५६	५	४७
[illegible]	४	११	शन	१	३०	६	२२	उफ	५२	१३	२६	३९	व्या	३८	२३	वि	१	३०	१०	११	३०	१८	कन्येन्दु: ९।५८ भ १।३० या चित्रा (२) कन्यायां राहु: रेव(४)×	०	१६	४५	१५	५	४६
[illegible]	०	१२	शन	५६	२	२८	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी-क्षय ० ० ०×मीने केतु. ४४।३८ मोहिनी ११ व्रत वै.	०	०	०	०	०	०
[illegible]	८	१३	रव	४९	३७	२५	३६	हस्त	४७	१८	२४	४०	हर्ष	३०	२३	कौ	२२	५२	११	१२	मई	१९	प्रदोष व्रतम् श्री अनंग १३ स सि.योग	०	१७	४३	३३	५	४५
[illegible]	१३	१४	चंद्र	४२	२२	२२	४१	चित्र	४१	१३	२२	१३	वज्र	२१	१८	ग	१६	०	१२	१३	२	२०	तुलेन्दु: १४।२५ श्री नृसिंह जयंती कूर्म जयं भ ४२।२२ उ.	०	१८	४१	४६	५	४४
[illegible]	१७	१५	मंग	३३	५	१८	५७	स्वा	३४	२०	१९	२९	सि	११	२८	वि	८	५	१३	१४	३	२१	बुद्ध पूर्णिमा व्रतं पुण्यादि वैशाख स्नान पूर्ति. भद्रा ८।०५ या.	०	१९	३६	५३	५	४३

२७ अप्रैल बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट: १५ वैशा. इष्टं ४५।२७। ३मई भौमे पूर्णिमा ग्रह स्पष्ट: २१ वैशाख ४५।४२

सू	च	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	३	११	०	१	११	३	६	०
१	२७	६	१८	११	१४	१६	०	०
४	५४	३०	३२	३१	५०	३८	९	९
५	३८	५७	२०	१९	५२	३६	२९	२६
५	780	४६	३५	१३	१	१	३	३
२	—	१	२८	२०	३	४६	११	११
भर		उभ	भर	रो	उभ	श्ले	चि.	अश्व
		१	२	१	४	१	३	१
		मा	व	मा	मा	मा	व	व
		उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं० ८

गु. २ | म. शु. १२ | ३ | १ सू. बु. के. | ११ | ४ च. श. | १० | ५ | ७ रा. | ६ | ९ | ८

सू.	च.	म.	बु.	बृ.	श.	श.	रा.	के.
०	६	११	०	१	११	३	५	११
१६	२३	११	१५	१२	१५	१६	२९	२९
३९	२५	६	६	५१	२६	५०	५०	५०
५३	५६	२८	२१	५५	४७	५३	२३	२३
५८	8 8/2	४५	३५	१३	१५	२	३	३
१२	—	४८	२०	३४	२४	२२	११	११
भर		उभ	भ	रो	उभ	श्ले	चि	रेव
२		३	१	१	४	१	२	४
		मा	व	मा	मा	मा	व	व
		उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं० १५

गु. २ | म. शु. के. १२ | ३ | १ सू. बु. | ११ | ४ श. | १० | ५ | ६ रा. | ७ च. | ९ | ८

पक्षफलम्—प्रतिपदा को मंगल मीन राशि में, द्वितीया को गुरु रोहिणी नक्षत्र में पंचमी को बुध पूर्व में अस्त होंगे । एकादशी को राहु कन्या राशि में प्रवेश करेगा । फलत:चांदी,सोना पीतल, ताम्बा, जिस्त. लकड़ी व चौपायों के भावों में तेज़ी आवेगी । लाल मिर्च, लालचन्दन घी, तेल, नारियल. बिनौले, बादाम इत्यादि पदार्थों में भी तेज़ी का रुख रहेगा । रूई के भावों में घटा बड़ी रहेगी द्वादशी के पश्चात् श्रृंगार व सुगन्धित पदार्थों गुड़ चीनी व चावल इत्यादि में तेजी आवेगी । मीनराशि में शुक्र मंगल केतु का योग पश्चिमी एशिया में युद्धका वातावरण पैदा करेगा । कहीं छत्रभंग होने का योग है । मेष,वृष,कन्या,तुला,मकर व मीन राशि वालों को व्यवसाय में लाभ रहेगा

आकशलक्षण—हिमाचल पश्चिमी, पंजाब हरियाणा के विभिन्न भागों में तीव्र वर्षा व आन्धि के योग हैं ।

श्री परशुरामजयन्ती- साम्प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या वैशाखस्यसितपक्षे तृतीयायां पुनर्वसौ निशाया: प्रथमे यामे रामाख्य:समयेहरि: अक्षय ३ वैसाखे शुक्लपक्षेतृतीया रोहिणी युता । दुर्लभा बुधवारेण सोमेनापियुता तथा सा पूर्वाह्णव्यापिनी [illegible] १४ वैशाखे शुक्लपक्षेचतुर्दश्यांनिशामुखे मज्जन्मसम्भवंपुण्यं इतमपायप्रणाशनम् ।

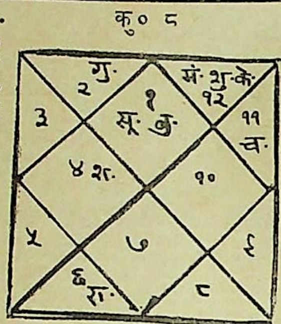
३६ विक्रमी सम्वत् २०३४ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष शाका १८९९ सन ईस्वी १९७७ हिजरी सन १३९७ नित्यसूर्योदय स्पष्टादि भारतीय स्टैंडर्ड टाईम जालन्धर ३६

दि.	मा.	ति.	वा.	घ	प.	घटे	मि	नक्ष	घ	प	घंटे	मि	यो	घ.	प	करण	घ.	प.	श.	हि.	मई	वैशाख	उ.पा. ६।४२ ब्रह्म५५।३८ सूर्य उत्तरायणे ग्रीष्मऋतु:	नि.	स.	स्प.	घट.	सू.	उ.
३३	२१	१	बुध	२८	४८	१४	४६	वि.	२७	५	१६	३२	व:	४९	२१	कौ	२२	४८	१४	१५	४	२२	वृश्चिकेन्दु: १३।५५ अ.स.सि.योग: २७।०५ उ.	०	२०	३८	५	५	४२
३३	२५	२	बृह	१३	३५	११	७	अनु	१६	५७	१३	३९	पर	३९	७	ग	१३	३५	१५	१६	५	२३	भ ३६।१० उ. रोहणी (२) गुरु: ५०।०९ स.सि.योग नारद जयं.	०	२१	३६	१५	५	४१
३३	२८	३	शुक्र	३	४५	७	३४	ज्ये	१३	१०	१०	५६	शि	२६	३७	वि.	४	४५	१६	१९	६	२४	धनुषेन्दु: १३।१० भ ४।४५ या. व्रत श्री गणेश चौथ अश्विनी१+	०	२२	३४	२३	५	४०
०	०	४	शुक्र	५६	४१	२८	२२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००००+ वक्री बुध: ५६।२८ चन्द्रोदय रात्री १० बजकर १८ मिं	०	०	०	०	०	०
३३	३१	५	शनि	५०	१	२५	३९	मूल	९	२७	८	३८	सि	१९	१०	कौ	२४	२२	१७	१८	७	२५	टैगोर जयंती पातस्पर्श: ३६।२१ रेवती (१) शुक्र: ५३।०६	०	२३	३२	३०	५	३९
३३	३४	६	रवि	४४	४३	२३	३१	पूषा	५	२५	७	४८	सा	१४	२	ग	१७	२२	१८	१९	८	२६	मकरेन्दु १७।०३ भ. ४४।४३ उ. स.सि.योग: ५।२५ उ.	०	२४	३०	३५	५	३८
३३	३८	७	चंद्र	४१	१०	२२	५	उषा	२	३०	६	३९	शुभ	८	३	वि.	१२	५७	१९	२०	९	२७	भ. १२।५७ या. स.सि.योग:	०	२५	२८	३८	५	३७
३३	४२	८	मंग	३९	२८	२१	२३	धन	६०	०	०	०	शुक	३	३१	बा	१०	२४	२०	२१	१०	२८	कुम्भेन्दु: २८।५३ कृतिका (१) सूर्य: ५९।३७ **पंचक रारम्भ** २८।५३	०	२६	२६	२४	५	३६
३३	४५	९	बुध	३६	३३	२१	२५	धन	०	३५	५	२२	ऐन्द्र	५९	५	तै	१०	३१	२१	२२	११	२९	रेव (१) भौम: ४।१७	०	२७	२३	३८	५	३६
३३	४८	१०	बृह	४१	२३	२२	६	शत	१	४८	६	१६	वैधृ	५८	३१	व	१०	२८	२२	२३	१२	३०	मीनेन्दु: ४९।४० भ.७।५८उ.४१।२३या. पश्चिमोदयी बुध:१८।२१	०	२८	२१	३३	५	३५
३३	५१	११	शुक्र	४४	४३	२३	२८	पूभ	५	४८	९	५४	विष्	५९	११	ब	१३	३	२३	२४	१३	३१	अपरा एकादशी व्रतं सर्वेषाम् भद्रकाली ११ मेला	०	२९	१९	२८	५	३५
३३	५४	१२	शनि	४९	१५	२५	१७	उभ	११	८	१०	२	प्री	५९	४१	कौ.	१६	५४	२४	२५	१४	ज्ये	वृषेऽर्क:२८।०२सक्रा.३०मुहू:पुण्य४४।०२या.बुधमार्गी४६।४८	१	०	१०	३२	५	३४
३३	५७	१३	रवि	५४	४०	२७	२६	रेव	१७	३३	१२	३५	आ	६०	०	ग	२१	५८	२५	२६	१५	२	मेषेन्दु: १७।३३ भ ५४।४० उ. पंचक समाप्त स.सि.योग	१	१	१५	२४	५	३४
३४	०	१४	चंद्र	६०	०	०	०	अश्व	२४	४०	१५	२६	आ	३	४८	वि.	१७	२०	२६	२७	१६	३	भ. २७।४३ या:	१	२	१३	१२	५	३४
३४	३	१४	मंग	०	४५	५	५०	भर	३२	१३	१८	२९	सौ.	५	१६	च	०	४५	२७	२८	१७	४	वृषेन्दु: ४९।१२अमावस वट सावित्री व्रतं पूजनं च.स.सि. योग:	१	३	१०	५९	५	३२
३४	६	३०	बुध	७	०३	८	२१	कृत	४०	०	८	१३	शो	६	१९	ना	७	०३	२८	२९	१८	५	अमावस स्नान दानादौ ।	१	४	८	४५	५	३२

१० मई भौमे अष्टम्यां ग्रहस्पष्टा: २८ वैशाख ४५।५७   १८ मई बुधे अमावस्यां ग्रहस्पष्टा ५ ज्ये. ४६।१०

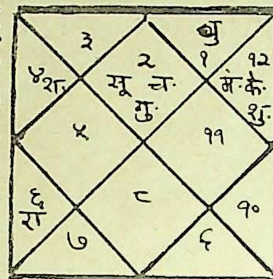
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	१०	११	०	१	११	३	५	११
[illegible]	२	१६	११	१४	१७	१७	२९	२९
[illegible]	५८	२६	५०	२७	४८	१०	२८	२८
[illegible]	५७	२२	२२	१५	५७	२	६	६
५७	४०/३	४५	१८	१३	२७	३	३	३
५९	—	३५	०	४०	१८	१६	११	११
भर		उभ	भर	रो.	रेव	श्ले	चि.	रेव
४		४	१	२	१	१	२	४
		मा.	वक्र	मा.	मा.	मा.	व	व
		उ	अ	उ.	उ	उ	अ	अ

कु० ८



सू.	च.	म	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	११	०	१	१२	३	५	११
४	११	२२	११	१६	२२	१७	२६	२९
८	१५	३०	५६	१७	२०	३९	२	२
४५	५७	१८	४६	१	१३	४२	३८	३८
५७	७०/८	४५	२१	१३	३८	४	३	३
४४	—	१८	१	५२	४२	१२	११	११
कृत		रेव	भ	रो.	रेव	श्ले	चि.	रेव
३		२	१	२	२	१	२	४
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व	व
		उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु० ३०



पक्षफलम—इस पक्ष में दशमी को बुध पश्चिमोदयी होगा ९ को सूर्य कृतिका नक्षत्र में प्रवेश व द्वादशी को बुध मार्गी हो रहा है। वृष संक्रान्ति ३० मुहूर्ति है अत: पक्षारम्भ से श्वेत और पीले पदार्थों जैसे हल्दी, चावल, गुड़, घी उड़द इत्यादि के भावों में कमी वेशी हो कर तेज़ी आ जावेगी। अनाज, धान व जौ आदि के मूल्यों में प्राय: स्थिरता रहेगी। किसी विशिष्ट नेता की अकाल मृत्यु के योग हैं। वृष, कर्क, सिंह कन्या, कुम्भ व मीन राशि वालों के लिए पक्ष फल शुभ रहेगा जबकि अन्य राशि वालों को मध्यम

आकाश लक्षण आकाश प्राय: निर्मल रहेगा। किन्तु पक्षान्त में उत्तरीपंजाब व हिमाचल हरियाणा में तीव्र आन्धी के योग पाए जाते हैं।

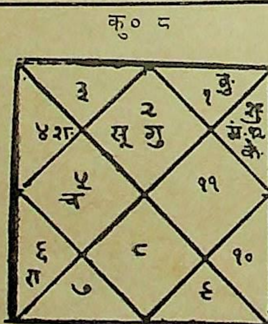
ज्येष्ठ मासस्यायां वैधव्यदोष प्रशमनाय वट सवित्री व्रतम् कुर्यात्, इदं ज्येष्टत्रयोदशीम.रभ्यामान्त् कर्तव्यमिति। ततो विशमये पात्र वस्त्र युग्मेन वेष्टिते। सावित्री प्रतिमांसौवर्णे
कर्यात अनेक कलातारणफलं भवति।

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घटे	मि.	नक्ष	घ.	प.	घटे	मि.	यो.	घ.	प.	कर	घ.	प.	श.	हि.	मई	ज्ये.	विशाखा ५५।५ सिद्धि ५७।१६ सूर्य उत्तरायणे ग्रीष्मर्तु:	नि.	सू.	स्प.	ष्ट.	स.	उ.
३४	०९	१	बृह	१३	२३	१०	५३	रो	४७	३८	२४	३५	अत	७	४५	ब	१३	२३	२९	३०	१९	६	चन्द्र दर्शनम्	१	५	६	२९	५	३०
३४	१५	२	शुक्र	२२	०	१३	२०	मृग	५४	५८	२७	३१	सुक	११	९	को	२२	८	३०	जम	२०	७	मिथुनेन्दु २१।२० रोहिणी (३) गुरु २७।१३ रम्भा तृतीया	१	६	४	२	५	३२
३४	१८	३	शन	२५	१५	१५	३७	अद्र	६०	०	०	०	धृत	१३	१५	ग	२५	१५	३१	२	२१	८	भ ५७।४८ उ. भरणी (१) बुध ४६।४ प्रताप जंयती	१	७	१	५४	५	३९
३४	२१	४	रव	३०	२०	१७	३८	अद्र	१	४८	६	१३	शूल	१४	४७	वि	३०	२०	ज्ये	३	२२	९	कर्केन्दु ५१।२० भ ३०।२० या. गुर्वास्त पश्चिमे ५६।२३,गुरु ॥	१	७	५९	३४	५	३१
३४	२४	५	चंद्र	३४	२३	१९	१४	पुर्न	५	१८	८	३६	गंड	१५	५५	बा	२	२२	२	४	२३	१०	॥ अर्जुन देव शहीदी दिवस	१	८	५७	१४	५	२९
३४	२६	६	मंग	३७	१०	२०	२१	पुष्	१२	३८	१०	३२	वृद्ध	१६	७	कौ	५	४७	३	५	२४	११	रोहिणी (१) सूर्य: ५०।४८	१	९	५४	४०	५	२६
३४	२८	७	बुध	३८	२८	२०	५१	श्ले	१६	८	११	५६	ध्रुव	१५	३	ग	७	४६	४	६	२५	१२	सिंहेन्दु १६।०८ भ ३८।२८ उ.	१	१०	५२	१६	५	२२
३४	३०	८	बृह	३९	५०	२०	४०	मघ	१८	५	१२	४२	व्या	१२	४१	वि	८	९	५	७	२६	१३	भ ८।१९ या. मेला क्षीर भवानी(कश्मीर)	१	११	५०	५१	५	२८
३४	३३	९	शुक्र	३५	४५	१९	४६	पूफ	१८	१५	१२	४६	हर्ष	८	४	बा	६	४८	६	८	२७	१४	कन्येन्दु ३३।५८	१	१२	४८	२५	५	२८
३४	३५	१०	शन	३१	४२	१८	९	उफ	१६	३५	१२	६	वज	१	११	तै	३	४३	७	९	२८	१५	भ. ५६।५१ उ. अश्वि १ मेषे भौम:४१।०१ गंगा दशहरा(अवतार	१	१३	४५	५८	५	२८
३४	३८	११	रव	२५	५८	१५	५१	हस्	१३	१२	१०	४५	व्य,	४८	३१	वि.	२५	५८	८	१०	२९	१६	तुलेन्दु ४०।५५ अश्वि मेषे शुक्र:३०।२१ निर्जला११ वृत सर्वेषां×	१	१४	४३	२९	५	२८
३४	४१	१२	चंद्र	१८	४५	१२	५	चि	८	१८	८	४७	वर	३६	१६	बा	१८	४५	९	११	३०	१७	प्रदोष व्रत चम्पक १२ ×स.सि.योग भ २५।५८ या.	१	१५	४०	५९	५	२८
३४	४३	१३	मंग	१०	२०	९	३५	स्वा	२	१०	६	१९	पर	२८	२	तै	१०	२०	१०	१२	३१	१८	वृश्चिकेन्दु ४१।५३	१	१६	३८	२८	५	२७
३४	४५	१४	बुध	१	५	५	५३	अन	४७	३५	२४	२९	शि	१८	८	वि.	१	५	११	१३	जून	१९	भ १।०५ उ. २६।५९ या. वृत पूर्णिमा पुण्यं च मन्वादि. वट.K	१	१७	३५	४५	५	२७
व	म	१५	बुध	५१	४८	२६	१०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	पूर्णिमा का क्षय Kसावित्री व्रत (गुजरे) अ.सि.व.स.सि.योग:	०	०	०	०	०	०

२६ मई गुरौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्ट: १३ ज्ये. ४६।१९

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा	के
१	४	११	०	१	११	३	५	११
११	१६	२८	१६	१८	२७	१८	२८	२८
[illegible]	४२	३३	५६	८	५०	१४	३७	३७
[illegible]	५६	१५	३८	२२	२७	५४	११	११
[illegible]	7 9/0	४५	५०	१३	४६	४	३	३
[illegible]		६	१०	५८	५७	४०	११	११
[illegible]	—	रेव	भ	रो.	रेव	श्ले	चि.	रेव
१	श्री	४	२	३	४	१	२	४
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व	व
		उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कु० ८



१ जून बुधे पूर्णम्यां ग्रह स्पष्टा: १९ ज्ये. ४६।२४

सू.	चं.	मं	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
१	७	०	०	१	०	३	५	११
१७	१३	३	२३	१६	२	१८	२८	२८
३५	५४	३	१२	३२	४१	४३	१८	१८
४५	४८	१६	८	२३	४	२४	५	५
५७	9 1/5	४४	७०	१४	५१	४	३	३
२७		५४	१०	०	३०	५१	११	११
रो.	श्री	अश	भर	रो.	अश	श्ले	चि.	रे
३		१	४	३	१	१	२	४
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व	व
		उ	उ	अ	उ	उ		

कु० १५

३ | २ सू. गु | १ मं. बु. शु. | ४ श. | १२ के. | ५ | ११ | ६ रा. | ८ चं. | १० | ७ | ९

पक्षफलम्—चतुर्थी को गुरु अस्त होंगे ।दशमी को मंगल मेष राशि में तथा ११ को शुक्र मेष राशिमें प्रवेश करेंगे लैबनान व सीरिया इत्यादि पश्चिमोत्तर देशों में युद्ध व अशान्ति का भय । अनाज, धान. जौ. बिनौले. पशुचारा, गुड़, तिल, तेल, व रसदार पदार्थ ४ से तेज हो जायेंगे । सुवर्ण. तांबा. पीतल, जिस्त स्टील आदि धातुएं भी अपेक्षा कृत तेज रहेंगी । शनि की मं, बु. व. शुक्र पर दृष्टि राजनीतिक क्षेत्र में उथल-पुथल एवं परिवर्तन के संकेत है इस पक्ष का फल सिंह, कन्या, धन, मकर व कुंभ राशि वालों को शुभ है शेष को मध्यम ।

आकाश लक्षण— हिमाचल के पूर्वी क्षेत्रों तथा पंजाब हरियाणा के उत्तरी क्षेत्रों में तीव्र आन्धि व बूंदा बांदी के योग हैं ।० ०

ज्येष्ठ शुक्ल दशम्यां "गंगावतार" इय दशहराख्येति । अत्रदशयोगा उच्यन्ते, ज्येष्टे मासि १ सिते पक्षे २दशम्यां ३ बुध४ हस्तयो: ५व्यतिपाते६गरा७नन्दे८कन्या चन्द्र ९ रवौ वृषे १० दशयोगे नरागंगायां स्नात्वा प्रमुच्यते इति ।इह दशमी व्यतिपातयो: मुख्यत्वंज्ञेयम् पूजामन्त्र:—ओ३म् नम: शिवायै नारायणै दशहराय गंगायै नमो नम: ।

विक्रमी सम्वत २०३४ आषाढ़ वाद शाका १८९९ सन ई० १९७७ सन् हिजरी १३९७ नित्य सूर्य स्पष्ट सूर्योदयादि स्टै. टाईम जालन्धर

द.	मा.	ति.	वा.	घ	प.	घटे	मि.	नक्ष	घ.	प.	घटे	मि.	यो	घ-	प.	करण	घ.	प.	शा.	हि.	जून	ज्ये.
३४	४७	१	बृह	४१	४८	२२	९	ज्ये	३९	५५	२१	२४	सि	७	४३	बा	१६	१८	१२	१४	२	२०
३४	४९	२	शुक्र	३२	३८	१८	२९	मूल	३२	४८	१८	३३	शु	४६	५१	तै	७	१३	१३	१५	३	२१
३४	५०	३	शन	२४	९	१५	१०	पू ष	२६	३८	१६	५	शु	३९	५९	वि	२४	९	१४	१६	४	२२
३४	५२	४	रव	१७	२८	१२	२४	उष	२१	५०	१४	६	ब्रम	३०	२१	बा	१७	२८	१५	१७	५	२३
३४	५४	५	चंद्र	१२	१३	१०	१८	श्रव	१८	४३	१२	५४	ऐ	२४	२३	तै	१२	१३	१६	१८	६	२४
३४	५५	६	मंग	८	५८	९	०	धन	१९	३८	१२	२८	वैधृ	१६	५३	व	८	५८	१७	१९	७	२५
३४	५६	७	बुध	७	४८	८	३२	शत	१८	३५	१२	५१	वि	१५	१४	ब	७	४८	१८	२०	८	२६
३४	५८	८	बृह	८	४३	८	५४	पूभ	२१	३५	१४	३	प्री	१५	४५	कौ	८	४३	१९	२१	९	२७
३४	५९	९	शुक्र	११	३३	१०	२	उभ	२६	२३	१५	५८	आ	१८	१८	ग	११	३३	२०	२२	१०	२८
३५	०	१०	शन	१५	५८	१	४८	रेव	३२	३५	१८	२९	सौ	१४	८	वि	१५	५८	२१	२३	११	२९
३५	०	११	रव	२१	३०	१४	१	अश	३९	४८	२१	२०	शो	१९	१३	बा	२१	३०	२२	२४	१२	३०
३५	०	१२	चंद्र	२७	३५	१६	२९	भर	४९	३०	२४	२५	अत	२१	३१	तै	२७	३५	२३	२५	१३	३१
३५	१	१३	मंग	३४	३	१९	२	कृत	५५	१८	२७	३२	सुक	२४	११	व	३४	३	२४	२६	१४	आ.
३५	१	१४	बुध	४०	१८	२१	३२	रो	६०	०	०	०	धृत	२६	२५	वि.	७	११	२५	२७	१५	२
३५	१	३०	बृह	४६	२२	२३	५८	रो	२	५२	६	३४	शूल	२८	४३	च	१३	२०	२६	२८	१६	३

साध्य ५५।८ — सूर्य उत्तरायणे ग्रीष्म ऋतु:

धनुषेन्दु: ३६।५५ गु. हर गोविन्द ज. दिन
भ ५८।२४ उ. रोहि (४) गुरु: ४६।१८
मकरेन्दु: ४०।१८ भ २४।०६ या श्रीगणेश ४°कृति(१)बुध. ३८।५८
स. सि. योग: °चन्द्रोदय रात्री ६।५२ पर स्टै.टा.
कुम्भेन्दु: ४७।५५ बुध वृष राशि में ५६।२४ पंचकारम्भ: ४७।५५
भ. ८।५८ उ. ४०।४१ या. मृगे (१) सूर्य: ४६।३९

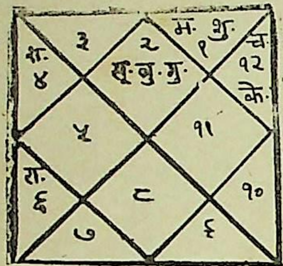
मीनेन्दु: ५।४०
भ ४०।०८ उ.
मेषेन्दु: ३२।३५ पंचक समाप्त: भद्रा १५।५८ या.
योगिनी ११ व्रतं सर्वेषां स.सि.योग: H३४।३ उ.
प्रदोष व्रतं रोहि (१) बुध: ११।२३ भर (१) शुक्र: ३४।०२
वृषेन्दु:४।२८मिथुनेऽर्क:४५।३संक्रा३०मुहूपुण्य२९।३उ.भद्रा. H
भ ७।१० या.भरणी(१)भौम:३६।१७श्ले(२) शनि ४७।५स.सि.योग
मिथुनेन्दु: ३६।२० अमावस देवपितृ श्राद्धादौ।

नि.	सू.	स्प.	ष्ट.	सू.	उ.
१	१८	३२	४२	५	२६
१	१९	३०	९	५	२६
१	२०	२७	३५	५	२६
१	२१	२५	०	५	२५
१	२२	२२	२५	५	२५
१	२३	१९	४९	५	२५
१	२४	१७	१२	५	२५
१	२५	१४	३४	५	२५
१	२६	११	५५	५	२५
१	२७	९	१५	५	२५
१	२८	६	३५	५	२५
१	२९	३	५४	५	२५
२	०	१	१२	५	२५
२	०	५८	२९	५	२५
२	१	५५	४५	५	२५

जून गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्टा: २७ ज्ये. ४६।२६

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	०	१	१	०	३	५	११
२५	८	९	४	२१	९	१९	२७	२७
१४	७	१	४	२४	५२	२५	५२	५२
३४	८	५८	१८	५	३८	७	३७	३७
५७	[illegible]	४४	९४	१३	५६	५	३	
२१	[illegible]	४१	२०	५२	३२	१४	११	१
मृगे		अश.	कृ	रो.	अश	श्ले	चि.	रे
१		३	३	४	३	१	२	
		मा	मा	मा.	मा.	मा.	व	व
		उ	उ	अ	उ	उ		

कु० ८



१६ जून गुरौ अमावस्यां ग्रह स्पष्ट ३ आषाढ़ ४६।२७

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	०	१	१	०	३	५	११
१	२	१४	१६	२३	१६	२०	२७	२७
५५	१५	१३	३९	०	१३	३	३०	३०
४५	२५	१५	२	२५	१७	१९	२०	२०
५७	70/8	४४	1 1/7	१३	५९	५	३	३
१५	—	१५	३०	४२	४८	४८	११	११
मृगे		भर	रो.	रो.	भर	श्ले	चि.	रेव
३		१	३	४	१	२	२	४
		मा	मा.	मा.	मा.	मा.	व	व
		उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कु० ३०

श· ४ | ३ सू· च· | बु· गु· २ | मं· शु· १ | ५ | ६ रा | १२ के· | ७ | ९ | ११ | ८ | १०

पक्षफलम पंचमी को बुध वृष राशि में, षष्ठीं को सूर्य मृगशिर १२ को शुक्र भरणी नक्षत्र में तथा मिथुन संक्रा ३० मुहूर्ति है। तदनुसार अनाज, तिलहन, सुपारी, एरण्ड, अलसी, दूध, दहीं तथा चना ज्वार, बाजार, रूई इत्यादि त्रयोदशी तक तेज रहेगी उसके बाद मार्कीट में घटावड़ी रहेगी। ज्वार मोंठ, बाजारा सुपारी केसर मजीठ आदि सुगन्धित पदार्थों में तेजी रहेगी।बुध, शुक्र का योग शुभ है प्रजा में शान्ति व सुख रहेगा। पश्चिमी देशों में कहीं यान दुर्घटना भूकम्प आदि से हानि चतुर्थ व दशम भाव में कालसर्प योग राजनीति-क्षेत्र में परिवर्तन करेगा।

आकाश लक्षण ३, ५, ६, ८ १५ जून को हरियाणा, यू.पी. बिहार व पंजाब में तीव्र आन्धी व गर्मी रहेगी। यदि ५, ७, ११, १४ जून को बादल चाल या बिजली चमके तो + +श्रावण में अत्यधिक मन्दे के संकेत है।

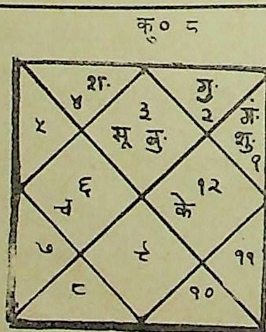
आषाढ़े चैकभक्तेन स्थित्वा मासमतिन्द्रित: बहुधनो बहुपुत्राश्च जायन्ते उपानद्युगले छत्रलवणामलकानि च आषाढ़े वामनप्रीत्यदातव्यानीह भक्तित:। अथेहसर्ववृतषुसामान्यप्रमाउच्यन्ते क्षमा सत्यं दया दानं शौचमिन्द्रियनिग्रह:। देवपूजाग्निहवनं संतोषस्तेयवर्जनम्। अथवृस्तभंग कार्याणि असकृज्जलपानाच्चसकृत्ताम्बूल चर्व्वणात्। उपवास: प्रनश्येत दिनास्वपाच्चमैथुनात्

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घटे	मि.	नक्ष	घ.	प.	घंट	मि.	यो.	घ.	प.	करण	घ.	प.	शा.	हि.	जून	आ.	मूला ५९।२३ ग्रीष्मर्तु: सू: उत्तरायणे	नि.	सू.	स्प.	ष्ट.	सू.	उ.
३५	१	१	शुक्र	५१	२३	२५	५८	मृग	९	५८	९	२४	गंड	३०	३५	कि	१८	५२	२७	२९	१७	४		२	२	५३	०	५	२५
३५	१	२	शन	५५	५५	२७	४७	आ	१६	२५	११	५९	वृद	३२	३	का	२३	३९	२८	३०	१८	५	चन्द्र दर्शन मृगशिरे(१)गुरु १२।११ रथ यात्रा पूर्वोदय:गुरु२७। २७	२	३	५०	१५	५	२५
३५	२	३	रव	५९	०	२९	३	पुन	२२	१०	१४	१७	ध्रुव	३२	५३	तै	२७	२८	२९	रज	१९	६	कर्कोन्दु ५।४८ पश्चिमोऽस्त: बुध: १३।३१ स.सि.योग:	२	४	४७	२९	५	२५
३५	२	४	चंद्र	६०	०	०	०	पुष	२६	५८	१७	१३	व्या	३२	४५	व	२९	३०	३०	२	२०	७	भ ३०।३० उ. मृगे (१) बुध: ६।३२ स.सि.योग	२	५	४५	४३	५	२६
३५	२	४	मंग	२	२०	६	२२	श्ले	३०	५०	१७	४६	हर्ष	३३	६	व	२	२०	३१	३	२१	८	सिंहेन्दु ३०।५० भ २।२० या. आर्द्रा (१) सूर्य ४४।१८ स.सि.×	२	६	४१	५६	५	२६
३५	३	५	बुध	३	५०	६	५८	मघ	३३	३३	१८	५१	व	३०	३१	बा	३	५	आ.	४	२२	९	राष्ट्रीय आषाढ़ शुरु ×योग, सूर्य दक्षिणायने	२	७	३९	९	५	२६
३५	३	६	बृह	४	४०	७	६	पूफ	३४	५८	१९	२५	सि	२७	३४	तै	४	४०	२	५	२३	१०	कन्येन्दु ५०।५ मिथुने बुध: १८।५१	२	८	३६	५१	५	२६
३५	२	७	शुक्र	३	५	६	४०	उफ	३४	५५	१९	२४	व्य	२३	५१	व	३	५	३	६	२४	११	भ. ३।०५ उ. ३२।१७ या आर्द्रा (२) सूर्य: ५१।३७	२	९	३३	३२	५	२६
३५	१	८	शन	०	२८	५	३८	हस्त	३३	२०	१८	४७	वर	१७	५	व	०	२८	४	७	२५	१२		२	१०	३०	४३	५	२७
०	०	९	शन	५६	२०	२७	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०चातुर्मासारम्भ: ०	०	०	०	०	०	०
३५	१	१०	रव	५०	४३	२५	४४	चि	३०	१५	१७	३३	पर	१२	२६	तै	२३	३२	५	८	२६	१३	तुलेन्दु: १।५८ आर्द्रा (१) बुध: ३१।२८ ०	२	११	२७	५३	५	२७
३५	१	११	चंद्र	४३	४५	२२	५७	स्वा	२५	४८	१५	४६	शि	५	२	व	१७	१४	६	९	२७	१४	भ १७।१४ उ. ४३।४५याकृति(१)शुक्र २३।२७देवशयनो११व्रतं सर्वे	२	१२	२५	३	५	२७
३५	१	१२	मंग	३५	४३	१९	४४	वि	२०	१०	१३	३०	सा	४७	३	व	९	४४	७	१०	२८	१५	वृश्चिकेन्दु ६।३८ प्रदोष व्रतं	२	१३	२२	१२	५	२७
३५	०	१३	बुध	२६	५३	१६	१३	अनु	१३	३३	१०	५३	शुभ	३७	२९	तै	२६	५३	८	११	२९	१६	अ. सि. योग. १३।३३ या.	२	१४	१९	२०	५	२८
३५	०	१४	बृह	१७	४३	१२	३३	ज्ये	६	३०	८	४	शुक	२६	४१	बा	१७	४३	९	१२	३०	१७	धनुरेन्दु ६।३० भ १७।४३ उ. ४३।०८ या. वृषे शुक्र:३१।२४	२	१५	१६	२७	५	२८
३४	५९	१५	शुक्र	८	३३	८	५४	पूष	५२	४०	२६	३३	ह	१६	११	ब	८	३३	१०	१३	जुल	१८	गुरु पूर्णिमा व्यास पूजा स्नानदानादि ॥ व्रतं पूर्णिमा वायु परीक्षा	२	१६	१३	३४	५	२९

२५ जून शनौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्टा: १२ आषा०४६।२३

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	०	२	१	०	३	५	११
१०	२६	२०	५	२५	२५	२१	२७	२७
३०	३८	४२	११	३	१	१	१	१
४३	४०	५२	४९	२९	११	३६	४२	४२
५७	८ ०/९	४४	१ २/७	१३	६२	६	३	३
१३	—	३	१०	३६	२८	२४	११	११
आ.		भर	मृग	मृग	भर	श्ले	चि.	रेव
२		३	४	१	४	२	२	४
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व	व
		उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

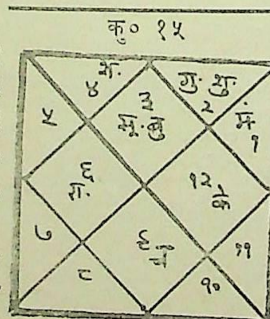
कु० ८



१ जुला भृगौ पूर्णम्यां ग्रहस्पष्टा: १८ आषाढ ४६।२०

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
२	८	०	२	१	१	३	५	११
१६	२५	२५	१८	२६	१	२१	२६	२६
१३	३	५	२०	२५	२१	३८	४२	४२
३४	५५	५८	३१	३०	१९	३४	३६	३६
५७	८ ९/९	४३	१ २/८	१३	६४	६	३	३
८	—	४४	१०	२५	२०	३६	११	११
आ.		भर	आ.	मृग	कृत	श्ले	चि	रेव
३		४	४	१	२	२	२	४
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व	व
		उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कु० १५



पक्षफलम् इस पक्ष में गुरु पूर्वोदय, बुध पश्चिमोऽस्त एवं मिथुन राशि में प्रवेश कर रहे हैं। अत: पक्षारम्भ से हल्दी, मोंठ, उड़द, मूंगफली, तिलहन, सरसों, लाख पशुचारा इत्यादि तथा अन्य पीले रंग की तांबा पीतल आदि धातुएं कुछ घटा बड़ी होकर तृतीया से से तेज हो जाएंगी। मार्कीट में अन्य वस्तुओं की स्थिति प्राय: अनिश्चित रहेगी। व्योपारियों को बहुत सोच समझ कर क्रय-विक्रय करना चाहिए। काल-सर्प योग के कारण राजनीति क्षेत्र में उथल पुथल रहेगी। मेष, वृष, मिथुन कन्या, तला, धन व कुंभ राशि वालों को पक्षफल लाभप्रद रहेगा। **आकाश लक्षण** १८, २१, २३,२५, २९ जून को हिमाचल व हरियाणा में खण्ड दृष्टि के योग है।

आषाढ़शुक्ल द्वितीयां श्री रामस्य रथोत्सव: कार्य्य इति। आषाढ़शुक्लैकादश्यां श्री विष्णो: शयनोत्सव:कार्य:। आषाढ़शुक्ल पौर्णमास्यां व्यास पूजा विधेयाइति। अत्रैव निशामुखे वायु परीक्षाच कार्योति। ययि पूर्व, उत्तर और ईशान की वायु चले तो उत्तम, पश्चिम और वायव्य की मध्यम, शेष दिशाओं की वायु चले तो अच्छी नहीं होती।

दि.	मा.	ति.	वा	घ.	प.	घंटे	मि.	नक्ष	घ.	प.	घंटे	मि.	यो.	ध.	प	करण	घ.	र.	शा.	हि.	जुल	आ.
०	०	१	शुक्र	५९	५०	२९	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३४	५८	२	शन	५२	१०	२६	२१	उष	४३	२३	२४	१४	ऐन्द्र	५	४४	तै	२६	०	०	१४	२	१९
३४	५६	३	रव	४५	५०	२३	५०	श्रव	४१	३१	२२	२६	वि	४९	४९	व	१९	०	१२	१५	३	२०
३४	५५	४	चद्र	४१	१५	२२	२	धन	३९	४७	२१	२३	प्री	४३	५२	ग	१३	३४	१३	१६	४	२१
३४	५४	५	मंग	३८	४५	२१	०	शत	३९	०	२१	६	आ	३९	१७	कौ	१०	०	१४	१७	५	२२
३४	५३	६	बुध	३८	१७	२०	४९	पूभ	४०	२५	२१	४१	सौ	३६	३४	ग	८	३१	१५	१८	६	२३
३४	५२	७	बृह	४०	०	२१	३१	उभ	४३	५३	२३	४	शो	३५	४४	वि	१०	८	१६	१९	७	२४
३४	५१	८	गुरु	४३	३४	२२	५७	रेव	४९	१०	२५	११	अत	३६	११	बा	११	४७	१७	२०	८	५
३४	५०	९	शन	४८	३५	२४	५८	अश	५५	४१	२७	४८	सुक	३७	२६	त	१६	५	१८	२१	९	२६
३४	४८	१०	रव	५४	३७	२७	२३	भर	६०	०	०	०	धृ	४०	२६	व	२१	३६	१९	२२	१०	२७
३४	४६	११	चंद्र	६०	०	०	०	भर	०३	१७	६	५१	शूल	४२	११	ग	२७	५६	२०	२३	११	२८
३४	४४	११	मंग	१	८	६	०	कृत	१०	५५	९	५५	गंड	४२	५३	कौ.	१	८	२१	२४	१२	२९
३४	४२	१२	बुध	७	०	८	२२	रो	१८	३०	१२	५८	वृद्ध	४७	१०	तै	७	०	२२	२५	१३	३०
३४	४०	१३	बृह	१२	४५	१०	४१	मृग	२५	२५	१५	४५	ध्रुव	४९	२	व	१२	४५	२३	२६	१४	३१
३४	३८	१४	शुक्र	१७	२६	१२	३६	अद्र	३१	३३	१८	१२	व्या	५०	१२	श	१७	२६	२४	२७	१५	३२
३४	३७	३०	शन	२१	१३	१४	४	पुन	३४	१८	२०	१८	हर्ष	५०	४०	ना	२१	१३	२५	२८	१६	श्रा.

वैधृति ५३।४५ वर्षाऋतुः सूर्य दक्षिणायने

प्रतिपदा का क्षय ×राहुः रेव (३) केतुः २६।१०

मकरेन्दुः ६।८पुन(१)बुध ३३।२६ मृगे(२)गुरुः ५१।०५चित्रा(१)×

भ १६।० उ. ४५ ५० या. कृति (१) भौमः ५४।१४

कुम्भेन्दुः १०।५० श्री गणेश ४ व्रतं पंचकारम्भ १०।५ चन्द्रोदयR

पुनर्वसु (१) सूर्यः ४३।४५ Rरात्रौ १२।०३स्टै० टाईम

मीनेन्दुः १५।५० भ. ३८।१७ उ.

भ १०।०८ या. कर्के बुधः १६।१५ B पंचक समाप्त

मेषेन्दुः ४९।१० वृषे भौमः २६।४० पुष्ये(१) बुधः ५३।५७ B

रोहिणी (१) शुक्रः ४८।२१ पूर्वोदयी बुधः १७।२१

भ. २१।३६ उ ५४।३७ या

वृषेन्दुः २२।१३ कामदा ११ व्रत स्मा.

कामदा ११ व्रतं वै. स.सि.योगाः १०।५५ उ.

मिथुनेन्दु ५२।०५ प्रदोष व्रतं स.सि.योग १६।२६ या. प्रदोषव्र.

भ १२।४५ उ. ४५।३८याCहरियाली अमावस अधिमास स्नानशुरू

-आश्ले (३) शनि २५।४० आश्ले (१) बुधः ५६।२८

कर्केन्दु २०।३३ कर्के सूर्यः ११।५६ सक्रान्ति.मु.४५पुण्य२७।५६याC

नि.	सू.	स्प.	ष्ट.	सू.	उ.
०	०	०	०	०	०
२	१७	१०	४२	५	२९
२	१८	७	५०	५	३०
२	१९	४	५९	५	३०
२	२०	२	८	५	३०
२	२०	५९	१८	५	३१
२	२१	५६	२८	५	३१
२	२२	५३	३८	५	३२
२	२३	५१	११	५	३२
२	२४	४९	२२	५	३२
२	२५	४६	३३	५	३२
२	२६	४३	४४	५	३३
२	२७	४०	५५	५	३४
२	२८	३८	७	५	३५
२	२९	३५	१९	५	३५
३	०	३२	३१	५	३५

८ जुला भृगौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्टाः २५ आषाः ४६।१२

१६ शनौ अमावस्यां ग्रह स्पष्टाः १ श्रावण ४६।०२

स.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
२	१	१	३	१	१	३	५	११
२२	२	०	३	२७	८	२२	२६	२६
५३	२	१२	०	५८	५३	२७	२०	२०
४७	४	१०	३०	५१	५१	३८	१९	१९
५७	‖	४३	१२१	१३	६५	६	३	३
१३		२४		१६	५४	४८	११	११
पुन		कृ.	पुर्न	मृग	कृत	श्ले	चि.	रेव
१		२	४	२	४	२	१	
		मा.	मा	मा.	मा.	मा	व	व
		उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कु० ८

शः बु. ४ | ३ सू. | शु. मं. गु. २ | १ | ५ | ६ रा. | १२ च. के. | ७ | ८ | ९ | १० | ११

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	१	३	१	१	३	५	११
०	५	५	१८	२९	१७	२३	२५	२५
३२	३३	५५	६	४२	२६	२३	५४	५४
३१	५५	५९	१३	५६	४७	२२	५१	५१
५७	=	४२	१०८	१३	६७	७	३	३
१३		४८		०	३५	८	११	११
पुन		कृत	श्ले	मृ	रो.	श्ले	चि.	रेव
४		३	१	२	३	३	१	३
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व	व
		उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु० ३०

के. ५ | रा. ६ | ४ सू. श. च. बु. | ३ | मं. २ शु. गु. | ७ | १ | ८ | १० | ९ | १२ के. | ११

पक्षफलम—द्वितीया को राहु चित्रा नक्षत्र में सप्तमी को बुध कर्क में अष्टमी को मंगल वृष राशि में प्रवेश करेगे : नवमी को बुध का उदय हो रहा है। अमावस को कर्क सँक्रान्ति ४५ मुहूर्ति हैं फलस्वरूप गुड़. घी, उड़द, चावल, जौ चना हल्दी मिर्च, मोठ, तथा रसदार धातुओं के भावों में षष्टी के बाद तेजी रहेगी। अष्टमी के बाद सोना, चादी; तांबा, पीतल; जिस्त, स्टील इत्यादि धातुओं के भावों में घटा बढ़ी के बाद तेजी आवेगी। राहु केतु के मध्य ग्रहों की स्थिति काल सर्पयोग बना रही है। कहीं छत्र भंग व विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु के योग हैं। कहीं रक्तपात. उपद्रव व अशान्ति सम्भव है। **आकाश लक्षण**—उत्तरी हिमाचल हरियाणा व पंजाब के उत्तरी क्षेत्रों में खण्ड वर्षा के योगहै।

श्रावणादिमासचतुष्टयेवर्ज्य पदार्था उक्ताः ने -श्रावणे वर्ज्येच्छाकं दधिभाद्रपदे तथा आश्विने मासि दुग्धं च कार्तिके द्विदलंत्यजेदिति। अस्मिन्मास्येकभक्त व्रते च कार्यम् ।तथा विष्णुशि वायभिषे कोप्युक्तः इहैव श्रीधर प्रीत्यर्थं प्रतिदिन घृतादिकं देयम् तदुक्तम्-घृतं च क्षीरं कुम्भाश्च घृतपक्वफलानि च। श्रावणे श्रीधरप्रीत्ये दातव्यानि दिने दिनेइति।

दि	मा.	ति	वा	घ	प	घंटे	मि.	नक्षत्र	घ०	प.	घंटे	मि.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	शा.	हि.	जुलाई	श्राव
३४	३६	१	रव	२४	१५	१५	१८	पुष्य	४१	५	२२	०२	वर	४९	५७	ब	२४	१५	२६	२९	१७	२
३४	३४	२	चंद्र	२६	१०	१६	४	श्ले.	४४	२५	२३	२२	सि	४८	४२	कौ	२६	१०	२७	३०	१८	३
३४	३२	३	मंग	२७	०१	१६	२५	मघ	४६	४३	२४	१८	व्य	४६	२३	ग	२७	०१	२८	स०	१९	४
३४	२८	४	बुध	२६	५५	१६	२४	पूफ	४८	०५	२४	५२	व	४३	३१	वि	२६	५५	२९	२	२०	५
३४	२५	५	बृह	२५	५५	१६	००	उफ	४८	३०	२५	०२	परि	३९	५८	बा	२५	५५	३०	३	२१	६
३४	२०	६	शुक्र	२१	२२	१५	१२	हस्त	४७	५०	२४	४७	शिव	३५	२९	तै	२१	२२	३१	४	२२	७
३४	५	७	शन	२०	४०	१३	५६	चित्रा	४६	०३	२४	०५	सिध	३०	०५	व	२०	४०	श्रव	५	२३	८
३४	२	८	रव	१६	००	१२	१३	स्वा	४३	०८	२२	५६	साध	२३	०७	व	१६	२०	२	६	२४	९
३४	१	९	चंद्र	१०	५७	१०	४	विशा	३९	१५	२१	२३	शुभ	१७	१३	कौ	१०	५७	३	७	२५	१०
३४	८	१०	मंग	४	३३	७	३१	अनु	३४	२२	१९	२६	शुक्ल	९	३१	ग	४	३३	४	८	२६	११
०	०	११	मंग	५७	२३	२८	३९	०	०	०	०	०	०	०		०	०		०	०	०	०
३४	३	१२	बुध	४९	४०	२५	३४	ज्ये.	२८	५०	१७	१५	ऐंद्र	५१	२६	ब	२३	३१	५	९	२७	१२
३४	०	१३	बृह	४१	३७	२२	२३	मूल	२२	५५	१४	५६	वैधृ	४२	१२	कौ	१५	३४	६	१०	२८	१३
३३	८	१४	शुक्र	३३	४९	१९	१६	पूष	१७	०५	१२	३४	विष्क	३४	२२	ग	१५	४३	७	११	२९	१४
३३	५	१५	शन	२६	३५	१६	२३	उष	१२	०८	१०	२४	प्रीति	२५	२९	व	२६	३५	८	१२	३०	१५

ब्रह्म ५३।३७ सूर्य दक्षिणायने वर्षाऋतुः

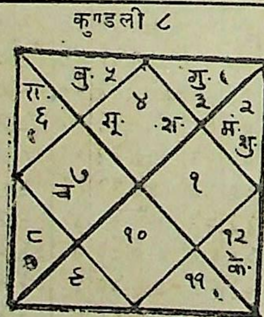
स. सि. योग अधि मासारम्भः a चन्द्रदर्शनम्
सिहेन्दुः४४।२५ मृगशिरे (३) मिथुने गुरुः ११।२३
भ. ५६।५३ उ. पुष्ये (१) सूर्यः ४४।५६
भ. २६।५५ या.
कन्येन्दुः ३।१८
रोहणी (१) भौमः ४२।२१ मृगशिरे (१) शुक्रः९।३९
तुलेन्दुः १७।०३ भ २०।४० उ. ५०।१९ या.b
b मघा (१)सिंहे बुधः ४१।५०
वृश्चिकेन्दु २५।१८ c शन्यस्तं २१।१२
भ ३३।१५ उ. ५७।२३ या. कमला ११ व्रतं c
एका० का क्षय ० ० ०
धनुषेन्दुः २८।५० कमला ११ व्रत वै. पुरुषोत्तमी १२
प्रदोष व्रतं, मिथुने शुक्रः ६।१५
मकरेन्दु ३०।४० भ ३३।४९ उ. ५९।४७ या. d
पूर्णिमा स्नान दानादौ। d पूर्णिमा व्रतादौ

नि	सू.	स्पष्टाः		सू.	उ.
३	१	२९	४४	५	३६
३	२	२६	५७	५	३६
३	३	२४	११	५	३७
३	४	२१	२५	५	३८
३	५	१८	४०	५	३८
३	६	१५	५६	५	३९
३	७	१३	१२	५	४०
३	८	१०	२९	५	४१
३	९	७	४७	५	४१
३	१०	५	६	५	४२
०	०	०	०	०	०
३	११	२	२५	५	४३
३	११	५९	४५	५	४४
३	१२	५७	६	५	४४
३	१३	५४	२८	५	४५

२४ जुलाई रवौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्टाः ९ श्राव इष्ट ४५।५०

सू.	चं.	मं.	बु	बृ	शु.	श	रा.	के
३	६	१	४	२	१	३	५	११
८	००	११	१	१	२६	२४	२५	२५
१०	४	२४	३२	२५	१९	२३	२९	२९
२९	९	४९	१८	२२	४८	०	२३	२३
57/18	[illegible]	42/8	92/4	12/38	68/40	7/52	3/11	3/11
पु.ष.		रो	मघ	मृ	मृगे	श्ले	वि.	रेव
२		१	१	३	१	३	१	३
		मा उ	मा उ	मा उ.	म' उ.	मा. ३.	व अ	त्र अ

कुण्डली ८



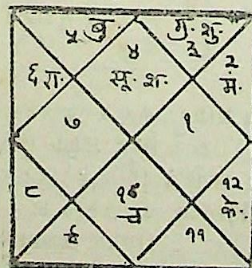
३० जुलाई शनौ पूर्णम्यां ग्रहस्पष्टाः ४५।४०

सू.	चं.	म	बु.	बृ	शु.	श	रा.	के
३	९	१	४	२	२	३	५	११
१३	१९	१५	१०	२	२	२५	२५	२५
५४	३३	३०	०३	३६	५२	११	१०	१०
२८	४७	५४	००	५०	५४	५५	१७	१७
57/22	श्री	41/25	73/00	12/8	69/26	8/32	3/11	3/11
पू.ष		रो	मघ	मृग	मृगे	श्ले	चि	रेव
४		२	४	३	२	३	१	३
		मा उ	मा उ.	मा. उ.	मा उ.	मा अ	व अ	त्र अ

पक्षफलम

द्वितीया को गुरु मिथुन राशि में, सप्तमी को बुध सिंह राशि में तथा त्र्योदशी को शुक्र मिथुन राशी प्रवेश होंगें। सू. श. की युति

कु० १५



दशमी को शनि अस्त हो रहे हैं। इसके फलस्वरूप सोना, चान्दी, सूती कपड़ा, घी, तिल तिलहन, हल्दी, सरसो, बिनोले सोना, पीतल, व ताम्बा इत्यादि पीले पदार्थ, १८ जुलाई से तेज हो जाएगे देवदारू, लकड़ी, तीक्ष्ण पदार्थों में भी तेजी का रूख शेयरों के भाव गिरेंगे। शन्यस्त होने पर बहुत से पदार्थों (अनाजादि) में कमी बेशी होकर तेजी हो जाएंगी। २८ जुलाई के बाद सूती कपास, कपड़े व रसदार पदार्थ मन्दे होंगे। राजनैतिक वातावरण प्रायः विक्षुब्ध रहेगा। मेष, मिथुन, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर, व धन राशि वालों को पक्ष का फल शुभ रहेगा।

द.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घंटे	मिं	नक्ष	घ.	प.	घंटे	मिं.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	शक	हिं.	जु	श्र
३३	५१	१	रवि	२०	१५	१३	५१	श्रव	७	०३	८	३४	आयु	१७	१३	कौ	२०	१५	९	१३	३१	१६
३३	४[illegible]	२	चंद्र	१५	१८	११	५३	धन	३	४३	७	१५	सौभ	१०	१९	ग	१२	२९	१०	१४	अग	१७
३३	४[illegible]	३	मंग	१२	०३	१०	३५	शत	२	०३	६	३५	शोभ	४	३४	त्रि	१२	०३	११	१५	२	१८
३३	[illegible]	४	बुध	१०	४०	१०	३	पूभ	२	१०	६	३९	सुक.	५७	१९	वा	१०	४०	१२	१६	३	१९
३३	[illegible]	५	बृह	११	२५	१०	२१	उभ	४	२३	७	३२	धृति	५७	४९	तै	११	२५	१३	१७	४	२०
३३	[illegible]	६	शुक्र	१४	३०	११	२४	रेव	८	२३	९	९	शूल	५८	११	व	१४	३०	१४	१८	५	२१
३३	[illegible]३	७	शन	२०	५०	१३	७	अश्वि	१४	२५	११	२६	गंड	५९	३३	ब	२०	५०	१५	१९	६	२२
३३	[illegible]०	८	रवि	२३	४५	१५	१९	भर	२०	५५	१४	११	वृद्धि	६०	०	कौ	२३	४५	१६	२०	७	२३
३३	[illegible]६	९	चंद्र	२९	५०	१७	४५	कृत	२८	२५	१७	११	वृद्धि	२	२४	ग	२९	५०	१७	२१	८	२४
३३	[illegible]३	१०	मंग	३५	५५	२०	१२	रोह	३५	५३	२०	११	ध्रुव	४	३७	त्र	२	५२	१८	२२	९	२५
३३	[illegible]८	११	बुध	४१	३०	२२	२६	मृग	४२	५३	२२	१९	व्या.	६	४४	ब	८	४३	१९	२३	१०	२६
३३	[illegible]४	१२	बृह	४६	८	२४	१८	आ	४८	५८	२५	२६	हर्ष	८	४३	कौ	१३	४९	२०	२४	११	२७
३३	[illegible]१	१३	शुक्र	४९	३५	२५	४२	पुन	५३	५५	२७	२६	वर	१०	७	ग	१७	५२	२१	२५	१२	२८
३३	[illegible]७	१४	शन	५१	५०	२६	३७	पुष्य	५७	३८	२८	५६	सि	१०	१९	त्रि	२०	४३	२२	२६	१३	२९
३३	[illegible]३	३०	रवि	५२	४८	२७	१	श्ले	६०	००	००	००	व्य.	९	२१	च	२२	१९	२३	२७	१४	३०

अति ५७।२१ — सूर्य दक्षिणायने वर्षाऋतु

कुम्भेन्दु ३५।१५ पंचकारम्भः
भ ४३।४१ उ. तिलक जयंती
मीनेन्दु ४७।०० भ ९।२६ या. आश्ले(१)सूर्यः ४०।५६A
मृगे (४) गुरुः १५।३३ आर्द्रा १ शुक्रः ३।२७
Aश्री गणेश ४व्रत पू.फा(१)बुध३५।५३
मेषेन्दुः ८।२३भ१४।३०उ.४७।४०याअ.सि योग:पंचकसमा.
वृषेन्दुः ३७।४५
स सि योग: २८।१५ उ.
भ २।५२ उ. ३५।५५ या.
मिथुनेन्दुः९।२८कमला११व्रतम्(पुरुषोत्तमी)सर्वे स. सि.योग
आश्ले ४ शनिः ४।५५ मृगे(१)भौमः ३३।२०
कर्केन्दुः ३७।४६ भ ४९।३५ उ. प्रदोष व्रतम्
भ २०।४३ या.
अमावस पुर्नवसु(१)शुक्रः ३९।१९मलमास(अधि)समाप्त

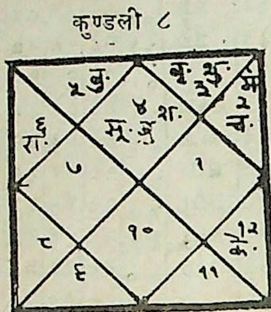
नि	सूर्य	स्प	ष्ट	सू.	उ.
३	१४	५१	५०	५	४५
३	१५	४९	१३	५	४६
३	१६	४६	३७	५	४६
३	१७	४४	०१	५	४७
३	१८	४१	२६	५	४७
३	१९	३८	५२	५	४८
३	२०	३६	१९	५	४८
३	२१	३३	४९	५	४९
३	२२	३१	२१	५	४९
३	२३	२८	५६	५	५०
३	२४	२६	३०	५	५०
३	२५	२४	१३	५	५१
३	२६	२१	४८	५	५२
३	२७	१९	२३	५	५३
३	२८	१६	५९	५	५४

गणितकर्ता—प० पन्नालाल ज्यो. एम ए

७ अग रवौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्टाः २३ श्राव. ४५।२७

सू.	चं.	मं	बु	बृ.	शु	श.	रा	के.
३	१	१	४	२	२	३	५	११
२१	१	२०	१८	४	१२	२६	२४	२४
३३	८	५५	५५	१०	९	१२	४४	४४
४९	०	२३	५३	२८	३८	२५	४९	४[illegible]
५७	[illegible]	४१	५३	११	७०	७	३	३
३२		१९	००	४०	२१	३६	११	११
श्ले		रो	पूफ	मृग	आ	श्ले	चि	रेव
२		४	२	४	२	३	१	३
		मा	मा	मा	मा	मा	व	व
		उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

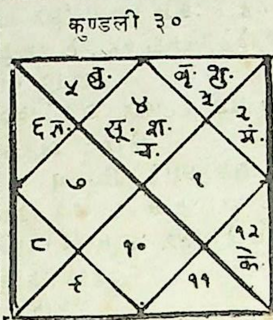
कुण्डली ८



१४ अग रवौ अमावस्यां ग्रहस्पष्टाः घटयादि ४५।१७

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	१	४	२	२	३	५	११
२८	२६	२५	२४	५	२०	२७	२४	२४
१६	२७	३६	३५	२३	१८	०५	२२	२२
५९	१२	१२	५६	१५	१[illegible]	५३	३२	३२
५७	श्री	४[illegible]	३०	१०	७०	७	३	३
३७		४७	३	४	५८	४०	११	११
श्ले		मृ	पूफ	मृ	पुन	श्ले	चि	रेव
४		१	४	४	१	४	१	३
		मा	मा	मा	मा	मा	व	व
	१	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुण्डली ३०



पक्षफल—सूर्य व शनि की युति पक्षान्त तक रहेगी। अतः पक्ष के अन्त तक पीले तथा श्वेत रंग की वस्तुएं तेज रहेंगी। गेहूं, जौ. चना, मटर अरहर, मूंग गुड अफीम, चीनी आदि के भावों में तेजी रहेगी। बाजरा, मक्का तथा पशुचारा के भावों में मन्दी रहेगी। मन्दो में क्रय करना लाभदायक रहेगा। लैबनान और सीरिया इत्यादि अरब देशों में परस्पर युद्ध भड़क जावेगा। पक्षान्त में अलसी, सरसों लाख, देवदारु, ज्वार, माठ, बाजरा सुपारी केशर, गुग्गुल आदि पदार्थों में भी विशेष तेजी रहेगी। कुंभ व मीन राशि वालों को पक्षफल अशुभ।

आकाश लक्षण—पंजाब. हिमाचल; हरियाणा के अधिकाँश भागों में भरपूर वर्षा के योग हैं।

मलमासस्त मासानां मलिन: पापसंभव: तस्य पाप विशुद्धयर्थं मलमास व्रतं चरेत्। दिने विष्णु रूप सहस्त्रांशु मलिने मासे पूजयेत्। पूजिते च सहस्त्रांशोविष्णुं भवति पूजित:। विष्णुरूपो सहस्त्रांशुः सर्वपाप प्रणाशनः। अपूपान्न प्रदानेन ममपापं व्यपोहतु। दिने प्रवक्ष्यामि विविधानि भक्तित: दक्षिणा घृत युक्तानि कांस्यपात्र युतानि च।

विक्रमी सम्वत् २०३४ शुद्ध श्रवण शुक्ल

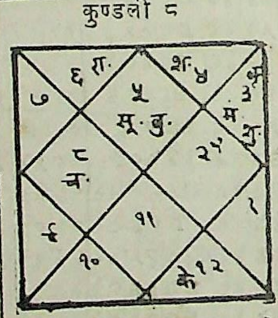
दि	मा.	ति	वा.	घ.	प.	घंटे	मि	नक्ष	घ	प.	घंटे	मि.	योग	घ	प.	कर्ण	घ.	प.	शक	हि.	अग	श्रव
३२	५८	१	चन्द्र	५२	४३	२७	०	श्ले	०	१०	५	५९	वर	६	३९	कि	२२	४६	२४	२८	१५	३१
३२	५५	२	मंग	५१	३०	२६	३१	मघा	१	३७	६	३४	रि	३	४८	वा	२२	०७	२५	२९	१६	भद्र
३२	५१	३	बुध	४९	३३	२५	४४	पूफा	२	०८	६	४६	सि.	५५	२९	तै	२०	३२	२६	रम	१७	२
३२	४५	४	बृह	४६	४५	२४	३७	उफा	१	४८	६	३८	सा	५०	७	व	१८	०९	२७	२	१८	३
३२	४०	५	शुक्र	४३	१०	२३	१२	हस्त	०	३८	६	११	शुभ	४४	३२	व	१४	५८	२८	३	१९	४
३२	३५	६	शन	३८	५८	२१	३२	स्वा	५६	१८	२८	२८	शुक्ल	३८	३७	कौ	११	०४	२९	४	२०	५
३२	३०	७	रव	३४	०३	१९	२५	विश	५३	१३	२७	१५	ब्रह्म	३२	११	ग	६	३१	३०	५	२१	६
३२	२६	८	चंद्र	२८	४८	१७	२९	अनु	४९	३५	२५	४८	ऐंद्र	२५	२३	व	२८	४८	३१	६	२२	७
३२	२२	९	मंग	२२	५५	१५	०९	ज्ये	४५	३३	२४	१२	वैधृ	१८	१३	कौ	२२	५५	भद्र	७	२३	८
३२	१७	१०	बुध	१६	४५	१२	४२	मूला	४१	१५	२२	३०	विष्क	११	५७	ग	१६	४५	२	८	२४	९
३२	१३	११	बृह	१०	२५	१०	११	पूषा	३६	५३	२०	४६	प्री	३	२१	वि	१०	२५	३	९	२५	१०
३[illegible]	९	१२	शुक्र	४	१५	७	४३	उषा	३२	४८	१९	०८	सौ	४८	१७	व	४	१५	४	१०	२६	११
	०	१३	शुक्र	५८	२५	२९	२३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३[illegible]	५	१४	शन	५३	१३	२७	१६	श्रव	२९	१५	१७	४४	शो	४१	७	ग	२५	४३	५	११	२७	१२
३[illegible]	०	१५	रव	४९	०५	२५	४०	धनि	२६	३३	१६	३९	अ.	३४	४१	वि	२१	०९	६	१२	२८	१३

ति	चित्रा५८।४७शिव५७।२१आय५४।३१सूर्यदक्षिणा वर्षा ऋ.	नि.	सू.	स्प	ष्ट	सू.	उ.
१	सिहेन्दु ०।१० भारत स्वतन्त्रता दिवस Aचंद्र दर्शन	३	२९	१४	३६	५	५५
२	मघासिहेऽर्क३२।१८संक्रा३० मुहूर्ति पुण्यकाल१६।१८उ.A	४	०	१२	१४	५	५५
३	कन्येन्दु:१७।८ सिधारा तीज मधुस्रवा ३	४	१	९	५४	५	५५
४	भ १८।०९ उ ४६।४५ या वरद चतुर्थी	४	२	७	३४	५	५५
५	तुलेन्दु: २९।४८ उफा १ बुध: ४१।५० नाग पंचमी	४	३	५	१५	५	५६
६	स. सि योग: Bभौम:४४।५२आर्द्रा(१)गुरु:२७।०७	४	४	२	५७	५	५७
७	बृश्चिकेन्दु:३९।००भ३४।०३उ.तुलसी जयंती मिथुनेB	४	५	०	४०	५	५८
८	श्रीदुर्गा८मे०चिन्तपूरणी व नैनादेवी भ१।२६या बुधवक्रीR	४	५	५८	२४	५	५८
९	धनुषेन्दु:४५।३३कर्के शुक्र:९।४१पू बुधास्त: R२५।१०	४	६	५६	१०	५	५९
१०	भ ४३।३५ उ. पूफा (४) वक्री बुध: ५६।०७	४	७	५३	५७	६	०
११	मकरेन्दु:५०।५०भ१०।२५या,पुष्येशुक्र:५७।४८पवित्रा११व्र.	४	८	५१	४५	६	१
१२	प्रदोष व्रतं स सि.योग: Dयात्रा अमर नाथ(कश्मीर)	४	९	४८	३५	६	१
१३	० ०	प	न	।	ल	।	ल
१४	कुम्भेन्दु:५७।४५भ५३।१३उ. पंचकारम्भ: हरितालिका १४	४	१०	४६	२६	६	२
१५	भ.२१।९या. व्रत.पूर्णिमा रक्षा बन्धन भद्रोत्तरं ऋषितर्पणD	४	११	४४	१९	६	२

[illegible]२ अग चंद्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्टा: ४५।१५

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
४	७	२	४	२	२	३	५	११
५	१५	०	२७	६	२९	२८	२३	२३
[illegible]	५०	४०	६	४६	३५	०६	५७	५७
[illegible]	५७	२७	०५	४७	५१	०१	४	४
[illegible]		४०	८	१०	७१	७	३	३
[illegible]		५	२५	२	३२	३७	११	११
[illegible]घ		मृग	उफ	आ	पुन	श्ले	चि	रेव
[illegible]		(३	(१	(१	(३	४	१	३
		मा	व.	मा	मा	मा	व	व
		उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुण्डली ८



गणितकर्ता पं० पनालाल ज्यो०

२८ अग रवौ पूर्णम्यां ग्रह स्पष्टा: ४४।५४

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
४	१०	२	४	२	३	३	५	११
११	१०	४	२४	७	६	२८	२३	२३
४४	५३	३२	४८	४४	४८	५१	३७	३७
१९	५५	१४	५५	१२	१	२०	५८	५८
५७	श्री	३९	४८	९	७१	७	३	३
५५		१०	३२	१२	५३	४८	११	११
मघ		मृग	पूफ	आ	पुष्य	श्ले	चि	रेव
४		४	(४)	(१)	(२)	(४)	१	३
		मा	व	मा	मा	मा	व	व
		उ	अ	उ	उ	अ	अ	भ

कुण्डली १५



पक्षफलम – द्वितीया को भादों संक्रान्ति ३० मुहूर्ति है । सप्तमी को गुरु आर्द्रा नक्षत्र में. नवमी को शुक्र कर्क राशि में प्रवेश होंगे । तृतीया से अष्टमी तक ,जवार, बाजरा, मूंग मजीठ, सरसों तोरिया, तेल, घी, मूंगफली तथा जौ के भाव कुछ मन्दे रह कर तेज हो जाएंगे तथा गेहूं मक्की, दालें. चावल, चने. धान्य, गुड़, चीनी व शक्कर षष्ठी तक मन्दे रहेंगे बाद में घटाबढ़ी रहेगी। साधारणतय व्यापार की स्थिति बहुत अनिश्चित रहेगी व्यापारियों को सोच समझ कर क्रय विक्रय करना चाहिए । मेष, वृष, मिथुन, सिंह वालों के लिए पक्ष लाभ-प्रद रहेगा जबकि अन्य राशि वालों को हानिकारक है ।

श्रावण शुक्ल पंचमी नागाह्वया सा षष्टी युताग्राह्येति । श्रावण शुक्ल पौर्णमास्यां मध्यान्हे ऋषिणांपूजनादि कर्त्तव्यमिति यद्दिवह्नि पूर्वग्रहण संक्रांतिदूषितस्यातदाश्रावणसित
दिनेऽपिकर्त्तव्यमितितन्मन्त्रक:येनबद्धोबलीराजा दानवेन्द्रोमहाबल: तेनत्वामभिबध्नामि रक्षामचल ।
कर्त्तव्यम् अस्यामेव रक्षा-बन्धनं कार्यम् भद्रा रहितकाले ग्रहणसंक्रांति

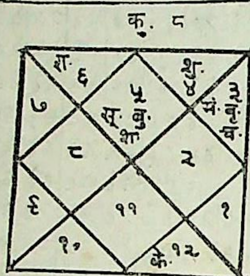
विक्रमी सम्वत् २०३४ भाद्रपद कृष्ण पक्ष शाका १८९९ सन् ईसवी १९७७ सन् हिजरी १३९७ नि. सूर्योदय स्पष्टादि भारतीय स्टै टाईम जालन्धर

दि.	मा.	ति.	वार	घ.	प.	घटे	मि.	नक्ष	घ.	प.	घट	मि.	योग	घ	प	करण	घ.	प.	शा.	डि.	अग	भा.	सूर्य दक्षिणायेन शरद ऋतु:	नि	सू	स्पष्ट:		सूर्य	उ.
३	५५	१	चंद्र	४६	१५	२४	३३	शत	२४	५५	१६	०१	सु.	२२	२६	बा	१७	४०	७	१३	२९	१४		४	१२	४२	१४	६	३
३	५२	२	मंग	४४	५३	२४	००	पूभ	२४	५७	१५	५९	धृत	२५	०६	तै	१५	३४	८	१४	३०	१५	मीनेन्दु:९।४५पू.फा.(१)सूर्य:२३।४८	४	१३	४०	११	६	३
३	४८	३	बुध	४५	१२	२४	९	उभ	२६	२३	१६	३७	शूल	२१	५३	ग	१५	०३	९	१५	३१	१६	भ१५।०३उ.४५।१२या प्राच्यां उदयंशनि:१८।२१कज्जली३	४	१४	३८	१०	६	४
३	४५	४	बृह	४७	२३	२५	१	रेव	२९	३५	१७	५४	गंड	२०	३३	व	१६	१८	१०	१६	सि.	१७	मेषेन्दु:२९।३५पंचक समाप्त श्री गणेश संकट४व्रत A	४	१५	३६	११	६	४
३	३८	५	शुक्र	५१	०३	२६	३०	अशि	३४	१८	१९	४८	वृद्धि	१९	५७	कौ	१९	१३	११	१७	२	१८	स.सि.योग:३४।१८या. Aआर्द्रा भौम:४४।४८बहुला चौथ	४	१६	३४	१४	६	५
३	३५	६	शन	५६	००	२८	२९	भर	४०	३०	२२	१७	ध्रु	२	५१	ग	२३	३२	१२	१८	३	१९	वृषेन्दु:५९।४३भ५६।००उ.हस्त(४)राहु रेव(२)केतु B	४	१७	३२	१२	६	५
३	३०	७	रवि	६०	[illegible]	००	००	कृ.	४७	३०	२५	०६	व्या	२२	३१	वि	२८	५४	१३	१९	४	२०	भ२८।५४या. B२३।२७हल६ चन्द्रषष्ठी ललिता व्रत	४	१८	३०	०५	६	६
३	२५	७	चंद्र	१	४८	६	४९	रोह	५४	५८	[illegible]	०५	हर्ष	२४	४६	ब	१	४८	११	२०	५	२१	व्रत जन्माष्टमी स्मार्ता स.सि.योग:आश्ले(१)शुक्र:४९।०५	४	१९	२८	३३	६	६
३	२०	८	मंग	७	५६	९	१७	मृग	६०	[illegible]	[illegible]	००	वर	२७	०४	कौ	७	५६	१५	२१	६	२२	मिथुनेन्दु:२८।०५कृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णवानाम्	४	२०	२७	४३	६	७
३	१७	९	बुध	१३	४३	११	३६	मृग	२	०८	६	५८	सि	२९	२३	ग	१३	४३	१६	२२	७	२३	भ५०।५८उ.गुग्गा नवमी स.सि.यो.मघा१सिंहे शनि१४।५०	४	२१	२५	५४	६	७
३	१५	१०	बृह	१८	३३	१३	३३	आ.	८	३८	९	३५	व्य	३१	०३	वि	१८	३३	१७	२३	८	२४	कर्केन्दु:५७।४३ भ१८।३३या.	४	२२	२४	७	६	८
३	१०	११	शुक्र	२२	१०	१५	००	पुन	१३	५५	११	४२	वज्र	३१	३४	बा	२२	१०	१८	२४	९	२५	अजा एकादशी व्रतं सर्वेषाम्	४	२३	२२	२२	६	८
३	७	१२	शनि	२४	२०	१५	५२	पुष.	१७	४५	१३	१५	परि	३१	१८	तै	२४	२०	१९	२५	१०	२६	प्रदोष व्रतं वत्स द्वादशी	४	२४	२०	३९	६	९
३	२	१३	रवि	२४	५५	१६	०७	श्ले	२०	०८	१४	१२	शिव	२८	११	व	२४	५५	२०	२६	११	२७	सिंहेन्दु२०।०८भ२४।५५उ.५३।५८या.प.उदयबुध:१८।२५	४	२५	१८	५८	६	९
३०	५७	१४	चंद्र	२४	००	१५	४६	मघ	२२	०३	१४	३५	सिध	२५	४८	श	२४	००	२१	२७	१२	२८	×कुशोत्पाटिनी अमावस३०ॐ हूं फट्. इहमन्त्रेण	४	२६	१७	१९	६	१०
३०	५२	३०	मंग	२१	४५	१४	५३	पूफ	२१	००	१४	२५	साध	२१	११	ना	२१	४५	२२	२८	१३	२९	कन्येन्दु:३२।४८आर्द्रा(२)गुरु:८।२२उफा(१)सूर्य:८।३३×	४	२७	१५	४१	६	११

६ सित. भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्टा: ४४।४२

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
४	२	२	४	२	३	३	५	११
२०	[illegible]	९	१७	०९	१७	२९	२३	२३
२७	४	५०	१८	०२	४७	५६	९	९
४३	२७	४७	५५	५०	११	५४	१९	१९
५४		३८	६३	८	७२	७	३	३
११		२४	१०	८	१२	५	११	११
पूफ		आ.	पूफ	आ	श्ले	मघ	हस	रेव
(२)		(१	(२	(१	(१	१	४	(२
		मा	व	मा	मा	मा	व	व
		उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

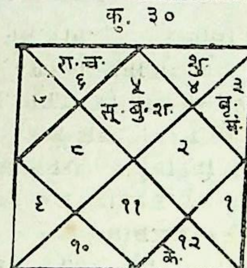
कु. ८



१३ सित. भौमे अमा. ग्रह स्पष्टा: ४४।३२

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु	श	रा.	के.
४	५	२	४	२	३	४	५	११
२७	१	१४	१३	९	२६	०	२२	२२
१५	४५	८	४१	५९	७	४७	४७	४७
४१	७	१३	१८	२०	११	४१	०२	२
५८		३७	५	७	७२	६	३	३
२४		३६	५	८	४२	५४	११	११
उफ		आ.	पूफ	आ	श्ले	मघ	हस.	रेव
(१		(३	(१	२	(३	१	४	२
		मा	व	मा	मा	मा	व	व
		उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. ३०



पक्षफलम्—प्रतिपदा से १२ तक गर्म वस्त्र, चावल, गुड, घी, तिल, तेल, बिनौले, एवं पशु चारा तथा रसदार वस्तुएं तेज रहेंगी। सोना, चाँदी, सरसों, ताँबा, हींग तथा ऊनी वस्त्रों की कीमतों में पक्षान्त तक तेजी ही रहेगी। पहाडी प्रदेशों में रोग वृद्धि का भय है। अमेरिका, भारत-पाक आदि शक्तियों के मध्य शान्ति वार्ताएं तथा समझौते होंगे। मेष, कर्क, वृष कन्या, तुला और कुम्भ राशि वाले व्यक्तियों को इस पक्ष का फ़ल हानिकारक सिद्ध होगा सावधानी बरतें।

आकाश लक्षण—भारत के उत्तरी भागों में भरपर वर्षा व्याप्त रहेगी।

भाद्रपद कृष्णाष्टमी [illegible]

दि.	मा	ति.	वार	घ	प	घंट	मि.	नक्ष	घ	प	घंटे	मि.	योग	घ	प	करण	घ.	प.	श क	ह.	सि	मा
३०	४६	१	बुध	१८	३०	१३	३६	उफा	१९	००	१३	४८	शुभ	१५	१४	व	१८	३०	२३	२९	१४	३०
३०	४२	२	बृह.	१४	८	११	५२	हस्त	१६	३५	१२	५१	शुक्ल	८	५६	कौ	१४	८	२४	३०	१५	३१
३०	३८	३	शुक्र	९	८	९	५३	चित्रा	१३	००	११	३६	ब्रह्म	१	५४	ग	९	८	२५	सत	१६	अश
३०	३०	४	शनि	३	५०	७	४६	स्वा	९	५८	१०	१३	वैधृ	४७	२४	वि	३	५०	२६	२	१७	२
०	०	५	शनि	५८	०९	२३	२९	०	०	०	०		०	०	०	०	०	००	०	०	०	०
३०	२५	६	रवि	५२	२३	२७	१२	विशा	६	०८	८	४२	विष्कु	३९	५६	कौ	२६	२३	२७	३	१८	३
३०	[illegible]	७	चन्द्र	४६	४३	२४	५६	अनु	२	१७	७	१०	प्रति	३२	५७	ग	२९	३३	२८	४	१९	४
३०	[illegible]	८	मंग.	४१	५	२२	४२	मूला	५४	५४	२८	१४	आयु	२५	२१	वि	१३	५४	२९	५	२०	५
३०	[illegible]	९	बुध	३५	५३	२०	३७	पूषा	५१	३८	२६	५५	सौ.	१८	२८	बा	८	२९	३०	६	२१	६
३०	[illegible]	१०	बृह.	३१	०	१८	४१	उषा	४८	५०	२५	४३	शोभ	११	५६	तै	३	२६	३१	७	२२	७
३०	[illegible]	११	शुक्र	२७	१	१७	६	श्रव	४९	५	२५	५६	अति	५	२१	वि	२७	१	आ	८	२३	८
२९	[illegible]	१२	शनि	२३	१३	१५	३६	धनि	४५	८	२४	२२	धृ.	५४	२६	बा	२३	१३	२	९	२४	९
२९	[illegible]	१३	रवि	२०	४३	१४	३६	शत	४४	४०	२४	११	शूल	४९	२७	तै	२०	३	३	१०	२५	१०
२९	[illegible]	१४	चन्द्र	१९	३	१३	५६	पूभा	४५	१८	२४	२६	गंड	४५	५५	व	१९	३	४	११	२६	११
२९	[illegible]	१५	मंग.	१८	४०	१३	४८	उभा	४७	५	२५	१०	वृद्धि	४३	१	ब	१८	४०	५	१२	२७	१२

ज्येष्ठा ५८।३३ ऐन्द्र ५४।४६ मुक ५५।७F

बुधमार्गी ४७।२० स सि. याग Fसूर्यदक्षि. शरदतू
तुलेन्दु: ४५।०८ चन्द्रदर्शनम्
कन्यायांऽर्क: ३१।२५ सक्राति १५ मुहूपुण्य ४७.२५
वृश्चिकेन्दु ५२।१० भ३।५० या. शुक्र: सिंहे११।२७L
Lस. सि. योग: ऋषि पचमी
सूर्यषष्ठी व्रतम्
धनुषेन्दु:५८।३३भ४६।४३उ.श्रीमहालक्ष्मीव्रतारम्भA
भ १३।५८ या राधाष्टमी Aमुक्ताभरण व्रत
चंद्र९Sया.श्रीगणेश४व्रत भ.३६ २९उ हरितालिका३
मकरेन्दु: ५।५३ भ३।२६उ. जालन्धरमेला सोढलx
भ २७।०१ या पुन(१) भौम ४३।२९ पद्मा एका:S
कुम्भेन्दु: १५।४१ वामन द्वादशी Sव्रतसर्वे
प्रदोषव्रत xहस्ते (१) सूर्य ४२।३४पूर्णिमा व्रतादौ
मीनेन्दु३०।००भ:१९।०३उ.४८।५२ या अनन्त१४p
पूर्णिमास्नानदानादौपुण्यमहालयश्राद्धारम्भ:पितृपक्षारम्भ

नि	सू	स्प	ष्ट	सू	उ०
४	२८	१४	५	६	१२
४	२९	१३	३१	६	१३
५	०	१२	२५	६	१४
५	१	१०	५५	६	१४
प	न	।	ल	।	ल
५	२	९	२६	०	१५
५	३	७	५९	६	१५
५	४	६	३४	६	१६
५	५	५	१०	६	१६
५	६	३	४८	६	१७
५	७	२	२८	६	१८
५	८	१	१०	६	१९
५	८	५९	५४	६	१९
५	९	५८	४०	६	१९
५	१०	५७	२९	६	२०

२८ सित भौमे अष्टमी ग्रह स्पष्टा: ४४।२० २७ सित. भौमे पूर्णम्यां ग्रह स्पष्टा: ४४।१०

सू	च	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
५	८	२	४	२	४	४	५	११
४	१	१८	१६	१०	४	१	२२	२२
६	[illegible]	१९	१२	४६	२७	३६	२४	२४
३४	३	३३	१५	३६	११	४८	४५	४५
५८	श्री	३५	६५	६	७२	६	३	३
३७		८	१२	१०	००	३४	११	११
उफ		आ	पूफ	आ.	मघ	मघ	हस.	रेव
(३		(४	(१	२	(२	१	४	(२
		मा	मा.	मा.	मा.	मा.	व	व
		उ	उ.	उ.	उ	उ	अ	अ

कुण्डली ८



सू	च	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
५	११	२	४	२	४	४	५	११
१०	१६	२२	२५	११	१२	२	२२	२२
२७	५	७	३३	२६	५०	२४	२	२
२९	२२	५९	३५	४२	३३	७	२८	२८
५८	श्री	३५	३४	५	७२	६	३	३
५१		१	१०	५	१०	२७	११	११
हस		पुन	पूफ	आ	मघ	मघ	हस	रेव
(१		(१	(४	२	(४	१	४	२
		मा	मा.	मा.	मा.	मा.	व	व
		उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली १५



पक्षफल—आश्विन सक्रांति १५ मुहूर्ति है। द्वितीया से दशमी तक मूंग, मोती. ज्वार, बाजरा, सोंठ, मेवे तथा गर्म मसाले विशेष तेज होंगे। घी, तिल तेल सरसों तोरिया, ईख व अन्य रसदार वस्तुएं पक्षान्त तक तेज रहेंगी। पाक-भारत के मध्य व्यापार बढ़ेगा। प्रजा में प्रांतीय सरकार के विरुद्ध रोष पैदा होगा। मन्त्रिमंडल में परिवर्तन की सम्भावना। मिथुन, सिंह कन्या, धन, मकर, कुम्भ और मीन राशि वालों के लिए पक्ष का फल लाभप्रद रहेगा जबकि अन्य राशि बालों को अशुभ।

आकाश लक्षण—१६,१९,२१ २३,२७ सितम्बर को पंजाब, हरियाणा, हिमाचल के उत्तरी भागों में वर्षा एवं बून्दा बांदी के योग हैं। भा. शु. ११ को यदि बादल गरजें तो भविष्य में दो मास तक सुभिक्षा के संकेत हैं।

भाद्रपद शुक्ल तृतीया हरितालिकाख्या सा चतुर्थी युक्ताकार्या भाद्र शुक्ल पचमी ऋष्याभिधा सामध्यान्ह व्यापिनी ग्राह्योति। भद्र शुक्ल षष्ठी सूर्याख्या इहसप्तमीयुताग्राह्या भाद्र शुक्लाष्टमी दूर्वाभिधा भाद्र शुक्ल द्वादशी जयन्ति साचोदय व्यापिनी ग्राह्या। भाद्र शुक्ल चतुर्दशी अनन्ताख्या सा मध्यान्हव्यापिनी ग्राह्येति।

विक्रमी सम्वत् २०३४ आश्विन कृष्ण पक्ष शाका १८९९ सन् ईसवी १९७७ मि. सूर्योदय स्पष्टादि भारतीय स्टै. टाईम जालन्धर

	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घंटे	मि	न.	घ.	प	घंटे	मि.	यो.	घ.	प.	कर	घ.	र.	गा.	हि.	सि.	अशि
२९	३८	१	बुध	१९	३६	१४	१०	रेव	५०	१०	२६	२४	ध्रु	४१	०३	कौ	१९	३६	६	१३	२८	१३
२९	३३	२	बृह	२१	५५	१५	७	अ.	५४	४६	२८	१५	व्या	४०	०५	ग	२१	५५	७	१४	२९	१४
२९	२९	३	शुक्र	२५	२९	१६	३४	भर	६०	००	००	००	हर्ष	४०	१६	वि	२५	२९	८	१५	३०	१५
२९	२५	४	शन	३०	२३	१८	३१	भर	०	२५	६	३२	वर	४१	३८	बा	३०	२३	९	१६	अक	१६
२९	१[illegible]	५	रव	३६	०३	२०	४८	कृ.	७	००	९	११	सि.	४३	३१	कौ	९	३३	१०	१७	२	१७
२९	१५	६	चंद्र	४३	०३	२३	१६	रो.	१४	१८	१२	०६	व्य.	४५	५३	ग	१५	४१	११	१८	३	१८
२९	१[illegible]	७	मंग	४८	१८	२५	४२	मृग.	२१	४३	१५	०५	व	४८	१९	वि	२०	४६	१२	१९	४	१९
२९		८	बुध	५३	४०	२७	५३	आ	२८	४३	१७	५४	परि	५०	२४	बा	२५	५०	१३	२०	५	२०
२९		९	बृह	५८	००	२९	३७	पुन	३४	२८	२०	२२	शि	५१	३७	तै	२९	०	१४	२१	६	२१
२८	५	१०	शुक्र	६०	००	००	००	पुष्ठ.	३९	३३	२२	१५	सि.	५[illegible]	१०	व	०	०	१५	२२	७	२२
२८	५	१०	शन	०	४५	६	४४	श्ले	४२	४०	२३	३०	सा	५[illegible]	२४	वि	०	४५	१६	२३	८	२३
२८	४	११	रव	१	४८	७	०९	मघ	४४	२८	२४	०३	शुभ	४७	४६	बा	३१	४८	१७	२४	९	२४
२८	४	१२	चंद्र	०	५८	६	५०	पूफ	४३	३८	२३	५४	शु	४३	३२	तै	०	५८	१८	२५	१०	२५
००	०	१३	चंद्र	५८	२५	२९	४१	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२२	४	१४	मंग	५४	२०	२८	१२	उफ	४१	३५	२३	०६	ब्र.	३७	५०	वि	२२	३७	१९	२६	११	२६
२८	८	३०	बुध	४८	५२	२६	२	हस.	३८	१५	२१	४७	ऐंद्र	३०	५२	च	२१	३६	२०	२७	१२	२७

सूर्य दक्षिणायने शरद ऋतु

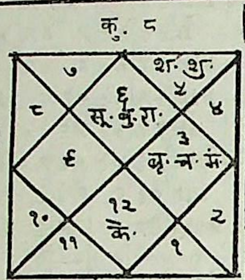
मेषेन्दु:५०।१०उफा(१)बुध:२७।०५पूफा(१)शुक्र:१४।३४A
भ५०।६उ. Aश्राद्धारम्भ
भ२५।२९या बुधकन्या राशि में२३।०५श्री गणेश४व्रतम्
बृषेन्दु:१५।५८
महात्मा गाँधी जयन्ती
मिथुनेन्दु:४८।०३ भ४३।०३उ.स.सि योग:
भ२०।५९या. Bबुध:२०।२५सौभाग्यवतीनां श्राद्धम्
मघा(२)शनि:४९।४२श्रीमहालक्ष्मीव्रतसमाप्तपश्चिदऽस्त:B
कर्केन्दु:१८।२५हस्ते बुध:१८।१५मातृ नवमी अ.सि.योग:
भ३१।००उ.
सिंहेन्दु ४२।४०भ०।४५या.
इन्दिरा११व्रतं सर्वे.उ.फा (१)शुक्र:५।४१संन्यासीनां श्राद्धम्
कन्येन्दु:५८।१५भ५८।२५उ.प्रदोष व्रतम
० ० ०
भ२६।२३या.कन्यायांशुक्र:४८।५३शस्त्र विषादिहतानां श्राद्ध
मंगल कर्क राशि में४३।४०सर्वपितृ श्राद्ध,अमा.श्राद्ध.समाप्त

नि.	सू.	स्प	ष्ट	सू.	उ.
५	११	५६	२०	६	२०
५	१२	५५	१३	६	२१
५	१३	५४	८	६	२२
५	१४	५३	६	६	२२
५	१५	५२	६	६	२३
५	१६	५१	८	६	२३
५	१७	५०	१३	६	२४
५	१८	४९	२०	६	२५
५	१९	४९	२९	६	२५
५	२०	४८	४०	६	२६
५	२१	४७	५३	६	२६
५	२२	४७	७	६	२६
५	२३	४७	२३	६	२७
०	०	०	०	०	०
५	२४	४६	४०	६	२८
५	२५	४५	५९	६	२९

५ अक्तूबर बुधे अष्टम्यां ग्रहस्पष्टा इष्टं ४३।५८

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	२	५	२	४	४	५	११
१८	२३	६	८	१२	२२	३	२१	२१
४९	५७	२९	५५	०१	३०	१५	३७	३७
२०	०८	१	२२	२९	१४	१३	००	००
५६		३	१०६	३	७२	५	३	३
९		००	००	४६	२७	५६	११	११
हस.		पुर्न	उ फा	आ.	पूफ	मघ	हस	रेव
(३		(३	(४	(२	(३	(२	४	२
		मा	मा	मा	मा	मा	व	व
		उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

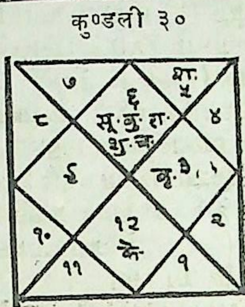
कु. ८



१२ अक्तूबर बुधे अमावस्यां ग्रहस्पष्टा: इष्टं ४३।४५

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	३	५	२	५	४	५	११
२५	२४	०	२१	१२	१	३	२१	२१
४५	२९	००	१३	२२	६	५७	१४	१४
५९	१६	११	५४	२३	११	५६	४३	४३
५९		३३	१०६	२	७२	५	३	३
२१		१४	१३	२४	४२	४७	११	११
चि		पुर्न	ह	आ	उफ	मघ	हस	रेव
(१		४	४	३	(२	(२	४	२
		मा	मा	मा	मा	मा	व	व
		उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली ३०



पक्षफलम्—तृतीया को बुध कन्या में तथा चतर्दशी को शुक्र कन्या राशि में प्रवेश करेंगे मंचतुर्थी से उड़द. मूंग, गुड़, धान, चावल, घी पीतल, चांदी, रेशमी कपड़ा, गर्म मसाले गेहुं, लाल मिर्च तथा अन्य लाल रंग की वस्तुएं पूर्ववत् तेज रहेगी। मिथुन, सिंह, धन मकर और मीन राशि वालों के लिए पक्ष का फल शुभ रहेगा। अन्य राशि वालों को विशेष अच्छा नहीं।

आकाश लक्षण—२८, २९ सितम्बर तथा ३,४,५,१०, १२ अक्तूबर को हिमाचल, पजाब व उत्तरी भागों में तीव्र आँधि व वर्षा के योग हैं।

पितृणां श्राद्धस्यफलम्—आषाढ़स्य पंचमे पक्षे कन्या संस्थे दिवाकर यो वै श्राद्धं-नरः कुर्यादैकस्मिन्नपिवासरे तस्य सम्वत्सरं यावत्संतृप्ताः पितरो ध्रुवमिति। तस्यगृहे स्थिरो लक्ष्मीं सन्तान तस्य बर्द्धतेइर्ति इहाषाढातः पंचमे पक्षे या अष्टमी त्रयोदशी गजच्छा चैतां पितृ कर्मणि गयातुल्या उक्ता।

विक्रमी सम्वत् २०३४ आश्विन शुक्ल पक्ष सन् ईसवी १९७७ शाका सन् १८९९ हिजरी सन् १३९७ नित्यसूर्योदयस्पष्टादि भारतीयस्टै० टाईम जालन्धर

दि	मा.	ति.	वा	घ.	प	घटे	मि.	नक्ष	घ.	प.	घंट	मि	यो.	घ.	प.	कर्ण	घ.	प.	शा	मु.	अक	आ.
२८	३०	१	बृह	४२	२५	२३	२८	चि	३३	४७	२०	१	वैधृ	२२	३१	कि.	१५	१६	२१	२८	१३	२८
२८	२५	२	शुक्र	३५	२०	२०	३९	स्वा	२८	३२	१८	०१	वि	१३	४६	बा	८	१३	२२	२९	१४	२९
२८	२०	३	शनि	२८	००	१७	४४	वि	२२	५८	१५	५१	प्री	४	५	तै	२८	००	२३	जि	१५	३०
२८	१५	४	रवि	२०	४३	१४	४९	अनु	१७	२२	१३	४१	सौ	४६	४७	वि	२०	४३	२४	२	१६	का
२८	१०	५	चंद्र	१३	४५	१२	०२	ज्ये	१२	३३	११	३४	शो	३८	४९	बां	१३	४५	२५	३	१७	२
२८	६	६	मंग	७	१८	९	२८	मूल	८	१२	९	११	अ.	३१	०५	तै	७	१८	२६	४	१८	३
२८	२	७	बुध	१	३८	७	१४	पूष	४	४३	८	२०	सुक	२३	५४	व	१	३८	२७	५	१९	४
[illegible]	०	८	बुध	५६	३५	२९	२३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०
२[illegible]	५८	९	बृह	५३	५७	२८	०१	उष	२	०७	७	१४	धृ.	१७	४६	बा	२०	५	२८	६	२०	५
२[illegible]	५५	१०	शुक्र	५१	०३	२७	०२	श्रव	०	३२	६	५३	शूल	१२	१७	तै	२२	४७	२९	७	२१	६
२[illegible]	५०	११	शनि	४९	४८	२६	३२	शत	६०	०	००	००	गडं	७	२९	व	२०	३८	३०	८	२२	७
२[illegible]	४५	१२	रव	४९	४३	२६	३०	शत	०	२१	६	३३	वृ.	३	३४	व	२०	१२	का	९	२३	८
२[illegible]	४०	१३	चंद्र	५०	४३	२६	५५	पूभ	१	३५	७	१६	ध्रुव	०	५५	कौ	२०	१६	२	१०	२४	९
२[illegible]	३५	१४	मंग	५२	२२	२७	४८	उभ	४	४	८	२०	हर्ष	५७	१५	ग	२२	२८	३	११	२५	१०
२[illegible]	३०	१५	बुध	५६	१२	२९	९	रेव	७	३४	९	५	व.	५६	४३	वि	२४	१७	४	१२	२६	११

धनि ५९।०६ आयु ५०।४७ व्या. ५७।३७ सू.द.हेमन्त ऋतुः

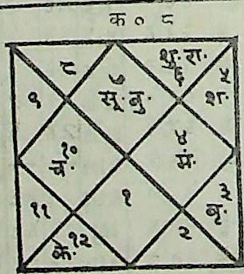
तुलेन्दु ६।०८ शरद् नवरात्रारम्भः चित्रा (१) बुधः ४४।१५ ×
चन्द्रदर्शनम् × मातामहश्राद्ध
वृश्चिकेन्दुः ९।४० भ २८।०० उ.
तुलायाऽर्कः ५९।४५ संक्रान्ति १५ मुहू. पुण्यंकाल दूसरे दिन ७।४५ B
धनुषेन्दु १२।३३ तुलायां बुधः ४४।४८
सरस्वत्यावाहन कात्यायनीव्रतम् Bया.भ २०।४३ या
मकरेन्दुः १८।३५ भ १।३८ उ २८।५८ या पुष्ये १ भौमः ४५।३० हस्ते C
C(१) शुक्रः ५६।३९ मेला दुर्गाष्टमी ज्वालामुखी कांगड़ा तारा देवी
Dपंचकारम्भः २९।२५
कुम्भेन्दुः २९।२५ स्वाति (१) बुध ४१।५५ विजया-दशमी दशहरा D
भ २०।३८ उ. ४९।४८ या. पापांकुशा एकादशी व्रतं भरत मिलाप
मीनेन्दुः ४६।०० स्वा (१) सूर्यः ४०।१२ राष्ट्रीय कार्तिशुरू
प्रदोष व्रत गुरुः वक्री ३५।२८
भ ५२।२२ उ. Eश्री वाल्मीकिजयंती, कार्ति-स्नानारम्भः
मेषेन्दुः ७।३४ भ २४।१७ या. शरद पूर्णिमा पंचक समाप्त ७।३४ E

नि	सू.	स्प	ष्ट	सू	उ.
५	२६	४५	२०	६	३०
५	२७	४४	४३	६	३१
५	२८	४४	१८	६	३२
५	२९	४३	५४	६	३२
६	०	४३	१२	६	३३
६	१	४२	४२	६	३४
६	२	४२	१४	६	३५
०	०	०	०	०	०
६	३	४१	४८	६	३६
६	४	४१	२५	६	३७
६	५	४१	३	६	३७
६	६	४०	४३	६	३७
६	७	४०	२४	६	३८
६	८	४०	७	६	३९
६	९	३९	५२	६	४०

१९ अक्तू. बुधे अष्टम्यां ग्रहस्पष्टां: इष्टं ४३।३४

सू	च	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
६	९	३	६	२	५	४	५	११
२	५	३	३	१२	९	४	२०	२०
२	४	३१	१६	३५	४४	३६	५[illegible]	५२
४	४	३९	२२	३६	२३	०४	२६	२६
५९ ४	श्री	३० १०	१०४ १५	१ २	७३ ५०	५ २०	३ ११	३ ११
चि ३		पुष्य (१ मा उ	चि. (४) मा अ	आ. (२ मा उ	उफ ४ मा उ	मघ २ मा उ	हस. ४ व अ	रेव (२ व अ

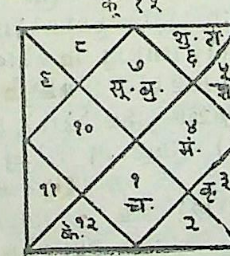
क० ८



२६ अक्तू बुधे पूर्णिमायां ग्रहस्पष्टा इष्टं ४३।२३

सू.	च	म	बु	बृ	शु	श	रा	के
६	०	३	६	२	५	४	५	११
९	७	६	१४	१२	१८	५	२०	२०
३९	१	०७	३१	३७	२५	१०	३०	३०
५२	३७	३२	२७	२४	०५	२४	९	९
५९ ४७	श्री	२९ ००	१०१ २०	० १४	७३ ५४	४ ४०	३ ११	३ ११
स्व (१		पुष्य (२ मा उ	स्वा (३) मा अ	आ. (२ व उ.	हस ३ मा उ.	मघ २ मा उ.	हस ४ व अ	रेव २ व अ

क् १५



पक्षफलम्—गुड़, खाण्ड, गेहूँ लघुधान्य, मूंग, माष, चने, चावल ज्वार गवारा तेल और अलसी पंचमी तक मंदे रह कर बाद में तेज हो जाएँगें। रूई, कपास, रेशमी तथा रंग बिरंगें कपड़े धातें, रबड़, लकड़ी इत्यादि का भाव पक्षान्त तक तेज रहेगा। सर्व प्रकार के अनाजों की कीमतों में प्रायः अस्थिरता रहेगी मन्त्रीमण्डल में परिवर्तन के योग हैं वृष, कर्क कन्या, मकर व कुम्भ राशिवालों के लिए पक्ष लाभदायक है। आ. शुदि अष्टमी सप्तमी को वर्षा हो तो भविष्य में एंक मास तक फसलऔर गल्ले की अच्छी पैदा वार होगी।

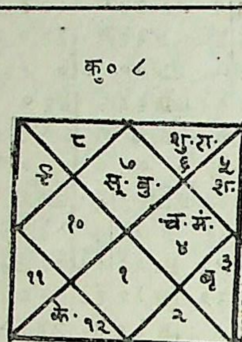
आश्विन शुक्ल प्रतिपदायां नवरात्रारम्भःअत्रैव घटस्थापना दुर्गापूजनम् च कार्यम्। घटस्थापने विशेष उक्त :—वैधृतौ पुत्रनाशः स्याश्चित्रायाँ धननाशम्। प्रतिपत्ताश्विन मासि भत्रौ वैधृति चित्रयौ। आद्यपादौ परित्यज्य प्रारम्भ नवरात्रकम्।आश्विनशुक्लदशमीविजयाह्वयाएषातुप्रदोष व्यापिनी ग्राह्या।चेत्सा परदिनेऽपराह्नकाले अपराजिता पूजनम्

दि.	मा.	ति.	वा	घ	प.	घंटे	मि.	नक्ष	घ.	प०	घंटे	मि.	योग	घ०	प०	कर	घ०	प०	शा	मु०	अव	का.	चित्रा ५९।१२विष्कु. ५३।४७ सूर्य दक्षिणायने शरदृतु:	नि.	सू	प.	ष्ट	सू	उ.
२[illegible]	२६	१	बृ	६०	०	—		अश्वि	१२	५३	११	४९	सित	५७	१६	बा	२८	३३	५	१३	२७	१२	स. सि. योग: Bचन्द्रोदय रात्रि ८ बजकर २० मिनट पर	६	१०	३९	३९	६	४०
२७	२२	१	शु	०	१३	६	४६	भर	१९	३८	१४	०८	व्य	५८	३४	कौ	०	१३	६	१४	२८	१३	वृषेन्दु: ३५।१६ A करक(करवा) चतुर्थी स. सि. योग:B	६	११	३९	२८	६	४१
२[illegible]	१८	२	श	५	१९	८	४९	कृति	२६	०५	१६	४४	वर	०	७	ग	५	१९	७	१५	२९	१४	भ ३७।५२ उ. विशाखा (१) बुध: ५९।३५	६	१२	३९	२०	६	४२
२[illegible]	१४	३	र.	११	०३	११	०८	रोहि	३२	१३	१९	३६	परि	६०	०	वि	११	०३	८	१६	३०	१५	भ ११।०३ या. चित्रा (१) शुक्र: ३५।११ श्रीगणेश४ व्रतA	६	१३	३९	१५	६	४३
२[illegible]	१०	४	च	१७	१८	१३	३९	मृग	३९	३५	२२	३४	परि	२	२३	बा	१७	१८	९	१७	३१	१६	मिथुनेन्दु: ४।५४ अमृत सिद्ध योग:	६	१४	३९	१२	६	४४
२[illegible]	६	५	मं	२३	३५	१६	११	आर्द्रा	४७	०५	२५	३४	शि	४	४८	तै	२३	३५	१०	१८	नव	१७	gअमावस स्नानदानादौ शुक्र: १८।२० नरक १४	६	१५	३९	१२	६	४५
२[illegible]	२	६	बु	२९	३५	१८	३५	पुन.	५३	५८	२८	२०	सिद्ध	७	९	व	२९	३५	११	१९	२	१८	कर्कन्दु: ३७।१८ भ २९।३५ उ०	६	१६	३९	१४	६	४५
२[illegible]	५८	७	बृ	३४	४०	२०	३८	पुष्य	६०	—	—	—	साध	८	५५	वि	२	०८	१२	२०	३	१९	भ २।०८ या. स. सि. अ. सि. योग: (१) केतु १५।१३	६	१७	३९	१८	६	४६
२[illegible]	५४	८	शु	३८	२८	२२	१०	पुष्य	०	२८	६	५८	शुभ	९	५६	बा	२	३४	१३	२१	४	२०	शुक्र तला राशि में ५९।१३ अहोई अष्टमी	६	१८	३९	२४	६	४७
२[illegible]	५०	९	श	४०	३३	२३	०१	श्ले	४	२८	८	३५	शुक	९	४२	तै	६	३२	१४	२२	५	२१	सिंहेन्दु ४।२८ बुध बृश्चिक में ९।१३ हस्त (३) राहु:, रेवa	६	१९	३९	३२	६	४८
२[illegible]	४५	१०	र	४०	४३	२३	०६	मघा	७	०३	९	३८	ब्रह्म	८	१५	व	९	२७	१५	२३	६	२२	भ १०।२७ उ. ४०।२७ या. विशाखा (१) सूर्य: ३।१७	६	२०	३९	४१	६	४९
२[illegible]	४०	११	च	३८	५०	२२	२२	पूफा	२	०३	९	५९	ऐन्द्र	५	१३	व	९	५२	१६	२४	७	२३	कन्येन्दु:२०।४८रमा११व्रतंसर्वे.अनु(१)बुध:१९।२७	६	२१	३९	५२	६	५०
२[illegible]	३६	१२	मं	३५	०३	२०	५२	उफा	६	४६	९	३४	वैधृ	०	३१	कौ	६	५७	१७	२५	८	२४	प्रदोष व्रतम् cयोग: धन १३ eबुध: ३४।४०g	६	२२	४०	५	६	५१
२[illegible]	३३	१३	बु	२९	२७	१८	३९	हस्त	३	४६	८	२३	श्री.	४६	२३	ग	७	१५	१८	२६	९	२५	तुलेन्दु: ३१।४० भ. २७।१२ उ. ५४।२४ या. ससि.c	६	२३	४०	२०	६	५२
२[illegible]	२९	१४	बृ	२२	३५	१५	५२	स्वा	५३	२३	३८	१४	आयु	३७	६३	श	२२	३५	१९	२७	१०	२६	श्री लक्ष्मी पूजन दीपावली श्री हनुमज्जयंती स्वा (१)d	६	२४	४०	३७	६	५३
२[illegible]	२५	३०	शु.	१४	५५	१२	३९	विश	४६	४५	२५	३५	सौभ	२७	२९	ना	१४	५५	२०	२८	११	२७	बृश्चिकेन्दु ३३।२८ अन्नकूट गोवर्द्धन पूजा पूर्वोदयीe	६	२५	४०	५६	६	५३

४ नव शुक्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्टा: इष्टं ४३।३

सू	चं	मं	बु	बृ	श	श	रा	के
[illegible]	३	३	६	२	५	४	५	११
१[illegible]	२६	९	२९	१२	२९	५	२९	२०
३[illegible]	२१	५७	९	२७	४१	४८	१	१
२[illegible]	१४	५२	८	४३	४४	४०	३०	३०
६[illegible]	श्री	१०	९७	२	७४	३	३	३
[illegible]		१	००	१०	३	५४	११	११
स्व	—	पुष	वि	आ	चि	मघ	ह.	रेव
(४		(२	(३	(२	(२	२	४	२
		मा	मा	व	मा	मा	व	व
		उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कु० ८

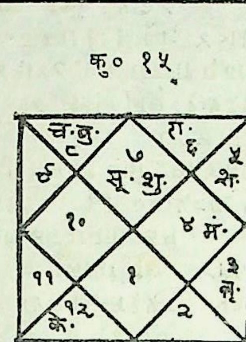


११ नव शुक्रे अमावस्यां ग्रहस्पष्टा: इष्ट ४२।४८

सू	चं	मं	कु	बु	शु	श	रा	के
६	७	३	७	२	६	४	५	११
२५	३	१२	९	१२	८	६	१९	१९
४०	२६	२४	४१	०८	२२	१२	३९	३९
५६	४०	३२	२९	६	२७	५१	१३	१३
६०	श्री	२२	९३	३	७४	३	३	३
२१		००	००	३३	११	००	११	११
वि	—	पु०	अनु	आ	स्वा	मघ	हस्त	रेव
(२		(३	(३	(२	१	२	३	१
		मा	मा	व	मा	मा	न	व
		उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

पक्षफलम्

कु० १५



शुक्र तुला राशि में, बुध बृश्चिक राशि में प्रवेश करेंगे। पक्षान्त पर बुध पूर्व से उदय होंगे। अत: रूई, चावल, चाँदी एव दुग्ध पदार्थ प्रथम कुछ तेज होकर बाद में मन्दे हो जाएंगे सोना, पीतल, तांबा जिस्त, पारा आदि के भावों में पर्याप्त कमी वेशी होगी। घी, तिल, तेल चीनी, शक्कर जो, गेहूचना आदि के भावों में तेज़ी, आ वे गी। पश्चिमोत्तरी राष्ट्रों मध्य तनाव। मेष, मिथुन, कन्या, धन मकर और मीन राशि वालों को पक्ष-फल शुभ

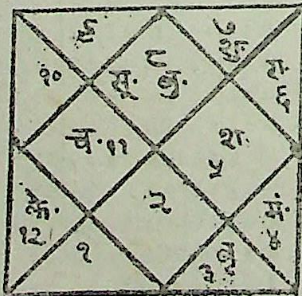
कार्तिक कृष्ण चतुर्थी करक चतुर्थी सा चन्द्रोदयव्यापिनी ग्राह्येति। अहोई व्रत विधेयम् अत्र सायंकाल व्यापिनी ग्राह्येति कार्तिक कृष्ण त्रयोदश्यां धनाख्या' इय' तु सायं काल व्यापिनी ग्राह्येति। कार्तिक चतुर्दशी नरकाभिधासा चन्द्रोदय व्यापिनी ग्राह्या कार्तिका माया लक्ष्मी पूजनंदीप दानं च कार्यमउक्तं च कार्तिक कृष्णामायां तु सायंकालेसमागते

दि	मा.	ति.	वा	घ.	प	घंटे	मि.	नक्ष	घ.	प.	घंटे	मि.	यो	घ.	प.	कर्ण	घ	प.	शा	मु.	नव	का	धृति ५०।१९ सूर्य दक्षिणायने हेमन्त ऋतुः	नि	सू.	स्प	ष्ट	सू.	उ.
२६	२२	१	शन	५	५०	९	१४	अनु	३९	४३	२२	४७	शो.	१६	५६	बा	५	५०	२१	२९	१२	२८	चन्द्र दर्शन भ्रातृदूज(टिक्का)यम द्वितीया विश्वकर्मापूजा	६	२६	४०	१७	६	५४
०	०	२	शन	५६	४४	२९	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ० ०	०	०	०	०	०	०
२६	१९	३	रवि	४७	५७	२६	०६	ज्ये	३२	४८	२०	०१	अ.	९	४७	तै	२२	१५	२२	जि	१३	२९	धनुषेन्दः ३२ ४८स.सि.योगः ३३।४८उ.	६	२७	४१	३९	६	५५
२६	१६	४	चंद्र	३९	५०	२२	५१	मूल	२७	१८	१७	२५	सुक	३	४४	व	१३	५३	२३	२	१४	३०	भ१३।५३उ.३३।५०या. नेहरू जयन्ती R४४।२१ अक्षय९	६	२८	४२	३	६	५६
२६	१३	५	मंग	३२	४३	२०	०१	पूष	२०	४३	१५	१३	शूल	४८	२५	बा	६	१७	२४	३	१५	मा	वृश्चिकेऽर्कः५८।४३संक्रा.४५ मुहू.पुण्यका. दूसरे दिनA	६	२९	४३	५२	६	५६
२६	९	६	बुध	२६	५३	१७	४२	उष	१६	२०	१३	२९	गंड	४३	४७	कौ.	२६	५३	२५	४	१६	२	सूर्यषष्ठी ज्ये(१)बुधः२५।१८ कार्तिकेय पूजा	७	०	४४	२०	६	५७
२६	[illegible]	७	बृह	२२	३८	१६	०१	श्रव	१३	२८	१२	२१	वृ.	३७	२१	व	२२	३८	२६	५	१७	३	कुम्भेन्दुः४२।५३, भ२२।३८उ ५०।४०बाशहीदी दिनB	७	१	४४	५०	६	५८
२६	[illegible]	८	शुक्र	१९	५४	१४	५६	धन	१२	१५	११	५२	ध्रुव	३२	२३	ब	१९	५४	२७	६	१८	४	गोपाष्टमी Aमध्यान्ह से पूर्व मकरेन्दुः३४।३९	७	२	४५	२२	६	५८
२५	५	९	शन	१८	५८	१४	३४	शत	१२	३८	१२	०२	व्या	२४	३७	कौ	१८	५८	२८	७	१९	५	मीनेन्दुः५९।०६ अनु (१) सूर्यः१७।१३मघा (३) शनि. R	७	३	४५	५५	६	५९
२५	५	१०	रव	१९	३५	१४	५०	पूभ	१४	३५	१२	५०	हर्ष	१६	५०	ग	१९	३५	२९	८	२०	६	भ४९।५४ उ.विशा(१)शुक्रः५२।३०स सि.योग	७	४	४६	३०	७	०
२५	५	११	चंद्र	२१	४०	१५	४१	उभ	१७	५५	१४	११	वज्र	८	५४	वि	२१	४०	३०	९	२१	७	भ२१।४०या प्रबोधिनी११व्रतसर्वे तुलसी विवाहC	७	५	४७	७	७	१
२५	५	१२	मंग	२५	००	१७	२	रेव	२२	३०	१६	०२	सि.	४	४७	बा	२५	००	मा.	१०	२२	८	मेषेन्दुः२२।३०स.सि.अ.सि.योगः Bला. लाजपतरायपं.शु.	७	६	४७	४५	७	२
२५	६	१३	बुध	२९	१४	१८	४४	अश	२७	३८	१८	१३	व्या	७	५२	तै	२९	१४	२	११	२३	९	प्रदोषव्रतःज.दि वीरवैरागीCभीष्मपंचकारम्भःचतुर्मासव्रतसमा	७	७	४८	२५	७	३
२५	६	१४	बृह	३४	२०	२०	४७	भर	३४	१०	२०	४३	वर	१०	३४	ग	१	४७	३	१२	२४	१०	वृषेन्दुः५०।२५भ३४।२०उ.वैकुण्ठचौदश (गौरीपूजन)	७	८	४९	७	७	३
२५	६	१५	शुक्र	३९	५३	२३	०१	कृत	४०	५८	२३	२७	परि	१२	०	कि	७	०६	४	१३	२५	११	भ७।०६यापूर्णिमाव्रत भीष्म पंचक समा.गुरुनानकजयन्ती	७	९	४९	५०	७	४

१८ नवम्बर अष्टम्यां भृगौ ग्रहस्पष्टाः इष्टं ४२।३५   २५ नवम्बर भृगौ पूर्णिमायां ग्रहस्पष्टा इष्टं ४२।२०   सम्पादक : पं० पन्नालाल ज्यो०

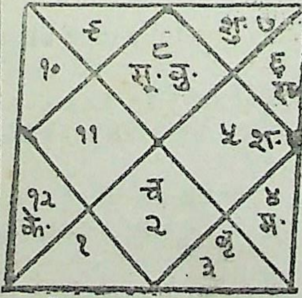
सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
७	०	३	७	२	६	४	५	११
२	३	१४	१२	११	१७	६	१९	१९
४५	१	२४	५५	३९	१०	३३	१६	१६
२२	४	१७	३८	४७	५९	१७	५४	५४
६०		१९	८७	४	७४	२	३	३
३३		००	००	४२	१६	३०	११	११
वि (४		पुष (४ मा उ	ज्ये (२ मा उ	आ (२ व उ	स्व ४ मा उ	मघ २ मा उ	हस ३ व अ	रेव (१ व अ

कु० ८



सू	च	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
७	१	३	७	२	६	४	५	११
९	१०	१६	२६	११	२५	६	१८	१८
४९	१२	२	३३	०२	५५	४८	५४	५४
५०	१३	४२	५३	४६	०६	३०	३६	३६
६०		१४	८०	७	७४	१	३	३
४५		००	२	०४	२२	४४	११	११
अनु (३		पुष (४ मा उ	ज्ये (४ मा उ	आ (२ व उ.	वि. २ मा उ.	मघ ३ मा उ	हस ३ व अ	रेव १ व अ

कु १५



पक्षफलम्—वृश्चिक सँक्रान्ति ४५ मुहूर्ति षष्ठी को बुध ज्येष्ठा नक्षत्र तथा नवमी को सूर्य अनुराधा नक्षत्र में प्रवेश करता है—अतएव तिलहन तेल, सुपारी गर्म मसाले, एरण्ड अलसी व उड़द के भाव त्रयोदशी तक विशेष तेज रहेंगें। चना, ज्वार, बाजरा, रुई, व कपास चौथ तक मन्दे होकर फिर तेज हो जाएंगे। मन्त्रिमण्डल में परिवर्तन के योग पाए जाते हैं।

वृष, कर्क, धन, मीन व मेष राशि वालों के लिए इस पक्ष का फल शुभ है जबकि अन्य राशि वालों को मध्यम फल रहेगा।

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा गोवर्धन पूजाविधेयंअत्रैव चांद्रयिकी ग्राह्येति। कार्तिशुक्ला द्वितीया यमाभिधा सा परयुतैव ग्राह्यति। कार्तिकशुक्लाष्टमीगोपाष्टमीसाप्रदोषव्यापिनीग्राह्यति
कार्तिक शुक्ला नवम्यां कूष्माण्डदानं कर्त्तव्यमिति। कार्तिक शुक्लैकादश्यां प्रबोधोत्थापनं कार्यमिति। उत्तिष्ठेतिगोविन्द त्यजनिद्रा जगत्पतेत्वयि सुप्तजगन्नाथ जगत्सुप्तंभवेदिदम्।

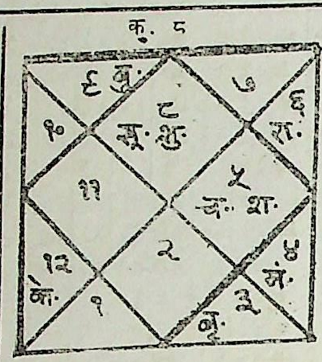
विक्रमी सम्वत् २०३४ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष शाका १८९९ सन् ईसवी १९७७ सन् हिजरी १३९७ नि० सूर्योदय स्पष्टादि भारतीय स्टैं० टाईम जालन्धर

दि.	मा.	ति.	वार	घ.	प.	घटे	मि	नक्ष	घ.	प.	घटे	मि	योग	घ.	प.	कर	घ.	प.	शा.	मु	नव	मा	शोभन ५४।२७ सूर्यं दक्षिणायने हमन्त ऋतु:	नि.	सू.	स्प	ष्ट:	सूर्य	उ.
२५	४०	१	शन	४६	०५	२५	३१	रोह	४८	०३	२६	१८	शिव	१३	५२	बा	१२	५९	५	१४	२६	१२	स.सि.योग: बुध धन राशि में २।२०	७	१०	५०	३५	७	५
२५	३८	२	रवि	५२	२०	२८	०२	मृग	५५	२५	२९	१६	सिध	१५	४४	तै	११	१३	६	१५	२७	१३	मिथुनेन्दु२१।४३	७	११	५१	२१	७	६
२५	३५	३	चंद्र	६०	००	—	—	आ.	६०	००	००	००	साध	१८	५	व	२६	१०	७	१६	२८	१४	भ२६।१०उ.शुक्र वृश्चिक राशि में४९।१७श्ले(१)भौम:४५।२२	७	१२	५२	८	७	७
२५	३३	३	मंग	०	३०	७	१९	आ	२	५३	८	१६	शुभ	२०	१७	वि	०	३०	८	१७	२९	१५	कर्केन्दु:५३।१५भ.०।३०या. श्रीगणेश४व्रतं	७	१३	५२	५६	७	७
२५	३०	४	बुध	५	१९	९	१४	पुन	९	५८	११	०७	शुभ	२०	१९	बा	५	१९	९	१८	३०	१६		७	१४	५३	४५	७	८
२	२८	५	बृह	१०	१३	११	१३	पुष.	१६	३५	१३	४७	ब्रह्म	२४	३७	तै	१०	१३	१०	१९	दि.	१७	अमृत सि.योग१६।३५या.अनु(१)शुक्र:३३।२७	७	१५	५४	३५	७	९
२	२६	६	शुक्र	१४	४५	१३	०३	श्ले	२२	१२	१६	०३	ऐन्द्र	२४	१७	व	१४	५४	११	२०	२	१८	सिंहेन्दु:२२।१२भ१४।५४उ.४६।२३या.ज्ये(१)सूर्य२७।०५	७	१६	५५	२६	७	१०
२	२४	७	शन	१८	००	१४	२२	मघ	२६	३०	१७	४७	वैधृ.	२२	५५	ब	१८	००	१२	२१	३	१९	आर्द्रा(१)वक्रीगुरु:३९।४०	७	१७	५६	१८	७	११
२	२२	८	रवि	१९	३८	१५	०२	पूफ	२९	१३	१८	५३	विष	१८	११	कौ	१९	३८	१३	२२	४	२०	कन्येन्दु:४४।३५काल भैरवाष्टमी । स.सि.योग:	७	१८	५७	११	७	१२
२	२०	९	चंद्र	१९	०४	१४	५०	उफ	२६	५९	१९	११	प्री.	१५	३	ग	१९	०४	१४	२३	५	२१	भ४८।१९उ.	७	१९	५८	४	७	१२
२	१८	१०	मंग	१६	४०	१३	५३	हस	२८	४०	१८	४१	आयु	१०	५७	वि	१६	४०	१५	२४	६	२२	तुलेन्दु:५७।१८भ१६।४०या.	७	२०	५८	५८	७	१३
२	१६	११	बुध	१२	०५	१२	०४	चि.	२५	२५	१७	२४	सौभ	६	३१	बा	१२	०५	१६	२५	७	२३	उत्पन्ना एकादशी व्रत सर्वेषाम्	७	२१	५९	५३	७	१४
२	१४	१२	बृह	५	४८	९	३४	स्वा	२०	२८	१५	२	अति	४८	५१	तै	५	४८	१७	२६	८	२४	भ५६।२५उ. प्रदोष व्रतं पूषा१बुध:५१।५५	७	२३	०	४९	७	१५
	०	१३	बृह	५८	००	३०	२७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	प	न	।	ल	।	ल
२	१२	१४	शुक्र	४९	०५	२६	५३	वि	१४	०८	१२	५४	सुक	४३	५१	वि	२३	३२	१८	२७	९	२५	वृश्चिकेन्दु:०।४३, भ२३।३२ या	७	२४	१	४६	७	१५
२	१०	३०	शन	३९	२८	२३	०३	अनु	६	४८	९	५९	धृति	३५	४८	च	९	१९	१९	२८	१०	२६	अमावस स्नान दान श्राद्धादौ । मेला पुरमण्डल(देविका स्नान)	७	२५	२	४३	७	१६

८ दिस. रवौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्टा: २० मार्ग ४२।००

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	४	३	८	२	७	४	५	११
१[illegible]	२९	१७	१०	९	७	६	१८	१८
५	२८	३४	५	५१	९	५७	२६	२६
१[illegible]	११	३८	१६	४०	५४	५४	००	००
६	श्री	८	५०	८	७४	०	३	३
५३		७	३७	२०	२६	४८	११	११
ज्ये		श्ले	मूल	आ	अनु	मघ	हस	रेव
१)		(१	(४	(१	१	३	३	(१
		मा	मा	व	मा	मा.	व	व
		उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

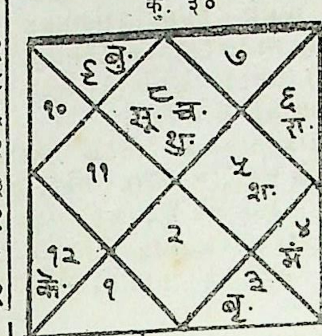
कु. ८



१० दिस. शनौ अमा. ग्रहस्पष्टा: २६ मार्ग ४१।५०

सू.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु	श.	रा.	के.
७	७	३	८	२	७	४	५	११
२५	२५	१८	१३	९	१४	६	१८	१८
२	४०	१	४१	०२	३९	५९	६	६
४३	१६	४०	१३	४	३९	५४	५२	५२
६०	श्री	४	६३	८	७४	०	३	३
५८		३६	२	०	३२	८	११	११
ज्ये		श्ले	पूष	आ	अनु	मघ	हस.	रेव
(३		(१	(१	(१	(४	३	३	१
		मा	मा	व	मा	मा	व	व
		उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु. ३०



पक्षफलम्— गुड़, घी. उड़द, चावल, जौ, चना, हल्दी, मिर्च. मोठ तथा रसदार वस्तुओं के भावों में पंचमी के बाद तेजी आ जावेगी । ज्वार के भाव कुछ गिरेंगे । अनेक राष्ट्रों में मुद्रास्फीति की स्थिति पैदा होगी । कहीं अग्निकाल व यान दुर्घटना से हानि की संभावना है । सिंह, वृश्चिक व कुंभ राशि वालों के लिए पक्षका फल अशुभ ।

मार्गशीर्ष कृष्णाष्टमी काल भैरवाख्या ग्रह्येति । अस्यां काले भैरव समीपे उपवास जागरणादि कार्यम् । अस्मिन्नेव मासि देविका स्नान फलमुक्तम्—चन्द्र सूर्य ग्रहण चैत्र मार्गशीर्ष तथैव च । देविका स्नानमात्रेण शिवलोकेवसेन्नर इति । इह एक भक्त व्रतं प्रद्युम्न पूजन च कार्यम् ।

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घंटे	मि.	नक्ष	घ०	प.	घंटे	मि.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	शा.	हि.	दिस	मा.	मूला ५२।०६ ध्रुव५५।२१ सूर्य दक्षिणायने हमन्तऋतु:	नि	सू	स्पष्टा:		सू.	उ.
२५	८	१	रव	२९	३८	१९	०८	ज्ये	१	१५	७	४७	शूल	२२	५३	कि	१०	१४	२०	२९	११	२७	धनुषेन्दु:१।१५स सि.योग:१।१५उ. शनिवक्री४३।५०	७	२६	३	४१	७	१७
२५	७	२	चद्र	२०	०९	१५	२१	पूषा	४९	२०	२४	४६	गंड	१४	५४	कौ	२६	१९	२१	मु०	१२	२८	ज्ये(१)शुक्र:४।५१चन्द्रदर्शन मुहर्रम हिजरी सन् १३९८×	७	२७	४	४०	७	१८
२५	६	३	मंग	११	२५	११	५३	उषा	३७	२०	२२	१५	वृद्धि	६	५३	ग	१८	२९	२२	२	१३	२९	मकरेन्दु:३।०५, भ४२।३५उ मंगलवक्री २९।२३	७	२८	५	३९	७	१९
२५	५	४	बुध	३	५३	८	५३	श्रव	३२	२३	२०	१७	व्या	५२	४८	वि	१२	४३	२३	३	१४	३०	भ१२।४३या ४वक्रीबुध:१०।५५शहीदीदि.गु तेगबहादुर	७	२९	६	३८	७	२०
०	०	५	बुध	५७	५५	३०	३१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ×बुध वक्री १३।४०	०	०	०	०	०	०
२५	४	६	बृह	५४	०३	२८	५८	धनि	२९	१३	१९	२	हर्ष	४४	५३	बा	३	४४	२४	४	१५	पौ	कुम्भेन्दु:०।४८धनुष्यर्क:३४।१३संक्रा१५मुहू पुण्य१८।१३B	८	०	७	३९	७	२१
२५	३	७	शुक्र	५२	०३	२८	११	शत	२८	००	१८	३३	व्र	३६	५५	ग	२६	३४	२५	५	१६	२	भ५४।५९उ.पूर्वोऽस्त:बुध:२५।१६ Bचकशुरू०।४८चम्पा६	८	१	८	३८	७	२१
२५		८	शन	५२	१३	२८	१५	पूभा	२८	४८	१८	५३	सि	२८	५७	वि	२५	११	२६	६	१७	३	मीनेन्दु:१३।१३.भ२५।११या.	८	२	९	४०	७	२२
२५		९	रव	५४	१३	२९	०४	उभा	३१	२८	१९	५८	व्य	२१	३	बा	२६	१८	२७	७	१८	४	स.सि.योग: Aपूर्णिमा व्रतादौ पिशाचमोचनश्राद्ध	८	३	१०	४२	७	२३
२५		१०	चद्र	५७	४८	३०	३१	रेव	३५	५०	२१	४४	वर	१३	५	तै	२८	३९	२८	८	१९	५	मेषेन्दु:३५।५०पंचक समाप्त	८	४	११	४४	७	२४
२४	५	११	मंग	६०	००	०	०	अश्वि	४१	३५	२४	०१	परि	१६	४३	ग	०	३३	२९	९	२०	६	भ३२।५७उ.स.अ.सि योग:	८	५	१२	४७	७	२४
२४	५	११	बुध	२	४०	८	२९	भर	४८	०५	२६	३९	शि	१७	४७	वि	५	२१	३०	१०	२१	७	भ५।२१या.स.सि.योग:गीताजयं मोक्षदा११व्रतं सर्वेषाम	८	६	१३	५०	७	२५
२५		१२	बृह	८	२०	१०	४६	कृत	५५	१३	२९	३१	सि	१९	४८	बा	१०	४५	पौ	११	२२	८	वृषेन्दु:४।५२प्रदोष व्रतं शुक्र धन रा.में४२।२१सूर्य उत्तरायणे	८	७	१४	५४	७	२६
२५		१३	शुक्र	१४	२८	१३	१४	रोह	६०	०	०	०	सा	२१	२३	तै	१७	३	२	१२	२३	९	अनग१३ D४२।०५	८	८	१५	५८	७	२७
२५		१४	शन	२०	५०	१५	४७	रोह	२	०८	८	२८	शुभ	२४	३७	व	२३	१९	३	१३	२४	१०	मिथुनेन्दु३६।१५भ२३।१९उ.५६।३०या.स.सि.योA	८	९	१७	३	७	२८
२५		१५	रव	२७	२५	१८	१६	मृग	१०	००	११	२७	शुक्ल	२९	२४	व	२९	४१	४	१४	२५	११	श्री दत्ता जयंती पूर्णिमा स्नानदान पुण्यादी। पूर्वोऽस्त: शुक्रD	८	१०	१८	८	७	२७

शनौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्टा : ४१।३५

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श	रा.	के
८	१	३	८	२	७	४	५	११
२	६	१७	१०	८	२३	६	१७	१७
२	५	४२	३२	०७	४०	५८	४४	४४
४०	१	४७	३०	२२	१२	२३	३७	३७
६१	[illegible]	३	६६	७	७५	०	३	३
२	[illegible]	४९	५०	५०	१३	३८	११	११
मू.		श्ले	मूल	आ	ज्ये	मघ	हस.	रेव
१		(१	४	१	३	३	३	१
		व	त्र	त्र	मा	व	व	व
		उ	थ	उ.	उ.	उ.	अ	अ

कुण्डली ८

१०
शु ८
७
११
९ सू. बु.
१२ च. के.
६ श
१
५
२ बृ.
४ मं.
२

२५ दिस. रवौ पूर्णम्यां ग्रहस्पष्टा: ४१।२५

स.	चं.	मं	बु.	बृ	शु.	श	रा.	क
८	२	३	८	२	८	४	०५	११
१०	१२	१६	०	७	३	६	१७	१७
१८	५	५१	३२	८	४३	४२	१९	१९
८	०	७	३१	२०	२३	५८	९	९
६१	[illegible]	१०	०	७	७४	१	३	३
५		२५	४५	४०	३०	३२	११	११
मू. ४	४७	श्ले	मूल	आ.	मूले	मघ	ह	रेव
		(१	(१	(१	२	३	३	१
		व	व	ब	मा	व	व	व
		उ	अं	उ.	अ	उ	अ	अ

कु० १५

१०
८
७
११
९ सू. बु. शु.
१२ के.
६ रा.
१
३ चं. बृ.
५ श.
२
४ मं.

पक्षफलम—रूई, सन, सूत, गर्म, ऊनी कपड़े व चाय प्रतिपदा से त्रयोदशी तक विशेष तेज हो जाएंगें। शेयर मार्कीट का रुख तेजी की ओर होगा। लकड़ी, फल, मेवे, दूध, घी, तेल आदि स्निग्ध पदार्थोंके मूल्यों में और वृद्धि रहेगी। रोग व चोरी की वारदातें अधिक होंगी। किसी विशिष्ट नेता की आकस्मिक मृत्यु के योग हैं। मिथुन, कर्क कन्या, धन, मकर और मीन राशि वालों को पक्षफल लाभप्रद रहेगा। अन्यों कोमध्यम।

आकाश लक्षण—हिमाचल, काश्मीर व पहाड़ी स्थानों पर शीत प्रकोप से जन व धन हानि।

मार्गशीर्ष शुक्ल षष्टी स्कन्दाख्या सा च पूर्व विद्या ग्राह्या। तत्र स्कन्दे सम्पूज्य-स्नानादि कुर्यादित्यिक्षयफल प्राप्ति:। इयमेव योगविशेषणे चम्पाषष्टी उक्ताऽत्र शिवलिंग दर्शनंभवेत्। उक्तं च मार्गशीर्षऽमले पक्षे षष्ठ्या बारांशुमालिनि: शततरागतें चन्द्रलिगस्य दृष्टिगोचरम्, मार्गशीर्षे पूर्णिमायां दत्तात्रेयोत्पति: ईहैव प्रदोष व्यापिनी ग्राह्या।

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घंटे	मि.	नक्ष	घ.	प.	घंटे	मि.	योग	घ.	प.	करण	घ.	प.	शक	हि.	दि.	पौष
२५	४	१	चंद्र	३३	१३	२०	४६	आ.	१७	१३	१४	२०	ब्रह्म	२८	२३	वा	०	१९	५	१४	२६	१२
२५	५	२	मंग	३९	३	२३	०५	पुन	२४	८	१७	०७	ऐंद्र	३०	०३	तै	६	०८	६	१६	२७	१३
२५	६	३	बुध	४४	२०	२५	१२	पु०	३०	४०	१९	४४	वैधृ	३१	१७	व	११	४३	७	१७	२८	१४
२५	७	४	बृह	४८	५५	२७	०२	श्ले	३६	३३	२२	०५	वि	३२	०८	ब	१६	३८	८	१८	२९	१५
२५	८	५	शुक्र	५२	३०	२८	२८	मघा	४१	३५	२४	०६	प्री०	३२	१६	कौ	२०	४३	९	१९	३०	१६
२	९	६	शन	५४	५०	२९	२४	पूफा	४५	२५	२५	३८	आ	३१	३१	ग	२३	४०	१०	२०	३१	१७
२	११	७	रवि	५५	३८	२९	४३	उफा	४७	५०	२६	३६	सो	२९	४०	वि	२५	१४	११	२१	जन	१८
२	१२	८	चंद्र	५४	४०	२९	२०	हस्त	४८	३५	२६	५४	शो	२६	३३	वा	२५	०१	१२	२२	२	१९
२	१३	९	मंग	५१	५०	२८	१२	चित्र	४७	२८	२६	२७	अ	२२	२०	तै	१३	१५	१३	२३	३	२०
२	१४	१०	बुध	४७	५	२६	१९	स्वा	४४	३३	२५	१८	एक	१५	५३	व	१९	२९	१४	२४	४	२१
२	१५	११	बृह	४०	४०	२३	४५	विश	३६	५८	२३	२८	धृ	८	२५	ब	१३	५५	१५	२५	५	२२
२	१६	१२	शुक्र	३२	५१	२०	३८	अनु.	३३	५८	२१	४	शू	०	०८	कौ	६	४६	१६	२६	६	२३
२	१७	१३	शन	२४	३	१७	०६	ज्ये	२६	५५	१८	१५	धृ	३९	१८	ग	२४	३	१७	२७	७	२४
२	१९	१४	रवि	१४	३८	१३	२०	मूल	१९	२०	१५	१३	व्य	२८	२०	श	१४	३८	१८	२८	८	२५
२	२१	३०	चंद्र	५	२५	०९	३९	पूषा	११	३८	१२	०८	हर्ष	१७	००	न	५	२५	१९	२९	९	२६

गंड ४९।५० सूर्य उत्तरायणे शिशिर ऋतुः

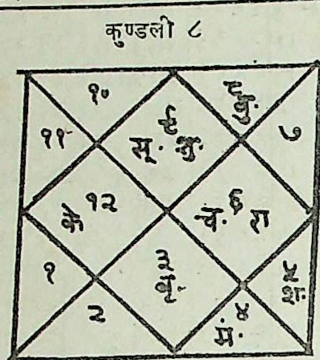
वृश्चिके वक्री बुधः ९।३१ पुष्ये (४)वक्री भौमः ४२।३४
कर्केन्दुः ७।२५ मेला हरवल्लभ संगीत जालन्धर A
भ ११।४३ उ. ४४।२०या.
सिंहेन्दु ३६।३३ श्रीगणेश ४ व्रतं पू षा.(१)सूर्यः ०।२३B
मघा (२) वक्री शनिः ४५।१९
भ ५४।५० उ. Bमृगे (४) वक्री गुरुः ९।३२
कन्येन्दु १।०३, भ २५।१४ या. बुधमार्गी २३।४२C
पू फा. (१) शुक्रः १६।२४ Cसन् ईसवी १९७८ शुरू
तुलेन्दु १८।१५ Aपश्चिमोदयः बुधः ५४।११ मेलाF
भ. १९।२९ उ. ४७।०५ या. F जोड़ शुरू।
वृश्चिकेन्दु २६।१३ सफला ११ व्रतं सर्वेषाम् E४।४३
बोधायनाचार्य जयंती (पिण्डोरी धाम गुरदासपुर)
धनुषेन्दुः २६।५५, भ २४।०३ उ ४९।२१या बुधD
Dधनराशि में ५६।३० हस्ते (२) राहुः उभ (४) केतुE
मकरेन्दु २४।४५ सोमवती अमामस तीर्थे श्राद्धादौ।

नि	सूर्य	स्प	ष्ट	सू.	उ.
८	११	१९	१३	७	२७
८	१२	२०	१९	७	२८
८	१३	२१	२५	७	२८
८	१४	२२	३१	७	२८
८	१५	२३	३७	७	२८
८	१६	२४	४३	७	२८
८	१७	२५	५०	७	२८
८	१८	२६	५६	७	२८
८	१९	२८	४	७	२८
८	२०	२९	११	७	२९
८	२१	३०	१८	७	२९
८	२२	३१	२५	७	२९
८	२३	३२	३२	७	२९
८	२४	३३	३९	७	२९
८	२५	३४	४६	७	२९

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रहस्पष्टा. ४१।२०

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श	रा	के.
[illegible]	५	३	७	२	८	४	५	११
[illegible]	२२	१४	२७	६	१३	६	१६	१६
[illegible]	६	५५	४७	६	४३	३३	५३	५३
[illegible]	५२	३१	२२	४३	४७	४२	४१	४१
[illegible]		१६	१५	७	७४	२	३	३
[illegible]		३९	१३	४६	३२	२२	११	११
पूष	—	पु०	ज्ये	मृग	पूष	मघ	हस	रेव
(२		४	४	४	१	२	३	
		व	मा	व	मा	व	व	व
		उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

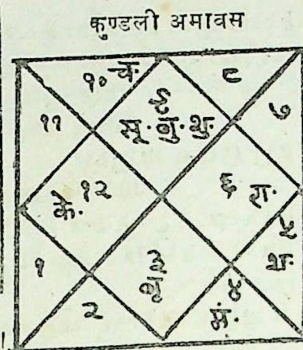
कुण्डली ८



चन्द्रे अमावस्यां ग्रहस्पष्टाः घटयादि ४१।१७

सू	च	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
८	९	३	८	२	८	४	५	११
२५	४	१२	१	५	२२	६	१६	१६
३४	२	४४	१७	१३	३३	१५	३१	३१
४६	१२	५५	११	३३	१५	९	२४	२४
६१		२१	५०	७	७५	२	३	३
६		२	१२	१२	३८	५२	११	११
पूष		पु०.	मूल	मृ.	पूष	मघ	हस	उभ
४		३	१	४	३	२	२	४
		व	मा	व	मा	व	व	व।
		उ	उ	उ	अ	उ		

कुण्डली अमावस



पक्षफल—प्रतिपदा को वक्री बुध वृश्चिकराशि में प्रवेश होंगे। सप्तमी को बुध मार्गी होकर त्र्योदशी को धन राशि में प्रवेश करेंगे। फलस्वरूप अनाज, दालें, गर्म कपड़ा, ऊन, मूंगफली, मोठ के भावों में तेजी रहेगी। मक्का, जौ, माष, के भावों में दो सप्ताह तक मन्दे होंगे। तिल तेल, सरसों बिनौले, गुड़, चीनी के भावों में साधारण तेजी आएगी। राजनैतिक वातावरण शनि वक्री रहने तक विक्षुब्ध रहेगा। कहीं छत्र भंग होने के योग हैं।

आकाश लक्षण तथा शकुन विचार—२६,२८, २९, दिसम्बर तथा ४, ५ जनवरी को हिमाचल, हरियाणा व पंजाब के उत्तरी भागों में वर्षा के योग हैं। यदि पौषवदि५ को वर्षा हो तो आगामी अनाजादि की फसल अच्छी रहेंगी।

पौषमासकृत्यं—उक्तञ्च धनुः संक्रमणे सूर्ये वस्त्रे इन्धनदानतः। विष्णुलोके भवेद्वासः शिवलोके विसेच्चिरमिति उक्त च ऊवा चम्पककुष्टञ्च रोचनः पद्म पत्रकम्। सुरामांसीसगे स्नान धनु संक्रमणे शुभमिति, अथातो गयाश्राद्धकालो निर्णीयते—मीन मेष स्थिते सूर्ये कन्यायां सूर्यकेवटे। दुर्लभं त्रिषु लोकेषु गयायां पिण्डपातनम्।

दि.	मा.	ति.	वा.	घ.	प.	घंटे	मि.	नक्ष	घ	प.	घंटे	मि	योग	घ.	प.	कर	घ.	प.	शक	हि.	जन	पौष	श्रवण ५८।०२ सूर्य उत्तरायणे शिशिर ऋतु	नि.	सू.	स्प	ष्ट	सू.	उ.
०	०	१	चद्र	५५	४८	२९	४८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०
२५	२४	२	मंग	४७	२५	२६	२७	उषा	४	२३	०९	१४	हष	५	५३	बा	३	४३	२०	३०	१०	२७	उ.षा (१) सूर्यः ४५।३७चन्द्रदर्शनम्। Fस्नानदानादौ।	८	२६	३५	५३	७	२९
२५	२६	३	बुध	४०	२०	२३	३७	धनि	५३	३	२८	४२	सि.	४५	५८	तै	२१	३७	२१	सफ	११	२८	कुम्भेन्दुः २५।२० पंचकारम्भः २५।२०	८	२७	३७	१	७	२९
२५	२८	४	बृह	३५	००	२१	२९	शत	४९	५०	२७	२५	व्या	४१	१५	व	१३	५३	२२	२	१२	२९	भ. १३।५३ उ ३५।०० या० उषा (१) शुक्रः ४८।१३	८	२८	३९	१७	७	२९
२५	३०	५	शुक्र	३२	२८	२०	२८	पूभा	४८	४३	२६	५८	व.	३३	०८	व	७	४०	२३	३	१३	३०	मीनेन्दुः ३३।१५ Eज.दि.नेता जी सुभाष चन्द्र.	८	२९	४०	३३	७	२९
२५	३३	६	शन	३०	२८	१९	३९	उभा	४९	४३	२७	२१	परि	३१	४५	की	३	४४	२४	४	१४	माघ	मकर संक्रान्ति ००।१९ उ.४५मुहूर्ति पुण्यकाल १६।१९A	९	०	४१	२८	७	२८
२५	३५	७	रव	३१	२८	२०	०३	रेव	५२	४३	२८	३३	शि	२९	३३	ग	०	५८	२५	५	१५	२	मेषेन्दुः ५२।४३, भ ३१।२८ उ. मकरे शुक्रः ३३।२०B	९	१	४२	३३	७	२८
२५	३९	८	चद्र	३४	२५	२१	१४	अश्व	५७	३०	३०	२८	सि	२८	५०	वि	२	५७	२६	६	१६	३	भ २।५७ या Aयावत् मेला मुक्तसर	९	२	४३	३७	७	२८
२५	४२	९	मंग	३८	५८	२३	०३	भर	६०	—	—	—	सा.	२९	२३	बा	६	४२	२७	७	१७	४	Bपंचक समाप्तः ज. दि. गुरु गोबिन्द सिंह जी	९	३	४४	४१	७	२८
२५	४४	१०	बुध	४४	४०	२५	२०	भर	२	४३	८	५७	शु.	३०	४५	तै	११	४७	२८	८	१८	५	वृषेन्दुः २०।२५ स सि. योगः ३।४३ उ.	९	४	४५	४४	७	२८
२५	४६	११	बृह	५१	००	२७	५२	कृत	१०	४८	११	०७	शु.	३२	४८	व	१७	५०	२९	६	१९	६	भ १७।५० उ. ५१।०० या पुत्रदा ११ व्रतम्	९	५	४६	४७	७	२८
२५	४८	१२	शुक्र	५९	३०	३०	२८	रोह	१८	१५	१४	४६	ब्र.	३५	००	ब	२४	१५	३०	१०	२०	७	मिथुनेन्दुः ५२।०३ पू. षा. (१) बुधः २१।१० सूर्यः C	९	६	४७	४९	७	२७
२५	५१	१३	शन	६०	००		—	मृग	२५	५०	१७	४७	ऐं.	३७	१०	कौ	२८	४५	मा	११	२१	८	राष्ट्रीय माघारम्भः प्रदोष व्रतं Cअभिजित प्रवेश ३२।१०	९	७	४८	५१	७	२७
२५	५४	१३	रव	३	५०	८	५६	आ.	३३	००	२०	३९	वै.	३९	३	तै	३	५०	२	१२	२२	९	Dसूर्यः ५०।२३ श्रव (१) शुक्रः २८।३१ व्रतपूर्णिमा E	९	८	४९	५२	७	२६
२५	५८	१४	चद्र	९	४५	११	२०	पुर्न	४२	१५	२३	२०	वि.	४०	३४	व	९	४५	३	१३	२३	१०	कर्कन्दुः २३।०८ भ ९।४५ उ. ४२।२३ या, श्रव (१)D	९	९	५०	५३	७	२६
२६	१	१५	मंग	१५	००	१३	२५	पुष्य	४५	१०	२५	२५	प्री.	४१	३०	ब	१५	००	४	१४	२४	११	सूर्य अभिजित निवृत्ति पूर्णिमा माघ स्नानारम्भः F	९	१०	५१	५३	७	२५

१४ जन चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्टाः ४१।२०

सू.	चं.	मं	बु.	बृ.	शु	श.	रा.	के.
९	०	३	८	२	९	४	५	११
२	१०	१०	८	४	१	५	१६	१६
४३	१	९	३७	२४	२५	५२	९	९
३[illegible]	२	२९	४२	३७	३२	२८	१७	१७
६[illegible]	[illegible]	२३	७०	६	७५	३	३	३
४		३५	५०	३०	१५	३६	११	११
उषा (२		पुष्य (२ ब. उ	मूले (३ मा उ	मृगे (४ व उ	उष (२ मा अ	मघ (२ व उ	ह. (२ व अ	उभ (४ व अ

कुण्डली ८

११ | शु. | १२ के. | १० सू. शु. | ८ | १ चं. | ७ | २ | ४ मं. | ६ श. | ३ बृ. | ५ श.

गणितकर्ता पं० पन्ना लाल ज्यो०

२४ जन. भौमे पूर्णम्यां ग्रह स्पष्टाः ४१।२५

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु	श.	रा.	के.
९	३	३	८	२	९	४	५	११
१०	१५	७	१९	३	११	५	१५	१५
५१	४३	७	३६	३७	२९	२१	४३	४३
५३	५४	४१	४८	२६	५	६	४९	४९
६१		२४	८६	४	७५	४	३	३
०	—	०	५	२४	२२	१	११	११
श्रव १		पुष्य (२ व उ	पूष (२ म उ	मृगे (४ व उ	श्रव (१ म अ	मघ (२ व उ	हस्त. (२ व अ	उभ (४ व अ

कुण्डली १५

११ | शु. ९ | १२ के. | १० सू. शु. | ८ | १ | ७ | २ | ४ च. मं. | ६ श. | ३ बृ. | ५ श.

पक्षफलम्—प्रतिपदा का क्षय हुआ है। मकर संक्रान्ति ४५ मुहूर्ति है। तथा सप्तमी को शुक्र मकर राशिमें प्रवेश करेंगे। इस योग के अनुसार द्वितीया से उड़द, मूंगफली अलसी, चावल चना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों, तिल तेल आदि—२० जनवरी, तक तेज रहेंगे उसके बाद कुछ मन्दी का रुख रहेगा। सोना, चान्दी, ताम्बा, जिस्त, स्टील आदि धातुओं पीतल, में साधारण तेजी आयेगी। व्यापारी लोगों में परेशानी बढ़ेगी।

आकाशलक्षण तथा शकुन विचार—जनवरी की १०, १३, १४, १५, २०, २४ तारीखों को भारत के उत्तरी भागों में खण्ड वर्षा के योग हैं शीत प्रकोप से कहीं कहीं हानि हो। त्रयोदशी शनिवार होने से आगामी एक मास तक वर्षा अभाव रहे।

पौष मास कृत्यम्—उक्तञ्चपौषे तु कौन्तेय एकभक्तनयाक्षिपेत। सुभगोदर्शनीयश्च यशोभागी च जायते। प्रासाद नगरादीनि स्वगृह प्रभावानि च नारायणस्य तुष्टयर्थं पौषे देयानि यत्नते। आग्राहयणव्यतीपातायां मासमेकदिने पूर्ववत्पतजयेदेवधृतेनजहमुयाद्विम घृतंद्विजेभ्योदद्याच्च घतमेवनिवेदयेत्। त्रिरात्रोपोषिति पोष्यां तु पात्रेणवैद्विज

द.	मा.	ति.	वा	घ.	प.	घंटे	मि.	नक्ष	घ.	प०	घंटे	मि.	योग	घ०	प०	करण	घ०	प०	शा	हि.	जन	मा.	अनुराधा ५६।३०हर्षण५३। २१सूर्य उत्तरायणे शिशिर ऋतु:	नि.	सू	स्प.	ष्ट	सू	उ.
२६	४	१	बुध	१९	३३	१५	१४	श्ले	५१	३८	२८	०४	आयु	४१	५५	कौ	१३	३३	५	१५	२५	१२	सिंहेन्दु:५१।३८	९	११	५२	५३	७	२५
२६	७	२	बृह	२३	१५	१६	४३	मघा	५६	१०	२९	५३	सौभ	४१	४२	ग	२३	१५	६	१६	२६	१३	भ५४।४२उ. भारत गणतन्त्र दिवस	९	१२	५३	५२	७	२५
२६	९	३	शुक्र	२६	८	१७	५२	पूफा	६०	००	-	-	शोभ	४०	५९	वि.	२६	८	७	१७	२७	१४	भर६।०८या. श्री गणेश४संकटहारिणी४(संकट चौथ)चन्द्रोदयA	६	१३	५४	५१	७	२५
२६	१२	४	शनि	२८	००	१८	३६	पूफा	०	२०	७	३२	प्रति	३९	१५	बा	२८	००	८	१८	२८	१५	कन्येन्दु: १५।१५ Aरात्रि ११ बजकर ४३ मि. पर	९	१४	५५	४९	७	२४
२६	१५	५	रवि	२८	४५	१८	५४	उफा	५	३०	८	३६	सुक	३६	४३	तै	२८	४५	९	१९	२९	१६	मृगे(३)वक्री गुरु:५१।२२उषा(१)बुध: १८।३५स सि.योग:+	९	१५	५६	४७	७	२४
२६	१८	६	चंद्र	२८	१८	१८	४२	हस्त	४	०८	६	०२	धृत	३१	४३	व	२८	१८	१०	२०	३०	१७	तुलेन्दु ३३।५८भ२८।१८उ.५७।२३या. +५।३०या.	९	१६	५७	४४	७	२३
२६	२२	७	मंग	२६	२८	१७	५७	चित्र	४	२०	९	०७	शूल	३१	८	ब	२६	२८	११	२१	३१	१८	मकरे बुध:२३।३३जगद्गु.रामानन्द जयन्ती, ज. दि. स्वा.×	६	१७	५८	४०	७	२३
२६	२५	८	बुध	२३	०५	१६	३६	स्वा	५	४०	८	३८	गंड	२२	५५	कौ	२३	०५	१२	२२	फर	१९	वृश्चिकेन्दु:४५।५८ ×विवेकानन्द जी	६	१८	५९	३६	७	२२
२६	२८	९	बृह	१८	२०	१४	४२	विश	०	२५	७	३२	वृ	१६	५	ग	१८	२०	१३	२३	२	२०	भ४५।१७उ.स.सि.योग: =वक्री भौम:५०।३७	९	२०	०	३१	७	२२
२६	३२	१०	शुक्र	१२	१४	१२	१७	ज्ये	५१	२८	२७	५६	ध्रु	८	८	वि	१२	१४	१४	२४	३	२१	धनुयेन्दु:५१।२८भ१२।१४या. धनि(१) शुक्र:७।३२पुनर्वसु=	९	२१	१	२५	७	२१
२६	३५	११	शनि	५	१०	९	२५	मूला	४५	२८	२५	३२	व्या	०	१६	ब	५	१०	१५	२५	४	२२	षट्तिला११व्रतम् D५८।३७स सि.योग३८।५५उ.	६	२२	२	१८	७	२१
०	०	१२	शनि	५७	१५	३०	१५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० Bस.सि योग:	प	न	ा	ल	ा	ल
२६	३९	१३	रवि	४८	०८	२६	५५	पूषा	३८	५५	२२	५४	वज्र	४०	५	ग	२२	४२	१६	२६	५	२३	मकरेन्दु:५१।५०भ४८।०८उ. प्रदोष व्रतं धनि(१) सूर्य:D	९	२३	३	९	७	२०
२६	४२	१४	चंद्र	४०	३८	२३	३४	उषा	३२	३५	२०	२१	सि	३०	१३	वि	१८	८	१७	२७	६	२४	भ१८।०८या. श्रव(१)बुध:४१।०७पूर्वोऽस्त:बुध:२१।२७ B	९	२४	३	५९	७	१९
२६	४७	३०	मंग	३२	४५	२०	२४	श्रव	२६	२३	१७	५२	व्य	२०	३५	च	६	४२	१८	२८	७	२५	कुम्भेन्दु:५३।२८मौनी अमावस श्राद्धादौ पंचकारम्भ:५३।२८	९	२५	४	४८	७	१८

१ फरवरी बुधे अष्टम्यां ग्रहस्पष्टा: इष्टं ४१।३५

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
	६	३	९	२	९	४	५	११
१	२८	४	१	३	२१	४	१५	१५
५	४६	७	५९	४	३१	४५	१८	१८
३	१२	१	५२	३७	३८	५१	२१	२१
६	—	२२	९२	३	७५	४	३	३
५	—	३९	२५	२०	१९	२०	११	११
श्रव		पुष्	उत्र	मृगे	श्रव	मघ	ह.	उभ
(३		(१	(२	(३	(४	२	२	४
		व	मा	व	मा	व	व	व
		उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कु० ८

११ १० ९ ८ १२ के. सू. बु. शु. १ ७ च. २ ४ मं. ६ रा. ३ बृ. ५ श.

७ फरवरी भौमे ३० ग्रहस्पष्टा: इष्ट ४१।४५

सू	चं	मं	बु.	बृ	शु	श	रा	के
९	९	३	९	२	९	४	५	११
२५	२५	२	१०	२	२६	४	१४	१४
४	१८	५	४८	४७	३	१६	५९	५९
४८	९	२२	४१	९	५४	२२	१५	१५
६०	—	१८	९९	२	७५	४	३	३
४८	—	०५	४०	२२	१०	३५	११	११
धन		पुन	श्र	मृगे	धनि	मघ	हस्त	उभ
(१		(४	(१	(३	२	२	२	४
		व	मा	व	मा	व	व	व
		उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कु० ३०

११ १० चं. ९ ८ १२ के. सू. बु. शु. १ ७ २ ४ मं. ६ रा. ३ बृ. ५ श.

पक्षफलम्—सप्तमी को बुध मकर राशि में तथा चौदश को बुध पूर्वोऽस्त हुए हैं। द्वादशी का क्षय हुआ है अतएव इस पक्ष में चने चावल, मक्की ज्वार, बाजरा इत्यादि प्रतिपदा को तेज दूज तीज को मंदा, चतुर्थी से अमावस तक मार्कीट फ़िर तेज रहेगी। गुड, शक्कर, खांड, घी, रसदार पदार्थों का भाव प्रतिपदा को तेज द्वितीया से अष्टमी तक मंदा नवमी से अमावस तक तेज रहे। सरसों, तोरिया, अलसी, मूंगफली का भाव प्रतिपदा को तेज़, २, ३ को मंदा रहेगा। **आकाश लक्षण तथा शकुन विचार**—२५, ३० जन. तथा फर. की १, ३, ७ ता. को देहली, पंजाब हिमाचल व कश्मीर में शीत लहर व वर्षा हो। मा. द्वितीया को बादल-चाल रहे तो धनधान्य की वृद्धि होती है और गल्ले का भाव मन्दा हो जाता है।

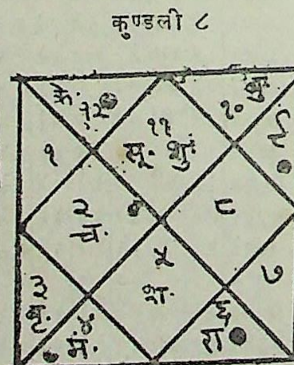
अथ माघमास कृत्यम् तुलामकरमेषेषु प्रातः स्नायी सदा भवेत् हविष्यब्रह्मचर्यं चमाघ स्नानं महत्फलम्। माघकृष्ण चतुर्थी गणेशाख्या—सा च चन्द्रोदय व्यापिनि ग्राह्या। इयमेव संकटहरण चतुर्थी अस्यांव्रतकार्यमुनवतेविघ्नगणेशपूजाचकर्तव्येहतिथौ।इहमाघऽमायाँरविवारी व्यतिपात श्रवण भवेद्यदितदाअर्धोदययोगस्तत्रयत्किंचिद्दानंदीयतेतेन्मेतुल्यम्।

दि	मा	ति.	वार	घ	प	घंट	मि.	नक्ष	घ	प	घंटे	मि.	योग	घ	प	कर	घ.	प.	शक	हि.	फर	ना.	शिव ५६।४० सूर्य उत्तरायणे शिशिर ऋतुः	नि	सू	स्प	ष्ट	सू	उ०
२६	५२	१	बुध	२५	४०	१९	३४	धनि	२०	५३	१५	३९	वरि	११	३३	कि	१	१३	१९	२९	८	२६	शुक्र कुम्भ राशि में २६।३४	९	२६	५	३६	७	१८
२६	५६	२	बृह	१९	५३	१५	१४	शत	१६	४५	१३	५९	परि	३	३०	कौ	१९	५३	२०	३०	९	२७	मीनेन्दु ५९।४० चन्द्रदर्शन	९	२७	६	२३	७	१७
२७	००	३	शुक्र	१५	४३	१३	३४	पूभा	१४	१५	१२	५८	सि	५१	१५	ग	१५	४३	२१	रव	१०	२८	भ ४४।३७ उ.	९	२८	७	९	७	१७
२७	५	४	शनि	१३	३०	१२	४०	उभा	१३	३५	१२	४१	सा	४७	२५	वि	१३	३०	२२	२	११	२९	भ १३।३० या. A पुण्य १७।४८ उ. (श्री) बसन्त पंचमी	९	२९	७	५३	७	१६
२७	९	५	रवि	१३	१८	१२	३४	रेव	१४	५५	१३	१२	शुभ	४४	३०	बा	१३	१८	२३	३	१२	फा	मेषेन्दु: १४।५५ सूर्य कुम्भ राशि में ३३।४८ संक्रा. ३० मूहू. A	१०	०	८	३६	७	१५
२७	१३	६	चन्द्र	१५	८	१३	१७	अश	१८	३५	१४	३०	शुक्ल	४५	०५	तै	१५	८	२४	४	१३	२	शते (१) शुक्र: ४५।३७ B धनि (१) बुध: ५६।५७	१०	१	९	१८	७	१४
२७	१८	७	मंग.	१८	४८	१४	४४	भर	२३	८	१६	२१	ब्रह्म	४६	२५	ब	[illegible]	१८	२५	५	१४	३	वृषेन्दु: ३७।३८ भ १८।४८ उ. ५१।१९ या. भानु ७ B	१०	२	९	५८	७	१३
२७	२२	८	बुध	२३	५०	१६	४५	कृत	२८	४५	१९	०१	ऐन्द्र	४८	८	व	२३	१०	२६	६	१५	४	भीष्माष्टमी	१०	३	१०	३८	७	१२
२७	२७	९	बृह.	२८	५३	१९	८	रोह	३६	४५	२१	५३	वैधृ	५०	५३	कौ	२८	१३	२७	७	१६	५	पश्चिमोदय शुक्रः ११।२६ मिथुने वक्री भौमः १८।२१	१०	४	११	१५	७	११
२७	३१	१०	शुक्र	३६	१८	२१	४१	मृग	४४	१५	२४	५२	विष्क	५२	५८	तै	[illegible]	३६	२८	८	१७	६	मिथुनेन्दु: १०।३०	१०	५	११	५०	७	१०
२७	३५	११	शनि	४२	३५	२४	११	आर्द्र	५१	३५	२७	४७	प्रीति	५४	१८	व	९	२७	२९	९	१८	७	भ ९।२७ उ. ४२।३५ या. जया ११ व्रतं सर्वेषां कुम्भे बुधः ५६।२१	१०	६	१२	२३	७	९
२७	४०	१२	रवि	४८	१८	२६	२७	पुन	५८	२०	३०	२८	आयु	५५	५	ब	१६	३१	३०	१०	१९	८	कर्केन्दु: ४१।४५ शतभि (१) सूर्य: २०।१० मघा (१) वक्री शनि C	१०	७	१२	५५	७	८
२७	४५	१३	चन्द्र	५२	५५	२८	२२	पुष्य	६०	००	०	०	सौ.	५५	८	कौ	२०	३७	फा	११	२०	९	गुरुः मार्गी १३।३७ प्रदोषव्रतं रा. फा. शुरू C ३।४३ भीष्मद्वादशी	१०	८	१३	२५	७	८
२७	५०	१४	मंग.	५६	५३	२९	५२	पुष्य	४	१५	८	४२	शोभ	५४	५८	ग	२४	५४	२	१२	२१	१०	भ ५६।५३ उ. शते (१) बुध: ४३।१० से. श्रीजयंतीदेवी (चंडीगढ़)	१०	९	१३	५३	७	७
२७	५४	१५	बुध	६०	००	००	००	श्ले	९	१३	१०	४६	ऽगंड	५५	००	वि	२८	२७	३	१३	२२	११	सिंहेन्दु: ६।१३ भ २८।५५ या. व्रत पूर्णिमा पुण्यादौ	१०	१०	१४	२०	७	५
२७	५९	१५	बृह	००	५५	७	२६	मघ	१३	०३	११	१७	सुक	५४	२०	ब	००	५५	४	१४	२३	१२	पूर्णिमास्नानदानादौ ज. दि. गु. रविदासजी माघस्नानसमाप्त	१०	११	१४	४५	७	४

१५ फरव. बुध अष्टमी ग्रह स्पष्टाः ४२।०० २३ फरव. गुरौ पूर्णम्यां ग्रह स्पष्टाः ४४।२०

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
[illegible]	१	३	९	२	१०	४	५	११
[illegible]	१२	०	२४	२	९	३	१४	१४
[illegible]	३८	५	२५	३२	४	३५	३४	३४
[illegible]	२४	५१	५३	५५	५९	४७	४९	४७
[illegible]	७२०	११	[illegible]	०	७५	४	३	३
[illegible]		५६	२५	४०	०४	४०	११	११
[illegible]		पुन	धनि	मृगे	शत	मघ	हस.	उभ
(		(४	(१	३	(१	२	२	(४
		व	मा.	व	मा.	व.	व	व
		उ	अ.	उ.	अ	उ	अ	अ

कुण्डली ८



सू	च	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के
१०	४	२	१०	२	१०	४	५	११
११	१९	२९	८	२	१९	२	१४	१४
१४	२२	१	२९	३१	५	५७	९	९
४५	२४	५१	११	५९	२७	४७	१९	१९
६०	७५०	६	[illegible]	०	७४	४	३	३
२३		२०	३२	४०	५८	३८	११	११
शत		पुनं	शते	मृगे	शत	मघ	हस	उभ
(२		(३	(१	३	(४	१	२	४
		व.	मा	मा.	मा.	व.	व	व
		उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली १५

१२ के.
११
सू. बु. शु.
१०
९
१
२
८
५
च. श.
७
३
बृ.
मं.
४
६
रा.

पक्षफल—प्रतिपदा को शुक्र कुम्भ राशिमें प्रवेश करेंगे। संक्रांति ३० मुहूर्ति है तथा वक्री भौम मिथुन में प्रवेश होंगे। नवमी को शुक्र पश्चिम से उदय होंगे। पंचमी के बाद कपास, रूई, सोना, चाँदी, चावल, चना, जौ आदि में तेजी आए। गुड़, शक्कर, चीनी तिलहन, तेल आदि पदार्थों में मन्दे का रूख रहेगा। कुम्भ संक्रान्ति के बाद ज्वार, बाजरा, मूंग, मोठ, उड़द में भी मन्दी आवेगी धातुओं में पूर्ववत् स्थिरता रहेगी।

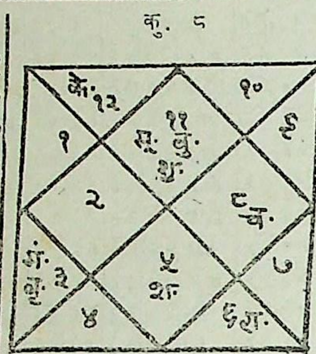
आकाश लक्षण व शकुन विचार—हिमाचल, पंजाब हरियाणा, उत्तर प्रदेश आदि में अनेक स्थानों पर साधारण वर्षा हो। फाल्गुण में यदि बादल चाल रहे किन्तु वर्षा न हो तो यह आगामी अच्छी वर्षा के योग हैं।

माघ शुक्ल चतुर्थी तिलाभिधा इयमेव कुन्द चतुर्थी एषातु प्रदोष व्यापनीग्रह्यति। माघ शुक्ल पचमी श्री पंचमी अरो पूर्वाह्नव्यापिनीग्राह्या। माघ शुक्ला सप्तमी अचलाख्या एषैव रथसप्तमी सा चारुणोदय ग्रह्योति। माघ शुक्लाष्टमी भीष्माभिधा, अस्यांभीष्मोदर्शन तर्पण श्राद्धं च कार्यम्। माघ शुक्ल द्वादश्यां तिलोत्पत्तिः ॥

दि.	मा.	ति	वा.	घ.	प.	घंटे	मि.	न.	घ.	प	घंटे	मि	यो.	घ.	प.	करण	घ.	प.	शा.	हि.	फर	फा.	व्यतिपात ५८।२८ उषा ५६।३ सूर्य उत्तरायणे वसन्तऋतु:	नि.	सू.	स्प	ष्ट	सू.	उ.
२८	३	१	शुक्र	१	१८	७	३४	पूफ.	१५	५३	१३	२४	ध्रु	५१	१३	कौ	१	१८	५	१५	२४	१३	कन्येन्दु:३१।२३ पू.भा(१) शुक्र:२६।१४	१०	१२	१५	०८	७	०३
२८	७	२	शन	१	५३	७	४७	उफ	१७	४०	१४	६	शू	५०	३८	ग	१	५३	६	१६	२५	१४	भ ३१।३९ उ.	१०	१३	१५	२९	७	०१
२८	११	३	रव	१	२५	७	३५	हस.	१८	३०	१४	२५	गंड	४४	१८	वि	१	२५	७	१७	२६	१५	तुलेन्दु:४८।३३, भ १।२५ या. श्रीगणेश४व्रतं चन्द्रो-×	१०	१४	१५	४८	७	[illegible]
२९	१६	४	चद्र	१	०	७	२४	चि.	१८	२३	१४	२१	बृ.	३९	४०	बा	१	००	८	१८	२७	१६	×दय रात्रि १२ बजकर २० मिट पर स.सि. योगः	१०	१५	१६	०५	७	०
[illegible]	०	५	चद्र	५७	५८	३०	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	०	०	०	०	०	०
[illegible]	२१	६	मंग	५४	२०	२८	४२	स्व.	१७	२५	१३	५६	ध्रु	३४	२३	ग	२०	०९	९	१९	२८	१७	भ ५४।२० उ. *व्रतमीने बुध:७।११ उ.भा(१) शुक्र:B	१०	१६	१६	२१	६	५८
[illegible]	२६	७	बुध	५०	१५	२७	०२	वि.	१५	३३	१३	०९	व्या.	२८	२३	वि	२२	१८	१०	२०	पा.	१८	वृश्चिकेन्दु:१।०८भ२२।१८या.पूभा(१) बुध:५५।०७+	१०	१७	१६	३५	६	५६
[illegible]	३०	८	बृह	४५	१८	२५	०२	अनु	१२	५०	१२	०३	हर्ष	२१	४३	बा	१९	१७	११	२१	२	१९	मार्गीभौम.५१।१४ स. सि. योगः श्री सीताजयन्ती ।	१०	१८	१६	४७	६	५५
[illegible]	३५	९	शुक्र	३९	४०	२२	४५	ज्ये	९	२३	१०	३८	वज्र	१४	२५	तै	१८	२९	१२	२२	३	२०	धनेन्दु: ६।२३ +अमृत सिः योगः १५।३३ उ.	१०	१९	१६	५७	६	५३
[illegible]	३६	१०	शन	३३	३०	२०	१६	मूल	५	१५	८	५८	सि.	६	४०	व	६	३५	१३	२३	४	२१	भ ६।३५ उ ३३।३०या. पू. भा. (१)सूर्य:२५।४८=	१०	२०	१७	०५	६	५२
[illegible]	४३	११	रव	२७	००	१७	३९	पूष	०	४७	७	१०	वर	५०	१०	बा	०८	२५	१४	२४	५	२२	मकरेन्दु:१४।२३विजया११व्रतंसर्वेषाम् ।	१०	२१	१७	११	६	५१
[illegible]	४८	१२	चंद्र	२०	२८	१५	००	श्रव	५१	२३	२७	२१	परि	४१	५५	तै	२०	२८	१५	२५	६	२३	श्री प्रदोषव्रतम् =मीनेशुक्र: २६।५०	१०	२२	१७	१५	६	४९
[illegible]	५२	१३	मंग	१४	८	१२	२७	धन	४७	१०	२५	३८	शि	३३	५८	व	१४	८	१६	२६	७	२४	कुम्भेन्दु: १९।०८भ १४।०८उ.४१।१४या महाशिवरात्रि*	१०	२३	१७	१७	६	४८
[illegible]	५७	१४	बुध	८	२०	१०	०६	शत	४२	३८	२४	१२	सि.	२६	३२	श	८	२०	१७	२७	८	२५	उभा (१) बुध: ४६।२० B७।४३ पंचक शुरू	१०	२४	१७	१७	६	४६
[illegible]	२	३०	बृह	३	२३	८	०६	पूभ	४१	०८	२३	१२	सा	१९	२४	ना	३	२३	१८	२८	९	२६	मीनेन्दु:२६।३० अमावस स्नान दानादौ	१०	२५	१७	१५	६	४५

गुरौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्टा ४२।४४

सू.	चं.	मं	बु.	बृ	शु.	श.	रा.	के
[illegible]	७	२	१०	२	१०	४	५	११
[illegible]	२३	२८	२१	२	२७	२	१३	१३
[illegible]	४३	४२	४२	४१	५०	२५	४७	४७
४[illegible]	१०	२०	५२	४४	१५	५	२	२
[illegible]		०	११४	२	७४	४	३	३
[illegible]		४	३	२०	५२	२८	११	११
शते		पुर्न	पू भा	मृगे	पूभ	मघ	हस	उभ
(४		(३	(१	(३	(३	(१	२	४
		मा	मा	मा	मा	व	व	व
		उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ



गुरौ अमावस्यां ग्रहस्पष्टा: ४३।०५

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के
१०	११	२	११	२	११	४	५	११
२५	३	२९	५	३	६	१	१३	१३
१७	४०	३	३	००	३३	५६	२४	२४
२५	१७	१०	३४	५३	५२	१५	४५	४५
५९		५	११४	३	७४	४	३	३
५६		२०	३०	२२	४३	२०	११	११
पूभ		पुर्न	उभा	मृगे	उभ	मघ	हस.	उभ
(२		३	१	३	(२	(१	२	४
		मा	मा	मा	मा	व	व	व
		उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुण्डली ३०

बु. शु. के. १२ सं. | १० | १ | सू. ११ | ९ | २ | ८ | चं. ३ बृ. | ५ श. | ७ | ४ | श. ६

पक्षफलम्—इस पक्ष में पंचमी का क्षय, शुक्रव बुध मीन राशि में तथा भौम मार्गी हुएहै। फलत: गुड़, घीं, तेल, तिल, तेल अलसी, चान्दी रूई, कपास के भावों में मंदीके बाद तेजी आवेगी। पक्षान्त में चावल, मोती, सोना, पीतल, ताँबा, जिस्त आदि में घटा बढ़ी रहैगी। माल पंसारी के भावों में प्राय: स्थिरता आ जाएगी । अमावस को कमी वेशी विशेष तौर पर रहेगी। **आकाश लक्षण तथा शकुन विचार**—२६, २८, फर.४, ५, ७, मार्च को उत्तरी क्षेत्रों पर्याप्त वर्षा रहे। फा व. सप्तमी से नवमी को बादल चाल रहे व गर्जन हो तो भाद्रों की अमावस को अच्छी वर्षा होवें तथा भाद्र तक अनाजादि मन्दे हों।

फाल्गुण कृष्णाष्टमी श्री सीता जयन्ती अस्यां श्री सीता पूजनं कार्यम् । फाल्गुण कृष्ण चतुर्दशी शिवरात्र्याह् वया एषा निशीथ व्यापिनी ग्राह्या—तदुक्तम् अर्द्ध रात्रियुता यत्र फाल्गुण कृष्ण चतुर्दशी शिवरात्रि व्रतं तत्रसा अश्वमेध फलं लभेत् इति । अस्यामेव देविकीउत्पति ते अस्यां देविका स्नानादिकेन शिवलोके वासः स्यात् ।

विक्रमी संवत २०३४ फाल्गुण शुक्ल पक्ष शाका १८९९ सन् ई० १९७८ सन हिजरी १३९८ नित्य सूर्य स्पष्ट सूर्योदयादि स्टै. टाईम जालन्धर

दि.	मा.	ति.	वर	घ०	प०	घ०	मि.	नक्ष	घ.	प.	घ.	मि.	यो.	घ.	प.	कर	घ०	र०	श०	हि.	मा.	फा.
२९	६	१	बृह	५९	३२	६	३४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२९	१०	२	शुक्र	५७	२३	२९	३७	उ.	४०	००	२२	४४	शु	१४	१२	वा	२८	२८	१९	२९	१०	२७
२९	१५	३	शन	५६	१०	२९	१२	रे.	४०	२३	२२	५३	शु	९	४२	तै	२६	४७	२०	र.	११	२८
२९	२०	४	रव	५७	३०	२९	४३	अ.	४२	३०	२३	४३	ब्र	६	३५	व	२६	५०	२१	२	१२	२९
२९	२५	५	चद्र	६०	००	—	—	भर	४६	१८	२५	१२	ऐंद्र	४	५०	ब	२८	४५	२२	३	१३	३०
२९	३०	५	मंग	०	२३	६	४९	कृत	५१	३८	२७	१९	वैधृ	४	२३	कौ	०	२३	२३	४	१४	चैत्र
२९	३५	६	बुध	४	४८	८	३०	रो	५८	०८	२९	५४	वि.	५	०३	तै.	४	४८	२४	५	१५	२
२९	४०	७	बृह	१०	०५	१०	४०	मृग	६०	०	—	—	प्री.	६	३५	व	१०	०५	२५	६	१६	३
२९	४६	८	शुक्र	१६	०८	१३	४	मृग	५	२०	८	४५	आ	८	४०	व	१६	८	२६	७	१७	४
२९	५२	९	शन	२२	१८	१५	३१	आ	१२	४५	११	४२	सौ	१०	५०	कौ	२२	१८	२७	८	१८	५
२९	५८	१०	रव	२८	०३	१७	४७	पुनं	१९	४८	१४	२९	शो	१२	४८	ग	२८	०३	२८	९	१९	६
३०	२	११	चन्द्र	३२	५०	१९	४१	पुष्य	२६	००	१६	५७	अ.	१४	०५	व	०	२७	२९	१०	२०	७
३०	७	१२	मंग	३६	२३	२१	०५	श्ले	३१	०३	१८	५७	सु	१४	३०	ब	४	३७	३०	११	२१	८
३०	११	१३	बुध	३८	३०	२१	५५	मघ	३४	४२	२०	२४	धृ	१३	५३	कौ	७	२७	चैत्र	१२	२२	९
३०	[illegible]	१४	बृह	३८	५९	२२	०५	पूफ	६	३४	२०	३६	शू	१२	४१	ग	८	४४	२	१३	२३	१०
३०	१८	१५	शुक्र	३८	०८	२१	४४	उफ	३७	०६	२०	४८	गड	७	१५	वि.	८	३३	३	१४	२४	११

ति.	सूर्य उत्तरायणे बसन्तऋतु	नि.	स	स्प	ष्ट	सू	उ.
१	० ० ० ०	०	०	०	०	०	
२	चन्द्रदर्शन पश्चिमोदयी बुध ३१।५७ स.सि. अ. सि.योग ४०।०० उ	१०	२६	१७	११	६	४४
३	मेषेन्दु: ४०।२३ हस्त (१) राहु उभा (३) केतु २।१७	१०	२७	१७	०६	६	४४
४	भ २६।५० उ ५७।३० या.स.सि.योग: ।	१०	२८	१६	५५	६	४३
५		१०	२९	१६	४३	६	४१
५	वृषेन्दु: २।३३ सूर्य मीन में २७।१० संक्रा ३० मुहू. पुण्यकाल ४३।१० या. M	११	०	१५	५२	६	४०
६	रेवती (१) बुध: ५६।२१ स.सि.योग: Mमृगे ४ गुरु ५१।१९	११	१	१५	३५	६	३९
७	मिथुनेन्दु: ३१।४०, भ १०।०५ उ. ४३।०७ या.	११	२	१५	१६	६	३८
८	मंगल कर्क राशि में १६।२७ होलाष्टकारम्भ रेव(१)शुक्र ४८।५० ×	११	३	१५	५५	६	३७
९	×उ. भा (१) सूर्य: ४६।३३	११	४	[illegible]	३३	६	३६
१०	कर्केन्दु ३।०८ स.सि योग १९।४८ उ.	११	५	१५	०९	६	३४
११	भ ०।२७ उ. ३२।५० या आमलकी ११ व्रत सर्वेषाम्	११	६	१४	४३	६	३३
१२	सिंहेन्दु ३१।०३ Rचन्द्रग्रहण जन्मदि. चैतन्यमहाप्रभु	११	७	१४	१६	६	३२
१३	प्रदोष व्रत राष्ट्रीय चैत्रारम्भ: शक १९०० सावातिलना	११	८	१३	४७	६	३१
१४	कन्येन्दु: ५१।४२ भ ३८।५९ उ.	११	९	१३	१६	६	३०
१५	भ. ८।३३ या. व्रत पूर्णिमा स्नानदानादि होलिकादीहन सायं त्यौ. होलीR	११	१०	१२	४३	६	२९

भृगौ ग्रहस्पष्टा: ८ घटयादि ४३।२७

सू	च.	मं.	बु	वृ.	शु	श	रा
११	२	३	११	२	११	४	५
३	१४	०	१९	३	१६	१	१२
५५	१५	४	३५	३२	३१	२२	५९
५५	४७	३५	१३	५७	०	४१	१७
९		१०	१०४	४	७४	३	३
८		२		४८	३२	४५	११
भ	२४	पुन	रेव	मृगे	शत	मघ	ह.
		४	१	४	४	१	१
		मा	मा	मा	मा	व	व
		उ	उ	उ	उ	उ	अ

कु० ८

१ | २ | ३ मं.चं. | ४ मं. | ५ श. | ६ रा. | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ सू.बु.शु. के.

भृगौ १५ ग्रहस्पष्टा: घटि ४३।४८

सू.	च	मं	बु.	वृ	शु	श	रा.	के
११	५	३	११	२	११	४	५	११
१०	११	१	२८	४	२५	०	१२	१२
१२	२८	२९	४२	१४	११	५८	३७	३७
४३	२४	२२	०५	२४	४९	५६	०	०
५९	—	१४	५२	६	७४	३	३	३
२५	—	१२	४२	२८	१०	०	११	११
उभ		पु.	रे.	मृगे	रे.	मघ	ह.	उभ
३		४	४	४	३	१	१	३
		मा	मा	मा	मा	व	व	व
		उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कु० १५

१ | २ | ३ के. | ४ मं. | ५ श. | ६ रा.च | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ सू.बु.शु. के.

पक्षफलम्—प्रतिपदा तिथि का क्षय हुआ है। मीन सक्रान्ति ३० मुहूर्ति मंगलवार को है तथा भौम कर्क राशि में प्रवेश करेगे। तदनुसार अनाज, चीनी, चावल, तिल, तैल, घी, गुड़, लाख, लाल देवदारू तथा अन्य लाल रंग की वस्तुएं पक्षान्त तक तेज रहेंगी। ताम्बा, पीतल, सोना, लोहा आदि धातुएं भी तीव्र होगी। प्रति क्षय होने से पूर्वोत्तरी देशों में कहीं छत्रभंग और राजनीतिक परिवर्तन के संकेत हैं।

शकुन विचार—पूर्णिमा को यदि पश्चिम की वायु चले तो अनाजादि की फसल अच्छी है पूर्व की वायु चले तो खण्ड वृष्टि। दक्षिण की वायु फसलों को नुकसान पहुचाती हैं उत्तर की वायु शुभ होती है **आकाश लक्षण**—जम्मू के उत्तरी भागों में खण्ड वृष्टिके योग।

फाल्गुण शुक्लाष्टम्यां होलिकारम्भ: तत्वदेशभेदनविवाहादिनांशुभकार्याना निषेधोक्त: विपाशेरावतीतीरेशतद्रवाश्वत्रिपुष्करे। विवाहादिशुभेनेष्ट होलिका प्राक्दिनाष्टकम्। फाल्गुण शुक्लपूर्णिमायांहोलिकादहनविधेयम् तत्र सायंव्यापनी ग्राह्येति। इस दिन सायंकाल की यदि पर्व उत्तर और ईशान दिशा की वायु हो तो उत्तम, पश्चिम और वायव्य अधम।

विक्रमी सम्वत २०३४ चैत्र कृष्ण पक्ष (वदि) शाका १९०० सन् इस्वी १९७८ हिजरी सन १३९८ नित्य सूर्योदयस्पष्टाद भारतीय स्टै. टाईम जालन्धर ५८

दि.	मा.	ति.	वा	घ.	प.	घ.	मि	नक्ष	घट	मि	घ.	मि	यो.	घ.	प.	करण	घ.	प.	चं.	मु.	मा.	चैत्र	ध्रुव ५५।४० सिद्ध ५४।१८ सूर्य उत्तरायण वसन्ततः	नि.	सू	स्प.	घट.	सू	उ०
३०	१८	१	शन	३६	२५	२१	२	हस्त	३७	३०	२१	२८	बृ.	३	३७	बा	७	१७	४	१५	२५	१२	होला (मेला आनन्दपुर साहब)	११	११	१२	०८	६	२८
०	२३	२	रव	३३	१५	१९	४५	चि	३६	८	२०	५४	व्य	५३	४६	तै	४	५०	५	१६	२६	१३	तुलेन्दु: ६।५८ अश्वि (१) मेषे बुध: ९।२२ (पिंडोरीधाम गु. पुर)	११	१२	११	३१	६	२७
०	२८	३	चंद्र	२९	४५	१८	१०	स्वा	३३	५५	२०	००	हर्ष	४६	२८	व	१	३०	६	१७	२७	१४	भ १।३० उ. २९।४५ या. श्री गणेश व्रत श्री भगवान नारायण जयं	११	१३	१०	५३	६	२६
०	३३	४	मंग	२४	४५	१६	१८	वि.	३१	५	१८	५०	व	४०	४७	गा	२४	४५	७	१८	२८	१५	वृश्चिकेन्दु १६।५० अश्वि (१) मेषे शुक्र ३७।५०	११	१४	१०	१३	६	२४
०	३७	५	बुध	१९	३५	१४	१३	अनु	२७	४३	१७	२८	सि	३२	५७	तै	१९	३५	८	१९	२९	१६	रंग पंचमी स.सि.अ.सि.योग मेला श्री रामराय(देहरादून)	११	१५	९	३१	६	२३
०	४०	६	बृह	१४	१०	१२	२	ज्ये	२४	१०	१६	०२	व्य	२५	४८	व	१४	१०	९	२०	३०	१७	धनुवेन्दु २४।१० भ १४।१० उ ४१।२५ या.	११	१६	८	४७	६	२२
०	४५	७	शुक्र	८	४०	९	४९	मूल	२०	२८	१४	३२	वर	१८	६३	व	८	४०	१०	२१	३१	१८	रेवती (१) सूर्य: १५।२७ पुष्ये(१)भौम:५२।२०शीतलापूजनम्	११	१७	८	०१	६	२१
०	५०	८	शन	३	१०	७	३५	पूषा	१६	४८	१३	२	प.	११	४६	कौ	३	१०	११	२२	अप्रै	१९	मकरेन्दु: ३०।५३ वक्री बुध: ५२।५५	११	१८	७	१३	६	१९
०	०	९	शन	५७	४३	२९	२४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	नवमी क्षय	प	न	।	०	०	०
०	५५	१०	रव	५२	३८	२७	२१	उषा	१३	२०	११	३८	शि	४	३२	व	२५	११	१२	३	२	२०	भर ५।११ उ. ५२।३८ या. स.सि.योग:	११	१९	६	२४	६	१८
१	००	११	चंद्र	४७	५३	२५	२६	श्रव	१०	८	१०	२०	सि	५०	५६	व	२०	१६	१३	२४	३	२१	कुम्भेन्दु: ३८।४० स.सि.योग पापमोचनी ११ व्रत सर्वेषाम्	११	२०	५	३३	६	१७
१	०५	१२	मंग	४३	४५	२३	४५	धन	७	२८	९	१४	शु	४४	२३	कौ	१५	४९	१४	२५	४	२२	पश्चिमोऽस्त बुध: २९।११	११	२१	४	४०	६	१५
१	१०	१३	बुध	४०	२५	२२	२४	शत	५	२३	८	२३	शु	३८	३९	ग	१२	०५	१५	२६	५	२३	मीनेन्दु: ४९।१३ प्रदोष व्रत भ ४०।२५ उ. वारूणी १३	११	२२	३	४६	६	१४
१	१३	१४	बृह	३७	५३	२१	२२	पूभ	४	३	७	५०	ब्र	३३	३०	वि.	९	०९	१६	२७	६	२४	भ ९।१९ या. मेला पिहोवा तीर्थ	११	२३	२	५०	६	१३
१	१८	३०	शुक्र	३६	२५	२०	४६	उभ	३	४०	७	४०	ऐंद्र	२९	३१	च.	७	०९	१७	२८	७	२५	अमावस श्राद्धादी चान्द्र विक्रमी सम्वत् २०३४ सम्पूर्ण मन्वादि।	११	२४	१	५२	६	१२

१ अप्रैल शनौ अष्टम्यां ग्रहस्पष्टा: इष्ट ४४।१२

सू.	च	मं.	बु.	बृ.	शु	श	रा.
११	६	३	०	२	०	४	५
८	७	३	२	५	५	०	१२
७	१८	३४	३४	७	६	३५	११
३	२४	१६	५०	५१	१८	३१	३२
५९		१८	६	७	७४	२	३
११		४	०	८	१०	२०	११
रेव	8 2/4	पुष्.	अश	मृगे	अ	मघ	ह.
१		१	१	४	२	१	१
		मा	मा	मा	मा	व	व
		उ	उ	उ	उ	उ	अ

कु० ८

बु ११ शु
११
सके १२
१० के
२
३ गु
९
४ मं
६ रा
८
७
५ च

७ अप्रैल भृगौ अमावस्यां ग्रहस्पष्टा: इष्ट ४४।३०

सू.	च	म	ब	वृ	शु	श	रा.	के
११	११	३	०	२	०	४	५	११
२४	२७	५	०	५	१२	०	११	११
०१	१५	२६	३४	५१	२९	२२	५२	५२
५२	१८	१६	१८	५९	४४	४०	२६	२६
५९		१९	४८	७	७४	१	३	३
१		५६	२३	४४	६	५०	११	११
रेव	8 2/7	पुष्.	अ.	मृगे	अ.	मघ	हस्त	उभ
३		१	१	४	४	१	१	३
		मा	व	मा	मा	व	व	व
		उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कु० ३०

शु बु १
११
१२ सू च के
१०
२
३ गु
९
४ मं
रा ६
८
७
५ श

पक्षफलम्—इस पक्ष में बुध, शुक्र मेष राशि में प्रवेश करते हैं अष्टमी को बुध वक्री होंगे। अतएव रूई, कपास, कपूर, बिनौले, तिल, तैल, मूंगफली, घी आदिके भावों में प्रथम कमी वेशी आकर बाद में तेजी आवेगी धातुओं के भावों में पूर्ववत् तेजी रहेगी माल पंसारी दालें फल इत्यादि के भावों में अस्थिरता रहेगी व्यापारियों को सोच-विचार कर क्रय विक्रय करना चाहिए। शकुन—चै. तृतीया को यदि वर्षा हो या बादल चाल रहे तो यह आगामी वर्ष में सुभिक्ष के संकेत हैं।

आकाश लक्षण—आकाश प्राय: निर्मल रहेगा मार्च की २५, २७, २९ तथा अप्रैल की ३, ५, ७ को उत्तरी भागों हलकी वर्षा के योग हैं।

चैत्र मास कृत्यम्—चैत्रकृष्ण प्रतिपदि वसन्तोत्सवो विधेयम् अत्रैवचोदयकी ग्राह्येति इह आम्रपुष्पप्राशनम्। चैत्र कृष्ण त्रयोदश्यांयोगविशेषण महावारुणी संज्ञा योगो भवेत् तद्वत्तंशनिवार समायुक्ता सा महावरुणी स्मृता गंगायांयदि लभ्येत कोटि सूर्य ग्रहणादिक योग समायुक्ता शनौशतभिषायदि महा महेतिविख्याता त्रिकोटिकुलमुद्धरेत्।

मा.	सूर्य	चन्द्रमा	मगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	युरेनस	नैपच्यून	सू.क्रा	च.उ.	च.अ.
२०	११। ६।२८।२६	११।१७।५४।१०	१०। ६।५९। ८	११।११। ०।३६	१। ३।५३। ४	०। ०।३४।१९	३।१६।४९।१५	६।२।१०।२७	६।१७।४६	७।२२।३७	०।१७	६।३७	१९।१७
२१	११। ७।२८। ३	०। ०। ७।१३	१०। ७।४५।५८	११।१३। १।२५	१। ४।०३।३७	०। ०।२२। ३	३।१६।४७। ३	६।२। ७।१६	६।१७।४४	७।२२।३६	०। ६	७।१३	२०।१०
२२	११। ८।२७।३८	०।१२। ९।१५	१०। ८।३२।४९	११।१५। २।२०	१। ४।१४।१५	०। ०। ७।४२	३।१६।४४।५७	६।२। ४। ५	६।१७।४२	७।२२।३६	०।३०	७।५०	२१। २
२३	११। ९।२७।११	०।२४। ३।२०	१०। ९।१९।३९	११।१७। ३। ४	१। ४।२५। ०	११।२९।४९।४३	३।१६।४२।५७	६।२। ०।५४	६।१७।४०	७।२२।३६	०।५३	८।२७	२१।५४
२४	११।१०।२६।४३	१। ५।५२।१८	१०।१०। ६।२९	११।१९। ३।२३	१। ४।३५।५१	११।२९।२९।११	३।१६।४१। ३	६।१।५७।४३	६।१७।३८	७।२२।३५	१।१७	९। ७	२२।४६
२५	११।११।२६।१३	१।१८। ७।१३	१०।१०।५३।१९	११।२१। ३।५८	१। ४।४६।४७	११।२९। ६।२२	३।१६।३९।१६	६।१।५४।३२	६।१७।३६	७।२२।३५	१।४१	९।५०	२३।३७
२६	११।१२।२५।४१	१।२९।४७।२४	१०।११।४०। ९	११।२३। २।२८	१। ४।५७।४९	११।२८।४१।१९	३।१६।३७।३५	६।१।५१।२१	६।१७।३४	७।२२।३५	२। ४	१०।३३	अ०।न०
२७	११।१३।२५। ७	२।११।३७।३४	१०।१२।२६।५५	११।२४।५९।३२	१। ५। ८।५६	११।२८।१४।१२	३।१६।३६। ०	६।१।४८।१०	६।१७।३२	७।२२।३४	२।२८	११।२१	०।१५
२८	११।१४।२४।३१	२।२३।५२।२८	१०।१३।१३।४४	११।२६।५५।४६	१। ५।२०। ९	११।२७।४५। ५	३।१६।३४।३१	६।१।४४।५९	६।१७।३१	७।२२।३४	२।५१	१२।१२	१।१२
२९	११।१५।२३।५३	३। ६।२३।२५	१०।१४। ०।३३	११।२८।४८।४७	१। ५।३१।२७	११।२७।१५।१०	३।१६।३३। ९	६।१।४१।४८	६।१७।२८	७।२२।३४	३।१५	१३। ५	१।५७
३०	११।१६।२३।१३	३।१९।१७।१०	१०।१४।४७।२१	०। ०।३९।३१	१। ५।४२।५१	११।२६।४२।३६	३।१६।३१।५३	६।१।३८।३७	६।१७।२६	७।२२।३३	३।३८	१४। १	२।४१
३१	११।१७।२२।३१	४। २।३४।१०	१०।१५।३४। ९	०। २।२५।५३	१। ५।५४।१९	११।२६। ८।३५	३।१६।३०।४४	६।१।३५।२६	६।१७।२४	७।२२।३३	४। १	१४।५८	३।२२
अप्रै	११।१८।२१।४७	४।१६। ८।१६	१०।१६।२०।५६	०। ४।१३।१५	१। ६। ५।५१	११।२५।३३।१८	३।१६।२९।४०	६।१।३२।१५	६।१७।२२	७।२२।३३	४।२५	१५।५८	४। ३
२	११।१९।२१। १	५। ०।२४। ८	१०।१७। ७।४३	०। ५।५५।२२	१। ६।१७।२९	११।२४।५७। ०	३।१६।२८।४४	६।१।२९। ४	६।१७।१९	७।२२।३२	४।४८	१६।५९	४।४४
३	११।२०।२०।१२	५।१४।५१।३२	१०।१७।५४।२९	०। ७।३८।२९	१। ६।२८।१२	११।२४।१९।५५	३।१६।२७।५५	६।१।२५।५३	६।१७।१७	७।२२।३२	५।११	१७। ४	५।२५
४	११।२१।१९।२२	५।२९।३४।१९	१०।१८।४१।१४	०। ९। ७।५८	१। ६।४०।५९	११।२३।४२।१८	३।१६।२७।११	६।१।२२।४२	३।१७।१५	७।२२।३१	५।३४	१९। ९	६। ७
५	११।२२।१८।२९	६।१४।२४।१२	१०।१९।२७।५९	०।१०।४६।३९	१। ६।५२।५२	११।२३। ४।२४	३।१६।२६।३४	६।१।१९।३१	६।१७।१३	७।२२।३१	५।५७	२०।१५	६।५२
६	११।२३।१७।३३	६।२९।२६।२७	१०।२०।१४।४३	०।१२। ३।१६	१। ७। ४।५९	११।२२।२६।३८	३।१६।२६। ३	६।१।१६।२०	६।१७।१०	७।२२।३०	६।१९	२१।२१	७।४१
७	११।२४।१६।३५	७।१४। ८।१४	१०।२१। १।२८	०।१३।२३।३५	१। ७।१६।५०	११।२१।४८।५७	३।१६।२५।३९	६।१।१३। ९	६।१७। ८	७।२२।३०	६।४२	२२।२६	८।३३
८	११।२५।१५।३४	७।२८।३४।३२	१०।२१।४८।२१	०।१४।२९।२२	१। ७।२८।५६	११।२१।११।४५	३।१६।२५।२२	६।१। ९।५८	६।१७। ६	७।२२।२९	७। ५	२३।२८	९।३०
९	११।२६।१४।३०	८।१३।४९।२६	१०।२२।३४।५४	०।१५।३०।२६	१। ७।४१। ६	११।२०।३५।१८	३।१६।२४।५७	६।१। ६।४७	३।१७। ४	७।२२।२९	७।२७	उ०।न०	१०।२८
१०	११।२७।१३।२४	८।२६।३१।१७	१०।२३।२१।३७	०।१६।२०।३७	१। ७।५३।२०	११।१९।५९।४८	३।१६।२४।४६	६।१। ३।३६	६।१७। १	७।२२।२८	७।४९	०।२५	११।२९
११	११।२८।१२।१६	९।१०।३१। ५	१०।२४। ८।१९	०।१७।२७।४८	१। ८। ५।३८	११।१९।२५।३०	३।१६।२४।४३	६।१। ०।२५	६।१६।५९	७।२२।२७	८।११	१।१७	१२।२९
१२	११।२९।११। ६	९।२३।४७।२९	१०।२४।५५। ०	०।१८।१०।५९	१। ८।१८। १	११।१८।५२।३५	३।१६।२४।४८	६।०।५७।१४	६।१६।५७	७।२२।२७	८।३३	२। ३	१३।२८
१३	०। ०।०९।५४	१०। ७। ७।३३	१०।२५।४१।३९	०।१९। ६। ३	१। ८।३०।१७	११।१८।२१।१२	३।१६।२४।५७	६।०।५४। ३	६।१६।५५	७।२२।२६	८।५५	२।४६	१४।२५
१४	०। १।०८।४१	१०।१९।३५।२४	१०।२६।२८।१८	०।१९।३६।४०	१। ८।४२।५७	११।१७।५१।४०	३।१६।२५। १	६।०।५०।५२	३।१६।५२	७।२२।२५	९।१७	३।२५	१५।२१
१५	०। २।०७।२७	११। २।१६।३४	१०।२७।१४।५६	०।२०। ३।५८	१। ८।५५।२१	११।१७।२३।५९	३।१६।२५।२९	६।०।४७।४१	६।१६।४९	७।२२।२४	९।३९	४। ३	१६।१५
१६	०। ३।०६।११	११।१४।२७।२५	१०।२८। १।३३	०।२०।३०।१६	१। ९। ८। ९	११।१६।५८।४८	३।१६।२५।५९	६।०।४४।३०	६।१६।४७	७।२२।२३	१०।००	४।३७	१७।१०
१७	०। ४।०४।५२	११।२५।५६।२८	१०।२८।४८। ९	०।२०।५८।२६	१। ९।२०।५१	११।१६।३५।३६	३।१६।२६।३३	६।०।४१।१९	६।१६।४५	७।२२।२२	१०।२१	५।१४	१८। ५
१८	०। ५।०३।३१	०। ९।००।४५	१०।२९।३४।४३	०।२१। ७।४२	१। ९।३३।३७	११।१६।१४।१२	३।१६।२७।१३	६।०।३८। ८	६।१६।४२	७।२२।२१	१०।४२	५।४९	१८।५५
१९	०। ६।०२।०९	०।२०। ७।३४	११। ०।२१।१५	०।२२।१५।४४	१। ९।४६।२८	११।१५।५६। ५	३।१६।२८। १	६।०।३४।५७	६।१६।४०	७।२२।२०	११। ३	५।२६	१९।४८
२०	०। ७।००।४५	१। २।३९।२३	११। १। ७।४३	०।२१।१३।२९	१। ९।५९।३०	११।१५।३९।५२	३।१६।२८।५५	६।०।३१।४६	६।१६।३८	७।२२।१९	११।२४	७। ७	२०।३९
२१	०। ७।५९।१०	१।१४।१०।१८	११। १।५४। ३	०।२१। ५।१३	१।१०।१२।२८	११।१५।२४।१४	३।१६।३०। ३	६।०।२८।३५	६।१६।३५	७।२२।१८	११।४५	७।४९	२१।२९
२२	०। ८।५७।४३	१।२६।१०। ५	११। २।४०।१७	०।२०।४३।५३	१।१०।२५।३९	११।१५।१०।५७	३।१६।३१।१३	६।०।२५।२४	६।१६।३२	७।२२।१७	१२। ५	८।३१	२२।१९

निरयण सूक्ष्म दैनिक ग्रहस्पष्ट रात्रौ १२ बजे अयनांश १ मई २३।३२।३१ (११ वैशाख से १३ ज्येष्ठ) दैनिक सूर्य क्रान्ति चन्द्रोदयास्त जालन्धर

अप्रै	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरनस	नेपच्यून	सू.क्रा.	च.उ.	च.अ.
२३	०। ९।५६।१४	२। ७। ८।१३	११। ३।२६।२९	०।२०।३०।२८	१।१०।३८।३३	११।१५।००।३६	३।१६।३२।३२	६। ०।२२।१३	६।१६।३०	७।२२।१६	१२।२५	९।१९	२३।०६
२४	०।१०।५४।४१	२।२०। ४।१९	११। ४।१२।३९	०।२०। २।५८	१।१०।५१।४०	११।१४।५४।२५	३।१६।३४।५४	६। ०।१९। २	६।१६।२७	७।२२।१५	१२।४५	१०। ६	२३।५२
२५	०।११।५३। ९	३। ३।१७।२१	११। ४।५८।४७	०।१९।३८।२६	१।११। ४।५०	११।१४।५२। ३	३।१६।३६।२२	६। ०।१५।५१	६।१६।२४	७।२२।१४	१३। ५	१०।५७	अ.न.
२६	०।१२।५१।३४	३।१५। १।१३	११। ५।४४।५३	०।१९। ४।४४	१।११।१८। ३	११।१४।५१।५०	३।१६।३७।५६	६। ०।१२।४	६।१६।२२	७।२२।१३	१३।२४	११।५०	०।३८
२७	०।१३।४९।५२	३।२७।५५। ३	११। ६।३०।५७	०।१८।३३।२९	१।११।३१।१९	११।१४।५०।५२	३।१६।३८।३६	३। ०। ९।२९	६।१६।१९	७।२२।१२	१३।४३	१२।४५	१।१८
२८	०।१४।४८।१५	४।१०।३८।११	११। ७।१६।५८	[illegible]	१।११।४४।३९	११।१४।५१।५५	३।१६।४०।२२	६। ०। ६।१८	६।१६।१६	७।२२।११	१४। २	१३।४२	१।५८
२९	०।१५।४६।५६	४।२४।१७।२६	११। ८। २।५६	०।१८।१८।४१	१।११।५८। २	११।१४।५४।५०	३।१६।४२।१४	६। ०। ३। ७	६।१६।१४	७।२२।१०	१४।२१	१४।४१	२।३९
३०	०।१६।४५।१५	५। ८।३७।१८	११। ८।४८।५२	०।१[illegible]।२१	१।१२।११।२६	११।१४।५८।५९	३।१६।४४।२२	५।२९।५९।५६	६।१६।१२	७।२२। ९	१४।४०	१५।२४	३।१८
मई	०।१७।४३।३३	५।२३। ४।११	११। ९।३४।४६	०।१६।४[illegible]। १	१।१२।२४।५३	११।१५। ५।१३	३।१६।४६।२६	५।२९।५६।४५	६।१६।१०	७।२२। ७	१४।५८	१६।४७	३।५९
२	०।१८।४१।४९	६। ८। १।२५	११।१०।२०।३८	०।१६।३१।३८	१।१२।३८।२३	११।१५।१४।३८	३।१६।४८।३६	५।२९।५३।३४	६।१६। ७	७।२२। ६	१५।१७	१७।५४	४।४३
३	०।१९।३९।५३	६।२३।३६।३८	११।११। ६।२८	०।१५। ६।२८	१।१२।५१।५५	११।१५।२६।४७	३।१६।५०।५३	५।२९।५०।२३	६।१६। ५	७।२२। ५	१५।३४	१९।००	५।२९
४	०।२०।३८। ५	७। ८।११।१४	११।११।५२।१६	०।१४।३१।२२	१।१३। ५।२९	११।१५।४२।११	३।१६।५३।१४	५।२९।४७।१३	६।१६। २	७।२२। ३	१५।५२	२०। ९	६।२१
५	०।२१।३६।१५	७।२३।४४। २	११।१२।३८। २	०।१३।५५।५०	१।१३।१९। ५	११।१५।५८।४६	३।१६।५५।४२	५।२९।४४। १	६।१६। ०	७।२२। २	१६। ९	२१।१५	७।१७
६	०।२२।३४। ३	८। ८।१३।४८	११।१३।२३।४६	०।१३।२३।४८	१।१३।३२।४२	११।१६।१६।५८	३।१६।५८।१८	५।२९।४०।५०	६।१५।५७	७।२२। १	१६।२६	२२।१७	८।१६
७	०।२३।३२।३०	८।२२।३८।१५	११।१४। ९।२८	०।१२।५३।४५	१।१३।४६।१९	११।१६।३७।१८	३।१७। १। २	५।२९।३७।३९	६।१५।५५	७।२२। ०	१६।४४	२३।२४	९।१७
८	०।२४।३०।३५	९। ६।३५।१६	११।१४।५५। ८	०।१२।२७।४१	१।१३।५९।५७	११।१६।५९।४६	३।१७। ३।५४	५।२९।३४।२८	६।१५।५२	७।२१।५९	१७। ०	उ०।न०	१०।१८
९	०।२५।२८।३८	९।२०।१६।२०	११।१५।४०।४६	०।१२। ४।३१	१।१४।१३।३६	११।१७।२३।४१	३।१७। ६।५४	५।२९।३१।१७	६।१५।५०	७।२१।५७	१७।१६	०।१७	११।२०
१०	०।२६।२६।२४	१०। ३। ०।३४	११।१६।२६।२२	०।११।५०।२२	१।१४।२७।१५	११।१७।४८।५०	३।१७।१०। २	५।२९।२८। ६	६।१५।४७	७।२१।५६	१७।३२	०।५०	१२।१९
११	०।२७।२३।३४	१०।१५।४२।२८	११।१७।११।५७	०।११।३२। ४	१।१४।४०।५५	११।१८।२५।२३	३।१७।१३।१८	५।२९।२४।५५	६।१५।३५	७।२१।५४	१७।४७	१।२८	१३।१९
१२	०।२८।२२।३३	१०।२८। ५।२९	११।१७।५७।३१	०।११।२४।५४	१।१४।५४।३६	११।१८।५४।२०	३।१७।१६।४२	५।२९।२१।४४	६।१५।४२	७।११।५२	१८। ३	२। ४	१४।१३
१३	०।२९।१९।२८	११।११।११।११	११।१८।४३। ३	०।११।१४।४४	१।१५। ८।१८	११।१९।२५।२०	३।१७।२०।१३	५।२९।१८।३३	६।१५।४०	७।२१।५१	१८।१८	२।४२	१५। ७
१४	१। ०।१७।३२	११।२३। ७।२०	११।१९।२८।३३	०।११।१०।३२	१।१५।२२।२१	११।१९।५७।४८	३।१७।२३।५४	५।२९।१५।२२	६।१५।३७	७।२१।५०	१८।३३	३।१६	१५।५९
१५	१। १।१५।२४	०। ५।३२।२८	११।२०।१४। ५	०।११।१२।३४	१।१५।३५।४७	११।२०।३१।५३	३।१७।२७।४२	५।२९।१२।११	६।१५।४५	७।२१।४३	१८।४७	३।५०	१६।५४
१६	१। २।१३।१२	०।१७।२५।३१	११।२०।५९।३२	०।११।२०।४१	१।१५।४९।३३	११।२१। ७। ५	३।१७।३१।३८	५।२९। ९। ०	६।१५।३२	७।२१।४७	१९। १	४।२८	१७।४५
१७	१। ३।१०।५६	०।२९।१०। ५	११।२१।४४।५६	०।११।३०।२७	१।१६। ३।११	११।२१।४३।१९	३।१७।३५।३६	५।२९। ५।४९	६।१५।३०	७।२१।४५	१९।१५	५। ५	१८।३८
१८	१। ४। ८।४५	१।११।१६।१०	११।२२।३०।१८	०।११।५६।४६	१।१६।१७। १	११।२२।२०।१३	३।१७।३९।४२	५।२९। २।३८	६।१५।२८	७।२१।४४	१९।२८	५।४७	१९।२७
१९	१। ५। ६।२६	१।२३।१५।१८	११।२३।१५।३९	०।१२।१८।४७	१।१६।३०।५३	११।२२।५८।५५	३।१७।४३।५४	५।२८।५९।२७	६।१५।२६	७।२१।३२	१९।४१	६।३०	२०।१३
२०	१। ६। ४।१२	२। ४।५९।३०	११।२४। १।५५	०।१२।४६।२५	१।१६।४४।२७	११।२३।३८।११	३।१७।४८।१२	५।२८।५६।१६	६।१५।२३	७।२१।४१	१९।५३	७।१५	२१। ६
२१	१। ७। १।५४	२।१६।५१।२९	११।२४।४६।१०	०।१३।२०।३९	१।१६।५८।३३	११।२४।१९।३२	३।१७।५२।३६	५।२८।५३। ५	६।१५।२१	७।२१।३९	२०। ७	८। ३	२१।५३
२२	१। ७।५९।३४	२।२९।१०।१३	११।२५।३१।२४	०।१३।५५।२१	१।१७।१२।३१	११।२५। १।५५	३।१७।५६। ८	५।२८।४९।५४	६।१५।१९	७।२१।३८	२०।१९	८।५४	२२।३६
२३	१। ८।५७।१३	३।११।४५।११	११।२६।१७।२६	०।१४।३६।४८	१।१७।२६।३१	११।२५।४५।२२	३।१८। ०।४०	५।२८।४६।४३	६।१५।१७	७।२१।३७	२०।३१	९।४६	२३।१८
२४	१। ९।५४।४०	३।२३।४३। ८	११।२७। २।४७	०।१५।२६।२८	१।१७।४०।२९	११।२६।२९।५२	३।१[illegible]। ५।३०	५।२८।४३।३३	६।१५।१४	७।२१।३५	२०।४२	१०।३९	२३।२७
२५	१।१०।५२।१६	४। ६।२६।२४	११।२७।४७।५७	०।१६। ६।४६	१।१७।५४।२४	११।२७।१०।२१	३।१८।१०। ६	५।२८।४०।२२	६।१५।१२	७।२१।३३	२०।५३	११।३४	अ०।न०
											२१। ४	१२।३०	०।३६

निरयण सूक्ष्म दैनिक ग्रहस्पष्ट रात्रौ १२ बजे अयनांश १ जून २३।३२।३५ (१४ ज्येष्ठ से १६ आषा. तक) दैनिक सूर्यक्रान्ति चन्द्रोदयास्त जालन्धर

मई	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस	नेपच्यून	सू.क्रा.	च.उ.	च.अ.
२७	१।१२।४८।२५	५। २।५१।२२	११।२९।२२।११	०।१७।४६।४८	१।१८।२२।१८	११।२८।३७।२४	३।१८।१९।३४	५।२८।३४। ०	६।१५।०८	७।२१।२९	२१।१४	१३।२९	१।१४
२८	१।१३।४५।५८	५।१६।५६। १	०। ०। ३।१५	०।१८।४२। ८	१।१८।३६।१६	११।२९।२४।३९	३।१८।२४।१६	५।२८।३०।४९	६।१५। ६	७।२१।२८	२१।२४	१४।२९	१।५३
२९	१।१४।४३।२९	६। १।२७।२६	०। ०।४८।२३	०।१९।५२।३८	१।१८।५०।१८	०। ०।१२।२७	३।१८।२९। ०	५।२८।२७।३८	६।१५। ४	७।२१।२६	२१।३४	१५।३२	२।३४
३०	१।१५।४०।५९	६।१६।१२।२६	०। १।३३।२२	०।२०।५४।१८	१।१९। ४।२०	०। १। १।४०	३।१८।३३।४६	५।२८।२४।२७	६।१५।०२	७।२१।२५	२१।४३	१६।३८	३।१७
३१	१।१६।३८।२८	६।२८। ५।१५	०। २।१८।२०	०।२२। ०। ८	१।१९।१८।२२	०। १।५०।५३	३।१८।३८।३४	५।२८।२१।१६	६।१५।००	७।२१।२४	२१।५२	१७।४५	४।०५
जून	१।१७।३५।४५	७।१३।५५।३५	०। ३। ३।१६	०।२३।१२।०८	१।१९।३२।२३	०। २।४१। ४	३।१८।४३।२४	५।२८।१८। ५	६।१४।५७	७।२१।२२	२२।००	१८।५४	४।५८
२	१।१८।३२।४२	८। १४२। ९	०। ३।४८।१०	०।२४।२२।१८	१।१९।४६।२४	०। ३।३२।३४	३।१८।४८।१५	५।२८।१४।५४	६।१४।५५	७।२१।२०	२२। ८	१९।५९	५।५६
३	१।१९।३०। ९	८।१७। ०।२६	०। ४।३३। ३	०।२५।२६।३८	१।२०। ०।२४	०। ४।२५। ५	३।१८।५३। ७	५।२८।११।४३	६।१४।५३	७।२१।१९	२२।१६	२०।५८	६।५८
४	१।२०।२७।३५	९। १४२।१५	०। ५।१७।५५	०।२६।४५।०८	१।२०।१४।२२	०। ५।१८। ८	३।१८।५७।५९	५।२८। ८।३२	६।१४।५१	७।२१।१७	२२।२३	२१।५४	८।०२
५	१।२१।२५। ०	९।१५।५४। ९	०। ६। २।४५	०।२८।१०।४८	१।२०।२८।२०	०। ६।१२। ६	३।१९। २।५३	५।२८। ५।२१	६।१४।४९	७।२१।१६	२२।३०	२२।४३	९। ६
६	१।२२।२२।२५	९।२९।४०। ४	०। ६।४७।३५	०।२९।३४।४८	१।२०।४२।१८	०। ७। ६।१८	३।१९। ७।४९	५।२८। २।१०	६।१४।४७	७।२१।१४	२२।३७	२३।२८	१०। ७
७	१।२३।१९।४९	१०।१२।५८। १	०। ७।३२।२४	१। १। २।४०	१।२०।५६।१४	०। ८। १। ८	३।१९।१२।४७	५।२७।५८।५९	६।१४।४५	७।२१।१३	२२।४३	उ.न.	११। ९
८	१।२४।१७।१२	१०।२५।४९।३८	०। ८।१७।१२	१। २।३०।४८	१।२१।१०।११	०। ८।५६।३८	३।१९।१९।५९	५।२७।५५।४८	६।१४।४४	७।२१।११	२२।४९	०।१७	१२। ५
९	१।२५।१४।३४	११। ८।२७।३५	०। ९। १।५८	१। ४। ४।१८	१।२१।२४। ५	०। ९।५२।३८	३।१९।२५। ७	५।२७।५२।३७	६।१४।४२	७।२१।१०	२२।५४	०।४४	१३।०१
१०	१।२६।११।५५	११।२०।५१।१९	०। ९।४६।३९	१। ५।३८।३८	१।२१।३७।४७	०।१०।४९।१०	३।१९।३०। १	५।२७।४९।२६	६।१४।४०	७।२१।०८	२२।५९	१।२०	१३।५६
११	१।२७। ९।१५	०। २।४०। १	०।१०।३१।१५	१। ७।१७।४८	१।२१।५१।३९	०।११।४६।१४	३।१९।३५।३७	५।२७।४६।१५	६।१४।३८	७।२१। ७	२३।०३	१।५५	१४।४८
१२	१।२८। ६।३५	०।१४।४९। ४	०।११।१५।४७	१। ९।१०।१८	१।२२। ५।२९	०।१२।४३।५२	३।१९।४०।५७	५।२७।४३। ४	६।१४।३७	७।२१। ५	२३।०७	२।३१	१५।४१
१३	१।२९। ३।५४	०।२६।५२।२८	०।१२। ०।१५	१।१०।५८।५८	१।२२।१९।१७	०।१३।३१।५७	३।१९।४६। १	५।२७।३९।५३	६।१४।३५	७।२१। ४	२३।११	३।०८	१६।३३
१४	२। ०। १।१२	१। ८।२७।३१	०।१२।४४।३९	१।१२।४८।१८	१।२२।३३। ५	०।१४।२१।२८	३।१९।५१।२९	५।२७।३६।४२	६।१४।३३	७।२१।०३	२३।१५	३।४७	१७।२[illegible]
१५	२। ०।५८।२९	१।२०।२०।१४	०।१३।२८।५९	१।१४।४१।२२	१।२२।४८।४१	०।१५।१३।५२	३।१९।५७।३९	५।२७।३३।३१	६।१४।३२	७।२१।०२	२३।१८	४।२८	१८।[illegible]
१६	२। १।५५।४५	२। २।१५।२५	०।१४।१३।१५	१।१६।३६। ८	१।२३। ०।२५	०।१६।१३।१५	३।२०। ३।१९	५।२७।३०।२०	६।१४।३१	७।२१।०१	२३।२०	५।१४	१९।[illegible]
१७	२। २।५३। ०	२।१४। १।३६	०।१४।५७।३०	१।१८।३७।३२	१।२३।१४। ४	०।१७।१३।०५	३।२०। ९। ७	५।२७।२७। ९	६।१४।२९	७।२१।००	२३।२२	६।०१	[illegible]
१८	२। ३।५०।१५	२।२६।१८।१५	०।१५।४१।४४	१।२०।३७।१२	१।२३।२७।४६	०।१८।१३।१०	३।२०।१५। ९	५।२७।२३।५८	६।१४।२८	७।२०।५८	२३।२४	६।५१	[illegible]।३३
१९	२। ४।४७।२९	३। ८।२२।१२	०।१६।२५।५७	१।२२।३९।५४	१।२३।४१।२८	०।१९।१३।४२	३।२०।२१।४०	५।२७।२०।४७	६।१४।२७	७।२०।५७	२३।२[illegible]	७।४३	[illegible]।१८
२०	२। ५।४४।४३	३।२१। २।२७	०।१७।१०। ९	१।२४।४७।२४	१।२३।५५।११	०।२०।१४।३५	३।२०।२७।३०	५।२७।१७।३६	६।१४।२६	७।२०।५५	[illegible]।२६	८।३६	२१।५८
२१	२। ६।४१।५६	४। ३।२०।३५	०।१७।५४।२०	१।२६।४९।५६	१।२४। ८।५१	०।२१।१५।३८	३।२०।३३। ६	५।२७।१४।२५	६।१४।२४	७।२०।५४	२३।२६	[illegible]	२२।३६
२२	२। ७।३९। ९	४।१६। ८। ८	०।१८।३५।३०	१।२८।५२। ६	१।२४।२२।३१	०।२२। ४।५७	३।२०।४०।५४	५।२७।११।१४	६।१४।२३	७।२०।५२	२३।२६	[illegible]।२६	२३।१५
२३	२। ८।३६।२१	४।२९।१४।१७	०।१९।१९।४०	२। ०।५८।२९	१।२४।३६।११	०।२३। ६।५२	३।२०।४६।५८	५।२७। ८। ३	६।१४।२२	७।२०।५१	२३।२[illegible]	११।२[illegible]	[illegible]३।५३
२४	२। ९।३३।३२	५।१२।३८।४५	०।१९।५६।४९	२। ३। ४।३९	१।२४।४९।५१	०।२४। ४।४१	३।२०।५३।१८	५।२७। ४।५२	६।१४।२१	७।२०।४९	२३।[illegible]	१२।[illegible]	अ.न.
२५	२।१०।३०।४३	५।२६।२४।४३	०।२०।४२।५२	२। ५।११।४९	१।२५। ३।२९	०।२५। १। १	३।२०।५९।३६	५।२७। १।४२	६।१४।१९	७।२०।४[illegible]	[illegible]।२४	१३।२१	०।२[illegible]
२६	२।११।२७।५३	६।१०।३२।५४	०।२१।२६।५५	२। ७।२०। ९	१।२५।१७। ५	०।२६। ३।२९	३।२१। ६। ४	५।२६।५८।३१	६।१४।१८	७।२०।४६	२३।२२	१४।२३	१।२[illegible]
[illegible]	२।१२।२५। ३	६।२५। १।२०	०।२२।१०।५५	२। ९।२८।३९	१।२५।३०।३९	०।२७। ६।२६	३।२१।१२।४०	५।२६।५५।२०	६।१४।१७	७।२०।४४	२३।२०	१५।२७	१।५५
[illegible]	[illegible]।२२।१२	७।१०। ८।१९	०।२२।५४।५२	२।११।३९।२८	१।२५।४४। ९	०।२८। ९।३८	३।२१।१८।५८	५।२६।५२। ९	६।१४।१६	७।२०।४३	२३।१८	१६।३२	२।४५
[illegible]	[illegible]।२०	७।२४।५६।१७	०।२३।३८।२४	२।१३।५८।४८	१।२५।५७।३७	०।२९।१३।११	३।२१।२५।२८	५।२६।४८।५८	६।१४।१५	७।२०।४२	२३।१५	१७।३८	३।३८

निरयण सूक्ष्म दैनिक ग्रहस्पष्ट रात्रौ १२ बजे अयनांश १ जुलाई २३।३२।४० (१७ आषा. से १८ श्रावण तक) दैनिक सूर्यक्रान्ति चन्द्रोदयास्त जालन्धर ६२

जून	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्षचल	नेपचून	सू.क्रा.	च.उदय	चं.अस्त
३०	२।१५।१६।२७	८। ९।१५।१४	०।२४।२२।१२	२।१६।१०।५७	१।२६।१२। ४	१। ०।१७। ६	३।२१।३१।५०	५।२६।४५।४७	६।१४।१४	७।२०।४०	२३।१२	१८।४१	४।३८
जुल	२।१६।१३।३४	८।२५। ४। ९	०।२५। ५।५८	२।१८।२०।३१	१।२६।२५।३०	१। १।२१।१९	३।२१।३८।३४	५।२६।४२।३६	६।१४।१४	७।२०।३९	२३। ८	१९।३६	५।३९
२	२।१७।१०।४२	९। ९।५५। ७	०।२५।४९।५२	२।२०।२८।५३	१।२६।३८।५५	१। २।२५।३९	३।२१।४५।१०	५।२६।३६।२५	६।१४।१३	७।२०।३८	२३। ४	२०।३२	६।४६
३	२।१८। ७।५०	९।२४।२९। ६	०।२६।३३।२४	२।२२।३६।१५	१।२६।५२।१९	१। ३।२६।१२	३।२१।५१।४८	५।२६।३६।१४	६।१४।१२	७।२०।३६	२२।५९	२१।१९	७।४६
४	२।१९। ४।५९	१०। ८।१९।११	०।२७।१७। ४	२।२४।४५।२२	१।२७। ५।४१	१। ४।३३।५३	३।२१।५८।२८	५।२६।३३। ३	६।१४।११	७।२०।३४	२२।५४	२२। ३	८।५३
५	२।२०। २। ८	१०।२१।४१।२३	०।२८। ०।४०	२।२६।५२।२९	१।२७।१९। १	१। ५।३७।५१	३।२२। ५। २	५।२६।२९।५२	६।१४।११	७।२०।३३	२२।४९	२२।४८	९।५५
६	२।२०।५९।१८	११। ४।३८।३१	०।२८।४५।१३	२।२८।५४। ३	१।२७।३२।१९	१। ६।४२।२७	३।२२।१३। ८	५।२६।२६।४१	६।१४।१०	७।२०।३१	२२।४३	२३।१९	१०।५२
७	२।२१।५६।२८	११।१७।११। ७	०।२९।२८।४३	३। ०।५८।२८	१।२७।४५।३५	१। ७।४८। ५	३।२२।२०।५२	५।२६।२३।३०	६।१४।१०	७।२०।२९	२२।३७	२३।५६	११।४८
८	२।२२।५३।३८	११।२९।२४। ५	१। ०।१२।१०	३। ३। ०।३०	१।२७।५८।५१	१। ८।५३।५१	३।२२।२७।३८	५।२६।२०।१९	६।१४।१०	७।२०।२८	२२।३१	उ. न.	१२।४३
९	२।२३।५१।११	०।११।३५। २	१। ०।५५।३४	३। ५। १।३८	१।२८।१२। ७	१। ९।५९।४५	३।२२।३४।२६	५।२६।१७। ८	६।१४।१०	७।२०।२७	२२।२४	०।३२	१३।३६
१०	२।२४।४९।२२	०।२३।२२।१६	१। १।३८।५४	३। ७। ०।१०	१।२८।२५।२२	१।११। ५।५०	३।२२।४१।१६	५।२६।१३।५७	६।१४। ९	७।२०।२६	२२।१७	१।०८	१४।२[illegible]
११	२।२५।४६।३[illegible]	१। ४।५८।२६	१। २।२२। ९	३। ८।५६।४१	१।२८।३८।३६	१।१२।१६।१०	३।२२।४८। ८	५।२६।१०।४६	६।१४। ९	७।२०।२५	२२।०९	१।४६	१५।२[illegible]
१२	२।२६।४३।४[illegible]	१।१७।१८।२४	१। ३। ५।२९	३।१०।५०।३०	१।२८।५१।४८	१।१३।२२।५०	३।२२।५५। २	५।२६। ७।३५	६।१४। ९	७।२०।२३	२२।०१	२।२७	१६।११
१३	२।२७।४०।५५	१।२९।२६।१७	१। ३।४८।२२	३।१२।३७।१५	१।२९। ४।३८	१।१४। ५।१७	३।२३। २।२८	५।२६। ४।२४	६।१४। ९	७।२०।२२	२१।५२	३।११	१७। ०
१४	२।२८।३८। ७	२।१२। ८।२३	१। ४।३१।१७	३।१४।२५।५५	१।२९।१७।४८	१।१५।१२।१७	३।२३। ९।१६	५।२६। १।१३	६।१४। ८	७।२०।२१	२१।४४	३।५७	१७।४८
१५	२।२९।३५।१९	२।२३।१७।३८	१। ५।१३। ९	३।१६।१६। १	१।२९।२९।५०	१।१६।१९।२२	३।२३।१६।१८	५।२५।५८। २	६।१४। ८	७।२०।२०	२१।३५	४।४६	१८।३४
१६	३। ०।३२।३१	३। ५।३४।४४	१। ५।५५।५९	३।१८। ०।१३	१।२९।४२।५६	१।१७।२६।४७	३।२३।२३।२२	५।२५।५४।५१	६।१४। ८	७।२०।१८	२१।२५	५।३८	१९।१८
१७	३। १।२९।४४	३।१७।५२।३१	१। ६।३७।४७	३।१९।५४।१५	१।२९।५४।४१	१।१८।३३।१५	३।२३।३०।३०	५।२५।५१।४०	६।२४। ९	७।२०।१७	२१।१५	६।३२	१९।५९
१८	३। २।२६।५७	३।२१।४६।२९	१। ७।२०।३३	३।२१।४०।१८	२। ०। ७।४५	१।१९।४०।२०	३।२३।३७।४२	५।२५।४८।२९	६।१४। ९	७।२०।१६	२१।०५	७।२६	२०।३९
१९	३। ३।२४।११	४।१३।२७।१६	१। ८। ३।१७	३।२३।२४।२१	२। ०।२०।३५	१।२०।४३।२३	३।२३।४४।५८	५।२५।४५।१८	६।१४। ९	७।२०।१५	२०।५४	८।२२	२१।१८
२०	३। ४।२१।२५	४।२६।२५।२४	१। ८।४४।५७	३।२५। ३।३१	२। ०।३३।३०	१।२१।४६।२३	३।२३।५२।४८	५।२५।४२। ७	६।१४।१०	७।२०।१४	२०।४३	९।१८	२१।५६
२१	३। ५।१८।४०	५। ९।३३।२८	१। ९।२७।३८	३।२६।४३। ५	२। ०।४६।१६	१।२२।५४।३२	३।२४। ०।१२	५।२५।३८।५६	६।१४।१०	७।२०।१३	२०।३२	१०।१५	२२।३४
२२	३। ६।१५।५६	५।१३।१३।१३	१।१०।१०। ३	३।२८।२१।१२	२। ०।५९। ०	१।२४। २।५०	३।२४। ७।४२	५।२५।३५।४५	६।१४।१०	७।२०।१२	२०।२१	११।१४	२३।१३
२३	३। ७।१३।१२	६। ६।३४।११	१।१०।४२।२९	३।२९।५६।१३	२। १।१२।४२	१।२५।११।१६	३।२४।१५।१६	५।२५।३२।३४	६।१४।१०	७।२०।११	२०। ९	१२।१४	२३।५५
२४	३। ८।१०।२९	६।२०।४४। ९	१।११।२४।४९	४। १।३२।१८	२। १।२५।२२	१।२६।१९।४८	३।२४।२३। ०	५।२५।२९।२३	६।१४।११	७।२०।१०	१९।५६	१३।१६	अ.न.
२५	३। ९। ७।४७	७। ४।५९। ०	१।१२। ७।३७	४। ३।०४।२३	२। १।३७। ०	१।२७।२८।२८	३।२४।३०।५२	५।२५।२६।१२	६।१४।११	७।२०। ९	१९।४४	१४।१९	०।४०
२६	३।१०। ५। ६	७।१९।२५। २	१।१२।४७।३६	४। ४।३६।२८	२। १।४८।३६	१।२८।३७।१६	३।२४।३८।५२	५।२५।२३। १	६।१४।१२	७।२०। ८	१९।३१	१५।२२	१।३०
२७	३।११। २।२५	८। ४। ३।१२	१।१३।२८।२६	४। ६। ४।४८	२। २। १। ०	१।२९।३५।२६	३।२४।४७। ०	५।२५।१९।५०	६।१४।१२	७।२०। ७	१९।१७	१६।२४	२।२५
२८	३।११।५९।४५	८।१८।४१।३३	१।१४।१०।२०	४। ७।२७।४९	२। २।१३।२०	२। ०।४४।२९	३।२४।५५।१४	५।२५।१६।३९	६।१४।१३	७।२०। ६	१९। ४	१७।२४	३।२४
२९	३।१२।५७। ६	९। ३।२२।२८	१।१४।५०।१०	४। ८।४६।५२	२। २।२४।३८	२। १।४३।३९	३।२५। ३।३४	५।२५।१३।२८	६।१४।१४	७।२०। ६	१८।५०	१८।१८	४।२५
३०	३।१३।५४।२८	९।१९।१३।४७	१।१५।३०।५४	४।१०।०३।५५	२। २।३६।५८	२। २।५२।५४	३।२५।११।५५	५।२५।१०।१७	६।१४।१५	७।२०। ५	१८।३५	१९।०८	५।३२
३१	३।१४।५१।५०	१०। २।४२।४९	१।१६।१०।३९	४।११।१६। २	२। २।४८।५८	२। ४। २।२०	३।२५।१८।५६	५।२५। ७। ६	६।१४।१५	७।२०। ४	१८।२१	१९।५४	६।३५
अग	३।१५।४९।१३	१०।१६।४६।१८	१।१६।५२।१८	४।१२।३१।२५	२। ३। ०। २	२। ५।११।५३	३।२५।२६। ५	५।२५। ३।५५	६।१४।१६	७।२०। ३	१८। ७	२०।३३	७।३४
२	३।१६।४६।३७	१०।२९।५०।२१	१।१७।३३।५७	४।१३।४०।४५	२। ३।१२। २	२। ६।२०।३५	३।२५।३४।१३	५।२५। ०।४४	६।१४।१७	७।२०। २	१७।५१	२१।१२	८।३५

अग	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुद्ध	गुरु.	शुक्र	शनि	राहु	हर्षचल	नेपच्यून	सू.क्रां.	चन्द्र उ.	चन्द्र अ.
३	३।१७।४४। १	११।१२।५३।२९	१।१८।१४।३३	४।१४।४५। ५	२।३।२३। १	२। ७।२९।२८	३।२५।४१।३५	५।२४।५७।३३	६।१४।१८	७।२०। १	१७।३५	२१।५१	९।३३
४	३।१८।४१।२६	११।२५। ७। ६	१।१८।५४। ६	४।१५।५४।३५	२।३।३४।५९	२। ८।३९।१४	३।२५।४८।५५	५।२४।५४।२२	६।१४।१९	७।२०। १	१७।२०	२२।२७	१०।२९
५	३।१९।३८।५२	०। ८।३५।४१	१।१९।३५।३५	४।१७। ०।३८	२।३।४६।५३	२। ९।४९।१६	३।२५।५६।१९	५।२४।५१।११	६।१४।२०	७।२०।००	१७।०४	२३।०३	११।२४
६	३।२०।३६।१९	०।२०।३८।३३	१।२०।१४। ०	४।१७।५९।४३	२।३।५८।४३	२।१०।५९।२४	३।२६। ४।४७	५।२४।४८। ०	६।१४।२१	७।२०।००	१६।४७	२३।४१	१२।१७
७	३।२१।३३।४९	१। १।४८।२०	१।२०।५५।२३	४।१८।५५।५३	२।४।१०।२८	२।१२। ९।३८	३।२६।१२।२५	५।२४।४४।४९	६।१४।२२	७।१९।५९	१६।३१	उ.न.	१३।०९
८	३।२२।३१।२१	१।१४।२०।१३	१।२१।३६।४२	४।१९।४८। ८	२।४।२२। ८	२।१३।१९।५९	३।२६।२०। १	५।२४।४१।३८	६।१४।२३	७।१९।५९	१६।१४	०।२१	१३।५९
९	३।२३।२८।५६	१।२७। ५।३१	१।२२।१६।२८	४।२०।३८।१५	२।४।३३।४३	२।१४।३०।२६	३।२६।२७।४१	५।२४।३८।२९	६।१४।२४	७।१९।५८	१५।५७	१।०४	१४।५१
१०	३।२४।२६।३०	२। ८।१५।१०	१।२२।५६।१०	४।२१।१५।३१	२।४।४५।१३	२।१५।३८।५९	३।२६।३५। ३	५।२४।३५।१६	६।१४।२५	७।१९।५८	१५।४०	१।४८	१५।४१
११	३।२५।२४।१३	२।१९।१०। ७	१।२३।३६।१८	४।२२।३७।४९	२।४।५७।३७	२।१६।४९।३९	३।२६।४२।४७	५।२४।३२। ५	६।१४।२६	७।१९।५७	१५।२२	२।३६	१६।२६
१२	३।२६।२२।४८	३। १।४०।२२	१।२४।१६।२१	४।२३।१८।५१	२।५। २।५७	२।१७।५८।२५	३।२६।५०।३०	५।२४।२८।५४	६।१४।२८	७।१९।५७	१५। ४	३।२७	१७।११
१३	३।२७।१९।२३	३।१३।५७।३७	१।२४।५७।१९	४।२३।५८।५४	२।५।१३। ७	२।१९। ८।१७	३।२६।५८।१२	५।२४।२५।४३	६।१४।३०	७।१९।५६	१४।४६	४।२०	१७।५३
१४	३।२८।१६।५१	३।२६।२७।४२	१।२५।३६।१२	४।२४।३५।५६	२।५।२३।१२	२।२०।१८।११	३।२७। ५।५३	५।२४।२२।३२	६।१४।३१	७।१९।५६	१४।२८	५।१५	१८।३४
१५	३।२९।१४।३६	४।१०।४७।१५	१।२६।१६।५९	४।२५।१२।५९	२।५।३४।१९	२।२१।२६। ९	३।२७।१२।३३	५।२४।१९।२१	६।१४।३३	७।१९।५५	१४। ९	६।११	१९।१५
१६	४। ०।१२।१४	४।२३।४०। ६	१।२६।५४।५१	४।२५।३८।१५	२।५।४४।१९	२।२२।३७।१३	३।२७।२०।१३	५।२४।१६।१०	६।१४।३४	७।१९।५५	१३।५०	७। ८	१९।५२
१७	४। १। ९।५४	५। ६।०४।४६	१।२७।३०।२८	४।२६। २।१८	२।५।५५।१३	२।२३।४८।२१	३।२७।२७।५३	५।२४।१२।५९	६।१४।३५	७।१९।५५	१३।३२	८।०६	२०।३१
१८	४। २। ७।३४	५।२०। २।३६	१।२८। ५।५७	४।२६।१९।५६	२।६। ५।४७	२।२४।५७।३३	३।२७।३५।३३	५।२४। ९।४८	६।१४।३७	७।१९।५५	१३।१२	९।०५	२१।१०
१९	४। ३। ५।१५	६। ४। ७। २	१।२८।४०।१२	४।२६।३८।५१	२।६।१५।५५	२।२६। ५।४९	३।२७।४३। ८	५।२४। ६।३७	६।१४।३९	७।१९।५४	१२।५३	१०।०६	२१।५१
२०	४। ४। २।५७	६।१७।५०।१७	१।२९।२०।४२	४।२७। ०।११	२।६।२६।१९	२।२७।१६।५९	३।२७।५०।४६	५।२४। ३।२६	६।१४।४१	७।१९।५४	१२।३३	११।०५	२२।३५
२१	४। ५। ०।४०	७। १।१७।३२	२। ०। ०।४७	४।२७। ५। ५	२।६।३६।३५	२।२८।२४।२३	३।२७।५८।२४	५।२४। ०।१५	६।१४।४३	७।१९।५४	१२।१४	१२।०८	२३।२३
२२	४। ५।५८।२४	७।१५।५०।५७	२। ०।४०।२७	४।२७। ६। २	२।६।४६।४७	२।२९।३५।५१	३।२८। ६। १	५।२३।५७। ४	६।१४।४५	७।१९।५४	११।५४	१३। ९	अ.न.
२३	४। ६।५६।१०	८। ०। ५।१३	२। १।२०।२६	४।२६।५७।२२	२।६।५६।४९	३। ०।४४।२३	३।२८।१३।३८	५।२३।५३।५३	६।१४।४७	७।१९।५४	११।३३	१४।११	०।१५
२४	४। ७।५३।५७	८।१४।१९।२८	२। २। ०।२४	४।२६।४५।४५	२।७। ६।४४	३। २। ०।४६	३।२८।२१।१३	५।२३।५०।४२	६।१४।४९	७।१९।५४	११।१३	१५।०९	१।११
२५	४। ८।५१।४५	८।२८।३६।४३	२। २।४०।२२	४।२६।३६।१३	२।७।१६।३५	३। ३।१३।२९	३।२८।२८।४८	५।२३।४७।३१	६।१४।५१	७।१९।५४	१०।५२	१६। ४	२।११
२६	४। ९।४८।३५	९।१३। २।१९	२। ३।२०।२०	४।२६। ६। ५	२।७।२५।१९	३। ४।२५।२३	३।२८।३६।२०	५।२३।४४।२०	६।१४।५३	७।१९।५४	१०।३२	१६।५३	३।१५
२७	४।१०।४६।२६	९।२६।५७।२८	२। ४। ०।२०	४।२५।२६।२५	२।७।३४।५४	३। ५।३६।११	३।२८।४३।५०	५।२३।४१। ९	६।१४।५५	७।१९।५५	१०।११	१७।४३	४।१७
२८	४।११।४४।१९	१०।१०।५३।५५	२। ४।३३।१४	४।२४।४८।५५	२।७।४४।१२	३। ६।४८। १	३।२८।५१।२०	५।२३।३७।५८	६।१४।५७	७।१९।५५	९।५१	१८।२५	५।१९
२९	४।१२।४२।१४	१०।२४।५९।२०	२। ४।४१।४५	४।२४।१५।२३	२।७।५३।२४	३। ७।५८।५४	३।२८।५९।४८	५।२३।३४।४७	६।१४।५९	७।१९।५५	९।२९	१९। ७	६।२०
३०	४।१३।४०।११	११। ७।५०।३५	२। ५।२०।४६	४।२३।५८। २	२।८। २।३०	३। ९।१८।५०	३।२९। ७।१४	५।२३।३१।३६	६।१५। १	७।१९।५६	९।०७	१९।४४	७।१८
३१	४।१४।३८।१०	११।२०।३९।५०	२। ६। ०। २	४।२३।१५।२५	२।८।११।३०	३।१०।३९।४८	३।२९।१४।४०	५।२३।२८।२५	६।१५।०३	७।१९।५६	८।४६	२०।२१	८।१६
सि	४।१५।३६।११	०। ३।१४। १	२। ६।३९। ७	४।२२। ८।१५	२।८।२०।२४	३।११।५२।४८	३।२९।२२। ५	५।२३।२५।१४	६।१५। ६	७।१९।५६	८।२४	२०।५९	९।१३
२	४।१६।३४।१४	०।१५।३३। ६	२। ७।१८। १	४।२१।१०।१५	२।८।२९।१२	३।१३। ३।४९	३।२९।३०।२९	५।२३।२२। ३	६।१५।०८	७।१९।५६	८।०२	२१।३७	१०। ६
३	४।१७।३२।१९	०।२७।४२।१०	२। ७।५६।४९	४।२०।२१।१३	२।८।३७।५२	३।१४।१४।५१	३।२९।३७।४५	५।२३।१८।५२	६।१५।१०	७।१९।५७	७।४०	२२।१७	१०।५९
४	४।१८।३०।२५	१। ९।४४।१३	२। ८।३४।३१	४।१९।२१।१२	२।८।४६।१६	३।१५।२५।५५	३।२९।४४।१५	५।२३।१५।४१	६।१५।१३	७।१९।५७	७।१८	२२।५९	११।५२
५	४।१९।२९।३३	१।२१।३६।१९	२। ९।१३।१७	४।१८।२०।१०	२।८।५४।३६	३।१६।३६। १	३।२९।४९।३५	५।२३।१२।३०	६।१५।१५	७।१९।५८	६।५६	२३।४३	१२।४३

निरयण सूक्ष्म दैनिक ग्रहस्पष्ट रात्रौ १२ बजे अयनांश १ सितम्बर २३।३२।४७ (२२ भादो से २४ आश्विन) दैनिक सूर्यक्रान्ति चन्द्रोदयास्त जालन्धर

सि.	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुद्ध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस	नैपचून	सू. क्रां.	चन्द्र उ.	चन्द्र अ.
६	४।२०।२७।४३	२। ३।४४।२७	२। ९।५०।४७	४।१७।१८।५५	२। ९।०३।५०	३।१७।४७।११	३।२९।५६।५४	५।२३। ९।१९	६।१५।१७	७।१९।५८	६।३४	उ.न.	१३।३१
७	४।२१।२५।५४	२।१५।२४।२३	२।१०।२९।११	४।१६।१५।४३	२। ९।१०।५८	३।१८।५८।२३	४। ०। ४।१०	५।२३। ६। ८	६।१५।२०	७।१९।५९	६।१२	०।२९	१४।१८
८	४।२२।२४। ७	२।२७।२५।१४	२।११। ६।२५	४।१५।१३।२३	२। ९।१८। ०	३।२०। ९।४३	४। ०।११।२८	५।२३। २।५७	६।१५।२२	७।१९।५९	५।४९	१।१६	१५। ५
९	४।२३।२२।२२	३। ९।४३।२८	२।११।४२।३३	४।१४।३३।१३	२। ९।२५।४८	३।२१।२१। ५	४। ०।१८।४५	५।२२।५९।४६	६।१५।२५	७।२०।००	५।२७	२।११	१५।४८
१०	४।२४।२०।३९	३।२२।१२।१४	२।१२।१९।२६	४।१४।१३। ३	२। ९।३३।२८	३।२२।३२।२५	४। ०।२६।००	५।२२।५६।३५	६।१५।२७	७।२०।००	५। ४	३। ५	१६।२९
११	४।२५।१८।५८	४। ४।२५।२७	२।१२।५६।२३	४।१४। ३।५२	२। ९।४५। ०	३।२३।४३।५३	४। ०।३३।१४	५।२२।५३।२४	६।१५।३०	७।२०।०१	४।४१	३।५९	१७। ९
१२	४।२६।१७।१९	४।१८।१२।१४	२।१३।३२।११	४।१३।५४।३३	२। ९।५२।१४	३।२४।५५।२५	४। ०।४०।२६	५।२२।५०।१३	६।१५।३३	७।२०। १	४।१८	४।५६	१७।४९
१३	४।२७।१५।४१	५। १।४५। ७	२।१४। ८।१३	४।१३।४१।१८	२। ९।५९।२०	३।२६। ७।११	४। ०।४७।४०	५।२२।४७। २	६।१५।३६	७।२०।०२	३।५५	५।५५	१८।२९
१४	४।२८।१४। ५	५।१५।४२।११	२।१४।४५।३९	४।१३।३६।२३	२।१०। ६।२८	३।२७।१८।५३	४। ०।५४।३१	५।२२।४३।५१	६।१५।३८	७।२०।०३	३।३२	६।५५	१९। ९
१५	४।२९।१२।३१	५।२९।५३।१९	२।१५।२१।५९	४।१३।३७।११	२।१०।१३।२८	३।२८।३६।४१	४। १। १।४२	५।२२।४०।४०	६।१५।४१	७।२०।०४	३। ९	७।५६	१९।५२
१६	५। ०।११।२५	६।१४। ८।१८	२।१५।५८।१९	४।१३।४२।३१	२।१०।२०।२४	३।२९।३८।११	४। १। ८।४५	५।२२।३७।२९	६।१५।४४	७।२०। ५	२।४६	८।५७	२०।३४
१७	५। १।१०।५५	६।२८।२२।१०	२।१६।४५।२१	४।१३।५७।४९	२।१०।२७।१२	४। ०।३९।२३	४। १।१५।५६	५।२२।३४।१८	६।१५।४७	७।२०। ५	+२।२३	९।५९	२१।२२
१८	५। २। ९।२६	७।१२।३५।१३	२।१७। ८।१३	४।१४।३२।५१	२।१०।३३।५०	४। २। ३।१७	४। १।२२।५२	५।२२।३१। ७	६।१५।५०	७।२०। ६	२।००	११। ४	२२।१२
१९	५। ३। ७।५९	७।२६।५०।३१	२।१७।४४।५७	४।१५।२२।५४	२।१०।४०।१८	४। ३।१५।१३	४। १।२९।५१	५।२२।२७।५६	६।१५।५३	७।२०।०७	१।३७	१२। ५	२३।०७
२०	५। ४। ६।३४	८।११।४५।१३	२।१८।१९।३३	४।१६।१२।१५	२।१०।४६।३६	४। ४।२७।११	४। १।३६।४८	५।२२।२४।४५	६।१५।५६	७।२०। ८	१।१३	१३। ४	अ.न.
२१	५। ५। ५।१०	८।२४।५४।३७	२।१८।५४।४१	५।१७।२५।१८	२।१०।५२।४५	४। ५।३८।११	४। १।४३।४१	५।२२।२१।३४	६।१५।५९	७।२०। ९	०।५०	१३।५९	०।१५
२२	५। ६। ३।४८	९। ८।५१।२३	२।१९।३०।४१	४।१८।३२।२३	२।१०।५८।४७	४। ६।५०।१३	४। १।५०।३२	५।२२।१८।२३	६।१६। २	७।२०।१०	०।२७	१४।४९	१। ५
२३	५। ७। २।२८	९।२२।३८। ९	२।२०। ६।२१	४।१९।४४।५८	२।१०।५४।४२	४। ८। २।१३	४। १।५७।२२	५।२२।१५।१२	६।१६।०५	७।२०।११	० ।३	१५।३७	२। ७
२४	५। ८। १।१०	१०। ७। ५। ८	२।२०।४२। १	४।२१। १। ५	२।११।१०।२७	४। ९।१४।१५	४। २। ४। ७	५।२२।१२। १	६।१६।०८	७।२०।१२	—०।२०	१६।१९	३। ८
२५	५। ८।५९।५४	१०।२०।१०। ०	२।२१। ६।४१	४।२२।४१।३५	२।११।१६। २	४।१०।२६।१९	४। २।१०।५०	५।२२। ९।५०	६।१६।११	७।२०।१३	०।४३	१७।०२	४। ७
२६	५। ९।५८।४०	११। ३। ८।१३	२।२१।४०।५१	४।२४। ५।४३	२।११।२१।२७	४।११।३८।२५	४। २।१७।३०	५।२२। ५।३९	६।१६।१४	७।२०।१४	१।०७	१७।३९	५। ३
२७	५।१०।५७।२९	११।१६। ५।२२	२।२२। ७।५९	४।२५।३३।३५	२।११।२६।४२	४।१२।५०।३३	४। २।२४। ७	५।२२। २।२८	६।१६।१७	७।२०।१५	१।३०	१८।१८	६। ३
२८	५।११।५६।२०	११।२८।४६।१९	२।२२।४२। १	४।२७। ८।३७	२।११।३१।४७	४।१४। २।४३	४। २।३०।४१	५।२१।५९।१७	६।१६।२०	७।२०।१६	१।५३	१८।५६	७। १
२९	५।१२।५५।१३	०।११।११।३५	२।२३।१७। १	४।२८।४६।[illegible]	२।११।३६।४२	४।१५।१५। १	४। २।३७।१२	५।२१।५६। ६	६।१६।२४	७।२०।१७	२।१७	१९।३३	७।५३
३०	५।१३।५४। ८	०।२३।१५।३७	२।२३।५०।५१	५। ०।२५।११	२।११।४०।२३	४।१६।२८।२०	४। २।४३।४०	५।२१।५२।५५	६।१६।२७	७।२०।१८	२।४०	२०।१३	८।४९
अक	५।१४।५३। ६	१। ५। ०।२८	२।२४।२५।३१	५। २। ५।१७	२।११।४५।५६	४।१७।४०।४०	४। २।५०। ५	५।२१।४९।४४	६।१६।३१	७।२०।१९	३।०३	२०।५४	९।४२
२	५।१५।५२। ६	१।१८।२०।२९	२।२४।५६। १	५। ३।४६।१८	२।११।४९।२१	४।१८।५२। २	४। २।५६।२७	५।२१।४६।३३	६।१६।३४	७।२०।२०	३।२७	२१।३७	१०।३४
३	५।१६।५१। ८	१।२९।२५।१७	२।२५।२९।२१	५। ५।२८।३८	२।११।५३।३३	४।२०। ५।२५	४। ३। २।४५	५।२१।४३।२२	६।१६।३७	७।२०।२१	३।५०	२२।२१	११।२४
४	५।१७।५०।१३	२।११।११।१९	२।२५।५८।३१	५। ७।११।४३	२।११।५७।३५	४।२१।१८।४३	४। ३। ९। १	५।२१।४०।११	६।१६।४०	७।२०।२२	४।१३	२३।१०	१२।१३
५	५।१८।४९।२०	२।२३।५७। ८	२।२६।२९।३१	५। ८।५५।२२	२।१२। ०।२९	४।२२।३०।१४	४। ३।१५।१३	५।२१।३७। ०	६।१६।४३	७।२०।२३	४।३६	२३।५८	१२।५९
६	५।१९।४८।२९	३। ५।१२। ५	२।२७। ३।३८	५।१०।४५।२२	२।१२। ४।१५	४।२३।४३।२१	४। ३।२१।२२	५।२१।३३।४९	६।१६।४७	७।२०।२४	४।५९	उ.न.	१३।४१
७	५।२०।४८।४०	३।१७।२८।१७	२।२७।२०।४८	५।१२।३५।१८	२।१२। ८।४७	४।२४।५६।११	४। ३।२७।२८	५।२१।३०।३८	६।१६।५०	७।२०।२६	५।२२	०।५२	१४।२३
८	५।२१।४७।५३	४। ०। ५।१३	२।२७।४९।५८	५।१४।१२।१४	२।१२।११। ९	४।२६।१०।४३	४। ३।३४।२८	५।२१।२७।२७	६।१६।५३	७।२०।२८	५।४५	१।४६	१५। ५
९	५।२२।४७। ७	४।१३।३१।१८	२।२८।३५। ८	५।१५।५६।१२	२।१२।१४।२१	४।२७।२२।१७	४। ३।४०।२६	५।२१।२४।१६	६।१६।५७	७।२०।२९	६।०८	२।४२	१५।४३

अंक.	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस	नैपच्यून	सू.क्रा.	चं.उ.	चं.अ.
१०	५।२३।४७।२३	४।२६।२७।२०	२।२८।५८।१६	५।१७।४२।३५	२।१२।१७। ९	४।२८।३९।५३	४।३।४६।२०	५।२१।२१। ५	६।१७। १	७।२०।३०	६।३१	३।३९	१६।२१
११	५।२४।४६।४०	५।१०।१९।२२	२।२९।२६।१९	५।१९।२८।४८	२।१२।१९। ५	४।२९।५३।३१	४।३।५२।१०	५।२१।१७।५४	६।१७।०४	७।२०।३२	६।५४	४।३७	१७। ३
१२	५।२५।४५।५९	५।२४।२९।१६	३। ०। ०।११	५।२१।१३।५४	२।१२।२२।२३	५। १। ६।११	४।३।५७।५६	५।२१।१४।४३	६।१७। ७	७।२०।३४	७।१६	५।३६	१७।४४
१३	५।२६।४५।२०	६। ९। ६।२१	३। ०।३१।११	५।२२।५९। ७	२।१२।२४।४७	५। २।१९।५३	४।४। ३।३८	५।२१।११।३२	६।१७।१०	७।२०।३५	७।३९	६।४२	१८।२७
१४	५।२७।४४।४३	६।२३।४५।२८	३। १। १।४१	५।२४।४३।५७	२।१२।२६।५३	५। ३।३४। ७	४।४। ९।१६	५।२१। ८।२१	६।१७।१४	७।२०।३७	८।०१	७।४७	१९।१४
१५	५।२८।४४।१८	७। ८।२०।२९	३। १।३१।३१	५।२६।२९।४७	२।१२।२९।०७	५। ४।४५।२७	४।४।१४।४६	५।२१। ५।१०	६।१७।१८	७।२०।३९	८।२४	८।५२	२०। ६
१६	५।२९।४३।५४	७।२३। ४।३४	३। २। १।५१	५।२८।१४।५७	२।१२।३१।१८	५। ६। ०।४९	४।४।२०।१२	५।२१। १।५९	६।१७।२२	७।२०।४१	८।४६	९।५४	२१। ३
१७	६। ०।४३।१२	८। ७।२९।३७	३। २।३१।४९	५।२९।५८। ७	२।१२।३३।२६	५। ७।१५।१३	४।४।२५।३४	५।२०।५८।४८	६।१७।२५	७।२०।४२	९।०८	१०।५५	२२।
१८	६। १।४२।४२	८।२१।४३। ५	३। ३। १।१९	६। १।४८। ७	२।१२।३४।१२	५। ८।२९।४३	४।४।३०।५१	५।२०।५५।३७	६।१७।२८	७।२०।४४	९।३०	११।५४	२३। ३
१९	६। २।४२।१४	९। ५। ४। ४	३। ३।३१।३९	६। ३।१६।२२	२।१२।३५।३६	५। ९।४४।२३	४।४।३६।०४	५।२०।५२।२६	६।१७।३२	७।२०।४५	९।५१	२२।४८	अ.न.
२०	६। ३।४१।४८	९।१९।३०। ०	३। ३।५८।५५	६। ५। ०।३७	२।१२।३६। ८	५।१०।५८।१३	४।४।४१।१२	५।२०।४९।१५	६।१७।३५	७।२०।४७	१०।१३	१३।३६	०।२७
२१	६। ४।४१।२५	१०। ३। २। ८	३। ४।२५।५६	६। ६।४४।२७	२।१२।३६।४८	५।१२।१३। ३	४।४।४६।१६	५।२०।४६। ४	६।१७।३८	७।२०।४८	१०।३५	१४।२०	१। ४
२२	६। ५।४१। ३	१०।१६।२१। १	३। ४।५०।३६	६। ८।२८। ७	२।१२।३७।०६	५।१३।२६।५३	४।४।५१।१५	५।२०।४२।५३	६।१७।४१	७।२०।५०	१०।५६	१४।५९	२।०१
२३	६। ६।४०।४३	१०।२९।२६।२६	३। ५।०८।३६	६।१०।११।१७	२।१२।३७।४६	५।१४।४२।३३	४।४।५६।०९	५।२०।३९।४२	६।१७।५४	७।२०।५१	११।१७	१५।३९	२।५९
२४	६। ७।४०।२४	११।१२।१८।२८	३। ५।२६।३५	६।११।५३।५७	२।१२।३७।५४	५।१५।५६।२३	४।५। ०।५९	५।२०।३६।३१	६।१७।५८	७।२०।५३	११।३८	१६।१५	३।५९
२५	६। ८।४०। ७	११।२४।५८।३४	३। ५।४५।३४	६।१३।१३। ७	२।१२।३७।२६	५।१७।१०।१५	४।५। ५।४४	५।२०।३३।२०	६।१८।०३	७।२०।५४	११।५९	१६।५४	४।५२
२६	६। ९।३९।५२	०। ७। १।३७	३। ६। ७।३२	६।१४।३१।२७	२।१२।३७।२४	५।१८।२५। ५	४।५।१०।२४	५।२०।३०। ९	६।१८। ८	७।२०।५६	१२।२०	१७।३१	५।४६
२७	६।१०।३९।३९	०।१९।३१।१३	३। ६।३६।३२	६।१६।११।४७	२।१२।३७।०२	५।१९।३९।५९	४।५।१४।५९	५।२०।२६।५८	६।१८।१२	७।२०।५८	१२।४०	१८। ९	६।४१
२८	६।११।३९।२८	१। १।३७।१६	३। ७।०५।३०	६।१७।५२।४५	२।१२।३६।५६	५।२०।५३।५४	४।५।१९।२९	५।२०।२३।४७	६।१८।१५	७।२१। ०	१३।००	१८।५०	७।३५
२९	६।१२।३९।२०	१।१३।४०।०८	३। ७।३३।२८	६।१९।३३।२३	२।१२।३६।२२	५।२२। ८।५०	४।५।२३।५४	५।२०।२०।३६	६।१८।१९	७।२१।०	१३।२०	१९।३१	८।२६
३०	६।१३।३९।१५	१।२५।४३।२५	३। ८।०१।२८	६।२१।१२।४५	२।१२।३५।३८	५।२३।२४।४७	४।५।२८।१४	५।२०।१७।२५	६।१८।२३	७।२१। ४	१४।४०	२०।१७	९।१७
३१	६।१४।३९।१२	२।०७।४२।५७	३। ८।२९।१७	६।२२।४७।३५	२।१२।३४।४२	५।२४।३९।४५	४।५।३२।२८	५।२०।१४।१४	६।१८।२६	७।२१। ६	१४।००	२१। ४	१०। ५
नव	६।१५।३९।१२	२।१९।१०।५८	३। ८।४२।२८	६।२४।२६।४८	२।१२।३२।३२	५।२५।५५।४३	४।५।३६।३७	५।२०।११। ३	६।१८।२९	७।२१। ८	१४।१९	२१।५२	१०।५२
२	६।१६।३९।१४	३।०१।१०।१३	३। ९।१०।३८	६।२५।५३।४०	२।१२।३१।१६	५।२७।१०।४२	४।५।४०।४०	५।२०। ७।५२	६।१८।३१	७।२१।१०	१४।३८	२२।४३	११।३६
३	६।१७।३९।१८	३।१३।२४।१४	३। ९।३७।५०	६।२७।३२। ८	२।१२।२९।३७	५।२८।२६।४२	४।५।४४।४३	५।२०। ४।४१	६।१८।३३	७।२१।१२	१४।५७	२३।३५	१२।१८
४	६।१८।३९।२४	३।२५।३२।५९	३। ९।५७।५२	६।२९। ९। ८	२।१२।२७।४३	५।२९।४१।४४	४।५।४८।४०	५।२०। १।३०	६।१८।३५	७।२१।१३	१५।१६	उ.न.	१२।५८
५	६।१९।३९।३२	४। ८।१४।०४	३।१०।१७।५३	७। ०।४६।१३	२।१२।२४।३३	६। ०।५५।४७	४।५।५२।३३	५।१९।५८।१९	६।१८।३	७।२१।१५	१५।३५	०।२९	२३।३७
६	६।२०।३९।४१	४।२१। ५।११	३।१०।३७।५४	७। २।२२।३३	२।१२।२२। ५	६। २। ९।५१	४।५।५६।२०	५।१९।५५। ८	६।१८।४०	७।२१।१७	१५।५३	१।२४	१४।१५
७	६।२१।३९।५२	५। ५। ०।१३	३।१०।५७।१४	७। ३।५८।३५	२।१२।२०।२७	६। ३।२३।५६	४।६। ०।०१	५।१९।५१।५७	६।१८।४३	७।२१।१९	१६।११	२।२१	१४।५३
८	६।२२।४०। ५	५।१८।३१।५१	३।११।१७।३४	७। ५।२३।३६	२।१२।१७।३७	६। ४।३८। २	४।६। ३।३७	५।१९।४८।४६	६।१८।४७	७।२१।२०	१६।२८	३।२०	१५।३३
९	६।२३।४०।२०	६।०३। ९।०७	३।११।४२।१८	७। ६।४४।५२	२।१२।१४।४२	६। ५।५३। ९	४।६। ६।०७	५।१९।४५।३५	६।१८।५१	७।२१।२२	१६।४६	४।२२	१६।१५
१०	६।२४।४०।३७	६।१७।२६। ८	३।१२। ४।३४	७। ८।१८।२७	२।१२।११।२९	६। ७। ७।१७	४।६। ९।३२	५।१९।४२।२४	६।१८।५५	७।२१।२४	१७।०३	५।२६	१७। ३
११	६।२५।४०।५६	७।०२।२१।११	३।१२।२४।३२	७। ९।४१।२९	२।१२।०८। ६	६। ८।२२।२७	४।६।१२।५१	५।१९।३९।१३	६।१८।५८	७।२१।२६	१७।२०	६।३	१७।५२
१२	६।२६।४१।१७	७।१७।२५।५८	३।१२।४४।३०	७।११। ४।३२	२।१२।०५।३३	६। ९।३९।३८	४।६।१६। ४	५।१९।३६। २	६।१९।०२	७।२१।२८	१७।३६	७।३८	१८।४६

निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट र.त्रौ १२ बजे स्टं० टाईम जालन्धर अयनांश १ दिसम्बर २३।३२।५७

नव	सूर्य	चन्द्रमा	मगल	बुध	गुरु	शुक्र	शान	राहु	यूरनस	नेपचून	सू.क्र.	चं.उ.	च अ.
१३	६।२७।४१।३९	८।०२।२५।०७	३।१३। २।२८	७।१२।४६।४२	२।१२। ८।५०	६।१०।५३।५०	४।६।१९।११	५।१३।३२।५१	६।१९।०६	७।२१।३०	१७।५२	८।४३	१९।४५
१४	६।२८।४२। ३	८।१७।१०।१३	३।१३।२२।२७	७।१४।१७।४८	२।१२।५६।५७	६।१२।०६। ३	४।६।२१।१३	५।१९।२९।४०	६।१९।१०	७।२१।३२	१८।०८	९।४५	२०।४८
१५	६।२९।४३।५२	९। १।५६।०९	३।१३।४१।२६	७।१५।३७।४३	२।१२।५२।५४	६।१३।२४।१६	४।६।२४। ८	५।१९।२६।२९	६।१९।१४	७।२२।३४	१८।२४	१०।४२	२१।५१
१६	७। ०।४४।२०	९।१६। ८।१३	३।१४। ०।२३	७।१६।५७।२१	२।११।४८।४१	६।१४।३९।३०	४।६।२७।५७	५।१९।२३।१८	६।१९।१७	७।२१।३६	१८।३९	११।३३	२२।५४
१७	७। १।४४।५०	९।२९।५६।१५	३।१४।१२।१९	७।१८।२७।१८	२।११।४४।१९	६।१५।५४।४४	४।६।३०।४०	५।१९।२०। ७	६।१९।२१	७।२१।३८	१८।५४	१२।२४	२३।५७
१८	७। २।४५।२२	१०।१३।३१।१४	३।१४।२४।१७	७।१९।५५।३८	२।११।३९।४७	६।१७।१०।५९	४।६।३३।१७	५।१९।१६।५६	६।१९।२४	७।२१।४०	१९।०८	१३।०६	अ.न.
१९	७। ३।४५।५५	१०।२६।१३। ७	६।१४।३६।१५	७।२१।२२।४१	२।११।३५। ५	६।१८।२५।१५	४।६।३५।४७	५।१९।१३।४५	६।१९।२८	७।२१।४२	१९।२३	१३।४५	०।५८
२०	७। ४।४६।३०	११।०९।१३।५८	३।१४।४८।२६	७।२२।४८।५२	२।११।३१।१३	६।१९।४२।३१	४।६।३८।१२	५।१९।१०।३४	६।१९।३२	७।२१।४४	१९।३७	१४।२४	१।५५
२१	७। ५।४७। ७	११।२१।३९।५७	३।१५। ०।२९	७।२४।१४। ३	२।११।२६।११	६।२०।५६।४८	४।६।४०।३०	५।१९। ७।२३	६।१९।३६	७।२१।४७	१९।५०	१४।५८	२।५१
२२	७। ६।४७।४५	०। ४। ५।२९	३।१५।१४।३१	७।२५।२८।२३	२।११।२०।४९	६।२२।११। ६	४।६।४२।४२	५।१९। ४।१२	६।१९।४०	७।२१।४९	२०। ३	१५।३५	३।४४
२३	७। ७।४८।२५	०।१६।३०। ५	३।१५।३९।३४	७।२६।५१।३५	२।११।१५।१७	६।२३।२६।२५	४।६।४४।४४	५।१९। १। १	६।१९।४३	७।२१।५१	२०।१६	१६।१२	४।३१
२४	७। ८।४९। ७	०।२८।१८।३१	३।१५।४९।३८	७।२८।१३।५१	२।११।०९।४३	६।२४।४०।४५	४।६।४६।३७	५।१८।५७।५०	६।१९।४७	७।२१।५३	२०।२९	१६।५२	५।२७
२५	७। ९।४९।५०	१।१०।१२।१३	३।१६। २।४२	७।२९।३३।५३	२।११।०२।४६	६।२५।५५। ६	४।६।४८।३०	५।१८।५४।३९	६।१९।५१	७।२१।५५	२०।४१	१७।३३	६।२०
२६	७।१०।५०।३५	१।२२।१२।१४	३।१६।१५।४३	८। ०।५२।५५	२।१०।५५।४५	६।२७।१७।२८	४।६।५०।१६	५।१८।५१।२८	६।१९।५४	७।२१।५७	२०।५२	१८।१७	७।१२
२७	७।११।५१।२१	२। ४। ३।१५	३।१६।२७।४५	८। २।१०। ५	२।१०।४८।३१	६।२८।३१।५१	४।६।५१।४६	५।१८।४८।१७	६।१९।५८	७।२१।५९	२१।०४	१९।०३	८।०२
२८	७।१२।५२। ८	२।१५।४०। ५	३।१६।३८।४८	८। ३।२५।२५	२।१०।४१। ७	६।२९।४८।१५	४।६।५२।३९	५।१८।४५। ६	६।२०।०१	७।२२।०१	२१।१५	१९।५१	८।५०
२९	७।१३।५२।५६	२।२७।४९।३४	३।१६।५४।५२	८। ४।३९।४७	२।१०।३३।२३	७। ०।५५।४०	४।६।५३। ९	५।१८।४१।५५	६।२०।०४	७।२२।०३	२१।२५	२०।४१	९।३६
३०	७।१४।५३।४५	३।०९।५२।०१	३।१७। ७।५४	८। ५।५१।३४	२।१०।२५।४९	७। २।११। ५	४।६।५४।०९	५।१८।३८।४४	६।२०।०८	७।२२। ५	२१।३५	२१।३२	१०।१७
दि.	७।१५।५४।३५	३।२१।५१।०३	३।१७।१३।५२	८। ७। ०।५२	२।१०।१५।५१	७। ३।२५।३६	४।६।५५।१२	५।१८।३५।३३	६।२०।१२	७।२२। ७	२१।४५	२२।२५	१०।५९
२	७।१६।५५।२६	४। ४। ९।०४	३।१७।२०।५०	८। ८। ५।५४	२।१०।०७।४१	७। ४।४१। २	४।६।५६।१७	५।१८।३२।२२	६।२०।१५	७।२२।१०	२१।५४	२३।१८	११।३८
३	७।१७।५६।१८	४।१६।५७।५५	३।१७।२८।४८	८। ९।०९।१४	२। ९।५९।२०	७। ५।५५।२८	४।६।५७।०७	५।१८।२९।११	६।२०।१९	७।२२।१२	२२।०३	उ.न.	१२।१२
४	७।१८।५७।११	४।२९।२८।११	३।१७।३४।३८	८।१०। ५।१६	२। ९।५१।४०	७। ७। ९।५४	४।६।५७।५४	५।१८।२६। ०	६।२०।२२	७।२२।१४	२२।११	०।१३	१२।४९
५	७।१९।५८। ४	५।१२।४३।०३	३।१७।४२।३२	८।१०।५४।३०	२। ९।४३।१०	७। ८।२४।२०	४।६।५८।३४	५।१८।२२।४९	६।२०।२६	७।२२।१६	२२।१९	१।०९	१३।२९
६	७।२०।५८।५८	५।२६।२८।२१	३।१७।४४।२२	८।११।३९।३४	२। ९।३४।४०	७। ९।३३।४६	४।६।५८।५४	५।१८।१९।३८	६।२०।२९	७।२२।१९	२२।२७	२।०७	१४।०७
७	७।२१।५९।५३	६।१०।३७।१३	३।१७।४८।२६	८।१२।१८।४१	२। ९।२६।२०	७।१०।५९।१२	४।६।५९।०८	५।१८।१६।२७	६।२०।३२	७।२२।२१	२२।३४	३।०८	१४।५०
८	७।२३। ०।४९	६।२५।१६।१४	३।१७।५३।२८	८।१२।५४।५७	२। ९।१८।१४	७।१२।०८।३८	४।६।५९।२८	५।१८।१३।१६	६।२०।३४	७।२२।२३	२२।४१	४।११	१५।३५
९	७।२४। १।४६	७।१०।१८।१५	३।१७।५७।३८	८।१३।२७। १	२। ९।१०। ९	७।१३।२४। ८	४।६।५९।४८	५।१८।१०। ५	६।२०।३८	७।२२।२५	२२।४७	५।१७	१६।२७
१०	७।२५। २।४३	७।२५।४०।१६	३।१८। १।४०	८।१३।४१।१३	२। ९। २। ४	७।१४।३९।३९	४।६।५९।५४	५।१८। ६।५४	६।२०।४२	७।२२।२८	२२।५३	६।२४	१७।२५
११	७।२६। ३।४१	८।१०।५७।२१	३।१८। ५।२२	८।१३।४९।१५	२। ८।५४। ४	७।१५।५५।११	४।६।५९।५५	५।१८। ३।४३	६।२०।४४	७।२२।३०	२२।५८	७।२९	१८।२७
१२	७।२७। ४।४०	८।२६।१०।३१	३।१८।००।४८	८।१३।५१।२१	२। ८।४६। २	७।१७।१०।४४	४।६।५९।५४	५।१८। ०।३२	६।२०।४८	७।२२।३३	२३।०३	८।३१	१९।३२
१३	७।२८। ५।३९	९।११।३०।१७	३।१७।५९।२५	८।१३।३८।३१	२। ८।३८। २	७।१८।३६।१४	४।६।५९।४८	५।१७।५७।२१	६।२०।५२	७।२२।३५	२३।०७	९।२७	२०।३८
१४	७।२९। ६।३९	९।२५।३४।१३	३।१७।५७।१७	८।१३। ७।५०	२। ८।३०। ४	७।१९।५४।४४	४।६।५९।३४	५।१७।५४।१०	६।२०।५५	७।२२।३७	२३।११	१०।१८	२१।४२
१५	८। ०। ७।३९	१०। ९।३२।१०	३।१७।४८।५५	८।१२।२२। ८	२। ८।२२। ८	७।२१।१०।१०	४।६।५९।१४	५।१७।५०।५९	६।२०।५८	७।२२।३९	२३।१५	११।०३	२२।४४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	३।१७।४६।४५	८।११।३४।२०	२। ८।१४।२४	७।२२।२५।३६	४।६।५८।५७	५।१७।४७।४८	६।२१।०४	७।२२।४१	२३।१८	११।४४	२३।४६

दि.	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहू	हर्षचल	नपचून	सु.क्रा.	च.उ.	च.ग्र.
१७	८। २। ९।४०	११। ६।०५।१०	३।१७।४२।०७	८।१०।३२।३०	२।८। ७।२२	७।२३।४०।१२	४।६।५८।२३	५।१७।४४।३७	६।२१।०८	७।२२।४३	२३।२१	१२।२३	अ.न.
१८	८। ३।१०।४२	११।१८।४५। ७	३।१७।३९।५८	८।०९।२५।४०	२।७।५९।३२	७।२४।५५।३३	४।६।५७।४३	५।१७।४१।२६	६।२१।१२	७।२२।४५	२३।२३	१२।५६	०।४१
१९	८। ४।११।४४	०। १।१७। ५	३।१७।३६।१९	८। ८।१०।३४	२।७।५१।४४	७।२६।१२।४४	४।६।५७।२६	५।१७।३८।१५	६।२१।१५	७।२२।४८	२३।२४	१३।३७	१।३६
२०	८। ५।१२।४७	०।१३।१९।११	३।१७।३०।५१	८। ६।४८।४४	२।७।४३।५८	७।२७।२८। ५	४।६।५६।४२	५।१७।३५। ४	६।२१।१७	७।२२।५१	२३।२५	१४।१४	२।३१
२१	८। ६।१३।५०	०।२५।३०।१३	३।१७।२४।३४	८। ५।२४।००	२।७।३८। ४	७।२८।४३।१३	४।६।५६।१२	५।१७।३१।५३	६।२१।१९	७।२२।५३	२३।२६	१४।५२	३।२४
२२	८। ७।१४।५४	१। ६।२२।१२	३।१७।१७।२४	८। ४। ६।४२	२।७।२८।२२	७।२९।५८।४७	४।६।५४।५६	५।१७।२८।४२	६।२१।२०	८।२२।५५	२३।२६	१५।३२	४।१५
२३	८। ८।१५।५८	१।१९।१३।१४	३।१७।०९।३१	८। २।५५।३४	२।७।२०।४२	८। १।१३।१९	४।६।५२।४३	५।१७।२५।३१	६।२१।२३	७।२२।५७	२३।२६	१६।१५	५।०७
२४	८। ९।१७। ३	२। १।१८।४७	३।१७।००।४५	८। १।५७।०२	२।७।१५। २	८। २।२८।५१	४।६।५१।२०	५।१७।२२।२०	६।२१।२५	७।२३।५९	२३।२५	१६।५८	५।५८
२५	८।१०।१८। ८	२।१२। ५।००	३।१६।५१।०७	८। ०।३२।३१	२।७।०८।२०	८। ३।४३।२३	४।६।४९।५४	५।१७।१९। ९	६।२१।२८	७।२३।०२	२३।२४	१७।४८	६।४५
२६	८।११।१९।१३	२।२४।५३।५८	३।१६।४०।४२	७।२९।४७।३०	२।७। ०।३२	८। ४।५८। ३	४।६।४८।२२	५।१७।१५।५८	६।२१।३१	७।२३। ४	२३।२२	१८।३६	७।३१
२७	८।१२।२०।१९	३।०६।३५।१७	३।१६।२९।२८	७।२८।५७।३०	२।६।५१।३६	८। ६।१३।३५	४।६।४६।४४	५।१७।१२।४७	६।२१।३४	७।२३।०६	३३।२०	१९।२८	८।१५
२८	८।१३।२१।२५	३।१८।४९।१०	३।१६।१७।२६	७।२८।१२।३१	२।६।४३।४६	८। ७।२८। ७	४।६।४४।१०	५।१७। ९।३६	६।२१।३७	७।२३।०८	२३।१८	२०।१९	८।५६
२९	८।१४।२२।३१	४। ०।५८।५४	३।१५।५४।३६	७।२७।५६।२५	२।६।३५।५६	८। ८।४२।३६	४।६।४२।१९	५।१७। ६।२५	६।२१।३९	७।२३।१०	२३।१५	२१।१३	९।३६
३०	८।१५।२३।३७	४।१३।१७।२१	३।१५।४०।५९	७।२७।४०।३४	२।६।२८।४०	८। ९।५७।११	४।६।४०।११	५।१७। ३।१४	६।२१।४१	७।२३।१२	२३।११	२२।०७	१०।१५
३१	८।१६।२४।४३	४।२५।४८।५२	३।१५।२६।३९	७।२७।३७।२४	२।६।२०।४५	८।११।१२।४३	४।६।३८। ८	५।१७। ०। ३	६।२२।४४	७।२३।१४	२३।०७	२३।०१	१०।५१
जन	८।१७।२५।५०	५। ८।४६।४७	३।१५।११।२७	७।२७।३२।११	२।६।१३।००	८।१२।२७।१५	४।६।३६।२०	५।१६।५६।५२	६।२१।४७	७।२३।१६	२३।०३	२३।५६	११।४४
२	८।१८।२६।५७	५।२२। ६।५२	३।१४।५५।३१	७।२७।४७।२२	२।६। ६।४३	८।१३।४३।४७	४।६।३३।४२	५।१६।५३।४१	६।२१।५०	७।२३।१८	१२।५९	उ.न.	१२।१९
३	८।१९।२८। ४	६। ५।१७।२५	३।१४।३८।५२	७।२८।०२।३५	२।५।५८।५७	८।१४।५९।१९	४।६।३१।१४	५।१६।५०।३०	६।२१।४२	७।२३।१९	२२।५२	०।४५	१२।५२
४	८।२०।२९।११	६।१९।१४।२०	३।१४।२१।२०	७।२८।२२।४६	२।५।५१।१३	८।१६।१५।५२	४।६।२८।४०	५।१६।४७।१९	६।२१।५५	७।२३।२०	२२।४६	१।२७	१३।४६
५	८।२१।३०।१८	७। ३।३९।१८	३।१४।०३।२६	७।२८।४६।२६	२।५।४३।२९	८।१७।३१।१५	४।६।२५।१८	५।१६।४४। ८	६।२१।५७	७।२३।२२	२२।४०	२।०५	१४।३९
६	८।२२।३१।२५	७।१८।३०।१५	३।१३।४४।४४	७।२९।१६।४६	२।५।३५।५१	८।१८।४५।४७	४।६।२२।४०	५।१६।४०।५७	६।२१।५९	७।२३।२४	२२।३३	२।५०	१४।३१
७	८।२३।३२।३२	८। ३।३६।११	३।१३।२५।२३	७।२९।४१।५६	२।५।२८।१९	८।२०। १।१९	४।६।२०।११	५।१६।३७।४६	६।२२।०२	७।२३।२६	२२।२६	३।१३	१६।२२
८	८।२४।३३।३९	८।१८।४५।०४	३।१३।०५।२६	८। ०।२३। ९	२।५।२०।५३	८।२१।१६।५२	४।६।१७।५७	५।१६।३४।३५	६।२२।०५	७।२३।२७	२२।१९	३।४५	१७।१३
९	८।२५।३४।४६	९। ४। २।१२	३।१२।४४।५५	८। १।१७।११	२।५।१३।३३	८।२२।३३।१५	४।६।१५।०९	५।१६।३१।२४	६।२२।०७	७।२३।२९	२२।११	४।१८	१८। ५
१०	८।२६।३५।५३	९।१९। १।१५	३।१२।२३।५३	८। २। ८।२३	२।५। ६।२१	८।२३।४८।४७	४।६।१२।१७	५।१६।२८।१३	६।२२।०९	७।२३।३१	२२।०२	४।५३	१८।५७
११	८।२७।३७। १	१०। १।५४।५५	३।१२।०२।५२	८। ३। ५।५३	२।४।५९।१४	८।२५। ५।२२	४।६। ९।१९	५।१६।२५।१२	६।२२।११	७।२३।३५	२१।५३	५।२९	१९।४९
१२	८।२८।३९।१७	१०।१७।५८।२०	३।११।४१।२२	८। ४। ९। १	२।४।५२। १	८।२६।२०।००	४।६। ६।१५	५।१६।२२।०१	६।२२।१३	७।२३।३६	२१।४४	६।०७	२०।५२
१३	८।२९।४०।२३	११। १।३८। ०	३।११।१८।५८	८। ५।१०।३४	२।४।४६। ७	८।२७।३५।३८	४।६।०२।४७	५।१६।१८।५०	६।२२।१५	७।२३।३८	२१।३४	६।५०	२१।३३
१४	९। ०।४१।२८	११।१४।५१।२२	३।१०।५५।५३	८। ६।१४।३७	२।४।३८। ७	८।२८।५२।१६	४।५।५९।२५	५।१६।१५।३६	६।२२।१७	७।२३।४०	२१।२४	७।३५	२२।२२
१५	९। १।४२।३३	११।२७।३५।१८	३।१०।३२।५०	८। ७।२७।३९	२।४।३३।१७	९। ०। ९।५४	४।५।५६।५८	५।१६।१२।२८	६।२२।१९	७।२३।४२	२१।१३	८।२५	२३। ९
१६	९। २।४३।३७	०।१०। १।१२	३।१०। ९।२९	८। ८।३७।४२	२।४।२४।३७	९। १।२५।३२	४।५।५२।२८	५।१६। ९।१७	६।२२।२१	७।२३।४४	२१। २	९।१८	२३।५४
१७	९। ३।४४।४१	०।२२।४९। ७	३।०९।४५।५४	८। ९।४८।२०	२।४।२०। ७	९। २।४०।४७	४।५।४८।५३	५।१६।०८। ६	६।२२।२३	७।२३।४५	२०।५१	१०।१४	अ.न.
१८	९। ४।४५।४४	१। ४।१०।११	३।०९।२२।०८	८।११।१२।२३	२।४।१३।४७	९। ३।५६।१७	४।५।४४।१३	५।१६। २।५५	६।२२।२५	७।२३।४७	२०।३९	११।११	०।३६
१९	९। ५।४६।४७	१।१६।२०।१३	३। ८।५८।०३	८।१२।२६।५२	२।४।०६।३७	९। ५।११।५५	४।५।४०।३१	५।१५।५६।४४	६।२२।२६	७।२३।४९	२०।२७	१२।११	१।१७

निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट रात्रौ १२ बजे स्टै० टाईम जालन्धर अयनांश १ फरवरी २३।३३।०६ सू०क्रा०चन्द्रोस्त

दिन	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	यूरेनस	नैपच्यून	सू.का.	च.उ.	च.अ.
२०	९। ६।४७।४९	१।२७।४६।२०	३। ८।३३।५७	८।१३।४६।४८	२। ३।५६।३२	९। ६।२७।१९	४।५।३६।४७	५।१५।५६।३३	६।२२।२८	७।२३।५१	२०।१४	१३।११	१।५८
२१	९। ७।४८।५१	२। ९।४६।१२	३। ८।०९।५४	८।१५।२६।४०	२। ३।५१।३४	९। ७।४३।५४	४।५।३३।००	५।१५।५३।२२	६।२२।२८	७।२३।५३	२०।०१	१४।१४	२।३८
२२	९। ८।४९।५२	२।२१।४०।११	३। ७।४५।५२	८।१६।५२।३०	२। ३।४६।४६	९। ८।५९।१८	४।५।२९। ४	५।१५।५०।११	६।२२।३०	७।२३।५४	१९।४८	१५।१८	३।२०
२३	९। ९।५०।५३	३। ३।१०।२२	३। ७।२१।४५	८।१८। ८।३४	२। ३।४१।२०	९।१०।१३।४३	४।५।२५। ६	५।१५।४७।००	६।२२।३२	७।२३।५६	१९।३४	१६।२५	४। ५
२४	९।१०।५१।५३	३।१५।४३।५४	३। ७। ७।४१	८।१९।३६।५८	२। ३।३७।२६	९।११।२९।०५	४।५।२१। ६	५।१५।४३।४९	६।२२।३४	७।२३।५७	१९।२०	१७।३२	४।५४
२५	९।११।५२।५३	३।२७।४५।१९	३। ६।४३।४१	८।२१।३५।५२	२। ३।३३। २	९।१२।४४।२७	४।५।१७। ५	५।१५।४०।३८	६।२२।३५	७।२३।५९	१९।०६	१८।४१	५।४७
२६	९।१२।५३।५२	४। ९।५७।१९	३। ६।२१।४३	८।२३। १।५५	२। ३।२८।२८	९।१३।५९।३७	४।५।१३। ५	५।१५।३७।२७	६।२२।३६	७।२४।०१	१८।५१	१९।४७	६।४४
२७	९।१३।५४।५१	४।२२।४५।११	३। ५।५९।२३	८।२४।२९। ०	२। ३।२४।५८	९।१५।१४।५७	४।५। ८।५७	५।१५।३४।१६	६।२२।३७	७।२४।०३	१८।३६	२०।४९	७।४३
२८	९।१४।५५।४९	५। ५।१३।२१	३। ५।३९।२०	८।२५।५७।११	२। ३।२०।३८	९।१६।३०।१७	४।५। ३।४९	५।१५।३१।०५	६।२२।३८	७।२४।०५	१८। ५	२१।४६	८।४४
२९	९।१५।५६।४७	५।१८।२०।२२	३। ५।१३।३०	८।२७।२६।१२	२। ३।१६।३७	९।१७।४५।३८	४।४।५९।४०	५।१५।२७।५४	६।२२।४०	७।२४। ६	१८। ५	२२।३७	९।४४
३०	९।१६।५७।४४	६। १।५३।१८	३। ४।५१।१२	८।२८।५६।१२	२। ३।१२।४७	९।१९। ०।५८	४।४।५५।२५	५।१५।२४।४३	६।२२।४१	७।२४। ८	१७।४८	२३।२२	१०।४२
३१	९।१७।५८।४०	६।१४।४३।२७	३। ४।२६।१२	९। ०।२७। ४	२। ३।०९। ७	९।२०।१६।१८	४।४।५०।११	५।१५।२१।३२	६।२२।५२	७।२०।०९	१७।३२	उ.न.	११।३६
फर	९।१८।५९।३६	६।२८।४९।१२	३। ४।०७।०१	९। १।५९।५२	२। ३।०४।३७	९।२१।३१।३८	४।४।४५।४१	५।१५।१८।२१	६।२२।४३	७।२४।११	१७।१५	०।०२	१२।३३
२	९।२०। ०।३१	७।१२।३३।११	३। ३।४४।२२	९। २।३३। ४	२। ३।०१।१७	९।२२।४६।५९	४।४।४०।३७	५।१५।१५।१०	६।२२।४३	७।२४।१२	१६।५८	०।३९	१३।२५
३	९।२१। १।२५	७।२७।३१।०७	३। ३।२३।०८	९। ४। ७।३५	२। २।५८।१७	९।२४। २।५८	४।४।३४।१६	५।१५।११।५९	६।२२।४४	७।२४।१५	१६।४१	१।१३	१४।१६
४	९।२२। २।१८	८।१२।३५।२५	३। ३।०२।५५	९। ५।४५।५२	२। २।५५।१५	९।२५।१८।११	४।४।२९।५२	५।१५। ८।४८	६।२२।४५	७।२४।१४	१६।२३	१।४७	१५। ८
५	९।२३। ३। ९	८।२७।२१। ५	३। २।४३।४३	९। ७।२२। ४	२। २।५२।२३	९।२६।३३।२७	४।४।२५।२४	५।१५। ५।३७	६।२२।४६	७।२४।१६	१६।०५	२।२०	१५।५९
६	९।२४। ३।५९	९।१२।१७। ४	३। २।२३।३२	९। ९।१०।३९	२। २।४९।४१	९।२७।४८।४१	४।४।२०।५५	५।१५। २।२६	६।२२।४७	७।२४।१८	१५।४७	२।५३	१६।५२
७	९।२५। ४।४८	९।२५।१८। ९	३। २।०५।२२	९।१०।४८।४१	२। २।४७। ९	९।२९।०३।५४	४।४।१६।२२	५।१४।५९।१५	६।२२।४७	७।२४।२०	१५।२९	३।२९	१७।४४
८	९।२६। ५।३६	१०।११।३९। ५	३। १।४७।१७	९।१२।४४।२८	२। २।४३।४७	१०। ०।१९।०४	४।४।१०।४७	५।१४।५६।०४	६।२२।४८	७।२४।२१	१५।१०	४।०६	१८।३७
९	९।२७। ६।३३	१०।२५।४८। ७	३। १।३०।४७	९।१४।२४।५४	२। २।४१।३५	१०। १।३५।१६	४।४।०५। ०	५।१४।५२।५३	६।२२।४९	७।२४।२३	१४।५१	४।४८	१९।२९
१०	९।२८। ७। ९	११। ९। ३।०४	३। १।१३।४६	९।१६। ४।५३	२। २।४०।३३	१०। २।४९। ७	४।४।००। ५	५।१४।४९।४२	६।२२।४९	७।२४।२४	१४।३२	५।३२	२०।२०
११	९।२९। ७।५३	११।२२।४८। ४	३। ०।५९।०६	९। ७।४५।५४	२। २।३७।४१	१०। ४। ४।३६	४।३।५९।३३	५।१४।४६।३१	६।२२।५०	७।२४।२५	१४।१२	६।२१	२१।०८
१२	१०। ०। ८।३६	०। ५।४०।०७	३। ०।४४।२६	९।१९।२७।१४	२। २।३६। ९	१०। ५।१९।४४	४।३।५४।३२	५।१४।४३।२०	६।२२।५०	७।२४।२६	१३।५२	७।१४	२१।५४
१३	१०। १। ९।१८	०।१८। ९।१९	३। ०।३०।२६	९।२१।१०।१९	२। २।३४।३७	१०। ६।३४।५०	४।३।५०।२२	५।१४।४०।०९	६।२२।५०	७।२४।२७	१३।३२	८।०९	२२।३६
१४	१०। २। ९।५८	१। ०।२८।१३	३। ०।१७।३९	९।२२।५४।३७	२। २।३३।३५	१०। ७।४९।५५	४।३।४१।४९	५।१४।३७।५८	६।२२।५०	७।२४।२९	१३।१२	९।०६	२३।१८
१५	१०। ३।१०।३८	१।१३।३८।२४	३। ०। ५।५१	९।२४।२५।५३	२। २।३२।५५	१०। ९। ४।५६	४।३।३५।४७	५।१४।३४।४७	६।२२।५०	७।२४।३०	१२।५२	१०।०४	२३।५९
१६	१०। ४।११।१५	१।२४।३३।५२	२।२९।५४।५५	९।२६।११।१८	२। २।३२।१४	१०।१०।२०। ३	४।३।३१। ७	५।१४।३१।३६	६।२२।५१	७।२४।३१	१२।३१	११।०५	अ.न
१७	१०। ५।११।५०	२। ६।१८।११	२।२९।४४। ५	९।२७।५७।१३	२। २।३१।४४	१०।११।३५।०७	४।३।२६।२५	५।१४।२८।२५	६।२२।५१	७।२४।३२	१२।११	१२। ५	०।३७
१८	१०। ६।१२।२३	२।१७।४५। ४	२।२९।३६।२५	९।२९।३६।४८	२। २।३०।५९	१०।१२।५०।११	४।३।२१।४८	५।१४।२५।१४	६।२२।५१	७।२४।३३	११।५०	१३।०७	१।१७
१९	१०। ७।१२।५५	३। ०। ६।१३	२।२९।२९।५९	१०। १।३१। ८	२। २।३०।४८	१०।१४।०५।१६	४।३।१६।४३	५।१४।२२।०३	६।२२।५१	७।२४।३४	११।२८	१४।१०	१।५९
२०	१०। ८।१३।२५	३।१२।१२।१७	२।२९।२१।२९	१०। ३।१८।१०	२। २।३०।३५	१०।१५।२०।२१	४।३।११।५८	५।१४।१८।५२	६।२२।५२	७।२४।३५	११।०७	१५।१४	२।४४
२१	१०। ९।१३।५३	३।२४।२७। ४	२।२९।१३।१८	१०। ५। ८।१३	२। २।३०।५५	१०।१६।३५।२५	४।३। ७।१५	५।२४।१५।४१	६।२२।५२	७।२४।३६	१०।४६	१६।१२	३।३३
२२	१०।१०।१४।२०	४। ६।५४। ८	२।२९।०५।३९	१०। ६।३९।१४	२। २।३१।२३	१०।१७।५०।२७	४।३।०२।१९	५।१४।१२।३०	६।२२।५१	७।२४।३७	१०।२४	१७।२६	४।२७

फर	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	यूरनस	नैपचून	सू.क्रा.	च.उ.	च.अ.
२३	१०।११।१४।४५	४।१९।२२।२४	२।२९।०१।५९	१०। ८।२९।११	२।२।३१।५९	१०।१९।०५।२७	४।२।५७।४७	५।१०। ८।१९	६।२२।५१	७।२४।३८	१०।०२	१६।३०	५।२५
२४	१०।१२।१५। ८	५। २।३०। ७	२।२८।५४।३९	१०।१०।२०।४३	२।२।३२।३९	१०।२०।२०।२५	४।२।५३।०२	५।१४।०६।०८	६।२२।५०	७।२४।३८	९।४०	१९।३०	६।२५
२५	१०।१३।१५।२९	५।१५।२६।१८	२।२८।५०।२७	१०।१२।१२।४५	२।२।३३।५३	१०।२१।३५।२१	४।२।४८।२४	५।१४। २।५७	६।२२।५०	७।२४।३९	९।१८	२०।२५	७।२७
२६	१०।१४।१५।४८	५।२८।३५। ४	२।२८।४५।१५	१०।१४।०५।४८	२।२।३४।५४	१०।२२।५०।१७	४।२।४३।४७	५।१३।५९।४६	६।२२।५०	७।२४।४०	८।५६	२१।१४	८।२७
२७	१०।१५।१६। ५	६।१२। ७।१३	२।२८।४४।०५	१०।१५।५८।४६	२।२।३५।५९	१०।२४।०५।३४	४।२।३९।११	५।१३।५६।३५	६।२२।४९	७।२४।४०	८।३३	२१।५७	९।२६
२८	१०।१६।१६।२१	६।२५।४७।१०	२।२८।४३।५३	१०।१७।५२।५१	२।२।३८।०९	१०।२५।२०।३०	४।२।३४।३७	५।१३।५३।२४	६।२२।४९	७।२४।४१	८।११	२२।३६	१०।२२
मा.	१०।१७।१६।३५	७। ९।४०।१३	२।२८।४२।५८	१०।१९।४७।०२	२।२।३९।४९	१०।२६।३५।२३	४।२।२९।३५	५।१३।५०।१३	६।२२।४९	७।२४।४१	७।४८	२३।१३	११।१६
२	१०।१८।१६।४७	७।२३।४३।१०	२।२८।४२।२०	१०।२१।४२।५२	२।२।४१।४४	१०।२७।५०।१५	४।२।२५। ५	५।१३।४७।०२	६।२२।४७	७।२४।४२	७।२५	२३।४७	१२। ९
३	१०।१९।१६।५७	८। ६।२५।१२	२।२८।४२।२४	१०।२३।३६।५२	२।२।४४।०४	१०।२९।०५।०७	४।२।२०।३७	५।१३।४३।५१	६।२२।४७	७।२४।४२	७।०२	उ.न.	१३। १
४	१०।२०।१७। ५	८।२०।५५।३६	२।२८।४३।१२	१०।२५।३०।५५	२।२।४६।४७	११।००।१९।५८	४।२।१६।१२	५।१३।४०।४०	६।२२।४६	७।२४।४३	६।३९	०।२०	१३।५२
५	१०।२१।१७।११	९। ६।१३।२१	२।२८।४४।४३	१०।२७।२५।१८	२।२।४९।१४	११।००।३४।४८	४।२।११।४७	५।१३।३७।२९	६।२२।४६	७।२४।४४	६।१६	०।५३	१४।४४
६	१०।२२।१७।१५	९।२१।१६।२०	२।२८।४८।५६	१०।२९।१३।३६	२।२।५१।५१	११। २।४९।३६	४।२।०७।२३	५।१३।३४।१८	६।२२।४५	७।२४।४४	५।५३	१।२८	१५।३६
७	१०।२३।१७।१७	१०। ५।४१। ५	२।२८।५३।२५	११। १।१२।३०	२।२।५४।४०	११। ४। ४।२२	४।२।०२।५९	५।१३।३१।०७	६।२२।४४	७।२४।४४	५।३०	२।०५	१६।२९
८	१०।२४।१७।१७	१०।२०। ७।१३	२।२८।५७।५५	११। ३। ७।५७	२।२।५७।४०	११। ५।१९। ८	४।२।००।२५	५।१३।२७।५६	६।२२।४३	७।२४।४५	५।०७	२।४४	१७।२२
९	१०।२५।१७।२५	११। ३।१५।००	२।२९। ३।१०	११। ५। ३।३४	२।३।००।५२	११। ६।३३।५२	४।१।४६।१५	५।१३।२४।४५	६।२२।४२	७।२४।४५	४।४३	३।२८	१८।१३
१०	१०।२६।१७।११	११।१७।२१।११	२।२९। ८।३०	११। ६।५८। ४	२।३। ४।१४	११। ७।४८।३५	४।१।५१।५५	५।१३।२१।३४	६।२२।४१	७।२४।५५	४।२०	४।१५	१९। ४
११	१०।२७।१७। ५	०। ०।३७।२१	२।२९।१४।३०	११। ८।५०।१६	२।३। ७।४८	११। ९। ३।१६	४।१।४७।४०	५।१३।१८।२३	६।२२।४०	७।२४।४५	३।५६	५।०७	१९।५१
१२	१०।२८।१६।५५	०।१३।२९।०७	२।२९।२०।५०	११।१०।४२।२१	२।३।११।३३	११।१०।१७।५९	४।१।४२।३०	५।१३।१५।१२	६।२२।३९	७।२४।४६	३।३३	६।०२	२०।३६
१३	१०।२९।१६।४३	०।२७।१८।२५	२।२९।२८।१०	११।१२।३२।३०	२।३।१५।२८	११।११।३२।३७	४।१।३८।३१	५।१३।१२।०१	६।२२।३८	७।२४।४६	३।०९	६।५९	२१।१८
१४	११। ०।१५।५२	१। ८।१८।१६	२।२९।३४।४६	११।१४।२०।३२	२।३।१९।३४	११।१२।४७।१५	४।१।३४।३२	५।१३। ८।५०	६।२२।३७	७।२४।४६	२।४५	७।५८	२१।५९
१५	११। १।१५।३५	१।२०।२२।१७	२।२९।४२।५०	११।१६।०६।२३	२।३।२३।५१	११।१४।०१।५१	४।१।३०।१५	५।१३।०५।३९	६।२२।३६	७।२४।४७	२।२२	८।५९	२२।३८
१६	११। २।१५।१६	२। २।१९।०७	२।२९।५३।३७	११।१७।५४।०१	२।३।२८।१९	११।१५।१६।२५	४।१।२६।३१	५।१३। २।२८	६।२२।३४	७।१४।४७	— १।५८	९।५९	२३।१८
१७	११। ३।१५।५५	२।१४।१५।२१	३।००।०४।३५	११।१९।३५।१३	२।३।३२।५७	११।१६।३१।००	४।१।२२।४१	५।१२।५९।१७	६।२२।३३	७।२४।४८	१।३४	११।००	२३।५८
१८	११। ४।१५।३३	२।२६। ७।१९	३।००।१४।३७	११।२१।१९।१४	२।३।३७।४५	११।१७।४५।३२	४।१।१८।५६	५।१२।५६।०६	६।२२।३२	७।२४।४८	१।१०	१२। ३	अ.न.
१९	११। ५।१५। ९	३। ७।५७।१३	३।००।२५।१०	११।२२।५९।१८	२।३।४४।४४	११।१९।००।०२	४।१।१५।१६	५।१२।५२।५५	६।२२।३०	७।२४।४८	०।४७	१३। ५	०।४१
२०	११। ६।१४।४३	३।२०।१०।१४	३।००।३६।१०	११।२४।३९।००	२।३।४९।५२	११।२०।१४।३०	४।१।११।३६	५।१२।४९।४४	६।२२।२८	७।२४।४७	०।२३	१४। ९	१।२७
२१	११। ७।१४।१६	४। २।३६।१६	३।००।४९।४७	११।२५।२३।४५	२।३।५५।४८	११।२१।२८।३३	४।१।०८।०७	५।१२।४६।३३	६।२२।२७	७।२४।४७	+०। ०	१५।१३	२।१७
२२	११। ८।१३।४७	४।१५।१७।१७	३।०१। २।१७	११।२६।३६।१७	२।४।०१।४४	११।२२।४२।५७	४।१। ५।२६	५।१२।४३।२२	६।२२।२५	७।२४।४६	०।२४	१६।१६	३।१२
२३	११। ९।१३।१६	४।२९।२१।१२	३। १।१५।४०	११।२७।४२।३०	२।४। ७।३४	११।२३।५७।२९	४।१। २। ६	५।१२।४०।११	६।२२।२४	७।२४।४६	०।४८	१७।१६	४।१०
२४	११।१०।१२।४३	५।११।२८। ५	३। १।२९।२२	११।२८।४२।०५	२।४।१४।२४	११।२५।११।४९	४।०।५८।५६	५।१२।३७।००	६।२२।२२	७।२४।४६	१।११	१८।१३	५।१०
२५	११।११।१२। ८	५।२५। ५।१७	३। १।४३।३३	११।२९।३८।४७	२।४।२०।५२	११।२६।२६।०६	४।०।५५।०१	५।१२।३३।४९	६।२२।२०	७।२४।४६	१।३५	१९। ४	६।११
२६	११।१२।११।३१	६। ८।२६।११	३। १।५८।२३	०। ०।२४।२७	२।४।२७।२४	११।२७।३९।२१	४।०।५२।११	५।१२।३०।३८	६।२२।१९	७।२४।४६	१।५८	१९।५०	७।११
२७	११।१३।१०।५३	६।२२।२१। ७	३। २।१३।२०	०। १। ४।४३	२।४।३३।१४	११।२८।५२।३४	४।०।४८।२६	५।१२।२७।२७	६।२२।१७	७।२४।४५	२।२२	२०।३२	८।०८
२८	११।१४।१०।१३	७। ६।२३।१८	३। २।२८।५०	०। १।३४।३७	२।४।४०।००	००।००। ७।५२	४।०।४५।४६	५।१२।२४।१६	६।२२।१५	७।२४।४५	२।४५	२१। ९	९।०४

निरयण दैनिक ग्रह स्पष्ट रात्रौ १२ बजे स्टै० टाईम जालन्धर अयनांश १ अप्रैल २३।३४।४

मा.	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	युरेनस	नैपचून	सू.क्रा	च.उ.	च.प्र.
२९	११।१५।९।३१	७।२०।३६। ५	३।२।४५।१९	०।१।५७।४८	२।४।४६।५२	०। १।२४।१९	४।०।४३।०३	५।१२।२१।०५	७।२२।१३	७।२४।४५	३।०९	२१।४५	९।५९
३०	११।१६।८।४७	८। ४।४४।००	३।३। १।३६	०।२।२३।४५	२।४।५५।५७	०। २।३८।५३	४।०।४०।२९	५।१२।१७।५४	७।२२।११	७।२४।४५	३।३२	२२।१९	१०।५२
३१	११।१७।८। १	८।१८।४२।००	३।३।१७।३६	०।२।३१।५५	२।५।००।४७	०। ३।५२।२८	४।०।३८।००	५।१२।१४।४३	६।२२। ९	७।२४।४४	३।५६	२२।५२	११।४४
अप्रै	११।१८।७।१३	६। ३।०८।१२	३।३।३४।१६	०।२।३४।५०	२।५। ७।५१	०। ५।०६।१८	४।०।३५।३१	५।१२।११।३२	६।२२। ७	७।२४।४४	४।१९	२३।२७	१२।३५
२	११।१९।९।२४	९।१७।१३।००	३।३।५२।५०	०।२।२८।२५	२।५।१४।५९	०। ६।२०।२८	४।०।३३।०८	५।१२। ८।२१	६।२१।०५	७।२४।४३	४।२२	उ.न.	१३।२८
३	११।२०।५।३३	१०। १।१६।१२	३।४।१०।४०	०।२।१८।०५	२।५।२२।११	०। ७।३४।३०	४।०।३०।५१	५।१२। ५।१०	६।२२।०३	७।२४।४३	५।०५	०।०४	१४।२०
४	११।२१।४।४०	१०।१५।१०।२१	३।४।२९।३०	०।२। ३।२०	२।५।२९।२७	०। ८।४८। ४	४।०।२८।३९	५।१२। १।५९	६।२१।०१	७।२४।४३	५।२८	०।४०	१५।१२
५	११।२२।३।४६	१०।२८।५२।१३	३।४।४७।४१	०।१।३६।३०	२।५।३७।५२	०।१०।०२। ६	४।०।२६।३३	५।११।५८।४८	६।२१।५९	७।२४।४२	५।५१	१।२२	१६।०४
६	११।२३।२।५०	११।१३।२४।००	३।५। ६।३५	०।१।०७।४८	२।५।४४।२९	०।११।१६।०२	४।०।२४।३४	५।११।५५।३७	६।२१।५७	७।२४।४१	६।२४	२।०७	१६।५५
७	११।२४।१।५२	११।२५।५२।११	३।५।२६।२६	०।०।३४।१८	२।५।५१।४९	०।१२।२९।४४	४।०।२२।४०	५।११।५२।२६	६।२१।५५	७।२४।४०	६।३६	२।५७	१७।४४

(आकाशी कौंसिल पृष्ठ ३२ का शेष)

विश्व के कुछ प्रमुख राष्ट्र

पाकिस्तान—सरकार के लिए आगामी वर्ष अत्यन्त संघर्ष पूर्ण परिस्थियां लेकर आ रहा है। ग्रहस्थिति के अनुसार विरोधी पार्टियां सत्ता सरकार के विरुद्ध गम्भीर षड्यन्त्रों का प्रयोग करेंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध विशेषकर ६ सितम्बर के बाद वर्तमान सरकार के अस्तित्व को गम्भीर खतरा रहेगा। गम्भीर आर्थिक व खाद्य के संकट का सामना करना पड़ेगा। कई स्थानों पर अकाल की स्थिति पैदा होगी। बढ़ती हुई जनसंख्या की रोक थाम सम्बन्धित तथा नारी वर्ग सुधार के लिए कई नवीन कानून बनाए जायेंगे। अधिकतर विदेशी सहायता पर निर्भर करेगा। पश्चिमी देशों से हथियार तथा अन्य तकनीकी सहायता प्राप्त करने के प्रयत्नों में बाधा उत्पन्न होगी। अमरीका के साथ तनाव की स्थिति पैदा होगी। हवाई दुर्घटनाएं, अग्निकांड, भूकम्प संक्रात्मक रोग अधिक होंगे। वर्षान्त में किसी प्रमुख नेता की मृत्यु के योग हैं। भारत के साथ राजनैतिक व व्यापारिक सम्बन्ध सुधरेंगे।

रूस—इसकी प्रभाव राशि कुम्भ है। सितम्बर के पश्चात् इस राशि पर शनि की सीधी सातवीं दृष्टि रहेगी। ग्रह स्थिति अनुसार तकनीकि उद्योग व साईंस के सम्बन्ध में अभूतपूर्व उन्नति करेगा। अमरीका तथा चीन के साथ पारस्परिक सम्बन्धों में सुधार होगा। अरब देशों के साथ हथियारों के प्रश्न सम्बन्ध तनावपूर्ण होंगे। भारत के साथ इसकी मैत्री और सुदृढ़ होगी।

अमेरिका इसकी प्रभाव राशि मिथुन है। सितम्बर तक लग्नेश बुध पर शनि की दशम दृष्टि रहेगी। परिणामत: विश्व के अनेक स्थलों पर इसके प्रभुत्व को धक्का लगेगा। फ्रांस, दक्षिणी अफ्रीका, द. अमरीका, अरब देशों एवं पाकिस्तान के साथ राजनैतिक सम्बन्ध बिगड़ेंगे। बंगला देश इसरायल, चीन इत्यादि देशों के साथ अन्दरूनी तौर पर मैत्री बढ़ाने की चेष्टा करेगा। अन्तरिक्ष यान सम्बन्धी खोजों में नवीन तथ्यों का उद्घाटन करेगा।

ब्रिटेन—इसकी प्रभाव राशि मेष है। जगत कु. में सूर्य यद्यपि उच्चारशिस्थ हैं किन्तु उस पर शनि की नीच दृष्टि पड़ रही है अत: सितम्बर तक इसके आन्तरिक क्षेत्र में उपद्रव व गड़बड़ रहेगी। बेरोजगारी, निम्न आय व रंग भेद के प्रश्न पर स्थिति अत्यन्त असंतोषपूर्ण एवं विस्फोटक रहेगी। प्रवासी लोगों के सम्बन्ध में शासन अनेक नवीन कानून निर्मित करेगी। आयरलैंड आदि पड़ोसी राष्ट्रों के साथ सम्बन्ध कटु होंगे।

भविष्य वक्ता पं० पन्ना लाल ज्यो एम.ए.
अड्डा होशियार पुर
जालन्धर शहर।

विचारणीय विषय:

(i) २ अप्रैल से ५ अप्रैल तक शुक्रास्त है। (ii) २२ मई से १७ जून तक गुर्वास्त है। (iii) १७ जुल. से १३ अगस्त तक मलमास तथा (iv) २८ सितम्बर से १२ अक्तूबर तक श्राद्ध रहेंगे। (v) २१ नवम्बर से २५ नवम्बर तक भीष्मपंचक है, (vi) २५ दिसम्बर से १५ फरवरी (१९७८) तक पुन: शुक्रास्त है और १७ मार्च (७८) से २४ मार्च तक होलाष्टक हैं। तथा चैत्र व पौष मास शास्त्र द्वारा निषेध मान होने से इन तिथियों में विवाहादिशुभ मुहूर्त नहीं लगाये गए हैं।

वैशाख

९ (२१ अप्रै.) रोहि ।।Sवृ.।।।।।। ल. ८
१० (२२ अप्रै.) रोहि ।।Sवृ।।।।।। ल. ३
१० (२२ अप्रै.) मृग ।।।।SSS।। ल गो. भद्रा
११ (२३ अप्रै) मृग ।।।।।SS।। ल.
१६ (२८ अप्रै.) मघा।।।।।S S।ल २=३=८
१८ (३० अप्रै.) उ.फ. ।।।।।।SS।ल. २=३
१८ (३० अप्रै.) हस्त S सू S।S म. शु.
S म. शु. ।।।। ल.
१९ (१ मई) हस्त S सू.S।SS मं.शु. ।।। । ल.
२० (२ मई) स्वा. ।। ।S के. । S।। ल.
२१ (३ मई) स्वा. ।।।S के. ।।S।। ल. ३ भद्रो
२२ (४ मई) अनु. ।।।S सू. ।।।।। ल. ८
२३ (५ मई) अनु. ।।।S सू ।।।।। ल. ३
२४ (६ मई) मूला. ।।।।।।S।। ल.
२५ (७ मइ) मूला. ।।।।।।S।। ल. ९
२६ (८ मई) उ.षा. S चं ।।।।।।S ल. ८

ज्येष्ठ

२ (१५ मई) रेव. ।।S मं के ।।।SS।। ल. ३
६ (१९ मई) रोह ।।S वृ. ।।।।।। ल.
६ (१९ मई) मृग. ।।।।।।।। ल. १
७ (२० मई) मृग ।।।।।।।। ल. ३

आषाढ़

८ (२१ जून) मघा. S वृ ।।।।SS।। ल २
९ (२२ जून) मघा. S वृ ।।।।SS।। ल.
१० (२३ जून) उ.फा. ।S.S के. ।S।।। ल. २
११ (१४ जून) उ.फ. ।S।S के. ।।।।। ल.
११ (२४ जून) हस्त ।।।।।S।।S ल. २
१२ (२५ जून) हस्त ।।।।।S।।। ल. ५
१३ (२६ जून) स्वा. ।।।।।S।।। ल.
१४ (२७ जून) स्वा. ।।।।।S।।। ल. ५
१५ (२८ जून) अनु S सू. ।।।Sशु. ।S।।ल. २
१६ (२९ जून) अनु Sसू. ।।।S शु. ।S।। ल. ५
१७ (३० जून) मूला ।।।।S वृ. ।S।S। ल.
१८ (१ जुल) उ.षा. ।।।Sवृ. ।।SSS। ल.
१९ (२ जुल) उ.षा. ।।।SवृSSSS। ल.
२३ (६ जुल) उ.भा. Sशु।।।।।S।।। ल.
२४ (७ जुल) उ.भा. S शु. ।।। ।S।।। ल.
२४ (७ जुल) रेव. ।।S के. ।।SS।S ल. १
२५ (८ जुल) रेव. ।।Sके ।।।SS।S ल.
२९ (१२ जुल) रोहि ।SS शु ।।.S।।। ल. १
३० (१३ जुल) रोहि ।SS शु ।।S।। ल. ५
३० (१३ जुल) मृग S मं. ।S वृ ।।।SS।। ल १
३१ (१४ जुल) मृग S म. ।S वृ ।।।SS।।ल ५

भाद्रपद

२ (१७ अग) उ.फा. ।।।Sके ।।S।।। ल.७,१०
३ (१८ अग) हस्त. ।S।।।SS।। ल. ७
५ (२० अग) स्वा. S वृ. ।।।।S।।। ल. १०
६ (२१ अग) अनु. ।।।।।S।।। ल.
७ (२२ अग) अनु. ।।।।।।S।।। ल. ७
८ (२३ अग) मूल. ।।।।S म. ।SS।S ल.
९ (२४ अग) मूल. ।।।।S मं ।SS।S ल. ७
१० (२५ अग) उ.षा.S सू ।।Sमं ।S।S।। ल. १
११ (२६ अग) उ.षा. Sसू ।।Sमं ।।।S।। ल ७
१५ (३० अ) उ.भा ।।।S रा. ।।SS।। ल१-२
१६ (३१ अ) उ.भा. ।।।S रा ।।SS।। ल.
१६ (३१ अ) रेव. ।SS के ।SS रा —
—।।S।। ल. २—परार्ध
१७ (१ सित) रेव. ।SS के ।S रा ।।S।। ल.
२० (४ सित) रोह. ।S।।।S।।। ल.
२१ (५ सित) रोह. ।S।।।S।।। ल १
२१ (५ सित) मृग. ।।।।।SS।। ल.
२२ (६ सित) मृग. ।।।।।SS।। ल १-२
२९ (१३ सित) उ.फा. ।।SसूS के ।।S।।। ल.२
३० (१४ सित) उ.फ. ।Sसू.Sके ।।S।।ल ७

आश्विन

३ (१८ सित) अनु ।।।।।।S।।। ल. २-४
५ (२० सित) मूला. ।।।।।।SS।S ल. १
६ (२१ सित) उ.षा. Sरा.।।।।।S।। ल.
७ (२२ सित) उ.षा. S रा ।।।।।।S।। ल. ७
११ (२६ सित) उ.भा. ।।Sरा सु.।।S।।। ल
२८ (१३ अक्तू) स्वा ।।।।S।S।। ल. ३
२९ (१४ अक्तु) स्वा. ।।।।S।S।। ल

कार्तिक पर्वतीय देशे

२ (१७ अक्तू.) मूला ।।।।।।SS।। ल. ३
३ (१८ अक्तू.) मूला ।।।।।।SS।। ल
४ (१९ अक्त) उ.षा. Sरा.।।।।।S।।।ल २-३
९ (२४ अक्त.) उभा।।।Sरा. ।।।S।। ल. २-३
१० (२५अक्त.)रेव ।SSके।SराS।S।।ल.२-३च
११ (२६ अक्त.) रेव ।SS के ।S रा. ।।S।। च
१४ (२९ अक्तू.) रो. ।।।।।।S।। लं.-३ पूर्वार्ध
१५ (३० अक्तू.) रोहि ।।।। ।S।।ल
१५ (३० अक्तू.) मृग. S चं ।।।।।SS।। लं ३
१६ (३१ अक्तु) मृग Sचं. ।।।।।SS।। लं. २
२१ (५ नव.) मघाSमं. ।Sश।।S।।। ल.२-३
२२ (६ नव) मघा. S मं ।Sश ।।।S।।। ल.
२३ (७ नव.) उ.फा ।S।S रा ।।SS।। ल. २-३
२४ (८ नव) हस्ते ।।Sरा.।।S।।ल.३
२७ (११ नव.) अनु ।।S मं. ।।।SS।। लं.
२९ (१३ नव) मूला. ।।।।।।S।।। ल.

मार्ग शीर्ष

२ (१६ नव. उ.षा. ।S।।।।।S।। ल०
६ (२० नव.) उ.भा. ।S।Sरा ।।SS।। ल. ३
१२ (२६ नव.) रोहि ।।।।।।S।।। ल. २
१२ (२६ नव.) मृग. ।।।।।।SS।। ल.
१३ (२७ नव.) मृग. ।।।।।।SS।। ल. ७ पूर्वार्ध
१८ (२ दिस) मघा ।।S श ।।।S।।। ल. ७
१९ (३ दिस) मघा ।।S श।।SS।।। ल. ९ मं.
२० (४ दिस) उ.फा ।।।Sरा. ।।।S।। ल. ७पू.
२१ (५ दिस) उ.फा. ।।।Sरा. ।।।Sल. ९मं.पू
२१ (५ दिस) हस्त. S शु ।Sरा. ।।।SS।। लं.
२२ (६ दिस) हस्त. Sशु. ।S शु.रा.।।SS।। ल.
२३ (७ दिस) स्वा ।।।।।।S।।। ल.
२७ (११ दिस) मूला ।S।।।S।। ल. ९
मं. पू. ७ पूर्वार्ध
२८ (१२ दिस) उ.षा. ।Sरा. ।।।S।S।। लं. ७
२९ (१३ दिस) उ.षा.Sरा।।।।।।S।।ल.९मं. पू.

फाल्गुण

६ (१७ फर.) मृग. ।।।।।।S।।.१शुक्र -त्रालय
११ (२२ फर) मघा ।।Sश ।।।SS।। ल.२, ७
१२ (२३ फर.) मघा ।।Sश ।।।SS।। ल. २
१३ (२४ फर.) उ.फा. ।।।।।।SS।। ल. ७
१४ (२५ फर.) उफा. ।।।।। SS ल. २
१४ (२५ फर.) हस्त. ।S।S के ।S।।। ल.
१६ (२७ फर.) स्वा. ।।।S सू ।SS।ल. १०
१७ (२८ फर.) स्वा । ।S सू ।।SSS। ल. मेष
१८ (१ मार्च) अनु S श. ।।।।।S।।। ल.७, १०
१९ (२ मार्च) अनु. ।।।SS।।। ल. २
२० (३मर्चा)मूला.।।।Sमं.।।S।।ल.७, १०
२१ (४ मार्च) मूला. ।।।S मं Sश ।S।।। ल.
२२ (५ मार्च) उ.षा. ।।।S वृ S मं ।।S।।ल ७
२७(१०मार्च)उ.भा.।।Sके.Sश.।।।S।।ल. १, २

यज्ञोपवीत संस्कार

८ चैत्र चद्रे
१७ चैत्र बुधे
१३ वैशाख चंद्रे
२३ वैशाख गुरु
७ ज ष्ठ भृगु
९ फाल्गुण
१६ फाल्गुण
२७ फाल्गुण
२ चैत्र बुधे
३ ,, गुरौ
७ ,,
११ चैत्र भृगौ ८-३३ उ.
१६ चैत्र बुधे

मुंडन संस्कार (२०३४)

२ वैशाख गुरु
१३ वैशाख
२४ वैशाख
२७ वैशाखं
७ जेठ भृगु
११ आषाढ़ ३।५ या.
१४ आषाढ़
१६ आषाढ़ १३।३३ उपरि
२४ आषाढ़ १०—८ उपरि
३० आषाढ़
९ फाल्गुण
१९ फाल्गुण
२३ फाल्गुण
२७ फाल्गुण भृगौ

नूतन गृहारंभ

२३ वैशाख
६ भाद्रपद
७ भाद्रपद
११ भाद्रपद
१५ भाद्र २४।५७ उ.
२५ भाद्रपद
१२ फाल्गुण १५।५३ उ
१६ फाल्गुण

नूतन गृह प्रवेश

४ वैशाख १६।२८ या.
१८ वैशाख १-३ उपरि

पुर तन गुह प्रवेश

२ वैशाख
४ ज्येष्ठ
१० ज्येष्ट ५।१८ उपरि
१५ ,, अत्य वश्यके
१७ ,, ,,
१७ ,, ,,
१९ ,, ,,२७ उपरान्त ४७।३५ या०
२९ ,, ,,
२ मघर
३ ,,
४ ,,
७ ,, २१।४० उपरि
९ ,,
२२ ,, १६।४० उपरि.
२३ ,,
३ माघ २।५७ उ.घ. अत्यावश्यके
७ ,,
८ ,,

पुरातन गृह प्रवेश

२२ माघ
२ फगण
६ ,,
९ ,,
२१ ,, ५।१५ यावत्
२३ ,,

जड़ी बूटियों द्वारा अनिष्ट ग्रहों की शान्ति—हमारे परमदयालु महर्षियों ने, जो लोग बहुमूल्य रत्नों के धारण करने में असमर्थ है उनके ग्रह दोषों की शान्ति के लिये जड़ी बूटी का धारण करना भी बतलाया है। वह इस प्रकार समझें

सूर्य पीड़ाकारक हो तो बेलपत्र की जड़ गुलाबीडोरे में रविवार को धारण करें। चन्द्र पीड़ाकारक हो तो खिन्नकी जड सफेद डोरे में सोमपार को, मंगल-पीड़ाकारक हो तो अनन्त मूल की जड़लालडोरे में मगलवार को, बुधपीड़ाकारक हो तो विधाराकीजडहरेडोरे में बुधवार को। गुरु पीड़ा कारक हो तो भारंगी वा केले की जड़ पीले डोरे में गुरुवार को। शुक्रपीड़ाकारक होतो सरपोंखाकी जड सफेद डोरे में शुक्रवार को धारण करें। शनि पीड़ाकरक हो तो बिच्छू की जड़ काले डोरे में शनिबार को धारण करें। राहु पीड़ा कारक हो तो सफेद चन्दन नीले डोरे में बुधवार को धारण करें। केतु पीड़ाकारक होतो असगन्धकीजड़ आसमानी डोरे में गुरुवार को धारण करें।

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

सर्वरोग नाशक यन्त्र—इस ३४ के यन्त्र को होली, दीपावली, ग्रहण, व नवरात्री आदि में १०८ बार लिखें सिद्ध कर कागज पर अष्टगंध से लिखकर रोगी को दोनों समय पानी में घोलकर पिलावें तथा एक यन्त्र उसकी ओढ़ने वाली चादर में बांध देना चाहिए। इस यन्त्र से कैसा भी पुराना रोग किसी प्रकार का हो शनैः शनैः समाप्त हो जाता है।

रोग सम्बन्धी प्रश्न

यदि कोई व्यक्ति पूछे कि मेरा रोग कब ठीक होगा तो प्रश्न कालीन जो नक्षत्र हो उसको रोगी के नक्षत्र की तक संख्या गिने। उस संख्या में प्रश्नकालिक तिथि की संख्या जोड़ें फिर रविवार से गिन कर उस दिन के वार तक की संख्या जमा कर दे। उस को ४ से भाग कर दे यदि शेष १ बचे तो मृत्यु २ बचे तो अधिक पीड़ा, ३ बचे तो रोगी शीघ्र अच्छा हो जाएग—ऐसा कहना चाहिए। तिथि की गणना शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से करें।

षट वर्ग सारिणी चक्र

भाग		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
रा. षड्.		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
० मे.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	स.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१ वृ.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	स.	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२ मि.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	स.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३ क.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	स.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४ सिं.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	स.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५ क.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	स.	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

भाग		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
६ तु.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	स.	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७ वृ.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	स.	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
८ ध.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	स.	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९ म.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	स.	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१० कुं.	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	स.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११ मी.	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	स.	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

॥ स्वप्न देखने के शुभाशुभ फल ॥

जो स्वप्न विमाराको हालत या परेशानी की हालतमें आता है उसपर भरोसा नहीं करना चहिए। जो स्वप्न दिन को देखा जाता है वह भी सचाई में कम होता है। रात्रिके पहले पहरमें स्वप्न आए तो उसका फल एक वर्षमें मालूम हो जाता है। दूसरे पहरके स्वप्न का फल छः मासमें, तीसरे पंहर के स्वप्न का फल तीन मासमें और चौथेपहर का देखाहुआ स्वप्न एक मास में अपना अच्छा या बुरा फल दिखा देता है। जो स्वप्न सुबह सूर्य निकलने के समयदेखा जाए उसकाफल एक पहर में प्रकट हो जाता है।

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल
अपने को मारना	दीर्घायु शुभ	तख्त देखना	तरक्की मान	मन्दिर में जाना	रोग पाना
आम्लज भरना	धन लाभ	तख्त पर बैठना	सफलता इज्जत	मुरदा रोते देखना	तरक्की व मान
अन्न बेचना	नुकसान	तालाब स्नान	इज्जत पाना	रोटी खाना	खुशखबरी
आग उठाना	कष्ट	श्वेत सर्प काटना	लाभ	रीछ देखना	खुशी तरक्की
आंधी देखना	सफर, चिंता	दरिया मे नहाना	रोगनाश	वृक्ष काटना	फिरक, नुकसान
आग देखना	धन प्राप्ति	दूध पीना	खुशी	विष खाना	फिक्र चिन्ता
इमारत बनाना	लाभ व तरक्की	पर्वत पर चढ़ना	तरक्की	वर्षा देखना	चिन्ता
ईंट देखना	लाभ	पानी में डूबना	कष्ट पाना	वृक्ष पर चढ़ना	कार्य सफलता
ऊंचाई से गिरना	मानहानि	बशरी बजाना	इज्जत तरक्की	शरीरमें तल मलना	धनवान होना
बिल्ली देखना	तरक्की पाना	बन्दर देखना	धनलाभ	शत्रु देखना	सफलता
कुत्ते का काटना	शत्रुभय	बर्फ गिरते देखना	रोग, चिन्ता	श्रेष्ठों से पूजा जाना	धनलाभ
कूप में गिरना	परेशानी	बगीचा देखना	ऋणनिवृत्ति	साफा गिरते देखना	कष्ट
नाव देखना	परेशानी	बारात देखना	रोग	सोना पाना	परेशानी
खून करना	सेहत पाना	बिच्छू देखना	चिता	सांप देखना	परेशानी भय
चित्र देखना	राज्य लाभ	बादल देखना	लाभ	सांप काटना	धन प्राप्त
चीख मारना	संकट	भूषण की चोरी	सफर	स्त्रीलड़ाई देखना	दुःख पाना
जहाज देखना	स्त्रीक्लेश	मदिरा पीना	कष्ट पाए	सांप पकडना	शत्रुनाश
जहाज पर चढ़ना	तबदीली	मौत देखना	हानिकारक	सांप मारना	कष्ट से बचना
जवाहरात देखना	कार्य सफलता	मकान गिरतेदेखना	तरक्की	सिंह देखना	शत्रुनाश
जुआ खेलना	धनकी तंगी	मुंदरी पाना	परेशानी	हाथी की सवारी	लाभ तरक्की

इन स्वप्नों और अंगस्फुरण के अतिरिक्त यदि कोई स्वप्न आवे या अंगफरके तो उसका फलजबाबीपत्रसेपूछें

॥ छीक का विचार ॥

गौ का छींकना मरणप्रद कहा है, किन्तु यदि छींक बाईं ओर अथवा पृष्ठ की ओर हो तो दोषकारक नहीं है दाहिनी ओर सम्मुख छींक शुभकारक नहीं होती। औषधि खाने के समय, वाहन पर सवार होने के समय, विवाद में, शयन करने के समय, भोजन करने में, विद्यारम्भ में बीज बोने के समय छींक हो तो शुभ फलदायक होती हैं हठ से छींकना = = पीनस द्वारा छींक का होना, बच्चे को छींक आना तथा वृद्ध की छींक निष्फल कहीं है। यत्न करने पर यदि छींक न रुके तो मनुष्य जिस प्रयोजन के लिए जा रहा हो उस में विघ्न अवश्य हो।

अंगस्फुरण अंग	फल चक्र फल	छिपकली (कोड़किरली) पतन अंग	फल
सिर	पृथ्वी लाभ	शिर	राज्य लाभ
माथा	स्थान लाभ	नासाग्र	कष्ट
भूमध्य	प्रियप्राप्ति	वामभुज	भय
नेत्र	प्रियदर्शन	दक्षिणभुज	राज्य लाभ
भृकुटियां	लक्ष्मी दर्शन	जानु	शुभ
कपोल	स्त्री सुख	गुल्फ	बन्धन
नासा	गंध सुख	ललाट	संबंधीमिलाप
ऊपर का होंठ	स्त्रीचुम्बन	दक्षिणकर्ण	दीर्घायु
कण्ठ	भूषणप्राप्ति	कण्ठे	शत्रुनाश
ग्रीवा	शत्रुभय	जंघा	शुभ
पीठ	पराजय	वामकर्ण	लाभ
कन्धा	मित्रसमागम	हस्त	वस्त्रलाभ
बाहुप्रदेश	प्रियप्राप्ति	दक्षिणपाद	सफर
बाहुमध्य	धनागमः	नेत्र	धनलाभ
कर (हाथ)	धनप्राप्ति	उदर	भूषणलाभ
छाती	विजयः	स्कन्ध	विजय
पार्श्व	उत्तम प्रीति	हृदय	धन प्राप्ति
नाभी	स्थान से यात्रा	वामपाद	नाश
उदर पेट	कोषाप्तिः	दक्षिणपाद	बुद्धिनाश
वृषण	पुत्रलाभ	नाभि	लाभ
जानु	रिपुः सन्धि	मुख	मिष्टान्नप्राप्ति
जंघा	हानिप्रद	पादमध्य	स्त्रीभय
चरण के ऊपर	स्थानप्राप्ति	पादान्त	मृत्यु
चरण के नीचे	लाभप्रदः	केशान्त	मृत्यु

ऊपर चक्र का फल—पुरुष के दाहिने अंग तथा स्त्री के बाएं अंग में विचार करें और फल देख लें। पुरुष के बाएं और स्त्री के दाहिने अंग का फल विपरीत विचारें।

संस्कार प्रकरण

सीमंत मुहूर्त विचार

यह सीमंत संस्कार गर्भाधान से छटे और आठवें महीने में होता है, उस महिने का स्वामी बलवान् होना चहिए। गर्भ से लेकर १० महिने के स्वामियों की संज्ञायें ऐसी हैं, पहिले महिने का स्वामी शुक्र, दूसरे का भौम ३ गुरु, ४सूर्य ५ चंद्र, ६ शनि ७ बुध, ८वें का लग्नेश ६ चन्द्र और १०वें महिनेका स्वामी सूर्य होता है २।३।५।७।१०।११।१३।१५ इन तिथियों में तथा मृ, पुन, पुष्य, ह, मू श्र नक्षत्रों में सू, मं, व, वारों में २।३।५।७।६।११ लग्नों और लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थान में (१।४।७।१० ६।५) में शुभग्रह तथा ३।६।११ स्थान में पापग्रह होने पर और लग्न से १।६।८।१२ इनस्थानों में चंद्रमा न हो, ८वां स्थान शुद्धहो जन्म लग्न और जन्मराशि से ?वां लग्न नहो तो यह मुहुर्त शुभ होता है। स्त्री को चन्द्रमा का बल देखना जरूरी है। गुरु शुक्र के अस्त का दोष इस में नहीं होता।

स्तनपान मुहूर्त—पंचम दिन अथवा भद्रा व्यतिपात वैधृ रिक्ता तिथि को त्याग कर शुभ तिथि वार में अ मृ पुन, पुष्य, हस्तमूला रे नक्षत्रों में स्तनपान कराना शुभ है।

प्रसूति स्नान मुहूर्त—रिक्ता तिथि को छोड़ कर शुभतिथ, रवि, मं, गुरुवार अश्वि, रो, मृ तीनों उत्तरा हस्त, स्वा, अनु, रेव इन नक्षत्रों में बैधृति, व्यतिपात रहित दिन में प्रसूता स्नान शुभ है।

नामकर्ण मुहूर्त विचार

(नारद के वचन से) यह नामकर्ण सूतक के अन्त में अपनी २ कुलपरम्परा के अनुसार करना चाहिए। दैववश सुतकांत में न हो सके तो गुरु शुक्र के उदय होने पर उत्तरायण में पूर्वान्ह के समय, चं, बु, बृ, शु वारों में २।३।५।७।१०।११।१३तिथियोंमेंअश्वि. रो मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३ह. चि. स्वा. अनु श्र. ध. श. रे. नक्षत्रों में स्थिर लग्न२।५।८।११ में लग्न से १।४।७।५।९।१० स्थान में शुभ ग्रह ३।६ ११।१२ स्थान में पापग्रह तथा ८वां १२वां स्थान शुद्ध होने पर पिता बालक के दाहिने कान में शास्त्र विधि द्वारा नामकरण संस्कार करे, वह जातकर्म सम्पूर्ण व्यवहारों का कारण तथा भाग्य और कीर्ति का कारण होनेसे व्यतिपात वैधृति, संक्रांति और भद्रादि दोष युक्त समय को छोड़ कर शुभ होता है।

दन्तोत्पत्ति में विचार

कई बालकों के दांत पहले महिने से निकलने लगजाते हैं उसके प्रत्येक महिने का फल नीचे लिखे चक्र से जानलें

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	मास
स्वयं नाश	भ्रातृहानि	भगिनीहानि	मातृ हानि	ज्येष्ठ भ्रातृहा	मित्रजीव	पितृ जीव	पुष्टिकारक	लक्ष्मी प्राप्ति	सौख्य प्राप्ति	सुख प्राप्ति	सुख प्राप्ति	फल

अन्न प्राशन का विचार

नवजात शिशु को छटे महीने से सम मास में तथा कन्या हो तो ५वें महीने से विषम मासों में, २।३।५।७।१०।१३।१५ तिथियों में चं०, बु०, बृ०, शु० वारों में अश्वि०, रो०, मृ०, पुन०, पुष्य, उत्तरा० ३, ह०, चित्रा स्वा०, अनु० श्र०, ध०, श०. रे०, नक्षत्रों में २।३।४।५।६।७।६।१०।११ लग्नों में तथा लग्न से दसवां स्थान शुद्ध होने पर और ७वां ८वां ९वांस्थान क्रम से शु०, मं० और बुध से वर्जित होने पर, ६।८ और १२वें स्थान में चद्रमा न हो; जन्म लग्न और जन्म राशि से ८वां लग्न न हो पूर्वान्ह के समय, भद्रादि दोष रहित समय में अन्न प्राशन करना शुभ होता है। इस समय बालक के आगे लेखनी पुस्तक, स्वर्ण, चांदी, पत्थर और बर्तन रखे, बालक पहले जिस वस्तु को पकड़े, उसी से बालक की आजिविका जानें।

कर्णवेध:—चातुर्मास (अषाढ़ शु० ११ से कार्तिक शुदि ११ तक) चैत्र, पौष जन्म मास, जन्म तिथि नक्षत्र, क्षयतिथि तथा ४ ६।१४ तिथि और सम वर्षों को त्याग कर जन्म से १२वे अथवा १६वे दिन अथवा ६ ७।८वें मास में या विषम वर्षों में, शुभ वार, अश्वि० मृ. पु. पुष्य ह० चि. अनु. अभि, श्र. ध. रे नक्षत्रों में लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध होने पर बृश्चि. धन, मीन लग्न में और लग्न में गुरु हो तो कर्ण छेदन श्रेष्ठ होता है।

चूड़ाकरण

यह चूड़ा करण सस्कार गर्भ से वा जन्म से ३।५।७ वर्ष और उत्तरायण में होता है। कन्या हो तो सम वर्षों में होता है। कई एक कुलाचार से प्रथम वर्ष में करते है अथवा यज्ञोपवीत के साथ ही कर लेते हैं। २।३।५।१०।११ तिथियों में चं. बु. बृ. शु. वारों में अश्वि. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. ज्ये. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रों में २।३।४।६।७।८।१२ लग्नों में और लग्न से ८वां स्थान शुद्ध होने पर शुक्र का लग्न से ८वें होना दोष कारक नहीं होता। जन्म लग्न और जन्म राशि से ८वां लग्न न हो, केन्द्र त्रिकोण स्थान में शुभ ग्रह और ३।६।११ वे पापग्रह हों ६।८।१२ वें चन्द्रमा न हों, जन्म नक्षत्र और जन्म मास न हों। भद्रा व्यतिपातादि दोष रहित समय में करने से शुभ होता है। (विशेष विचार) माता गर्भवती हो और गर्भ ५ महिने से अधिक का हो गया हो तो चूड़ाकरण न करें। यदि बालक ५ वर्ष से अधिक हो गया हो तो गर्भवती माता होने पर भी चूड़ाकरण कर लेवे। बालक जेठा हो तो जेठ के महीने में चूड़ाकरण न करे।

(वशिष्ट के वचन से)

अक्षरारम्भः

पाँचवे वर्ष में और उत्तरायण में बालक से गणेश विष्णु लक्ष्मी और सरस्वती का पूजन करवा कर २।३।५।६।१०।११।१२ तिथियों में चं. बु. बृ. शु. वारों में, अश्वि आर्द्रा. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. रे. नक्षत्रों में २।३।७।९।१२ लग्नों में, लग्न से आठवां स्थान शुद्ध होने पर, भद्रादि दोष रहित समय में, अक्षरारम्भ शुभ होता है।

विद्यारम्भः

उत्तरायण में २।३।४।६।१०।११ १२ तिथियों में सू. बृ. शु. वारों में, अश्वि. मृ. आर्द्रा. पुन. पुष्य. आश्ले. पू ३ ह. चि. स्वा. मू. श्र. ध. श. नक्षत्रों में २।३।६।६ लग्नों में लग्न से ८वां स्थान शुद्ध होने पर, व्यतिपातादि दुष्ट समय को त्याग कर शुभ समय में विद्यारम्भ करना चाहिए।

उपनयनम

उपनयन संस्कार हो जाने से मनुष्य श्रौत स्मार्त कर्मों का अधिकारी हो जाता है, इस संस्कार के हो जाने

से मनुष्य की देह संस्कृत हो जाती है। इस कर्म में काम्य, नित्य और गौण काल के भेद से तीन प्रकार के कालकहे हैं। ब्राह्मणों को ५वें ८वें १६वें वर्षों में, क्षत्रियों को ६टे ११वें और २२वें वर्षों में वैश्यों को ८वें १२वें और २४वे वर्षों में काम्य नित्य और गौणकाल कहे हैं। चै. वैं. ज्ये आषा. देवशयनी से पूर्व जाने। माघ और फाल्गुन इन महीनों में, २।३।५।६।१०।११।१२ तिथियों में और कृष्णपक्ष में, २।३।५ तिथि पर्यन्त, सू. चं. बु. बृ. शु. वारों में, अश्वि. मृ. रो. आर्दा पुन. पुष्य. आश्ले. पू ३ उत्तरा ३ हस्त चि. स्वा. ऽनु. मू. श्र. ध. श. रे, नक्षत्रों में, २।३।४।५ ७।६।१२ लग्नों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थान में शुभग्रह हों, ३।६।११वें पापग्रह हों चं. बृ. श. और लग्न का स्वामी ६।८ और १२वें स्थान में न हो, १।५।८वें स्थान में पापग्रह न हों वृष और कर्क राशि के बिना चन्द्रमा का लग्न में होना शुभ नहीं होता तथा रोगवान. संक्रांति, भद्रा, व्यतिपात, अनाध्याय; प्रदोष अपरान्ह काल और वैधृत्यादि दोषरहित समय में यह संस्कार करना शुभ होता है, शाकेश और वर्णेश बलवान् होना चाहिये, ब्राह्मणों के लिए पुनर्वसु नक्षत्र शुभ नहीं होता। बालक को गुरु सूर्य और चन्द्रमा का बल अवश्य देखना चाहिए।

सूर्यबल	चन्द्रबल	गुरुबल	ग्रहबल
३।६।१०।११	३।६।७।१०।११ १।२।५।६	२।५।७।६।११	शुभ
१।२।५।७।६	....	१।३।६।१०	पूज्य
४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	निंद्य

उच्च मित्र, स्वराशिमेंगुरु होतो नेष्ट गुरुभी ग्राह्य है।

सूर्य वर की राशि से दूसरे पाँचवें और नौवें हो तो १३ प्रविष्टे के उपरान्त अपूजनीय हैं क्योंकि लिखा है— कुमारस्योपनयने विवाहेषुपि रवि बलं३।६।१०।११ श्रेष्ठः १।२।५।७।६ पूज्यः ४।८।१२ निंद्यः २।५।६ त्रयोदशाहात-परतः शुभः ॥ अन्येत्र-अनिष्ठ स्थानगे सूर्ये शुभराशिः पुरोभवेत्। त्रयोदशे दिनं त्यक्त्वा शेषस्थं शुभमादिशेत् ॥

शाकेश ज्ञान				वर्णेश ज्ञान			
ऋक्	यजु	साम	अथर्व	ब्राह्मण	क्षत्री	वैश्य	शूद्र
गुरु	शुक्र	भौम	र ब	गु. शु.	सू. भौ	चन्द्र	बुध

दीक्षा मुहूर्त विचार

चै. वै ज्ये. आषाढ़ श्रा. आश्वि. का. मार्ग महिनों में २।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथियों में सू. चं. बुव बृ. शु. वारों में रो. ह. चित्रा. स्वा. अनु. उत्तरा ३ इन नक्षत्रों में भद्रादि दोष रहित समय में दीक्षा ग्रहण करना शुभ होता है।

अथ विवाह संस्कार

सब आश्रमों में गृहस्थाश्रम श्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि ब्रह्मचर्याश्रम वाणप्रस्थाश्रम और सन्यासाश्रम इन तीनों आश्रमों का आश्रय स्थान, यही गृहस्थाश्रम है। इसी तरह देवऋण, पितृऋण, और ऋषि ऋण इन तीनों ऋणों से मुक्त करने वाला तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि देने वाला होने के कारण गृहस्था-श्रम सब आश्रमों से श्रेष्ठ माना गया है। और शेष संस्कार भी विवाह संस्कार पर ही निर्भर हैं, क्योंकि विवाह आदि संस्कार होने के पश्चात् ही गर्भाधान आदि समस्त संस्कार हो सकते हैं। इस कारण भी विवाह संस्कार सर्व प्रधान है। यह संस्कार योग्य समय में होने पर ही स्त्री सुख ऐश्वर्य भोग और उत्तम संतान उत्पन्न करके मनुष्य अपने पितृ ऋण से मुक्त होता है। अतः विवाह संस्कार का निर्णय हमारे ऋषि मुनियों ने अति सूक्षमता से किया है जिस के अनुसार विवाह नियत करके मनुष्य जीवन को सुखी बना सकता है। परन्तु आजकल के कई लोग बिना मुहूर्त को अच्छी तरह विचारे और कुण्डलियों तथा गुणादि का मिलान किये बिना ही विवाह नियत कर लेते हैं जो कि सर्वथा अनुचित है।

कन्या का पिता व बालक योग्य वर्ष के वर का निश्चय कर कन्या की कुण्डली का मिलान कर तथा गुण मिलना करके वाग्दान करे, ताकि नूतन दम्पति अपना जीवन सुखमय व्यतीत करें।

मिलान में वर का प्रसिद्ध नाम तथा कन्या का जन्म नाम व कन्या का प्रसिद्ध नाम और वर का जन्म नाम ऐसा विपरीत कदापि न लेवे यह वर कन्या के लिए हानिप्रद है। या तो दोनों का प्रसिद्ध नाम लेवे या दोनों का जन्म नाम लेवे। विशेषतः दोनों का जन्म नाम ही लेना चाहिए। क्योंकि कहा है—

जन्मराशि विचार

कुर्यात्षोडश कर्माणि जन्म राशौ बालान्विते।
अन्यानि शुभं कर्माणि नामराशौ बलान्विते ॥
विवाहे सर्व मांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे।
जन्मराशे प्रधानत्वं नामराशि न चिन्तयेत् ॥

नाम राशि विचार

काकिन्यां वर्गसद्धौ च दानेद्युते ज्वरोदये।
मन्त्र पुनर्भूवरणे नामराशि प्रधानता ॥
देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायाँ व्यवहारके।
नाम राशि प्रधानत्वं जन्मराशि न चिन्तयेत् ॥

विवाह में द्वादश चन्द्रमा का विचार

[काशी नाथः] अधाने संप्रदाने च विवादे राज विग्रहे। पाणि ग्रह च यात्रायाँ चन्द्रो द्वादशगः शुभः।

विवाह में वर्ज्य तिथि योग

वैधृति व्यति पाताख्यौ संपूर्णौ वर्जयेच्छुभ।
कृष्ण चतुर्दशी शुक्ला प्रतिपद्दर्श संज्ञिकाः। एतः शुभवे कार्येषु वर्जनीयाः प्रयत्नतः ॥
तिथिनां त्रितयं वारमेकं स्पृशति यत्र वै। अवमं तद्दिनं ज्ञेयंशुभ कर्म्मसु संत्यजेत्।

वर कन्या की राशि मेलन विचार

वर और कन्या के जन्म नक्षत्र और जन्म राशि में वर्गकूट [१]वश्यकूट [२]ताराकूट [३]योनिकूट [४]ग्रहमैत्रीकूट [५]गणकूट[६]भकूट [७]और नाड़ी कूट [८]इन ८ कूटों द्वारा परस्पर मिलान करे, यदि दोनों का जन्मनाम मालूम न हो तो दोनों के प्रसिद्ध नाम से मिलान करें।

वर्ण ज्ञान चक्र

ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	वर्ण
१२।४।८	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	राशि

ग्रह मैत्री चक्र

सू	चं	मं	बुध	वृ	शु	श	ग्रहाः
चं मं वृ	सू बु	सू चं बृ	सू शु	सू चं मं	बु श	शु बु	मित्राणि
बुधः	मं बृ शु श	शु श	मं बृ श	श	मं बृ	वृ	समाः
शु श	००	बु	चं	बु शु	सू चं	सू चं मं	शत्रव
मे १०	बृष ३	मं २८	क १५	कर्क ५	मी २७	तु २०	उच्चांश
तु १०	बृश ३	क २८	मी १५	म ५	क २७	मे २०	नीचांश

मित्र नवपंचम ज्ञानचक्र						शत्रु नवपंचम ज्ञानचक्र					
१	२	३	५	७	८	९	१०	१२	११	६	४
५	६	७	९	११	१२	१	२	४	३	१०	८

मित्रषडाष्टक ज्ञानचक्र						शत्रुषडाष्टकज्ञान चक्र					
१	३	५	७	९	११	१	३	५	७	९	११
८	१०	१२	२	४	६	६	८	१०	१२	२	४

मित्रद्विर्द्वादश चक्र						शत्रुद्विर्द्वादश ज्ञानचक्र					
१२	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	११
१	३	५	७	९	११	२	४	६	८	१०	१२

वश्य ज्ञान चक्र

द्विपद्राशय	चतुष्पद्राशय	जलचरराशय	सरीसृपराशयः
३।६।७	१।५।२	४।११।१२	८
९ पूर्वार्धं	९ उत्तर १० पूर्व	१० उत्तरा	०००

तारा ज्ञान चक्र

३	५	७	१२	१४	१६	२१	२३	२५ एतत्संख्याकास्ताराना शुभदः

नक्षत्र, योनी, नाड़ी, गणादि स्वरूप ज्ञानम्

नाम नक्षत्र	नाम अक्षराणि राशिः ज्ञानं च	योनी	महावै. योनि	गण	नाड़ि	देवता	मुख	नेत्र	नाम संज्ञा	कितने तारे	पंचश्ला का वेध	सप्तशला का बोध
अश्वनी	(मेष) चु चे चो ला	अश्व	महिष	देव	आदि	दस्र	तिर्य	मन्द	क्षिप्र	३	पू फा	पू फा
भरणी	लि लु ले लो	हाथी	सिंह	नर	मध्य	यम	अधो	मध्य	उग्र	३	अनु	म
कृतिका	अ (वृष) इ उ ए	मेंढ़ा	बानर	राक्षस	अन्त्य	अग्नि	अधो	स्वक्ष	मिश्र	६	वि	श्रव
रोहिणी	ओ ब बी बु	सर्प	नकुल	नर	,,	ब्रह्मा	ऊर्ध्व	अन्ध	ध्रुव	५	अभि	अभि
मृगशिर	बे बो (मिथुन) ककि	,,	,,	देव	मध्य	चन्द	तिर्य	मन्द	मृदु	३	उषा	उषा
आर्द्रा	कु घ ङ छ	श्वान	मृग	नर	आदि	शिव	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्षण	१	पूषा	पूषा
पुनर्वसु	के को ह (कर्क) हि	विडाल	मूषक	देव	,,	अदिति	तीर्य	स्वक्ष	चर	४	मूला	मूला
पुष्य	हु हे हो डा	मेंढ़ा	बानर	देव	मध्य	गुरु	ऊर्ध्व	अन्ध	क्षिप्र	३	ज्ये	ज्ये
आश्लेषा	डि डु डे डो	विडाल	मूषक	राक्षस	अन्त्य	सर्प	अधो	मन्द	तीक्षण	५	धनि	अनु
मघा	(सिंह) म मि मुमे	मूषक	विडाल	राक्षस		पितर	अधो	मध्य	उग्र	५	श्रव	भर
पूर्वाफाल्गुनी	मो टा टि टू	,,	,,	नर	मध्य	भग	अधो	स्वक्ष	उग्र	२	अश्वि	अश्वि
उत्तराफाल्गुन	टे (कन्या) टो प पी	गौ	व्याघ्र	नर	आदि	अर्यमा	ऊर्ध्व	अन्ध	ध्रुव	२	रेव	रे
हस्त	पू ष ण ठ	महिष	अश्व	देव	,,	सूर्य	तिर्य	मन्द	क्षिप्र	५	उभा	उभा
चित्रा	पे पो (तुला) र री	व्याघ्र	गौ	राक्षस	मध्य	त्वष्टा	तिर्य	मध्य	मृदु	१	पूभा	पूभा
स्वाती	रु रे रो ता	महिष	अश्व	देव	अन्त्य	वायु	तिर्य	स्वक्ष	चर	१	शत	शत
विशाखा	ति तु ते (वृश्चिक) तो	व्याघ्र	गौ	राक्षस	,,	इंद्राग्नि	अधो	अन्ध	मिश्र	४	कृति	धनि
अनुराधा	न नि नु ने	मृग	श्वान	देव	मध्य	मित्र	तिर्य	मन्द	मृदु	४	भर	आश्ले
ज्येष्टा	नो या यि यु	,,	,,	राक्षस	आदि	इन्द्र	तिर्य	मध्य	तीक्षण	३	पुष्य	पुष्य
मूला	(धन) ये या भा भि	श्वान	मृग	राक्षस	,,	राक्षस	अधो	स्वक्ष	तीक्षण	११	पुन	पुन
पूर्वाषाड़ा	भु ध फ ढ	बानर	मेंढ़ा	नर	मध्य	जल	अधो	अन्ध	उग्र	३	आ	आ
उत्तराषाढ़ा	भे (मकर) भोज जि	नकुल	सर्प	नर	अन्त्य	विश्वे	ऊर्ध्व	मन्द	ध्रुव	२	मू	मू
अभिजित	जु जे जो खा	,,	,,	०	०	विविध	०	मध्य	क्षिप्र	३	रो	रो
श्रवण	खि खु खे खो	बानर	मेंढ़ा	देव	अन्त्य	विष्णु	ऊर्ध्व	स्वक्ष	चर	३	म	कृ
धनिष्ठा	ग गि (कुम्भ) गु गे	सिंह	हाथी	राक्षस	मध्य	वसु	ऊर्ध्व	अन्ध	चर	४	आश्ले	वि
शतभिषा	गो स सि सु	अश्व	महिष	राक्षस	आदि	वरुण	ऊर्ध्व	मन्द	चर	१००	स्वा	स्वा
पूर्वाभाद्रपदा	से सो द (मीन) दि	सिंह	हाथी	नर	,,	अजैक	अधो	मध्य	उग्र	२	चि	चित्रा
उत्तराभाद्रपद	दु थ झ ञ	गौ	व्याघ्र	नर	मध्य	अहिर्बुध्न्य	ऊर्ध्व	स्वक्ष	ध्रुव	२	ह	ह
रेवती	दे दो च चि	हाथी	सिंह	देव	अन्त्य	पूषा	तिर्य	अन्ध	मृदु	३२	उफा	उफा

नोट—ऊपर के चक्र से जब आप अपना नक्षत्र जान लें तो उसके सामने आप योनि, नाड़ी, गण आदि देख सकते हैं। तथा पंचशलाका और सप्तशलाका वेध का भी ज्ञान होता है। जिस नक्षत्र का तारा आप आकाश में देखना चाहते हों तो इस के समीप कितने तारे हैं यह भी इस चक्र से देख सकते हैं।

(विवाह आदि के लिए वर कन्या मेलापक सारणी)

		-मेष-			-वृष-			-मिथुन-			-कर्क-			-सिंह-			-कन्या-			-तुला-			-वृश्चिक-			-धन-			-मकर-			-कुम्भ-			-मीन-		
वरस्य नक्षत्र		अ.	भ.	कृ. १	कृ. ३	रो.	मृ. २	मृ. २	आ.	पुन ३	पुन. १	पुष्य	श्ले	म.	पू.	उफा १	उफा ३	ह	चि. २	चि २	स्वा	वि ३	वि. १	अनु	ज्ये	मू	पू.	उषा १	उषा ३	श्र.	ध. २	ध. २	श.	पूभा. ३	पूभा. १	उभा.	रे.
कन्या नक्षत्र — मेष	अ.	२८ ८	३३	२८	१८ १	२३॥ २	२२॥ २	२६ ८	१६॥ ८	१७॥ ८	२२॥	३०॥	२७	२२ १	२४ १	१५ ८१	१०॥ ७८	१० ४७८	१३ ७	२२॥	२६॥ ४	२२	१८॥ ७	२६॥ ७	१५ ७८	१३ ८१	२४॥ १	२३ १	२५	२६	२१	२१	१५ ८	१६ ८	१४॥ २८	२३॥ २	२६ २
	भ.	३३	२८ ८	२६ १	१८ २६	२६॥ २	१४॥ २८	१७॥ ८	२६	२६	३०॥	२३॥ ८	२४॥ ६	१९ ६१	१७ ८१	२४ १	१९ ७	१९ ७	६ ६७८	१४॥ ६८	२८	२१ ६	१८॥ ६७	१७॥ ७८	१६॥ ६७	२० ६१	१७॥ ८१	२५॥ १	२७॥	२६	१० ४६८	९॥ ४६८	२० ६	२४ ४	२२॥ २४	१६॥ २८	२५॥ २
	कृ. १	२६॥	२८ ६	२८ ८	१८ २८	१० ६८२	१६॥ २	१६॥	१९॥ ६	१९॥	२४॥	२६॥	२२॥ ८	१५॥ ८१	१९ ६१	२० ६१	१५ ६७	१५ ७	१८॥ ७	२७॥	१४ ८	१९ ८	१६॥ ७८	१९॥ ७	२५॥ ७	२५ १	१६ ४६१	११॥ ६७१	१३॥ ६८	१४ ४८	२५	२४॥	२५॥	१८ ६	१७॥ २६	१९॥ २६	११ २८
वृष	कृ. ३	१६ २	१९ २६	१९ २८	२८ ८	१८॥ ६८	२६॥	१७ २	१७ २६	१७ २	२१	२३	१९ ८	१९ ८	२२ ६	२२ ६	२० ६१	१८ १	२३ १	२२ ७	६ ७८	१४ ७८	२१॥ ८	२४॥	३०॥	२२ ७	१५ ४६७	७ ६७८	१२ ६८१	१०॥ ४८१	२४॥ ६	२१	३०	२३ ६	२० ६	२३ १	११ ८
	रो	२३॥ २	२३॥ २	११ २६८	२० ६८	२८ ८	३६	२६॥ २	२३ २	२२ २	२६	२६	१३ ६८	१०॥ ६८	२४॥	२७	२५॥ ३	२५॥ १	१८॥ ६१	१७॥ ६७	१५ ७८	८ ६७८	१४॥	२१॥	२३॥ ६	१३॥ ६७	१९॥ ७	११ ४७८	१६ ४८१	१८ ८१	१९ ६६	२४॥ ६	२४ ६	२१	२४	२७	११ ८
	मृ २	२३॥ २	१४॥ २८	१८॥	२७	३५	२८॥ ८	१८॥ २८	२३॥ २	२२॥ २	२६	१९ ८	२१	१९॥	१५॥ ८	२४॥	२३ १	२५॥ १	११॥ ८१	१०॥ ७८	२४॥ ७	१७ ७	२३॥	२१॥ ८	२४॥	१४॥ ७	१०॥ ७८	१६॥ ४७	२१॥ ४१	२६ १	१२ ८१	१७॥ ८	२६	२८	२५	१८ ८	२७
मिथुन	मृ २	२७	१८ ८	२१	१८॥ २	२५॥ २	२० २८	२८ ८	३३	३१॥	१९॥ २	१०॥ २८	१४॥ २	२४	२०॥ ८	२८॥	३०॥	३४	२० ८	१३ ८६	२७ ६	१६॥ ६	१३ ७	१३ ७८	१४ ७	२३	१९ ८	२५ ४	१९॥ १४७	२४ ७	१० ७८	१२ ८६	२१ १	२२॥ १	२४	१७ ८	२६
	आ	१८॥ ८	२६॥	२१॥ ६	१६ २६	२४॥ २	२५॥ २	३४	२८ ८	२५ ८	१२ २८	२०॥ २	१२॥ २६	२१॥ ६	२७॥	२०॥ ८	२४॥ ८	२४॥ ८	२७ ६	२० ६६	२७ १	२० ६१	१३॥ ६७	१९ ४७	५ [illegible]	१५ ६८	२८	२७	२१॥ ७	२२॥ ७	१७ ६७	१६ ६१	१२ ६८१	१७ ८१	१८॥ ८	२६	२६
	पुन ३	१८॥ ८	२५॥	२१॥	१६ २	२२ २	२३ २	३१॥	२४ ८	२८ ८	१४ २८	२१ १	१५॥ २	२१॥ ४	२५॥ ४	१९॥ ८	२३॥ ८	२४॥ ८	२६॥	१६॥ ६	२७ ६	२१ १	१४॥ ७	२०॥ ७	६ ७८	१४ ८	२७	२७	२१॥ ७	२२॥ ७	१६॥ ७	१८॥ ६	१३ ८१	१६ ८१	१७॥ ८	२६॥	२६
कर्क	पु १	२१॥ ८	२८॥	२४॥	२१	२४	२५	१७॥ २	१० २८	१३ २८	२८ ८	३४	२८॥	१६॥ २४	२०॥ ४२	१४॥ २८	१६॥	१७॥ ८	१९॥	१९	२६॥	२०॥	१९ ६	२५ १	१०॥ १	७॥ ७८	२०॥ ७	२०॥ ७	२६	२७	२१	१२ ७	५॥ ७८	९॥ ७८	१६ ८१	२५ १	२४॥ ६
	पु	२९॥	२०॥ ८	२६॥	२३	२५	१८ ८	१०॥ २८	१८॥ २	२४ २	३४	२८ ८	२९	१८॥ २	१४॥ २८	२३॥ २	२५॥	२५॥	११॥ ८	११ ८	२५	२०॥	१६ ६	१७ ४१	२०॥ १	१७॥ ७	१२॥ ४७८	२०॥ ७	२६	२७ ४	१३ ८	४ ७८	१३ ७	१७॥ ७	२६ १	१८ ८१	२६ १
	श्ले	२५	२३ ६	२१॥ ८	१९ ८	१२ ६८	२१	१३ २	१२ २६	१५ २	२८॥	२८॥	२८ ८	१५ २४८	१५॥ २४६	१७॥ २६	२०॥ ६	२०	२६	२५॥	११॥ ८	१६॥ ८	१५॥ ८१	२० ६	२६ १	२२॥ ७	१६ ६७	७॥ ६७८	१३ ६८	१३ ८	२६	१७ ७	१८ ७	११ ६७	१७॥ ६१	२० ६१	१२ ८६
सिंह	म	१६ १	१९ ६६	१५॥ ८१	१६॥ ८	११ ६८	१७॥	२०॥	२०॥ ६	१९॥ ४	१६॥ २४	१८॥ २	१६ २४८	२८ ८	३० ६	२६॥	१४॥ २६	१४॥ २	१९॥ २	२३॥	१०॥ ८	१५॥ ८	२५ ८	२४॥	३२	२४ १	१९ ६१	८॥ ६८६	३॥ ६७८	४॥ ७८	१७॥ ७	२३॥	२४॥	१७॥ ६	१७॥ ६७	१८॥ ६७	१२ ७८
	पूफा	२५ १	१७ ८६	१९ ६१	२० ६	२३॥	१५॥ ८	१८॥ ८	२६॥	२५॥ ४	२१॥ २४	१६॥ २८	१६॥ २४६	३० ६	२८ ८	३४	२४ २	२०॥ २	५॥ २६८	६॥ ६८	२४॥	१७॥ ६	२३॥ ६	२२॥ ८	२४॥ ६	२० ६१	१७ ८६	२४ १	१९ ७	१८॥ ७	५॥ ६७८	९॥ ६८	१०॥ ६	२३॥	२३॥ ७	१६॥ ७८	२४॥ ७
	उ १	१८॥ ८१	२७ ६	२२ ६६	२३ ६	२७	२५॥	२८॥	२१॥ ८	२१॥ ८	१६॥ २८	२५॥ २	१८॥ २६	२६॥ ६	३४	२८ ८	१८ २८	१६॥ २८	१४॥ २४६	१७॥ ४६	२६॥	१७॥ ४६	२४॥ ४६	२३॥	१६॥ ६८	९ ६८१	२५ १	२५ ६	२० ७	२० ७	११॥ ६७	१७॥ ६	१०॥ ६८	१५॥ ८	१५॥ ७८	२६॥ ७	२४॥ ७
कन्या	उ ३	११ ८७	२१ ७	१६ ६७	२०॥ ६६	२५॥ १	२४ ६	३१॥	२१॥ ८	२३॥ ८	१७॥ ८	२७॥	२०॥ ६	१५॥ २६	२३ २	१७ २८	२८ ८	२७ ८	२४॥ ४६	१६॥ २४६	२५॥ २	१६॥ २४६	१८ ४६	२६	१२ ६८	१४ ६८	२९॥	२१॥	२४ १	२४ १	१५॥ ६१	१६॥ ६७	९॥ ७८	१४॥ ७८	१७ ८	२८	२६
	ह	११ ४७८	१८॥ ७	१६ ७	२०॥ १	२३॥ १	२४॥ १	३२	२८॥ ८	२३॥ ८	१८ ८	२६॥	२१॥	१६ २	२०॥ २	१५ २८	२६ ८	२८ ८	२८	२० २	२६॥ २	१८॥ २	२०	२६	१३॥ ८	१५ ८	२७	२८॥	२३ १	२४ १	१८ १	१६ ७	१०॥ ४७८	१३॥ ७८	१६ ८	२६	२६
	चि	१२॥	८॥ ६७८	१८॥ ७	२३ ६	१८॥ ६१	१०॥ ८१	१८ ८	२६ ६	२४॥	१९॥	११॥ ८	२५॥	२० २	६॥ २६८	१३॥ २४६	२४॥ ४६	२७	२८ ८	१६ २८	१२ २	२५॥ २	२७	११ ८	२५	२७	१३ ६८	२२ ६	१५॥ ६१	१७ १	१५ ८२	१६ ७८	२४ ७	१६॥ ६७	१६ ६	१० ४६८	१९

मेलापक सारणी देखने की रीति —ऊपर वर कन्या मेलापक सारणी दी जाती है । कन्या के नक्षत्रबाई ओर हैं और वर के नक्षत्र ऊपर दिये हुए हैं । वर के नक्षत्र के नीचे और कन्या के नक्षत्र के सामने जो कोष्टक है वहाँ गुणों की संख्या दी हुई है । बस वही गण दोनों के मिलापक सारणी के हैं । गुणों वाली संख्या के नीचे उसी (कोष्टक) में प्रायः कोई संख्या भी है । विवरण नीचे लिखे अनुसार जान लेना । द्विर्द्वादश दोष की जगह (२) योनिवैर की जगह (४) गण दोष की जगह (६) भकटषडाष्टक

दोष की जगह (७) नाड़ी दोष की जगह (८) और नव पचम की जगह (६) यह अंक दिये हुये हैं। जिस कोष्टक में गुणों के नीचे आप को इन में से जौनसा अंक मिले वह दोष उस मेलापक में हैं। जिन गुणों के नीचे कोई अंक न हो वह निर्दोष उदाहरण :—जैसे वर का नाम वृश्चिक राशि विशाखा नक्षत्र के ४ थे चरण में हैं और कन्या का नाम मेषराशिभरणी नक्षत्र में हो तो भरणी के सामने और विशाखा के ४ थे चरण के नीचे १८॥ गुण हैं और इन के नीचे ६, ७ दो दोष दिए हुए हैं अर्थात् गुण दोष और भकूट षडाष्टकदोष है। यदि भकूट दोष न हो तो, २० गुण मिलने पर मध्यम और इन से अधिक मिले तो श्रेष्ठ हैं। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और इस के ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिए शुभ भकूट में १६ गुण से कम न हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो, बिबाह के लिए विचार न करना चाहिए। क्योंकि अशुभ है एक नक्षत्र में पाद भेद हो तो नाड़ी दोष नहीं माना जाता। १८ गुण से कम हो तो मिलान उत्तम नहीं है १८ से २७ तक मध्यम और २० से ऊपर उत्तमोतम समझना चाहिए।

		-मेष-			-वृष-			-मिथुन-			-कर्क-			-सिंह-			-कन्या-			-तुला-			-वृश्चिक-			-धन-			-मकर-			-कुम्भ-			-मीन-		
वरस्य नक्षत्र		अ.	भ.	कृ. १	कृ. ३	रो.	मृ. २	मृ. २	आ	पुन. ३	पुन १	पुष्य	श्ले	म.	पू.	उफा. १	उफा. ३	ह.	चि. २	चि २	स्वा.	वि. ३	वि. १	अनु	ज्ये.	मू.	पू.	उषा १	उषा ३	श्र	ध. २	ध. २	श	पूभा ३	पूभा १	उभा	रे.
कन्या नक्षत्र	चि. २	२२	१४ ६८	२८	२३ ७	१८॥ ६७	१०॥ ७८	१२ ८६	२० ६९	१८॥ ९	१०	११ ८	२५	२४॥	१०॥ ६८	१३॥ ४६	१३॥ २४६	२० २	२० २८	२८ ८	२७	३३॥	२२॥ २	६॥ २८	२०॥ २	२७	१३ ६८	२१ ६	२३॥ ६	२५	२३ ८	१८ ८६	२६ ६	१८॥ ६९	१२ ६७	३	१२ ७
तुला	स्वा.	७॥ ४	२६॥	१७॥ ८	१२॥ ७८	१६॥ ७८	२७ ७	२७ ९	२६ ९	२६॥ ९	२८	२८	१५॥ ८	१३॥ ८	२५॥	२५॥	२५॥ २	२७॥ २	२१ २	२८	२८ ८	२० ७	१० २८	२३॥ २	१८॥ २	२३	२७	१९ ८	२१॥ ८	२२॥ ८	२६	२१ ६	२२ ६	२५ ६	१८॥ ७	१६ ७	११ ७८
	वि ३	२१	२२ ६	२० ८	१५ ७८	६ ६७८	१७ ७	१८॥ ६	२० ६९	२० ९	२०॥	२०॥	१७ ८	१६॥ ८	१८॥ ६	१७॥ ४६	१७॥ २४६	१८॥ २	२६ २	३३॥	१९ ८	२८ ८	१६ २८	१६ २	२१॥ २	२७॥	२१ ६	१३ ६८	१५॥ ६८	१५॥ ८	२६॥	२४ ६	२६ ६	२० ६६	१३॥ ६७	१२॥ ४६७	४ ७८
वृश्चिक	वि. १	१६॥ ७	१६॥ ६७	१७॥ ७८	१६॥ ८	१३॥ ६८	२१॥	११ ७	१२॥ ६७	१३॥ ७	१८ ९	१८ ९	१४॥ ८९	२४॥ ८	२२॥ ६	२१॥ ६	१७ ४६	१८	२६	२१॥ ८	७ २८	१५ २८	२८ ८	२७	३१॥ ७	२१॥ २	१५॥ २६	७॥ २६८	११ ६८	११ ८	२५	२४	२५॥	१९॥ ६	१६ ६६	१८ ६९	९॥ ४८३
	अनु	२३॥ ७	१४॥ ७८	१८॥ ७	२३॥	२७॥	१०॥ ८	१० ७८	१५ ४७	१९॥ ७	२५ ९	१७ ८९	२० ९	२४॥	२०॥	२८॥	२४	२५	११ ८	६॥ २८	२०॥ २	१६ २	२८	२८ ८	३१	१५॥ २४	१३॥ २८	२१॥ २	२५	२६	१२ ८	११ ८	२०	२४॥	२४ ६	१७ ८६	२६ ९
	ज्ये	१० ७८	१७॥ ६७	२३ ७	२८॥	२२॥ ६	२९॥	१२ ७	२ ४६७	४ ७८	९॥ ८९	२० ९	२५ ९	३१	२३॥ ६	१५॥ ६८	११ ६८	११ ८	२४	१९॥ २	१४॥ २	१६ २	३१॥	३०	२८ ८	१४ २४८	१६॥ २६	१६॥ २६	२० ६	२०	२५	२८	१७ ८	१० ६८	६॥ ६८६	२० ६९	२० ६
धन	मू	११॥ ८६	१६ ६६	२५ ६	१६॥ ७	१२॥ ६७	१२॥ ७	२१	१४ ६८	१२ ८	७॥ ७८	१७॥ ७	२३ ७	२४ ९	१८ ६९	१९॥ ६८९	१३	१३ ८	२६	२६	२१	२६	२२॥ २	१६॥ २४	१६ २४८	२८ ८	२८ ६	१५॥ ६	१३॥ २६	१४॥ २	१६॥ २	२८॥	२१॥ ८	१४॥ ६८	१६॥ ६८	२४॥ ६	२६
	पू	२६ ६	१६ ८६	१८ ६४६	१२॥ ४६७	१६ ७	११ ७८	१६ ८	२७	२७	२२॥ ७	१४॥ ४७८	१६॥ ६८	१९ ६९	१७ ८९	२५ ९	२८॥	२७	१२ ६८	१२ ६८	२७	२० ६	१६॥ २६	१५॥ २८	१७॥ २६	२७ ६	२८ ८	३४	२२ २	२२॥ २	५॥ २६८	१४॥ ६८	२३॥ ३	२८॥	२९॥	२२॥ ८	३०॥
	उ १	२४ ६	२५॥ ६	११॥	६ ७८	१० ४७८	१६॥ ४७	२५ ४	२६	२७	२२॥ ७	२२॥ ७	८॥ ६७८	८॥ ६८९	२४ ९	२५ ९	२८॥	२८॥	२० ६	२० ६	१९ ८	१२ ६८	८॥ २६८	२३॥ २	१७॥ २६	२५॥ १६	३५	३८ ८	२२ २८	२२॥ २८	५॥ २६	१४॥ ६	२३॥ ६	२८॥	२६॥	३०॥	२२॥ ८
मकर	उ ३	२७	२८॥	१४॥ ६८	१२ ६८६	१६ ४८६	२२॥ ४६	१६ ४७	२४॥ ७	२१॥ ७	२८	२८	१४ ६८	४॥ ६७८	२० ७	२१ ७	२४ ९	२४ ९	१५॥ ६९	२२॥ ६	२१॥ ८	१४॥ ६८	१२ ६८	२७	२१ ६	१४॥ २६	२४ २	१७ २८	२८ ८	२७ ८	२५॥ ६	१५॥ २६	१६॥ २६	२१॥ २	२९॥	३०॥	२२॥ ८
	श्र	२८	२७	१४॥ ४८	१२ ४८६	१७ ८६	२६ ६	२३ ७	१९॥ ७	२१॥ ७	२८	२८ ४	१४ ८	५॥ ७८	१८॥ ७	२० ७	२३ ९	२४ ९	१७ ९	२४	२१॥ ८	१४॥ ८	१२ ८	२७	२१	१४ ४	२२॥ २	१५ २८	२६ ८	२८ ८	२७	१७ २	१७॥ २	२०॥ २	२८॥	२२॥	२३॥ ८
	ध २	२०	११ ४६८	२६	२३॥ ६	१६ ६६	११ ८६	८ ७८	१६ ६७	१४॥ ७	२१	१३ ८	२७	१८॥ ७	४॥ ६७८	१०॥ ६७६	१५॥ ९	१७ ९	१५ ८९	२९ ८	२४	२८॥	२६	१२ ८	२६	२०॥ २	६॥ २६८	१४॥ २६	२५॥ ६	२७	२८ ८	१७ २५	२६ २	१७॥ २६	२४॥ ६	१५ ६८	२२॥ ४
कुम्भ	ध २	१६॥	१०॥ ४७८	२५	२०	२५॥ ६	१७॥ ८	११ ८९	१८ ६९	१७ ९	१२ ७	४ ७८	१८ ७	२४॥	१७॥ ६८	१८॥ ६	१७॥ ६७	१९ ७	१७ ७८	१८ ८९	२० ९	२४॥ ९	२५	११ ८	२५	२९॥	१५॥ ६८	२३॥ ६	१६॥ २६	१८ २	१८ २८	२८ ८	३३	२७॥ ६	१६॥ २६	६॥ २६८	१३॥ २४
	श	१४॥ ८	२०॥ ६	२६॥	२१	२५ ६	२६॥	२० ९	१२ ६८९	१२ ८६	६॥ ७८	१३ ७	१९ ७	२५॥	१९॥	११॥ ६८	१०॥ ६७८	१०॥ ७	२५ ७	२६ ९	२१ ९	२६ ९	२६॥	२० ८	१८ ८	२२॥ ८	२४॥ ६	२४॥ ६	१७ २६	१७॥ २	२४ २	२३	२८ ८	२६ ६८	८ २६८	१४॥ २६	१५॥ २
	पू ३	१७॥ ८	२४॥ ४	१६॥ ६	२४ ६	३०	३०	२३॥ ९	१७ ८९	१७ ८९	११॥ ७८	१९॥ ७	१२ ६७	१८॥ ६	२४॥	१६॥ ८	१५॥ ७८	१५॥ ७८	१७॥ ६७	१८॥ ६९	२६ ९	२० ६६	२०॥ ६	२६॥	११ ६८	१५ ६८	२६॥	२६॥	२२॥ २	२२॥ २	१८ २६	२७ ६	१६ ६८	२८ ८	१६ २८	२२ २	१९॥ २४
मीन	पू १	१४॥ २८	२१ २४	१६॥ २६	१६ ६	२६	२६	२४	१७॥ ८	१७॥ ८	१७ ८९	२५ ९	१७॥ ६९	१६॥ ६७	२२॥ ७	१४॥ ७८	१६ ८	१६ ८	१८ ६	११ ६७	२८॥ ७	१२॥ ६७	१९ ६९	२५ ९	९॥ ६८९	१८ ६८	२८॥	२८॥	२८॥	२२॥	२४॥ ६	१५॥ २६	७ २६८	१५ २८	२८ ८	३३	३०॥ ४
	उ	२३॥ २	१५॥ २८	१८॥ २६	२१ ६	२६	१८ ८	१७ ८	२५	२६॥	२६ ६	१९ ८९	२० ६९	१७॥ ६७	१५ ७८	२५॥ ७	२७	२६	९ ४६८	२	१९ ७	११॥ ४६७	१८ ४६०	१८ ८९	२० ६९	२३॥ ६	२१॥ ८	१६॥	२६॥	२६॥	१४॥ ६८	५॥ २६८	१४॥ २६	२१ २	३३	२८ ८	३३
	रे	२५ २	२३॥ २	१०॥ २८	१३ ८	१७	२६	२५	२४	२५	२४॥ ९	२६ ९	१३ ८९	१२ ७८	२२॥ ७	२२॥ ७	२४	२५	१९	१२ ७	१० ७८	४ ७८	१०॥ ८९	२६ ९	२१ ९	२६	२८॥	२०॥ ८	२३॥ ८	२१॥ ८	२२॥ ४	१३॥ ४२	१५॥ २	१७॥ २४	२९ ४	३३	२८ ८

एषाँ परिहारवाक्यानि

न वर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वाशके नैव षडाष्टके वा ।
तारा विरुद्धे नवपंचमे वा राशीश मैत्री शुभदा विवाहे
नाड़ीदोषश्च विप्राणां वर्णदोषस्तु भूभुजाम् ।
गणदोषश्च वैश्येषू योनिदोषश्च पादजाम् ॥
एकनक्षत्र जातानां नाड़ी दोषो न विद्यते ।
अन्यर्क्षपतिवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा ॥
रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नी पुष्ये श्रवण पौष्णभम् ।
अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाड़ीदोषो न विद्यते ॥
मरणे-पितृ मातृश्च संग्राह्यो नव पंचमे ।
वरस्य पंचमे कन्या कन्याया नवमो वरः ॥

वर और कन्या की राशियों के स्वामी एक हों वा दोनों के स्वामियों की परस्पर मित्रता हो तो वर्णादि७ कूटों का दोष नहीं रहता । इसी तरह नाडीदोष में यदि वर और कन्या का नक्षत्र भिन्न २ हो किन्तु राशि एक हो, अथवा दोनों का नक्षत्र एक हो और राशि भिन्न २ हो तो नाड़ी दोष नहीं होता । यदि दोनों की एक राशि और एक ही नक्षत्र हो तो विवाह शुभ नहीं होता, किन्तु एक नक्षत्र में भिन्न २ चरण होने से अत्यावश्यक में शुभ हो जाता है ।

ग्रहं मेलापक विचार

वर और कन्या की कुंडली में मिलान उत्तम होना आवश्यक है । क्योंकि उत्तम मिलान से द्रव्य पुत्र, पति पत्नी का सुख प्राप्त होगा । वर की कुण्डली में जन्म लग्न, चन्द्रमा तथा शुक्र से यदि १।२।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक होता है । यदि कन्या के जन्म लग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मंगल हो तो वर का नाशक होता है ।

जैसे कहा है—लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
वरः पत्नीविनाशाय कन्या पतिविनाशिनी ।

परिहार :–यदि वर की कुण्डली में पूर्वोक्त स्थानों पर मंगल हो और कन्या की जन्म कुण्डली में भी उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता । इसी प्रकार एक की कुण्डली में मंगल हो और दूसरे की कुण्डंली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ा हो तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है ।

अतः फिर भी वर कन्या के लग्न, लग्नेश, सप्तम सप्तमेश, अष्टम अष्टमेश, पंचम भाव तथा स्त्री कारक शुक्र इनके योगों को देखकर सूक्ष्म रीति से परिहार योगों का विचार कर ज्योतिषी-कुण्डली का मिलान करें ।

वर वरण में मुहूर्त विचार

(चंडेश्वर) कृ. पूर्वा ३. और विवाह नक्षत्र, शुभ तिथि, शुभ वार भद्रादि दोष रहित शुभ समय में वर का वरण कन्या के भ्राता से अथवा ब्राह्मणद्वारा करना चाहिए ।

कन्यावरण में मुहूर्त विचार

(चिंतामणी) कन्या का वरण अ.कृ. पूर्वा ३ अनु. उषा श्र. ध और विवाह के नक्षत्रों में तथा शुभ तिथि शुभ वार और शुभ समय में वस्त्र आभूषण फल और मिष्टान्नादि से कन्या का वरण करना शुभ होता है ।

विवाह मुहूर्त विचार

विवाह संस्कार में पूर्वाचार्यों ने यद्यपि वै. ज्येष्ट, आषा, मार्ग, माघ फाल्गुण के महिनों को ग्रहण किया है किन्तु कई एक आचार्यों ने चैत्र और पौष इन दोनों महीनों को त्याग कर शेष १० महीनों को ग्रहण किया है । इसलिए (भद्रदेश) पंजाब में अति प्राचीन काल से श्रा. भा. अश्वि. महीनों में विवाह करने की प्रथा चली आती है । पर्वतीय प्रदेशों में कार्तिक महीने में भी विवाह होते हैं । कृष्णपक्ष की त्रयोदशी से शुक्लपक्ष की प्रतिपदा तक की तिथियों को छोड़कर शेष तिथियों में सूर्य चं. बु. वृ. शु. वारों में मं. श. वार मध्यम कहे हैं । रो. मृ. मघा उत्तरा ३ ह. स्वा. अनु. मू. रे. इन नक्षत्रों में वर को सूर्य और चन्द्रमा का बल देख कर विषम वर्षों में और कन्या को गुरु और चन्द्रमा का बल देखकर सम वर्षों में विवाह संस्कार करना शुभ कहा है । कन्या की अवस्था यदि १० वर्ष से अधिक हो तो गुरु का बल देखना जरूरी नहीं । (वसिष्ठ) ।

पहिले गर्भ के लिए जन्म मासादिकों का निषेधः

(नारदः) न जन्ममासे जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपि वा आद्यगर्भे सुतस्याथ दुहितुर्वा करग्रहः ॥ जन्मदिन से लेकर ३० दिन तक जन्ममास कहलाता है । जन्ममास तिथि और जन्म नक्षत्र में पहिले गर्भ के पुत्र वा कन्या का विवाह न करे । अत्यावश्यक में विवाह करना हो तो वसिष्ठ जी के मत से जन्मदिन छोड़ दे, अत्रि जी के मत से जन्मदिन से ३ दिन छोड़ कर जन्ममास में विवाह कर लेवे । गर्ग जी के मत से ५ दिन छोड़ और भागुरि जी के मत से जन्म मास में पक्ष भर छोड़ कर विवाह कर लेवे ।

ज्येष्ठ महीने में विवाह का विचार

जहाँ पर लड़का जेठा हो, कन्या जेठी हो और ज्येष्ठ का महीना हो, इस को तीन जेठ कहते हैं । यह तीन जेठ विवाह में सर्वथा वर्जित कहे हैं । और जहाँ पर जेठा लड़का और ज्येष्ट का महीना अथवा जेठी लड़की और ज्येष्ठ का महीना हो इस को दो ज्येष्ठ कहते हैं, यह दो ज्येष्ठ विवाह में मध्यम कहे हैं और जहाँ लड़का और लड़की जेठे न हों केवल ज्येष्ठ का महीना हो तो यह एक जेठ विवाह में उत्तम कहा है । इसी तरह लड़का और लड़की जेठे हों किन्तु जेठ का महीना हो तो दोनों का विवाह भी न करे । (वराह) द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोक्तावेको ज्येष्ठः शुभा वह । ज्येष्ठत्रयं न कुर्वीत विवाहे सर्वसम्मतम् ।

(गर्गः) ज्येष्ठायाः, कन्यकायाश्च ज्येष्ठपुत्रस्य वै मिथः विवाहो नैवकर्तव्यो यदि स्यान्निधनं तयोः । जब तक कृतिका नक्षत्र में सूर्य है, तब तक ज्येष्ठ महीने का निषेध होता है । (भारद्वाजः)

ज्येष्ठ के महीने की तरह मार्गशीर्ष महीने में भी आद्यगर्भ का विवाह न करे । (भारद्वाजः)

विवाह में विशेष विषयों पर विचार

पुत्र के विवाह के उपरांत अपनी कन्या या अपने त्रिपुरुष कुल की कन्या का विवाह ६ महीने तक न करे, अर्थात् लड़का के विवाह के बाद लड़के का विवाह हो सकता है । इसी तरह विवाह के पीछे मुण्डन या यज्ञोपवीत ६ महीने तक न करे । (नारदः) दो सगे भाइयों का विवाह दो सगी बहिनों से न करे, तथा एक वर के साथ दो सगी बहिनों का विवाह न करे (वसिष्ठ) पुत्रिका द्वयमेकस्मै न दद्यात् कदाचन । जिस वर को अपनी कन्या देवे, उनकी बहिन के साथ अपने लड़के का विवाह न करे । (नारदः) उद्वाहोनैव कार्यो नैकस्मै दुहितृद्वयम् । दो सगे भाइयों

का विवाह ६ महीन के भीतर न करे (वसिष्ठः) विवाह द्वैकजन्यानां षण्मासाभ्यन्तरे यदि। असंशयत्रिभिर्वर्षैस्तत्रैका विधवा भवेत् ॥ दो सगे भाइयों का अथवा दो सगी बहिनों का एक संस्कार ६ महीने में न करे, (वृद्धामनुः) भिन्न माता के उदर से उत्पन्न हुए २ अथवा यमल भाई या बहिनों का एक कर्म द्वारभेद और मंडपभेद आचार्यभेद से हो सकता है। इसी तरह भेद के हो जाने से ६ महीने के भीतर हो सकता है। मंगल संस्कार से ६ महीने तक पितृ कर्म न करे, अथवा वर्ष जैसे माघ फाल्गुन में विवाह किया हो तो बैसाख में मुण्डन व यज्ञोपवीत करने से दोष नहीं होता, बड़े मंगल कर्म के उपरान्त लघुमंगल कर्म न करे। वह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी के पुरुषों के लिए ही कहा है चौथी पीढ़ी के पुरुषों को दोष नहीं होता।

विवाह में त्रिविक्रममत् से लग्न का विचार

(त्रिविक्रमसंहितायां) त्याज्या लग्नेऽब्दयो मंदःषष्टे शुक्रेन्दुलग्नपाः। रंध्रेचंद्रादयः पंच सर्वेऽस्तेऽब्जगुरू समौ ॥ विवाह लग्न का निश्चय करना हो तो लग्न में श. सू. मं. च न हो तथा लग्न से ६ठे स्थान में शु. च. और लग्न का स्वामी न हो, लग्न से ८वें चं. मं. बु. वृ.शु नहीं होने चाहिए और लग्न से ७वें स्थान में कोई ग्रह न हो तो विवाह लग्न शुद्ध होता है, किन्तु चन्द्र और गुरु ७वें होने से समान फल करते हैं।

छटे शुक्र तथा अष्टम मंगल का विचार

विवाह लग्न से छटे स्थान में शुक्र तथा ८वें स्थान में मंगल यदि शत्रुराशिगत या नीचराशिगत हो तथा मंगल अस्तंगत हो तो भौम दोष नहीं होता। (कश्यप.) नीचराशिगते शुक्रे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा भृगुषट् को स्थितो दोषो नास्त्यत्र न संशयः ॥ अस्तंगे नीचगेभौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा। कुजाष्टमोद्भवो दोषो न किंचिदपि विद्यते इसी तरह ६, ८, और १२वें स्थानगत चन्द्रमा का नीच और नीचांशक में होने से दोष नहीं होता।

नीचानीचांशगश्चन्द्रोनाशुभोष्टारि रिष्फगः ॥

लग्न में कर्तरी दोष का विचार

लग्न से १२वें स्थान में मार्गी क्रूर ग्रह हो और लग्न से दूसरे स्थान में वक्री ग्रह हो तो कर्तरी दोष होता है। कर्तरी दोष युक्त लग्न को सर्वथा त्याग देवे किन्तु कर्तरी ग्रह यदि शत्रु राशि या नीच राशिगत तथा अस्तंगत हो तो कर्तरी दोष नहीं होता, (उक्तंच) पापयोः कर्तरीकर्त्रोः शत्रु नीचगृहस्थयोः यदा चास्तंगयोर्वापि कर्तरी नैव दोषदा ॥ क्रूरः कर्तरी संयुक्त लग्न चन्द्र च न त्यजेत् केन्द्र त्रिकोण संस्थेषु गुरु भार्गवन-चिन्तयेत् ॥ शुभैः धनस्थैरथवांत्यगे गुरौ न कर्तरी स्यादिति भार्गवो विदुः।

गोधूली लग्न में ग्रहों का विचार

जिस दिन गोधूली लग्न का विचार करना हो उस दिन गोधूली लग्न से २।३ और ग्यारवें स्थान में चन्द्रमा होना चाहिये, तथा गोधूली लग्न से ८वें स्थान में श. बु. वृ और शुक्र नहीं होने चाहिये, इसी तरह छटे स्थान में चन्द्रमा भी न हो तो गोधूली लग्न शुद्ध होता है।

गोधूली लग्न विचार

मार्ग, पोष, माघ और फाल्गुन महीनों में संध्या के समय सूर्य गोलक के समान दृष्टिगोचर होने पर जो लग्न होता है, वह गोधूली लग्न होता है। इसी प्रकार चैत्र, वैसाख, ज्येष्ठ और आषाढ़ महीनों में सूर्य आधा अस्त हो जाने पर जो लग्न हो उस को गोधूली लग्न कहते हैं। वैसे ही श्रावण भाद्रपद आश्विन और कार्तिक महीनों में सूर्य सम्पूर्ण अस्त हो जाने पर जो लग्न होगा वह गोधूली लग्न कहाता है।

कुल देवता स्थापन मुहूर्त—अश्वि. रो. पुष्य. उफा. ह. चि. स्वा. अनु. उषा. उभा. रे. इन नक्षत्रों में चं. बुध. वृ. शु. वारो में और शुभ तिथियों में और स्थिर लग्न में भद्रादि दोष रहित समय में शुभ होता है।

विवाह तैल सँख्या चक्रम्

वर और कन्या की राशि द्वारा नीचे लिखे चक्र से तैल संख्या जाने।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	राशि
७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७	तैल संख्या

वधू प्रवेश मुहूर्त विचार

विवाह दिन से २।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२।१४।१६ इन दिनों में और स्थिर लग्न में वधु प्रवेश शुभ होता है उपरोक्त दिनों में तिथि और नक्षत्रादियों का नियम नहीं होता, यदि ऊपर कहे हुए दिनों में वधू प्रवेश न कर सके तो विषम दिनों में विषम महीनों में और विषम वर्ष में, अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चित्रा. स्वा. अनु. मू. उत्तरा ३ श्र. ध-रे-इन नक्षत्रों में चं. बुध वृ. शु. शनि वारों में २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३। इन तिथियों में, ५।८।११। लग्नों में लग्न से ४।८। स्थान शुद्ध होने पर भद्रा व्यतिपातादि दोषरहित समय में और रात्रि के समय वधू प्रवेश शुभ कहा है।

द्विरागमनम्

विवाह से विषम महीनों वर्षों में, वै. मार्ग. फा. महीनों में अश्वि रो. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. उत्तरा ३ अनु. मू. श्र. ध श. रे. नक्षत्रों में. च. वृ. शु. वारों में शुभ होता है बु. श मध्यम हैं, रिक्तारहित तिथियों में और २।३।५।११ लग्नों में भद्रादि दोष रहित समय में शुभ कहा है सन्मुख और दाहिने शुक्र का इसमें दोष होता है, रेवती नक्षत्र से मृगशिर नक्षत्र तक चन्द्रमा रहने से सन्मुख और दाहिने शुक्र का दोष नहीं होता, विवाहादि उत्सव में तीर्थयात्रा में अथवा दुर्भिक्षादि उपद्रव में प्रतिशुक्र का दोष नहीं होता।

शुक्रास्ते बर्ज्य कर्माणि

बावली, बगीचा, तालाव, कूप, मकान इनका आरम्भ और इनकी प्रतिष्ठा व्रतारम्भ व्रतोद्यापन महादान सोम-याग, अष्टकाश्राद्ध, गोदान, नवान्नेष्टि, प्याऊ, प्रथम श्रावणीकर्म नीलवृषभत्याग जातकर्म, नामकर्म, मुण्डन संस्कार, देवता-स्थापन, दीक्षा-यज्ञोपवीत, विवाह, अपूर्व देव-दर्शन, सन्यास, अग्निहोत्र, अभिषेक, समावर्तन, चातुर्मास्यप्रयोग, कर्णवेध, विद्यारम्भ, नृपदर्शन, इन कर्मों को शुक्र के अस्त में गुरु के अस्त में और मलमास में नहीं करना चाहिए

नगर निवासे शुभ विचार

७ नक्षत्र मस्तक पर, ७ नक्षत्र पृष्ठ पर, फिर ७ नक्षत्र हृदय पर और ७ नक्षत्र पादों पर धरे, यदि अपना नक्षत्र मस्तक पर पड़े तो धनी मानी, पीठ पर पड़ने से हीनता और धन हानि, हृदय पर सुखसम्पति, तथा पादों पर पड़े तो भ्रमणशील रहता है।

भूमेः शुभाशुभ विचार—नींव खोदते समय यदि काली ईटें देखने में आवें तो शुभ जानो, हड्डी अथवा केशादि तथा कोयलादि देखने में आवे तो शुभ, नहीं होता है।

लत्ता दोष

सूर्य	चंद्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
१२	७	३	२२	६	२४	८	९
धन हानि	शुभ	मृत्यु	शुभ	बंधु-नाश	कार्य-नाश	कुल-क्षय	मरण

जैसे सूर्य स्थित नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र यदि १२वां हो तो सूर्य की लत्ता, एवं पूर्ण चन्द्र के दिन नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र ७ वां हो तो चन्द्रमा की लत्ता जाने ॥

पात दोष गुरु जांगल, कलिंग बंग और मगध में अतिनिन्दित है।

अश्विन	भर	कृति	रोहि	मृग	आर्द्रा	पुन	विशा	अनु	ज्येष्ठ	उष	श्रव	धनि	शत	पूभा
मघा	हस्त	स्वा	मूल	मघा	रोहि	रोहि	७फा	उषा	मृग	उष	स्वा	मृग	रोहि	उफा
अनु	उफा	उफ	००	हस्त	मृग	उषा	उषा	००	मघा	अनु	००	स्वा	हस्त	हस्त
रेव	उभा	००	००	मृग	उफा	००	००	००	मूल	००	००	मूल	उषा	अनु
००	००	००	००	००	अनु	००	००	००	रेव	००	००	रेव	उभा	००

ऊपर के नक्षत्रों में सूर्य हो तो नीचे के नक्षत्रों को पात लगता है हर्षण, वैधृति साध्य, व्यतिपात, शूल, गंड, इन योगों के अन्त में विवाह का नक्षत्र हो तो पात लगता है।

युति दोष

जिस नक्षत्र का विवाह हो और उसी नक्षत्र पर यदि शुभ वा पाप ग्रह हो तो युति दोष होता है, अथवा चन्द्रमा की राशि में कोई ग्रह हो तो युति दोष होता है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है यह गौड़ देश में अतिनिन्दित है।

❀वेध दोष❀

रोहि	मृग	मघा	उफा	हस्त	स्व	अनु	मूल	उषा	उभा	रेव
भ	उषा	श्रव	रेव	उभा	शत	भर	पुन	मृग	हस्त	उफा

ऊपर के नक्षत्रों में से कोई विवाह का नक्षत्र हो और उसके नीचे के नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का वेध होता है। यह सर्वत्र वर्जित है।

❀विवाह नक्षत्र से सातवें ग्रह हो तो जामित्र❀

रोहि	मृग	मघा	उफा	हस्त	स्वाती	अनु	मूला	उपा	उभा	रेव
अनु	ज्ये	धनि	पूभा	उभा	अश्वि	कृति	मृग	पुन	उफा	हस्त

ऊपर के नक्षत्रों में विवाह का क्षत्र हो और नीचे के नक्षत्रों पर कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का जामित्र दोष होता है सो पाप ग्रह का जामित्र विवाह में वर्जित कहा है यह यमुना प्रांत में अतिनिंद्य है।

❀भुव पञ्चक दोष❀

रोगपं	अग्निपं	राजपं	चौरपं	मृत्युपं	वाण
८।१७	२।११	४	६।१५	१।१०	प्रदि.
२६	२०।२९	१३।२२	२४	१९।२८	
व्रते	गृहकार्ये	सेवाया	यात्रा	विवाह	कार्येषु
रवौ	भौमे	शनौ	भौमे	बुधे	बाद्धे
रात्रौ	दिवा	दिवा	रात्रौ	संध्यायां	समये

एकार्गल दोष

वि.	[illegible]	शू	गं	व्या	व	[illegible]	प	वै	यो

सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित सहित गणना करने से यदि विषम हो और इन विरुद्ध योगों में से कोई भी योग हो तो एकार्गल दोष होता है। यह काश्मीर में विशेष वर्जित है।

उप ग्रह दोष

सूर्य के नक्षत्र से, ५ वें ७ वें १० वें, १४ वें, १५ वें, ८ वें, १९ वें, [illegible] २२ वें. २४ वें, २८ वें, नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

क्रांति साम्य दोष

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला	सूर्य	चं
सिंह	मकर	धन	वृश्चिक	मीन	कुम्भ	चंद्र	सू

ऊपर व नीचे की राशि पर सूर्य व चन्द्रमा हो तो क्रान्ति-साम्य दोष जाने सो विवाह में सर्वथा वर्जित है।

दग्धा तिथि दोष

वैशा	ज्येष्ठ	अषाढ़	मार्ग	कार्ति	पौष	मास
श्रा	फाल्गुण	आश्विन	भांद्र	माघ	चैत्र	मास
६	४	८	१०	१२	२	तिथयः

इन २ मासों में ये २ दग्ध होती हैं सो विवाह में वर्जित कहीं है मध्य देश में त्याज्य हैं।

लत्तादि दोषाणां परिहारवाक्यानि-लत्ता मालवके (उज्जैनादि) देशे पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र बांगर) जांगले (फिरोजपुर इत्यादी) । एकार्गले च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् उपग्रहर्क्षे कुरु वाल्हिकेषु (आगरा आदि) कलिंगवंगेषु (जगन्नाथपुरी, बंगाल, अयोध्या च पातिते भम् ॥ सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वे: लत्ताभं त्यजेत् विद्धकिल सर्वदेशे युतिदोषो भवेद् गौड़े (बंगाल) जामित्रस्य च यामुने (यमुना के प्रांत) । मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः। युतिपरिहार-स्वर्क्षस्थः स्वोच्चगश्चंद्रो मित्रक्षेत्रगतोपिवा। गुरुश्च स्वीयवर्गस्थो वली केन्द्रगतो विधुः । लत्तापातं उपग्रह परिहारः-यन्संख्यं चरणं खेट स्तत्संख्यं चरणं त्यजेत् । लत्तोपग्रहदानेषु त्याज्या नैवाऽन्ययंपरे। परिहार-लत्तोपग्रहजामित्रयांतैकार्गलकर्त्तरी । एते दोषा विनश्यंति लग्नेऽर्के दुर्बलान्विते ॥

भूमी सुप्तज्ञानम्

संक्रांतिमिति दिन पांचवें ५ सप्तम ७ नवमें ९ जोय। दश १० इक्कीस २१ चौवीसवें षट दिन पृथ्वीसोय।

आवश्यके त्याज्य घटिका

पंचमेबाण ५घट्याश्चसप्तमेरुद्र ११ संज्ञका। नवमे ऋषव७श्चैवदशमे चषट् ६ नाड़िका: एक विशेयम१४श्चैव चतुर्विशेदश १० नाड़िकाघटिका वर्ज्यनीयाश्च भूमीकर्मणिसर्वदा ।

काकिणी विचार

अवर्ग(१) कवर्ग (२)चवर्ग(३)टवर्ग (४)तवर्ग (५)पवर्ग (६) यवर्ग (७) शवर्ग (८) इन आठ प्रकार के वर्गों में से मनुष्य का नाम जिस वर्ग की सख्या में हो उस संख्या को २ से गुणकर ग्राम के वर्ग की संख्या को मिलाकर८का भाग दें तो मनुष्य की काकिणी होगी। इसी तरह ग्राम का नाम जिस वर्ग संख्या में हो उसको द्विगुण कर अपने नाम की वर्ग संख्या को युक्त कर८ का भाग दे तो ग्राम की काकिणी होगी। इसमें से जिसकी काकिणी अधिक हो वह दूसरे का ऋणी होता है, अर्थात् मनुष्य की काकिणी से ग्राम की काकिणी सदा अधिक होनी चाहिए। ग्राम के निवास को जानकर गृहारम्भ के मुहूर्त का विचार करें।

गृहारम्भ मुहूर्त विचार

वै. श्रा. मार्ग माघ. फाल्गु. महीनेगृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे है। भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम है २।३।५।७।१०।११।१३। इन तिथियों में से चं.बु.गु.श. वारों में, रो. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. उत्तरा ३ध.श.रे. नक्षत्रों में २।३। ५।६।८।९।११।१२। लग्नों में अग्निवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभ और ३।६।११ स्थानों में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है।

गृहारम्भ मूहूर्त के दिन सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र से अभिजित नक्षत्र सहित दिन का. नक्षत्र जितनी संख्या पर आवे नीचे लिखे चक्र के अनुसार उतनी संख्या पर जो अंक हो, उसका फल जान लें।

सूर्यभात् वृषवास्तु चक्र

शीर्षे	अग्रपादे	पृष्ठपादे	पृष्टे	द. कु	पुच्छ	वामकुक्षौ	मुखे
३	४	४	३	४	३	४	३
दाह	नाश	स्थिर	श्री	लाभ	नाश	नेष्ट	पीड़ा

द्वारशाखा स्थापन मुहूर्तः

अश्वि.रो.मृ.पुष्य.हस्त.स्वा.श्रव. उत्तरा ३ इन नक्षत्रों में शुभ तिथि शुभ वारों में द्वारशाखा देहली [दलीज] स्थापन करना शुभ है।

सूर्य भात् देहली चक्र

शिरसि	कोण	शाखाया	देहल्यां	मध्य	स्थानानि
४	८	८	३	४	नक्षत्राणि
लक्ष्मी	ऊद्वेग	देहसौख्य	मृत्यु	सौख्य	फलम

जलाशय देवालय प्रतिष्ठा

अश्वि. मृग. पु. पुष्य. चि. स्वा. अनु. अभि. श्रव. ध. श. रेव. एषुभेषु. २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ एषु तिथिषु भौमवार बिना उत्तरायणे गुरु. चन्द्र, शुक्र दृश्ये: शभे लग्ने वा स्थिर लग्ने प्रतिष्ठा कार्या। तत्स्वामीनक्षत्रे तिथि-मुहूर्त-लग्ने वा स्थिर लग्ने । कुम्भे ब्रह्मा। कन्यायां विष्णु। मिथुने रुद्र:। सिंहे सूर्यः मिथुन कन्या धनु मीनेषु देव्य:। मेष कर्क तुला मकरेषु योगिनी। वृष सिंह वृश्चिक कुम्भेषु सर्व देवानां प्रतिष्ठा कार्या।

कूप चक्र—नक्षत्र वारो तिथि संयक्ता वेदाहतं तद् गणकेनकार्यम्। एकावशिष्टं च जलंहिनागे द्वाभ्यां च शेषं सलिलंच स्वर्गे। त्रिश. शेषे भुवसस्थितं च भूसंस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञा।

इशान्ये पुष्टि:	पूर्वे ऐश्वर्य्यम्	अग्नेये पुत्रनाश:
उत्तरे सुखम्	मध्येऽर्थनाश:	दक्षिणे स्त्रीनाश
वायव्ये शत्रुभयम्	पश्चिमे धनलाभ:	नैऋत्ये स्वामीनाश

गृह की जिस दिशा में कुप लगाया जावे उस का फल ऊपर लिखे चक्र से जान ले। जैसे घर की उत्तर दिशा में सुख इत्यादि।

सूर्यभात्कूप जल विचार:

३	३	३	३	३	३	३	३	३
स्वादु जल	खंडित बल	स्वादु जल	क्षय जल	स्वादु जल	क्षार जल	शिला	मिष्ट जल	क्षार जल

राहू मुख ज्ञानम्

देवालय प्रारम्भ में मीनादि से तीन २ राशिपर्यन्त सूर्य की स्थितिवश से ईशाणादि विपरीत विदिशा के क्रम से राहू का मुख होता है। इसी तरह गेहविधि में सिंहादि तीन २ राशि की स्थिति वश ऊपर कहे हुए क्रम से राहु का मुख कहा है मुख की विदिशा से जो पृष्ठ की विदिशा हो उसमें खात करना शुभ है।

खात चक्रम्

इशान्ये	वायव्ये	नैऋत्ये	आग्नेये	राहोर्मुखम्
१२।१।२	३।४।५	६।७।८	९।१०।११	देवालये
५।६।७	८।९।१०	११।१२।१	२।३।४	गेहविधो
१०।११।१२	१।२।३	४।५।६	७।८।९	जलाशये
आग्नेये	ईशाने	वायव्ये	नैऋत्ये	कोणा:
खाताशुभ	खात शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ

नूतनग्रह प्रवेश

वै-ज्ये. माघ फाल्गुण महीनों में रा. रे, चि, अनु. उत्तरा३नक्षत्रोंमें २।३।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२।१३।१५ तिथियों में चं, बु, बृ, शु, श वारों में अपने जन्म लग्न वा जन्म राशि से आठवां लग्न न हो। उपचय लग्न में वा स्वजन्मलग्नात् एते उपचया ३।६।१०।११, स्थिर लग्न में लग्न से ४।८ स्थान शुद्ध होनेपर पर्व-रहित दिनमें लग्न से १।२।५।७।९।१० स्थानों में शुभ और ३।६।११ में पाप ग्रह हों तो नूतनगह में प्रवेश शुभ होता है पुरातन गृहप्रवेश में श्रा, का, मार्ग, मासेषु तु अश्वि, पुष्य मृ, श्र, घ, एषु-भेषु चापि शुभ:। आवश्यके गुरु शुक्रास्तं न विचारणीयम्।

सूर्य भात्प्रवेश समय कुम्भ चक्र

मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	गुदे	कंठे
१	४	४	४	४	४	[illegible]	३
अग्निदाह	उद्वेग	लाभ	कीर्ति	कलह	नाश	स्थिर	स्थिर

विपणि मुहूर्त

अ. रो. मृ. पुष्य-उत्तर। ३. ह. चि. अनु. रेव, एषु भेषु, लग्न चन्द्रसिते व्ययाष्टरहितै: पापै: ३।११।१० स्थितै:

शुभैः स्थिरलग्नं भौमवारं च विना रिक्ता रहित तिथौहट स्थित्वा क्रय विक्रयारम्भः प्रशस्तः । हट्टचक्रः—नीचे लिखेचक्रद्वाराउस दिन सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उसे दुकान खोलने के नक्षत्र तक गिनकर चक्र से शुभाशुभ फल जाने

हट्ट चक्र

नक्षत्र	२	२	४	४	३	४	४	४
फल	सौख्य	विक्रयनाश	धननाश	सुख	श्रेष्ठ	चोभ	हानि	शुभ

नौकरी का मुहूर्त—अ. मृ. पुष्य. ह. चि. ऽनु. रे. एषु भेषुरिक्ता रहित तिथिषु सु. बु. वृ. शु. वारेषुशुभ लग्ने १०, ११ स्थान में सूर्य भौम वा स्वामी सेवककी राशीश और योनि से मित्रता हो ।

ब्रहीपश्चारम्भः मुहूर्त—अ. रो. मृ. पुन. पुष्य उत्तरा ३. ह. चि. ऽनु. श्र. रे. एषु. भेषुरिक्ता रहित तिथिषु सू. चं. बु. वृ शु. वारेषु लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्ट रहित पापैः केन्द्र कोणगैं शुभः स्यात् ।

हलप्रवाहणम्—अ. रोहि. मृग. पुन. पुष्य. उत्तरा ३. हस्त. चित्रा स्वा. वि. अनु. मूल. श्र. धनि. श. रे. ऐषुभेषु २।३।५।७।१०।१२।१३ तिथिषु चन्द्र, वुध. बृह. शुक्रवारेषु २।३।१।८।६।१२ लग्नेषु व्यतिपात पर्व रहित काले शुभंस्यात् ।

सूर्य भात् हलचक्रम्

३	३	३	५	३	५	३	३	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	ऽशुभ	शुभ	अशु	शुभ	अशु	शुभ	फलम्

अथ बीज बोजने का मुहूर्त—अ, रो, मृ, पुन, पुष्य, म. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. ऽनु. मूल. धनि. रे. एषुभेषु चन्द्र, बुध, वृह, शुक्र वा रेषु २।३।५।७।१०।११।१३। एषु तिथिषु शुभेलग्ने शुभंस्यात् ।

राहु भाद बीज वापन चक्रम्

८	३	१	३	१	३	१	३	४	नक्षत्र
अशु.	शुभ	अशु.	शुभ	अशु.	शुभ	अशु.	शुभ	अशु.	फलम्

अथ खेती काटनेका मुहूर्त—भ, कृ मृ, आर्द्रा पुष्य श्ले, म, पूर्वा ३. उत्तरा ३ ह, चि, स्वा ज्ये, मूला, श्र धनि एषुभेषु, शुभवासरे, शुभलग्ने शुभं स्यात् ।

अथ खेतों से अन्न निकालने का मुहूर्त

रो. म. पफा. उफा. अनु. ज्ये. मू श्र. ऐषुभेषु चन्द्र बुध, वृह, शुक्र, वारेषु २।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ तिथिषु शुभलग्ने कण मर्दनं स्यात् ।

अथ अन्न घर लाने का मुहूर्त

अश्वि, रो मृ. पुष्य. म, उत्तरा ३ह, चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. रे एषभेष चं. बु. वृ. शु. वारेषु २।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु शुभेलग्नेशुभंस्यात ।

अथ नवान्न भक्षणम्

अश्वि. रो, मृ, पुन, पुष्य, ह. चि. स्वा. अनु श्र. ध. श. रे, एषुभेषु शुभवारेषु २।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु शुभेलग्नेशुभस्यात् ।

अथ अन्न बेचने का मुहूर्त

कृ. रो उत्तरा ३. चि वि. अनु. ज्ये. मू एषभेषु २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु, शुभवासरेशभस्यलग्नेशुभंस्यात् ।

अथ अन्न खरीदने का मुहूत

रो ध.श. उत्तरा ३. एषुभेषु चन्द्र. बु.वृ. शु. वारेषु २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३ तिथिषशुभेलग्ने शुभस्यात् ।

अथ बीज संग्रह मुहूर्त

ह चि स्वा.पुन.रो.मृ.श्र. ध. एषुभषु २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ एषु तिथिषु चं.बु.वृ.शु.वारेषुशुभेलग्नेशुभस्यात्

अथ लता औषधि लगाने का मुहूर्त

अश्वि.रो मृ आर्द्रा. पुष्य. मघा. उ.३ ह. चि. वि एषुभेषु.चं.बु.वृ.शु. वारेषु शुभ तिथौ शुभलग्ने शुभंस्यात् ।

अथ अर्जी देने का मुहूर्त

'भर. मू. आर्द्रा श्ले म. ज्ये एषुभेषु श. म. वारौ ४।६।१४ तिथौ क्रूर चन्द्रे सति शुभं स्यात् ।

अथ होलाष्टकम्

शुक्ला ऽष्टमी समारभ्य फालगुनस्य दिनाष्टकम्
विपाशैरावती तीरे शतुद्राश्य त्रिपुष्करे ।
विवाहादि शुभे नेष्टं होलिका प्राग दिनाष्टकम् ॥

अथ होम अग्निवास:

शुक्लादि तिथि वर्तमान वार दोनों को जोड़ कर एक और मिलाओ ४ का भागदो' यदि ३ या चार बचें तो अग्नि का वास पृथ्वी पर जानना होम में सुख होता है यदि १ या दो बचे तो अग्नि का वास वर्ग वा पाताल में होता है होम में प्राण और धन का नाश करता है ।

अथ ग्रहों के मुख में आहुति

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिने प्रथम इसे सूर्य मुख में, इसी तरह सब ग्रहों के मुख में आहुति जाननी ।

सु	बु	शु	श	चं	मं	वृ	रा	केतु	ग्रह
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
शुभ	शुभ	शुभ	ऽशुभ	शुभ	ऽशुभ	शुभ	ऽशुभ	ऽशुभ	फल

अथ ग्रहाणां होमर्येसमिध: । अर्क:पलाश: खदिरस्त्वपामर्गोऽर्थपिप्पल: ॥ औदुम्बर:शमीदूर्वाकुशाश्चसमिध: क्रमादिति ॥ सन्तानप्रदमंत्रो । देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगतपते । देही मे तनयं कृशणत्वामहं शरणंगत: । कौशल्याशुशुभेतेन पुत्रेणामिततेजसा । यथात्वरेहणदेवान्नामदितवंज्रपाणिना ॥ सपादलक्ष जप: । तिल पायसघृतैंदशांशहवनं । तद्दशांशतर्पणम् । तद्दशांश ब्राह्मण भोजनम् ।

यात्रायां द्वादशराशिगत चन्द्र फलम् आद्यचन्द्र:श्रियं कुर्याद्द्वितीये धनधान्यद: । तृतीये राजसन्मानं चतुर्थेकलहागम: । १ ॥ पंचमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे सम्पत्तिरुत्तमा ॥ सप्तमे सुखकृच्चन्द्रो ह्यष्टमे मरणं भवेत् (कष्टं वा) ।९ नं भाग्यवृद्धिश्च दशमे सुखसंपद: । एकादशे सर्वलाभोद्वादशे चाशुभावह: ॥ आवश्यके द्वादशगतेऽपि यात्रा कार्या निष्टचन्द्रदानत् । दधि तण्डुलश्वेतघृतरजतमुक्तादय: ॥ कदा द्वादशस्थस्यश्चन्द्रनाशुभद: ॥ आधाने-सम्प्रदाने च विवाहे राजविग्रहे ॥ पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशग: शुभ: । अभिषेके निषेके च गृहे पुंसवनादिषु । यात्रा युद्धे विवाहे च चन्द्रो द्वादशग: शुभ: ।

अथ सर्वेषां श्राद्धानां कालविभाग: पूर्वाह्णे दैविकं श्रादमपरान्हे तु पार्वणम् । एकोदिष्टं तु मध्यान्हे प्रातर्वृद्धिनिमित्तके शुक्लपक्षस्य पूर्वान्हे श्राद्धंकुर्याद्विचक्षण: ॥ कृष्णपक्षेऽपराह्णे च रौहणं न तु लङ्घयेत् ॥ क्षयाहे विशेष; । न ज्ञायते मृताहश्चेत्प्रमीते प्रोषिते सति । मासश्चेत्प्रतिविज्ञातस्तद्दर्शस्यान्मृतेऽहनि । श्राद्धविघ्ननिर्णय: । श्राद्धविघ्न समुत्पन्ने ह्यविज्ञाते मृतेऽहनि । एकादश्यां तु कर्तव्य कृष्णपक्षे विशेषत: ॥ इति ॥

गयाश्राद्धकाल: ॥ मीने मेषेस्थिते सूर्ये कन्यायां कार्मुके घटे दुर्लभं त्रिषु लोकेषु गयायां पिण्डपातनम् । मकरे वर्तमाने च ग्रहणे चन्द्रसूर्ययो: दुर्लभं त्रि० । गयायां सर्वकालेषु पिण्डं दद्याद्विचक्षण: । अधिमासे जन्मदिने अस्ते च गुरुशुक्रयो: ॥ न त्यक्तव्यं गया श्राद्ध सिंहस्थे च बृहस्पतौ ।

॥ यात्रा-मुहूर्त विचार ॥

किसी कार्य के उद्देश्य से देशान्तर गमन को यात्रा कहते हैं । कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा और २।३।५।७।१०।११।१३इन तिथियों में अश्वि, मृ, पुन, पुष्य,, अनु, ह, श्र, ध, रे इन नक्षत्रों में तथा चौर,वाण, भद्रा; वैधृति, व्यतिपात और मासांत दिनादि दोषरहित समय में, यात्रा करे यात्रा करने से पूर्व क्रोध और मैथुन कर्म का त्याग करना चाहिये ।

दिक्शूल ज्ञानचक्र

ईशाने बु	पूर्वे श. चं	आग्नेये चं बृ.
उत्तरे बु मं	दिक्शुल	दक्षिणे बृ
वायव्ये बु. सू	पश्चिमे शु. सू	नैऋत्ये शु. बृह

योगिनीवास ज्ञानचक्र

ईशाने ८।३०	पूर्वे १।९	आग्नेये ३।११
उत्तरे २।१०	योगिनी	दक्षिणे ५।१३
वायव्ये ७।१५	पश्चिमे ६।१४	नैऋत्ये ४।१२

कालपाश ज्ञानचक्र

ईशाने	पूर्वे शनि	आग्नेये शक्र
उत्तरे सूर्य	कालपाश	दक्षिणे गुरु
वायव्ये चन्द्र	पश्चिमे मङ्गल	नैऋत्ये बुध

चन्द्रवास ज्ञानचक्र

पूर्वे	दक्षि.	पश्चि	उत्तरे
मेष	वृष	मिथु.	कर्क
सिंह	क.	तुला	वृ.
धन	मकर	कुम्भ	मीन

यात्रासमय दिक्शूल विचार

जिस दिशा में दिक्शूल हो उस दिशा में यात्रा न करे । यदि अवश्य जाना हो तो उस वार के पदार्थ को भक्षन कर यात्रा करने से दिक्शूल दोष दूर हो जाता है सूर्यवारे घृतं प्राश्यं चन्द्र वारे पयस्तथा । गुड़मंगारके वारे बुधवारे तिलानपि । दधि प्राश्यं शुक्रवारे गुरुवारे यवानपि । माषान् भुक्त्वा मंदवारे गच्छेच्छूलं न दोषभुक् ।

योगिनीवास विचार

प्रतिपदादि तिथियों से चक्र में योगिनी का वास जाने और जाने वाली दिशा से यदि पीठ की ओर अथवा बाईं तरफ योगिनी हो तो अर्थसिद्धि और सुख प्राप्त होता है, यदि संमुख और दाहिनी तरफ योगिनी हो जाये तो कष्ट-प्राप्ति और धन की हानि होती है ।

कालपाश विचार

सूर्यादिवारों में जिस दिशा में काल का वास हो उसकी संमुख वाली दिशा में पाश रहता है किंतु रात में काल का वास दिन की दिशा से विपरीत दिशा में होता है (चिंतामणी) जानेवाली दिशा मे काल का दाहिनी तरफ और पाश का बाई तरफ होना शुभदायक होता है

चन्द्रवास विचार

जाने वाली दिशा में चन्द्रमा का वास संमुख और दाहिनी ओर को हो तो धन का लाभ और सुख होता है । यदि पीठ की ओर अथव बाईं तरफ चन्द्रवास हो तो कष्ट और धन की हानि होती है ।

भद्राफल—विवादे शस्त्रसंहारे भयार्ते राजदर्शने । रोगर्ते वैद्यगमने भद्रा श्रेष्टतम स्मृता ॥ **सूर्यवास फल** एक पहर रात के रहने से लेकर पहर दिन चढ़े तक सूर्य का वास पूर्व में होता है, फिर दोपहर तक दक्षिण में होता है । इसके बाद एक पहर दिन रहने में पहर रात गई तक सूर्य का वास पश्चिम में रहता है, फिर एक पहर रात रहने तक उत्तर में रहता है । यात्राके समय दाहिना और बायां सूर्य शुभ होता है । प्रवेशमें सम्मुख और पीछे सूर्य रहे तो शुभ होता है ।

समय शूल ज्ञान—उषा काल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्ध रात्रि में उत्तर को और मध्यान्ह काल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिये ।

सम्मुख चन्द्रमा का विशेष फल—करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष संक्रातिदोष, तिथिदोप, कुलिक दोष, प्रहार्द्ध वारवेला दोष, मंगल, शनि, रवि, राहु केतु के दोष को सम्मुख चन्द्रमा दूर करता है ।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठा कर चले इसी तरह सवारी पर चढ़े यात्रा सफल होगी ।

पंचक वर्जित कर्म—पंचकों में खाट बनाना, प्रेत का दाह, प्रेत क्रिया, काष्ठ, घास आदि का लेना, दक्षिण दिशा में गमन इत्यादि कार्य नहीं करने चाहिये ।

दिशा में विशेष समय का विचार

(वसिष्ट) पूर्वाह्णेप्युत्तरां गच्छेत्प्राचीमध्य दिन तथा । दक्षिणां चापरान्हे तु पश्चिमामर्धरात्रके ॥ न तत्रांगारको ऽनिष्टिव्यतिपातो न वधृति: । सिध्यन्ति सर्वकार्याणि यात्रायां दक्षिण रवि: ॥

दिन में चतुर्घटिका

रवि	चन्द्र	मङ्गल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	घटी
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	०३।४५
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	०७।३०
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	११।१५
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१५।००
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१८।४५
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	२२।३०
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	२६।१५
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३०।००

रात्रि में चतुर्घटिका

रवि	चन्द्र.	मङ्गल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि	घटी शु.
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	०३।४५
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	०७।३०
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	११।१५
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	१५।००
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१८।४५
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	२२।३०
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	२६।१५
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	३०।००

काल होरा ज्ञान चक्र और उसका फल

रवि	चं	मं	बु	बृ	शु	श
सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
शु	श	सू	चं	मं	बु	बृ
बु	बृ	शु	श	सू	चं	मं
चं	मं	बु	बृ	शु	श	सू
श	सू	चं	मं	बु	बृ	शु
बृ	शु	श	सू	चं	मं	बु
मं	बु	बृ	शु	श	सू	चं
सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
शु	श	सू	चं	मं	बु	बृ
बु	बृ	शु	श	सू	चं	मं
चं	मं	बु	बृ	शु	श	सू
श	सू	चं	मं	बु	बृ	शु
बृ	शु	श	सू	चं	मं	बु
मं	बु	बृ	शु	श	सू	चं
सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
शु	श	सू	चं	मं	बु	बृ
बु	बृ	शु	श	सू	चं	मं
चं	मं	बु	बृ	शु	श	सू
श	सू	चं	मं	बु	बृ	शु
बृ	शु	श	सू	चं	मं	बु
मं	बु	बृ	शु	श	सू	चं
सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
शु	श	सू	चं	मं	बु	बृ
बु	बृ	शु	श	सू	चं	मं

जिस दिन और जिस समय की काल होरा देखनी हो तो काल होराज्ञान चक्र से देख लें। जैसे रविवार को पहली काल होरा सूर्य का ढाई घड़ी तक होता है, उसके बाद ५ घड़ी तक शुक्र की कालहोरा होती है। इस प्रकार सब ग्रहों की कालहोरा जान लेनी चाहिए। ऋषियों ने होरा को क्षणवार कहा है। बार से भी क्षणवार में ही प्रधानता मानी गई है। इस लिए वार और क्षणवार दोनों अनुकूल हों। तभी किसी कार्य को करना चाहिये। आवश्यक में यदि वार अनुकूल नहीं हो तो क्षण वार (होरा) की अनुकूलता देखकर कार्य करना चाहिए। जैसे पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो तो वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इस लिए जिस समय सोम की होरा (क्षणवार) हो उस समय रविवार में पश्चिम की यात्रा की जा सकती है।

होरा फल

सूर्य की होरा—टेंडर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने के लिए अच्छी होती है। चंद्र की होरा—सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। मंगल की होरा—युद्ध यात्रा, कर्ज देना, सभा सोसाईटी में जाना आना और मुकदमा के कार्यों में अच्छी होती है। बुध की होरा—विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार नवीनलेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। गुरु की होरा - विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलना, कोषसंग्रह, नवीन काव्यलेखन आदि के लिए शुभ है। शुक्र की होरा—यात्रा, भूषण, नवीन शस्त्र धारण, सौभाग्य वर्धक कार्य के लिए शुभ है। शनि की होरा—भूमि मकान नींव नूतन मशीनरी मिलन कार्यारंम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

अथ केरल प्रश्न चक्रम्

प्रातः काले वदत्पुष्प मध्यान्हे तु फल वदेत् ।। सायंकाले वदेन्नद्यः रात्रौतु देवतां वदेत् ।।१।।

ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष	ध्वजादि अष्टक वर्गाः उच्चारित प्रश्नाक्षराणि
अ इ उ ए	क ख ग घ	च छ ज झ	ट ठ ड ढ	त थ द ध	प फ ब भ	य र ल	श ष स	
ओ	ङ	ञ	ण	न	म	व	ह	
अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	सत्यासत्य प्रश्न निर्णयः
धातु	धातु	मूल	जीव	जीव	जीव	मन	जीव	धातुमूल जीव ज्ञान
कुशल	रोग	म	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	प्रवासी सुख दुःख
स्थिर	महाकष्ट	चंचल	चंचल	महाकष्ट	कष्ट	सुख	कष्ट	प्रवासी चर स्थिरादिज्ञानम्
समीप	समीप	दूरस्थ	पुनर्गत	मार्गस्थ	मार्गस्थ	दूरस्थ	पुनर्गत	प्रवासी गमागम ज्ञानम्
स्वल्प	सप्त	एकविंश	एकमास	४५ दिन	दो मास	दो मास	एक वर्ष	प्रवासी दिनावधि ज्ञानम्
पत्र	अस्थि	फल	काष्ठ	धान्य	तृण	जीव	पुष्प	मुष्ठि प्रश्ने द्रव्य ज्ञानम्
गोधूम	तिल	पीतान्न	दाल	तण्डुल	चणक	गुड़	यव	गोधूमादि धान्य ज्ञानम्
कुसुम्भ	श्वेतांग	लोहित	पांडु	पीत	आकाश	श्याम	मिश्र	मुष्ठि प्रश्ने वर्ण ज्ञानम्
सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	रोगी प्रश्न सुखादि ज्ञानम्
४५ दिन	दो मास	४५ दिन	१ मास	१५ दिन	१ मास	७ दिन	२ मास	कष्ट दिनादि ज्ञानम्
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	नष्ट लाभालाभ ज्ञानम्
पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	नष्ट वस्तुदिक ज्ञानम्
ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	वणिक	नौकर	नीच	नाई	चौर जाति प्रश्न ज्ञानम्
उखल	अग्निगृहे	अरण्य	अन्तरिक्ष	भांडगते	काष्ठगते	गृहे	भूमिमध्ये	चोरित द्रव्य स्थानम्
भैरव	दुर्गा	सूर्य	हनुमन्त	रुद्रगण	सरस्वती	गणेश	[illegible]	देव पूजा उपासना दि
आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	शत्रु आगमन प्रश्न ज्ञानम्
जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	जय हानि प्रश्न ज्ञानम्
न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षणं	न मोक्ष	मोक्षण	बन्दी मोक्ष प्रश्न ज्ञानम्
७ दिन	१ वर्ष	१५ दिन	६ मास	१ मास	६ मास	३ मास	१ वर्ष	बन्दी मोक्ष अवधि
स्थिर	न सिद्धि	कलह	दीर्घकाल	त्वरित	दीर्घकाल	स्थिर	न सिद्धि	कार्यसिद्धि भाव्यान नवा
शुभः	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभः	कलह	विवाह प्रश्न शुभाशुभम्
पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र व कन्या प्राप्ति ज्ञानम्
१००वर्ष	१ वर्ष	१००वर्ष	२० वर्ष	६० वर्ष	१२ वर्ष	४५ वर्ष	६ वर्ष	आयु प्रश्न आयु ज्ञानम्
लाभ	न लाभ	लाभ	लाभ	लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	धन लाभ प्रश्न लाभ लाभ
विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	वर्षा प्रश्न अतिवृष्टि नवा
७ दिन	७ दिन	३० दिन	२० दिन	१० मास	२ मास	२ मास	२मास	वर्षा वर्षण दिन दि

ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा का ज्ञान चक्र

नीचे लिखे चक्रों में अपने जन्म नक्षत्र को देखें, जिस ग्रह के नीचे जन्म नक्षत्र होगा उसी ग्रह की दशा जन्म समय में होगी और प्रत्येक ग्रह की दशा के वर्ष भी चक्र में लिखे हुए हैं।

दशा का भुक्त भोग्य ज्ञान—जन्म समय जो नक्षत्र हो उसका भयात (जन्म समय तक जितना नक्षत्र व्यतीत हो गया हो) और भभोग (कुल नक्षत्र) बनाओ फिर उसके पलादि बनाकर भयात के पलों को जन्म दशा के वर्षों से गुणा दो और भभोग के पलों से भाग दो, लब्ध व्यतीत दशा के वर्ष आवेंगे। शेष को १२ से गुणा कर भभोग से भाग दो. लब्ध मास [illegible] शेष को ३० से गुणा कर भभोग का भाग दो, लब्ध दिन आवेंगे, शेष को ६० से गुणा कर भभोग का भाग दो लब्ध घड़ी आवेंगी, शेष को ६० से गुणा कर भभोग का भाग दो, लब्ध पल इत्यादि आवेंगे। यह भुक्त दशा के वर्ष मासादि आवेंगे, जन्म समय की दशा के कुल वर्षों में से घटा दो, लब्ध भोग्य दशा आवेगी, इसमें आगामी ग्रहों की दशा के वर्षों को जोड़ते जाने से दशा चक्र हो जावेगा।

संस्कार करके ही वहां का सूर्योदय काल निकाल
ा कि प्रायः अशुद्ध रहता हो। अतः पाठकों की
लिए पचाँग दिवाकर में भिन्न अक्षांशों का मध्यम
र्योदय काल (लोकल मीन टाईम) दिया जा रहा
रान्तरादि सभी संस्कार किए हुए हैं। इस में
ष्ट स्थान का देशान्तर संस्कार (पृष्ट ८९ पर)
वियुक्त करने से उस अक्षांश (स्थान) का सूर्योदय
डर्ड टाईम से निकल आएगा।

शहर का आपको सूर्योदय काल निकालना है।
ाकर पृष्ठ ८९ से ९१ पर उस शहर का अक्षाँश
पंचांग दिवाकर पृष्ट ९ से १४ पर अभीष्ट
नीचे और जिस अंग्रेजी तारीख का आपको सूर्यो-
लना हो उस तारीख के सामने अभीष्ट शहर का
र्योदय काल दिया हुआ है। फिर उस शहर का
स्कार जो कि पंचाँग दिवाकर पृष्ठ ८९ से ९१
हुआ है। उसे + चिन्ह हो तो धन और — चिन्ह
ऋण करने से अभीष्ट शहर का सूर्योदय काल
म में आ जाएगा।

रण—जैसे आपको देहली में ८ मार्च का सूर्यो-
लना है। पंचाँग के पृष्ठ ८९ पर देहली का
८।३९ दिया हुआ है। अतः पृष्ठ ११ पर ८
ामने और ३०° के नीचे ६।१९ मध्यकालीन
दिया हुआ है। चूंकि देहली का अक्षाँश ३०° से
अंश कम है अतः इसी तारीख को यदि १०
४ मिन्ट का अन्तर पड़ा है तो डेढ़ अंश
केवल ३६ सैकण्ड का अन्तर रहेगा जो कि
कम करने पर ६।१८।२४ होगा इसमें पृष्ठ
े लिखे देहली के देशान्तर + २१'।८" होने से
र्यकाल में जमा करने से कुल ६ घण्टे ३९ मिन्ट
ण्ड अर्थात्—6 बजकर ४० मिन्ट पर सूर्योदय
होगा (३० से अधिक सैकण्ड होने पर १ मिन्ट

कारी सिद्ध हुए हैं। इनको धारण
रत्नों का चुनाव, विधि और शु
आवश्यक है। किसी विद्वान् ज्यो
उचित रहेगा।

नाम राशि	सम्बद्धग्रह	रत्न
मेष	मंगल	मूंगा
वृष	शुक्र	हीरा
मिथुन	बुध	पन्ना
कर्क	चन्द्रमा	मोती
सिंह	सूर्य	माणक
कन्या	बुध	पन्ना

ग्रह-रत्न-धारण

(१) **माणिक्य**—सूर्य की श
अंगूठी में रविवार को जब कृ
नक्षत्र हो सूर्य पूजा के
अगस्त से १४ सित
धारण करना विशे
व नेत्रादि रोगों में
(२) **मोती** Moo
प्रदान करता है।
व्यक्तियों को श्रेय
चांदी की अंगूठी

दय दे भी जानें।

विदेशों का
भारत के स्टैंडर्ड
श्यक है इसके
नोटः—पाठ
उत्तरी भारत (

अष्टोत्तरी दशा चक्र

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र	दशा
६	१५	८	१७	१०	१६	१२	२१	वर्ष
आ. पुन. पुष्य श्ले	मघा पूफा. उफा.	ह. चि. स्वा. वि	अनु ज्ये. मूल	पूषा. उषा. श्रव	धनि. शत पूभा.	उभा. रे. अ. भ.	कृ. रो. मृ.	नक्षत्र

अन्तर्दशा निकालने की रीति

जब किसी ग्रह की अन्तर्दशा निकालनी हो तो उस ग्रह के वर्षों को पृथक २ [illegible] ग्रह की दशा के वर्षों [से गु]णा कर महादशा के वर्षों से भाग दे (विंशोत्तरी १२०) (अष्टोत्तरी १०८) योगिनी ३६) भाग देने से जो अङ्क आवे अन्तर्दशा के वर्ष, मासादि आवेंगे।

चरदशा—मेष, सिंह, मिथुन, तुला, धन, कुम्भ, ओजराशि हैं। वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन [सम]राशि हैं। ओज राशियों की क्रमगणना और समराशियों की विपरीत गणना होती है। राशि का स्वामी जहां [हो] वहा तक की जितनी संख्या हो उतने वर्ष दशा के जानो। अपनी राशि में हो तो १२ वर्ष लेने, जहां उच्च [हो] उस गणना में एक और जोड़ना, नीच में एक कम करना, वृश्चिक राशि का, मंगल और केतु दोनों स्वामी हैं [और] कुम्भ राशि के शनि और राहु दोनों स्वामी हैं। इनमें जो अधिक बली हो उसको लेना चाहिए।

योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञान के लिये चक्र

मंगला १			पिंगला २			धान्या ३			भ्रामरी ४		
मा.	१२	च.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	बृ.	भा.	४८	मं.
मं.	०	१०	पि.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा	५	१०
पिं.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा	४	०	भ.	६	२०
धा.	१	०	भ्रा	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०
भ्रा	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पि.	२	०	धा.	४	०
अं. आर्द्रा. चित्रा			भ. पुनर्वसु. स्वाती			श. पुष्य. विशा.			अश्वि. श्ले. अनु. पू. भा.		

भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकटा ८		
मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पि.	५	१०
सं.	१३	१०	मं.	२	०	पि.	४	२०	धा.	८	०
मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा	१०	२०
पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा	९	१०	भ.	१३	१०
धा.	५	०	भ्रा	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
भ्रा	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सं	१८	२०
भर. मघा. ज्ये. उ. भा.			कृ. पू. फा. मू. रे.			रो. उ. फा. पू. षा.			मृग. हस्त. उ. षा.		

दशा तथा वर्ष
दशेशग्रहाः
जन्म नक्षत्र
अन्तर्दशामासादि
शुभदशा—मं. धा. भ. सि.
कष्टदशा—पिं. भ्रा. उ. सं.

ोरा ज्ञान चक्र और उसका फल

बु	वृ	शु	श
बु	वृ	शु	श
चं	मं	बु	वृ
श	सू	चं	मं
वृ	शु	श	सू
मं	बु	वृ	शु
सू	चं	मं	बु
शु	श	सू	चं
बु	वृ	शु	श
चं	मं	बु	वृ
श	सू	चं	मं
वृ	शु	श	सू
मं	बु	वृ	शु
सू	चं	मं	बु
शु	श	सू	चं
बु	वृ	शु	श
चं	मं	बु	वृ
श	सू	चं	मं
वृ	शु	श	सू
मं	बु	वृ	शु
सू	चं	म	बु
शु	श	सू	चं
बु	वृ	शु	श
चं	मं	बु	वृ
५	सू	चं	मं

जिस दिन और जिस समय की काल होरा देखनी हो तो काल होराज्ञान चक्र से देख लें। जैसे रविवार को पहली काल होरा सूर्य का ढाई घड़ी तक होता है, उसके बाद ५ घड़ी तक शुक्र की कालहोरा होती है। इस प्रकार सब ग्रहों की कालहोरा जान लेनी चाहिए। ऋषियों ने होरा को क्षणवार कहा है। बार से भी क्षणवार में ही प्रधानता मानी गई है। इस लिए वार और क्षणवार दोनों अनुकूल हों। तभी किसी कार्य को करना चाहिये। आवश्यक में यदि वार अनुकूल नहीं हो तो क्षण वार (होरा) की अनुकूलता देखकर कार्य करना चाहिए। जैसे पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो तो वारके अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इस लिए जिस समय सोम की हारा (क्षणवार) हो उस समय रविवार में पश्चिम की यात्रा की जा सकती है।

होरा फल

–टेंडर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने होती है। चंद्र की होरा—सब कार्यों के लिए गल की होरा—युद्ध यात्रा, कर्ज देना, सभा

ग्रहों की दशा अन्तर्दशा आदि का फल कहते समय यदि गोचर में शुभ ग्रहों की दृष्टि महादशा, अन्तर्दशा, और प्रत्यन्तर्दशा के स्वामियों पर हों तो कुछ अशुभ फलों का नष्ट होना भी सम्भव है। इसके विपरीत यदि अशुभ ग्रह से इन दशाओं के स्वामी युक्त वा दृष्ट हों तो अशुभ फल अधिक बढ़ेगा।

इस तरह किसी भी ग्रह का शुभ या अशुभ फल

प्रातः काल

ध्वज	धूम्र	
अ इ उ ए	क ख ग	
	ङ	
ओ		
अस्ति	नास्ति	
धातु	वातु	
कुशल	रोग	
स्थिर	महा	
समीप	समीप	
स्वल्प	सप्त	
पत्र	अस्थि	
गोधूम	निन	
कुसुम्म	श्वतांग	
सुख	कष्ट	सुख
४५ दिन	दो मास	४५ दि
लाभ	हानि	लाभ
पूर्व	आग्नेय	दक्षिण
ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य
उखल	अग्निगृहे	अरण्य
भैरव	दुर्गा	सूर्य
आगम	न आगम	आगम
जय	हानि	जय
न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष
७ दिन	१ वष	१५ दिन
स्थिर	न सिद्धि	कलह
शुभ:	कलह	शुभ
पुत्र	कन्या	पत्र
१०० वर्ष	१ वर्ष	१०० वर्ष
लाभ	न लाभ	लाभ

ोक्लिम स्थान कहलाते हैं।

आचार्यों के मत से—४,७,१० केन्द्र, १,५, ण और शेष स्थान ऊपरवत कहे हैं।

। फल कहने से पहले ग्रहों के शुभाशुभत्व में देखनी चाहिए। ग्रहों में शुभाशुभत्व दो प्रकार चाहिए। एक तो स्वाभाविक, दूसरा तात्कालिक

ाभाविक शुभाशुभ—सू. मं. शनि नैसर्गिक क्रूर शुभ नैसगिक पूर्ण बली चन्द्रमा शुभ, क्षीण ी होता है। तथा राहु केतु सहचर्य से फलप्रद हैं।

त्कालिक शुभाशुभ इस प्रकार कहा है। त्रिकोण हो तो शुभ फलदायक होता है और यदि का स्वामी हो तो पाप फलदायक होता है। द्ध हुआ कि स्वभाविक पापग्रह भी त्रिकोण- ी शुभ होता है तथा स्वभाविक शुभ यदि अत्यन्त शुभदायक होता है। इसी भी यदि त्रिषड़ायपति हो तो पाप था स्वभाविक पापग्रह त्रिषड़ाय- ाप फलदायक होता है।

ग्रह (गुरु शुक्र, बुध पूर्ण चन्द्र) तो प्राणियों को शुभाशुभ फल ह (क्षीणचन्द्र, पापयुत बुध, रवि, द्र के स्वामी हों तो अपने स्वभाव ं देते। अतः केन्द्र के स्वामी होने पापग्रह में शुभत्व आ जाता क केन्द्राधिप न शुभ फल देता है।

ीयेश दूसरे ग्रहों के साहचर्य अन्य स्थानों) के अनुसार ही ल को देते है। इससे सिद्ध है ाावानसार शुभाशुभ फल नहीं देते। जिस प्रकार शुभ या अशुभ स्थान में रहते हैं, तथा जिस प्रकार के शुभ या अशुभ भावेश के साथ रहते हैं, अथवा जिस दूसरे स्थान के स्वामी हों वह राशि जैसी शुभ या अशुभ भाव में हो तदनुसार ही शुभ या अशुभ फल देते हैं। भावार्थ यह है कि द्वितीयेश आदि के साथ जो ग्रह रहता है वह तदनुसार ही फल देता है। यदि बहुत ग्रह साथ में हों तो उनमें जो बली

वाले ग्रहों की दशा शुभ और अन्य अवस्था वालों की दशा अशुभ है।

शुभ ग्रहों का केन्द्राधिपत्य दोष जो कहा गया है वह गुरु और शुक्र का बलवान् होता है। तथा शुभ ग्रहों के मारकत्व (सप्तमेशत्व) होने पर भी गुरु शुक्र में ही विशेषकर मारकत्व दोष होता है। इन दोनों में न्यन दोष बुध में और बुध से न्यून चन्द्रमा में होता है। अष्टमेश यदि त्रिकोण पति हो तो शुभ फलदायक और यदि त्रिषड़ायपति हो तो अत्यन्त अशुभ फलदायक होगा।

इसी प्रकार यदि पाप ग्रह केन्द्र पति हो तो उसका स्वभाविक पापत्व मात्र नष्ट होता है। अतः केन्द्रपति होकर यदि त्रिकोणपति भी हो जावे तो उसमें शुभत्व आ जाता है। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह यदि केन्द्रपति हो कर त्रिषड़ायपति हो तो पापकारक हो जाता है।

प्रबल होने पर भी राहु और केतु जिस भाव में और जिस जिस भावेश के साथ रहते हैं उसी के अनुसार शुभ या अशुभ फल देते हैं।

जैसे कहा है—यद्यद्भावगतौ वाऽपि यद्यदभावेश संयुतौ।
ततत्फलानि प्रबलौ प्रदर्शिताताम़ौ ग्रहौ ॥

योग—केन्द्रेश और त्रिकोणेश में परस्पर सम्बन्ध हो किसी अन्य भाव के स्वामी से सहवास न हो तो विशेष कर शुभ लाभदायक होते हैं।

ग्रहों की दीप्तादि अवस्था

ग्रह अपनी उच्च राशि में हों तो दीप्त अपनी राशि में स्वस्थ मित्र राशि में हर्षित, शुभ राशि में शांत नीच राशि में दीन, शत्रु राशि में पीड़ित, उदयराशि में शक्त, अस्तंगत राशि में लुप्त अवस्था होती है।

ग्रहावस्था फल—दीप्त अवस्था सुस्वरूप, कांतिमान् बुद्धिमान् तीर्थों में जाने वाला और शत्रु का नाश करने वाला। स्वस्थ अवस्था–विजयी, राजपूजित, कीर्तिमान्, सदा प्रसन्न, मलकीयत कराने वाला व ज्योतिषी। हर्षित अवस्था–धर्मात्मा, सदाचारी। शांत अवस्था–तेजस्वी, शांत बांधवयुक्त। दीन अवस्था–बुद्धिहीन, परस्त्री आसक्त। पीड़ित अवस्था–चितायुक्त, मानसिक दुःख, रोगी। शक्त अवस्था–निरोगी, सुन्दर, मधुर भाषी, प्रशंसनीय। लुप्त अवस्था–अधर्मी, रोगी,

पंचांग दिवाकर से प्रत्येक स्थान का सूर्योदय ज्ञान

विश्व में प्रत्येक स्थान पर एक समय पर सूर्योदय नहीं होता अतः किसी स्थान का लग्न व इष्ट्यादि बताने के लिए वहाँ का सूर्योदय का ज्ञान अति आवश्यक है। प्रायः बहुत से लोग अभीष्ट स्थान का सूर्योदय निकालते समय पंचांग में मुद्रित जालन्धर के सूर्योदय काल में केवल रेखांतर संस्कार करके ही वहां का सूर्योदय काल निकाल लेते हैं, जो कि प्रायः अशुद्ध रहता है। अतः पाठकों की सुविधा के लिए पचाँग दिवाकर में भिन्न अक्षांशों का मध्यम स्थानीय सूर्योदय काल (लोकल मीन टाईम) दिया जा रहा है इस में चरान्तरादि सभी संस्कार किए हुए हैं। इस में केवल अभिष्ट स्थान का देशान्तर संस्कार (पृष्ट ८९ पर) ही युक्त-वियुक्त करने से उस अक्षांश (स्थान)का सूर्योदय काल स्टैण्डर्ड टाईम से निकल आएगा।

जिस शहर को आपको सूर्योदय काल निकालना है। पंचांग दिवाकर पृष्ठ ८९ से ९१ पर उस शहर का अक्षाँश देखी फिर पंचाग दिवाकर पृष्ट ९ से १४ पर अभीष्ट अक्षांश के नीचे और जिस अंग्रेजी तारीख का आपको सूर्योदय निकालना हो उस तारीख के सामने अभीष्ट शहर का मध्यम सूर्योदय काल दिया हुआ है। फिर उस शहर का देशांतर संस्कार जो कि पंचाँग दिवाकर पृष्ठ ८९ से ९१ पर दिया हुआ है। उसे + चिन्ह हो तो धन और — चिन्ह हो तो ऋण करने से अभीष्ट शहर का सूर्योदय काल स्टैंडर्ड टाईम में आ जाएगा।

उदाहरण—जैसे आपको देहली में ८ मार्च का सूर्योदय निकालना है। पंचाँग के पृष्ठ ८९ पर देहली का अक्षांश २८।३९ दिया हुआ है। अतः पृष्ठ ११ पर ८ मार्च के सामने और ३०° के नीचे ६।१९ मध्यकालीन सूर्योदय दिया हुआ है। चूंकि देहली का अक्षाँश ३०° से लगभग डेढ़ अंश कम है अतः इसी तारीख को यदि १० अंश पर ४ मिन्ट का अन्तर पड़ा है तो डेढ़ अंश के होने पर केवल ३६ सैकण्ड का अन्तर रहेगा जो कि ६।१९ से कम करने पर ६।१८।२४ होगा इसमें पृष्ठ ८९ पर ही लिखें देहली के देशान्तर + २१'।८" होने से मध्यम सूर्यकाल में जमा करने से कुल ६ घण्टे ३९ मिन्ट ३२ सैकण्ड अर्थात्—6 बजकर ४० मिन्ट पर सूर्योदय निकल आएगा (३० से अधिक सैकण्ड होने पर १ मिन्ट बढ़ा लेना चाहिए)। इसी प्रकार अन्य शहरों का सूर्योदय दे भी जानें।

विदेशों का सूर्योदय काल जानने के लिए वहाँ का भारत के स्टैंडर्ड टाईम से अन्तर का ज्ञान होना आवश्यक है इसके लिए पृष्ठ ९१ देखें।

नोटः—पाठकों की सुविधा के लिए इस वर्ष से उत्तरी भारत (हिमाचल प्रदेश व जम्मू इत्यादि) के कुछ प्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्त (अंतिम पृष्ठों पर) भी दे दिए गए हैं। **सम्पादकः पन्नालाल शर्मा एम.ए.**

नवग्रह और बारह राशियों के लिए उपयोगी रत्न

अपनी जन्म कुण्डली अथवा जन्म या नाम राशि के आधार पर उपयुक्त ग्रह-रत्नों को धारण कर मनुष्य चमत्कारिक रूप से लाभ उठा सकता है। शुभ ग्रहों के प्रभाव में वृद्धि करने और क्रूर-ग्रहों के के अनिष्ट-प्रभाव को दूर करन में ग्रह-रत्न निश्चित रूप से अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हुए हैं। इनको धारण करते समय उपयुक्त रत्नों का चुनाव, विधि और शुभ मुहूर्त का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। किसीं विद्वान् ज्योतिषी से परामर्श करना उचित रहेगा।

नाम राशि	सम्बद्धग्रह	रत्न	नाम रा.	ग्रह	रत्न
मेष	मंगल	मूंगा	तुला	शुक्र	हीरा
वृष	शुक्र	हीरा	वृश्चि.	मंगल	मूंगा
मिथुन	बुध	पन्ना	धन	गुरू	पुखराज
कर्क	चन्द्रमा	मोती	मकर	शनि	नीलम
सिंह	सूर्य	माणक्य	कुम्भ	शनि	नीलम
कन्या	बुध	पन्ना	मीन	गुरू	पुखराज

ग्रह-रत्न-धारण करने की विधि

(१) **माणिक्य**—सूर्य की शान्ति के लिए इसको सोने की अंगूठी में रविवार को जब कृतिका पुष्य उ.षा या उ.भा. नक्षत्र हो सूर्य पूजा के पश्चात् पहिनना चाहिए। १५ अगस्त से १४ सितम्बर तक उत्पन्न व्यक्तियों को माणिक्य धारण करना विशेष शुभ है। पित्त, ज्वर,क्षय शिरपीड़ा व नेत्रादि रोगों में लाभ पहुँचाता है।

(२) **मोती** Moon-Stone)—क्षीण चन्द्रमा को बल प्रदान करता है। १५ जुलाई से १४ अगस्त तक उत्पन्न व्यक्तियों को श्रेयकर है इसे शुक्लपक्ष के सोमवार को चांदी की अंगूठी में जड़वा कर धारण करें। यह विचारों को शक्ति प्रदान करता है। प्रमेह, वायु और मस्तिष्क रोगों में लाभ करता है।

(३) **मूंगा**—मंगल ग्रह के प्रभाव को शुभत्व प्रदान करता है। १५ अप्रैल से १४ मई तक व १५ नवम्बर से १४ दिसम्बर तक उत्पन्न व्यक्तियों को धारण करना उचित है। इसकी मंगलवार पूजा करके सोने की अंगूठी में शुभ मुहुर्त में धारण करे। रक्त विकार, हृदय की दुर्बलता व चर्म रोगों को लाभ करता है।

(४) **पन्ना**—बुध रत्न है। १५ जून से १४ जुलाई तक और १५ सितम्बर से १४ अक्तूबर तक जन्मे व्यक्तियों को शुभ मुहूर्त में धारण करना उपयोगी है। यह बुद्धिवर्धक और शीत पित्त मूर्च्छा रोगों में शुभ।

(५) पुखराज—जिनका जन्म १५ दिसम्बर से १४ जनवरी तक हो, उन्हें शुभ मुहूर्त में वीरवार के दिन धारण करना चाहिये। इसका वजन ४ रत्ति से कम न होवे। आंतड़ी और कफ-जन्य रोगों में गुणकारी। बल, बुद्धि विद्या व संतान में वृद्धि करता है। स्त्रियों के सुखमय विवाह के लिये विशेष शुभ।

(६) हीरा—१५ मई से १४ जून तक और १५ अक्तूबर से १४ नवम्बर तक जन्में व्यक्तियों के लिये उपयोगी है। शुक्रवार को भरणी, पू. षा आदि शुभ नक्षत्रों में सोने या चांदी की अंगूठी में पहनने से श्वेत प्रदर, स्वरभंग काम-जन्य रोगों को शांति होती है। यह सुखमय विवाह के लिए शुभ। इसकी बदल श्वेत गोमेध है।

(७) **नीलम**— १५ जन. से १४ फर. तक उत्पन्न व्यक्तियों को उपयुक्त रहेगा। पंचधातु या लोह की अंगूठी में धारण करने से दिल और दिमाग के रोगों की शांति और नौकरी या व्यापारादि में तरक्की करता है।

(८) **गोमेध** -राहु के अनिष्ट कुप्रभाव को दूर कर मन और मस्तिष्क को वल प्रदान करता है। जिनका जन्म १५ फरवरी से १४ मार्च तक है, वे यह रत्न किसी शुभ मुहूर्त्त में धारण करें।

(९) **लहसनिया**—१५ मार्च से १४ अप्रैल तक उत्पन्न व्यक्ति पहन सकते हैं। यह केतु-रत्न है। यह रत्न धातु की अंगूठी मे अश्विनी मघा मूला इत्यादि नक्षत्रों के शुभ मुहूर्त में डालें। यह वायु रोगों में उत्तम है।

अधिक जानकारी के लिए हमें स्वयं मिलें या पत्र लिखें।

सूर्य उदय ज्ञान—नीचे उत्तरी अक्षांशों का लोकल (स्वदेशीय) समय अनुसार सूर्योदय दिया गया है इस में अभीष्ट स्थान के [illegible] टाईमको युक्त-वियुक्त करने से अभीष्ट अक्षांश का स्टैंडर्ड टाईम मे सूर्योदय निकल आएगा। पूरा विवरण पृष्ठ [illegible]

अं०	०°	१०°	२०°	३०°	३५°	४०°	४५°	५०°	५२°	५४°	५६°	५८°	६०°
जन	५।५९	६।१७	६।३५	६।५६	७।०८	७।२२	७।३९	७।५९	८।०८	८।२०	८।३२	८।४६	९।०३
२	६।००	६।१७	६।३५	६।५६	७।०८	७।२२	७।३९	७।५९	८।०८	८।१९	८।३२	८।४६	९।०३
३	६।००	६।१८	६।३६	६।५६	७।०८	७।२२	७।३९	७।५९	८।०८	८।१९	८।३१	८।४६	९।०२
४	६।०१	६।१८	६।३६	६।५७	७।०९	७।२२	७।३९	७।५९	८।०८	८।१९	८।३१	८।४५	९।०२
५	६।०१	६।१८	६।३६	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५९	८।०८	८।१९	८।३१	८।४५	९।०१
६	६।०२	६।१९	६।३६	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५८	८।०८	८।१८	८।३१	८।४४	९।००
७	६।०२	६।१९	६।३७	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५८	८।०७	८।१८	८।३१	८।४३	८।५९
८	६।०३	६।१९	६।३७	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५८	८।०७	८।१७	८।३०	८।४३	८।५८
९	६।०३	६।२०	६।३७	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५८	८।०६	८।१७	८।३०	८।४२	८।५७
१०	६।०४	६।२०	६।३७	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५८	८।०६	८।१६	८।२९	८।४१	८।५६
११	६।०४	६।२०	६।३८	६।५७	७।०९	७।२२	७।३७	७।५७	८।०५	८।१५	८।२७	८।४०	८।५५
१२	६।०४	६।२१	६।३८	६।५७	७।०९	७।२२	७।३७	७।५६	८।०५	८।१५	८।२६	८।३९	८।५४
१३	६।०५	६।२१	६।३८	६।५७	७।०८	७।२१	७।३७	७।५६	८।०४	८।१४	८।२५	८।३९	८।५३
१४	६।०५	६।२१	६।३८	६।५७	७।०८	७।२१	७।३६	७।५५	८।०३	८।१३	८।२४	८।३६	८।५१
१५	६।०६	६।२२	६।३८	६।५७	७।०८	७।२१	७।३६	७।५५	८।०३	८।१२	८।२३	८।३५	८।५०
१६	६।०६	६।२२	६।३८	६।५७	७।०८	७।२०	७।३५	७।५४	८।०२	८।११	८।२२	८।३४	८।४९
१७	६।०६	६।२२	६।३८	६।५७	७।०८	७।२०	७।३५	७।५४	८।०१	८।१०	८।२१	८।३३	८।४७
१८	६।०७	६।२२	६।३८	६।५६	७।०७	७।१९	७।३४	७।५३	८।००	८।०९	८।२०	८।३१	८।४६
१९	६।०७	६।२२	६।३८	६।५६	७।०७	७।१९	७।३३	७।५२	७।५९	८।०८	८।१८	८।३१	८।४४
२०	६।०७	६।२३	६।३८	६।५६	७।०७	७।१८	७।३३	७।५१	७।५८	८।०७	८।१७	८।२९	८।४२
२१	६।०८	६।२३	६।३८	६।५६	७।०६	७।१८	७।३२	७।५०	७।५७	८।०६	८।१५	८।२७	८।४०
२२	६।०८	६।२३	६।३८	६।५६	७।०६	७।१७	७।३१	७।४९	७।५६	८।०५	८।१४	८।२६	८।३८
२३	६।०८	६।२३	६।३८	६।५५	७।०५	७।१७	७।३०	७।४८	७।५४	८।०४	८।१३	८।२३	८।३६
२४	६।०८	६।२३	६।३८	६।५५	७।०५	७।१६	७।३०	७।४६	७।५३	८।०२	८।११	८।२२	८।३४
२५	६।०९	६।२३	६।३७	६।५५	७।०४	७।१६	७।२९	७।४५	७।५२	८।००	८।१०	८।२०	८।३२
२६	६।०९	६।२३	६।३७	६।५४	७।०४	७।१५	७।२८	७।४३	७।५१	७।५९	८।०८	८।१९	८।३०
२७	६।०९	६।२३	६।३७	६।५४	७।०३	७।१४	७।२७	७।४२	७।४९	७।५७	८।०६	८।१६	८।२८
२८	६।०९	६।२३	६।३७	६।५३	७।०३	७।१३	७।२६	७।४१	७।४८	७।५६	८।०५	८।१४	८।२६
२९	६।१०	६।२३	६।३७	६।५३	७।०२	७।१३	७।२५	७।४०	७।४७	७।५४	८।०३	८।१३	८।२४
३०	६।१०	६।२३	६।३७	६।५२	७।०१	७।१२	७।२४	७।३८	७।४५	७।५३	८।०१	८।११	८।२२
३१	६।१०	६।२३	६।३७	६।५२	७।०१	७।११	७।२३	७।३७	७।४४	७।५१	७।५९	८।०९	८।२०

अं०	०°	१०°	२०°	३०°	३५°	४०°	४५°	५०°	५२°	५४°	५६°	५८°	६०°
फर	६।१०	६।२३	६।३६	६।५१	७।००	७।१०	७।२२	[illegible]	७।४२	[illegible]	७।५८	८।०७	८।१७
२	६।१०	६।२३	६।३६	६।५१	६।५९	७।०९	७।२१	७।३४	७।४१	७।४८	७।५६	८।०५	८।१५
३	६।१०	६।२२	६।३५	६।५०	६।५९	७।०८	७।१९	७।३३	७।३९	७।४६	७।५४	८।०३	८।१३
४	६।१०	६।२२	६।३५	६।५०	६।५८	७।०७	७।१८	७।३२	७।३८	७।४४	७।५२	८।०१	८।१०
५	६।१०	६।२२	६।३५	६।४९	६।५७	७।०६	७।१७	७।३०	७।३६	७।४२	७।५०	७।५८	८।०८
६	६।१०	६।२२	६।३४	६।४८	६।५६	७।०५	७।१६	७।२८	७।३४	७।४१	७।४८	७।५६	८।०५
७	६।११	६।२२	६।३४	६।४७	६।५५	७।०४	७।१५	७।२७	७।३३	७।३९	७।४६	७।५३	८।०३
८	६।११	६।२२	६।३४	६।४७	६।५४	७।०३	७।१३	७।२५	७।३१	७।३७	७।४४	७।५२	८।००
९	६।११	६।२१	६।३३	६।४६	६।५३	७।०२	७।१२	७।२४	७।२९	७।३४	७।४२	७।४९	७।५८
१०	६।११	६।२१	६।३३	६।४४	६।५२	७।०१	७।१०	७।२२	७।२७	७।३३	७।४०	७।४६	७।५५
११	६।११	६।२१	६।३२	६।४४	६।५१	७।००	७।०९	७।२०	७।२५	७।३१	७।३७	७।४५	७।५३
१२	६।११	६।२१	६।३२	६।४४	६।५०	६।५८	७।०८	७।१८	७।२४	७।२९	७।३५	७।४२	७।५०
१३	६।११	६।२०	६।३१	६।४३	६।४९	६।५७	७।०६	७।१७	७।२२	७।२७	७।३५	७।४०	७।४७
१४	६।११	६।२०	६।३१	६।४२	६।४८	६।५६	७।०५	७।१५	७।२०	७।२५	७।३३	७।३८	७।४५
१५	६।११	६।२०	६।३०	६।४१	६।४७	६।५५	७।०३	७।१३	७।१८	७।२३	७।३१	७।३५	७।४२
१६	६।११	६।२०	६।३०	६।४०	६।४६	६।५३	७।०२	७।११	७।१६	७।२१	७।२९	७।३२	७।३९
१७	६।११	६।१९	६।२९	६।३९	६।४४	६।५२	७।००	७।१०	७।१४	७।१९	७।२६	७।३०	७।३७
१८	६।११	६।१९	६।२८	६।३९	६।४३	६।५१	६।५८	७।०८	७।१२	७।१७	७।२२	७।२७	७।३४
१९	६।११	६।१९	६।२८	६।३८	६।४२	६।५०	६।५७	७।०६	७।१०	७।१४	७।२०	७।२५	७।३१
२०	६।१०	६।१९	६।२७	६।३७	६।४१	६।४८	६।५५	७।०४	७।०८	७।१२	७।१७	७।२२	७।२८
२१	६।१०	६।१८	६।२६	६।३६	६।४०	६।४७	६।५४	७।०२	७।०६	७।१०	७।१५	७।२३	७।२६
२२	६।१०	६।१८	६।२६	६।३५	६।३९	६।४५	६।५२	७।००	७।०४	७।०८	७।१२	७।१७	७।२३
२३	६।१०	६।१७	६।२५	६।३४	६।३८	६।४४	६।५१	६।५८	७।०२	७।०६	७।१०	७।१५	७।२०
२४	६।१०	६।१७	६।२४	६।३३	६।३६	६।४३	६।४९	६।५६	७।००	७।०३	७।०८	७।१२	७।१७
२५	६।१०	६।१६	६।२४	६।३२	६।३५	६।४१	६।४७	६।५४	६।५८	७।०१	७।०५	७।०९	७।१४
२६	६।१०	६।१६	६।२३	६।३१	६।३४	६।४०	६।४६	६।५२	६।५५	६।५९	७।०३	७।०७	७।११
२७	६।१०	६।१६	६।२२	६।३०	६।३३	६।३८	६।४४	६।५०	६।५३	६।५६	७।००	७।०४	७।०८
२८	६।१०	६।१५	६।२२	६।२९	६।३२	६।३६	६।४२	६।४८	६।५१	६।५४	६।५७	७।०४	७।०५
	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।
	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।
	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।

सूर्य उदय ज्ञान—नीचे उत्तरी अक्षांशों का लोकल [स्वदशीय] समय अनुसार सूर्योदय दिया गया है, इस में अभीष्टस्थान के रेखान्तर स्टैंडर्ड टाइम को युक्त-वियुक्त करने से अभीष्ट अक्षांश स्टैंडर्ड टाईम में सूर्योदय निकल आएगा। पूरा विवरण पृष्ठ १ पर देखें।

t	०°	t१०°	t२०°	t३०°	t३५°	t४०°	t४५°	t५०°	t५२°	t५४°	t५६°	t५८°	अं०	०°	t१०°	t२०°	t३०°	t३५°	t४०°	t४५°	t५०°	t५२°	t५४°	t५६°	t५८°
मा.	६।०९	६।१५	६।२०	६।२६	६।३०	६।३४	६।३९	६।४४	६।४७	६।५०	६।५३	६।५६	अप्रै	६।०१	५।५८	५।५६	५।५०	५।४८	५।४५	५।४२	५।३८	५।३६	५।३४	५।३३	५।२९
२	६।०९	६।१४	६।१९	६।२५	६।२९	६।३३	६।३७	६।४२	६।४५	६।४७	६।५०	६।५३	२	६।००	५।५७	५।५३	५।४९	५।४६	५।४३	५।४०	५।३६	५।३४	५।३१	५।२९	५।२६
३	६।०९	६।१४	६।१९	६।२४	६।२८	६।३१	६।३५	६।४०	६।४२	६।४५	६।४८	६।५०	३	६।००	५।५६	५।५२	५।४७	५।४४	५।४२	५।३८	५।३३	५।३१	५।२९	५।२६	५।२४
४	६।०९	६।१३	६।१८	६।२३	६।२६	६।३०	६।३४	६।३८	६।४०	६।४२	६।४५	६।४८	४	५।००	५।५६	५।५१	५।४६	५।४३	५।४०	५।३६	५।३१	५।२९	५।२६	५।२४	५।२१
५	६।०८	६।१३	६।१७	६।२२	६।२५	६।२८	६।३२	६।३६	६।३८	६।४०	६।४२	६।४५	५	५।५९	५।५५	५।५१	५।४५	५।४२	५।३८	५।३४	५।२९	५।२७	५।२४	५।२१	५।१९
६	६।०८	६।१२	६।१६	६।२१	६।२४	६।२६	६।३०	६।३४	६।३६	६।३८	६।४०	६।४२	६	५।५९	५।५५	५।५०	५।४४	५।४१	५।३७	५।३२	५।२७	५।२६	५।२२	५।१९	५।१५
७	६।०८	६।१२	६।१५	६।२०	६।२२	६।२५	६।२८	६।३२	६।३३	६।३५	६।३७	६।४०	७	५।५८	५।५४	५।४८	५।४२	५।३९	५।३५	५।३०	५।२५	५।२२	५।१९	५।१६	५।१२
८	६।०८	६।११	६।१५	६।१९	६।२१	६।२३	६।२७	६।३०	६।३१	६।३३	६।३५	६।३७	८	५।५८	५।५४	५।४८	५।४२	५।३८	५।३४	५।२९	५।२३	५।१९	५।१७	५।१३	५।१०
९	६।०७	६।११	६।१४	६।१८	६।२०	६।२२	६।२६	६।२८	६।२९	६।३०	६।३२	६।३४	९	५।५८	५।५३	५।४७	५।४०	५।३७	५।३२	५।२७	५।२०	५।१६	५।१४	५।११	५।०७
१०	६।०७	६।१०	६।१३	६।१६	६।१८	६।२०	६।२४	६।२५	६।२७	६।२८	६।३०	६।३१	१०	५।५८	५।५२	५।४६	५।३९	५।३५	५।३१	५।२५	५।१८	५।१४	५।१२	५।०८	५।०४
११	६।०७	६।१०	६।१२	६।१५	६।१७	६।१९	६।२१	६।२३	६।२४	६।२६	६।२७	६।२८	११	५।५८	५।५२	५।४५	५।३८	५।३४	५।२९	५।२३	५।१६	५।१३	५।१०	५।०६	५।०१
१२	६।०७	६।०९	६।११	६।१४	६।१६	६।१७	६।१९	६।२१	६।२२	६।२२	६।२४	६।२५	१२	५।५७	५।५१	५।४५	५।३७	५।३३	५।२८	५।२१	५।१५	५।११	५।०७	५।००	४।५८
१३	६।०६	६।०८	६।१०	६।१३	६।१४	६।१६	६।१७	६।१९	६।२०	६।२१	६।२२	६।२३	१३	५।५७	५।५१	५।४४	५।३५	५।३१	५।२६	५।२०	५।१२	५।०९	५।०४	५।०८	४।५६
१४	६।०६	६।०८	६।१०	६।१२	६।१३	६।१४	६।१५	६।१७	६।१७	६।१८	६।१९	६।२०	१४	५।५७	५।५०	५।४३	५।३५	५।३०	५।२५	५।१८	५।१०	५।०६	५।०२	४।५५	४।५३
१५	६।०६	६।०७	६।०९	६।१०	६।११	६।१२	६।१३	६।१५	६।१५	६।१६	६।१७	६।१७	१५	५।५७	५।५०	५।४२	५।३४	५।२९	५।२३	५।१६	५।०८	५।०४	५।००	४।५३	४।५०
१६	६।०५	[illegible]	६।०८	६।०९	६।१०	६।११	६।१२	६।१२	६।१३	६।१३	६।१४	६।१४	१६	५।५६	५।४९	५।४१	५।३३	५।२७	५।२१	५।१५	५।०६	५।०२	४।५८	४।५०	४।४७
१७	६।०५	६।०६	६।०७	६।०८	६।०९	६।०९	६।१०	६।१०	६।११	६।१२	६।११	६।१२	१७	५।५६	५।४९	५।४१	५।३१	५।२६	५।२०	५।१३	५।०४	५।००	४।५५	४।४८	४।४४
१८	६।०५	६।०६	६।०६	६।०७	६।०८	६।०८	६।०८	६।०८	६।०८	६।०८	६।०९	६।०९	१८	५।५६	५।४८	५।४०	५।३०	५।२५	५।१८	५।१२	५।०२	४।५८	४।५३	४।४५	४।४२
१९	६।०५	६।०५	६।०५	६।०६	६।०६	६।०६	६।०६	६।०६	६।०६	६।०६	६।०६	६।०६	१९	५।५६	५।४८	५।३९	५।२९	५।२४	५।१७	५।१०	५।००	४।५६	४।५१	४।४३	४।४०
२०	६।०४	६।०४	६।०४	६।०४	६।०४	६।०४	६।०४	६।०४	६।०४	६।०३	६।०३	६।०३	२०	५।५६	५।४७	५।३९	५।२८	५।२२	५।१४	५।०८	४।५८	४।५३	४।४८	४।४०	४।३७
२१	६।०४	६।०४	६।०४	६।०३	६।०२	६।०२	६।०२	६।०२	६।०१	६।०१	६।०१	६।००	२१	५।५५	५।४७	५।३८	५।२७	५।२१	५।११	५।०५	४।५६	४।५१	४।४६	४।३८	४।३४
२२	६।०४	६।०३	६।०३	६।०२	६।००	६।००	५।५९	५।५९	५।५९	५।५८	५।५८	५।५८	२२	५।५५	५।४६	५।३७	५।२६	५।२०	५।१३	५।०४	४।५४	४।४९	४।४४	४।३६	४।३१
२३	६।०३	६।०३	६।०२	६।०१	५।५९	५।५९	५।५८	५।५७	५।५७	५।५६	५।५५	५।५५	२३	५।५५	५।४६	५।३६	५।२५	५।१९	५।११	५।०२	४।५२	४।४७	४।४२	४।३३	४।२९
२४	६।०३	६।०२	६।०१	६।००	५।५८	५।५८	५।५७	५।५५	५।५४	५।५३	५।५३	५।५२	२४	५।५५	५।४५	५।३६	५।२४	५।१७	५।१०	५।०१	४।५०	४।४५	४।३९	४।३०	४।२६
२५	६।०३	६।०२	६।००	५।५८	५।५६	५।५६	५।५५	५।५३	५।५२	५।५१	५।५१	५।४९	२५	५।५५	५।४५	५।३५	५।२३	५।१६	५।०९	४।५९	४।४८	४।४३	४।३७	४।२८	४।२४
२६	६।०२	६।०१	५।५९	५।५७	५।५५	५।५४	५।५३	५।५१	५।५०	५।४९	५।४७	५।४६	२६	५।५४	५।४५	५।३४	५।२२	५।१४	५।०८	४।५८	४।४६	४।४१	४।३५	४।२५	४।२१
२७	६।०२	६।००	५।५८	५।५६	५।५३	५।५३	५।५१	५।४८	५।४७	५।४६	५।४५	५।४३	२७	५।५४	५।४४	५।३४	५।२१	५।१४	५।०५	४।५५	४।४४	४।३९	४।३३	४।२३	४।१८
२८	६।०२	५।५९	५।५७	५।५५	५।५१	५।५१	५।४९	५।४६	५।४५	५।४४	५।४२	५।४०	२८	५।५४	५।४४	५।३३	५।२०	५।१३	५।०४	४।५४	४।४२	४।३७	४।३१	४।२०	४।१६
२९	६।०२	५।५९	५।५६	५।५३	५।५०	५।५०	५।४७	५।४४	५।४३	५।४१	५।३९	५।३८	२९	५।५४	५।४४	५।३२	५।१९	५।१२	५।०३	४।५३	४।४१	४।३५	४।२९	४।२	४।१३
३०	६।०१	५।५९	५।५५	५।५२	५।४९	५।४८	५।४५	५।४२	५।४१	५।३८	५।३७	५।३५	३०	५।५४	५।४३	५।३२	५।१८	५।११	५।०२	४।५१	४।३९	४।३३	४।२६	४।२६	४।११
३१	६।०१	५।५८	५।५५	५।५१	५।४६	५।४६	५।४३	५।४०	५।३९	५।३५	५।३४	५।३२		।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।

सूर्य उदय ज्ञान :—नीचे उत्तरी अक्षांशों का लोकल (स्वदेशीय) समय अनुसार सूर्योदय दिया गया है, इस में अभीष्ट स्थान के रेखान्तर स्टैण्डर्ड टाईम को युक्त-वियुक्त करने से अभीष्ट स्थान का स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्योदय निकल आयेगा। पूरा विवरण पृष्ठ १ पर देखें।

अ०	०°	१०°	२०°	३०°	३५°	४०°	४५°	५०°	५२°	५४°	५६°	५८°
मई	५।५४	५।४३	५।३१	५।१८	५।१०	५।००	४।५०	४।३७	४।३१	४।२४	४।१७	४।०८
२	५।५४	५।४२	५।३०	५।१६	५।०९	४।५९	४।४८	४।३५	४।२९	४।२२	४।१४	४।०६
३	५।५३	५।४२	५।३०	५।१६	५।०८	४।५८	४।४७	४।३४	४।२७	४।२०	४।१२	४।०४
४	५।५३	५।४२	५।२९	५।१५	५।०७	४।५७	४।४५	४।३२	४।२५	४।१८	४।१०	४।०१
५	५।५३	५।४१	५।२९	५।१४	५।०६	४।५६	४।४४	४।३०	४।२४	४।१६	४।०८	३।५९
६	५।५३	५।४१	५।२८	५।१३	५।०५	४।५४	४।४३	४।२८	४।२२	४।१४	४।०६	३।५६
७	५।५३	५।४१	५।२८	५।१२	५।०४	४।५३	४।४१	४।२६	४।२०	४।१२	४।०४	३।५४
८	५।५३	५।४०	५।२७	५।१२	५।०३	४।५२	४।४०	४।२५	४।१८	४।१०	४।०१	३।५२
९	५।५४	५।४०	२।२७	५।११	५।०२	४।५१	४।३९	४।२३	४।१६	४।०८	३।५८	३।४९
१०	५।५३	५।४०	५।२६	५।११	५।०१	४।५०	४।३७	४।२२	४।१५	४।०६	३।५७	३।४७
११	५।५३	५।४०	५।२६	५।०९	५।००	४।४९	४।३६	४।२०	४।१३	४।०५	३।५५	३।४५
१२	५।५३	५।४०	५।२५	५।०९	४।५९	४।४८	४।३५	४।१९	४।११	४।०३	३।५३	३।४३
१३	५।५३	५।३९	५।२५	५।०८	४।५८	४।४७	४।३४	४।१७	४।१०	४।०१	३।५१	३।४०
१४	५।५३	५।३९	५।२४	५।०७	४।५७	४।४६	४।३३	४।१६	४।०८	३।५९	३।५०	३।३८
१५	५।५३	५।३९	५।२४	५।०७	४।५७	४।४५	४।३१	४।१४	४।०६	३।५८	३।४८	३।३६
१६	५।५३	५।३९	५।२४	५।०६	४।५६	४।४४	४।३०	४।१३	४।०५	३।५६	३।४६	३।३४
१७	५।५३	५।३९	५।२३	५।०६	४।५५	४।४३	४।२९	४।१२	४।०३	३।५४	३।४४	३।३२
१८	५।५३	५।३८	५।२३	५।०५	४।५४	४।४२	४।२८	४।१०	४।०२	३।५३	३।४२	३।३०
१९	५।५३	५।३८	५।२३	५।०४	४।५४	४।४२	४।२७	४।०९	४।०१	३।५१	३।४०	३।२८
२०	५।५३	५।३८	५।२२	५।०४	४।५३	४।४१	४।२६	४।०८	३।५९	३।५०	३।३९	३।२६
२१	५।५३	५।३८	५।२२	५।०३	४।५२	४।४०	४।२५	४।०७	३।५८	३।४८	३।३७	३।२४
२२	५।५३	५।३८	५।२२	५।०३	४।५२	४।३९	४।२४	४।०६	३।५७	३।४७	३।३६	३।२३
२३	५।५३	५।३८	५।२१	५।०२	४।५१	४।३८	४।२३	४।०४	३।५५	३।४५	३।३४	३।२१
२४	५।५३	५।३८	५।२१	५।०२	४।५१	४।३८	४।२२	४।०३	३।५४	३।४४	३।३२	३।१९
२५	५।५३	५।३८	५।२१	५।०२	४।५०	४।३७	४।२१	४।०२	३।५३	३।४३	३।३१	३।१७
२६	५।५३	५।३८	५।२१	५।०१	४।५०	४।३६	४।२१	४।०१	३।५२	३।४२	३।३०	३।१६
२७	५।५३	५।३८	५।२१	५।०१	४।४९	४।३६	४।२०	४।००	३।५१	३।४०	३।२८	३।१४
२८	५।५४	५।३८	५।२०	५।००	४।४९	४।३५	४।१९	३।५९	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३
२९	५।५४	५।३८	५।२०	५।००	४।४८	४।३५	४।१८	३।५८	३।४९	३।३८	३।२६	३।११
३०	५।५४	५।३८	५।२०	५।००	४।४८	४।३४	४।१८	३।५८	३।४८	३।३७	३।२४	३।१०
३१	५।५४	५।३८	५।२०	५।००	४।४८	४।३४	४।१७	३।५७	३।४७	३।३६	३।२३	३।०८

अ०	०°	१०°	२०°	३०°	३५°	४०°	४५°	५०°	५२°	५४°	५६°	५८°
जून	५।५४	५।३८	५।२०	४।५९	४।४७	४।३३	४।१७	३।५६	३।४६	३।३५	३।२२	३।०७
२	५।५४	५।३८	५।२०	४।५९	४।४७	४।३३	४।१६	३।५५	३।४५	३।३४	३।२१	३।०६
३	५।५४	५।३८	५।२०	४।५९	४।४७	४।३२	४।१६	३।५५	३।४४	३।३३	३।२०	३।०५
४	५।५४	५।३८	५।२०	४।५९	४।४६	४।३२	४।१५	३।५४	३।४४	३।३२	३।१९	३।०४
५	५।५५	५।३८	५।२०	४।५८	४।४६	४।३२	४।१५	३।५३	३।४४	३।३२	३।१९	३।०३
६	५।५५	५।३८	५।२०	४।५८	४।४६	४।३१	४।१४	३।५३	३।४३	३।३१	३।१७	३।०२
७	५।५५	५।३८	५।२०	४।५८	४।४६	४।३१	४।१४	३।५२	३।४२	३।३०	३।१७	३।०१
८	५।५५	५।३८	५।२०	४।५८	४।४६	४।३१	४।१४	३।५२	३।४२	३।३०	३।१६	३।००
९	५।५५	५।३८	५।२०	४।५८	४।४५	४।३१	४।१३	३।५१	३।४१	३।२९	३।१५	२।५९
१०	५।५५	५।३८	५।२०	४।५८	४।४५	४।३१	४।१३	३।५१	३।४१	३।२९	३।१५	२।५८
११	५।५६	५।३८	५।२०	४।५८	४।४५	४।३०	४।१३	३।५१	३।४०	३।२८	३।१४	२।५८
१२	५।५६	५।३९	५।२०	४।५८	४।४५	४।३०	४।१३	३।५०	३।४०	३।२८	३।१३	२।५७
१३	५।५६	५।३९	५।२०	४।५८	४।४५	४।३०	४।१३	३।५०	३।४०	३।२७	३।१३	२।५७
१४	५।५६	५।३९	५।२०	४।५८	४।४५	४।३०	४।१२	३।५०	३।४०	३।२७	३।१३	२।५६
१५	५।५७	५।३९	५।२०	४।५८	४।४५	४।३०	४।१२	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३	२।५६
१६	५।५७	५।३९	५।२०	४।५९	४।४५	४।३०	४।१२	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३	२।५६
१७	५।५७	५।३९	५।२०	४।५९	४।४५	४।३०	४।१३	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३	२।५६
१८	५।५७	५।४०	५।२१	४।५९	४।४६	४।३०	४।१३	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३	२।५६
१९	५।५७	५।४०	५।२१	४।५९	४।४६	४।३१	४।१३	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३	२।५७
२०	५।५८	५।४०	५।२१	४।५९	४।४६	४।३१	४।१३	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३	२।५७
२१	५।५८	५।४०	५।२१	४।५९	४।४६	४।३१	४।१३	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३	२।५७
२२	५।५८	५।४०	५।२१	४।५९	४।४६	४।३१	४।१३	३।५१	३।४०	३।२७	३।१३	२।५७
२३	५।५८	५।४१	५।२२	५।००	४।४७	४।३१	४।१३	३।५१	३।४०	३।२७	३।१३	२।५७
२४	५।५८	५।४१	५।२२	५।००	४।४७	४।३२	४।१४	३।५१	३।४१	३।२८	३।१४	२।५७
२५	५।५९	५।४१	५।२२	५।००	४।४७	४।३२	४।१४	३।५२	३।४१	३।२८	३।१४	२।५७
२६	५।५९	५।४१	५।२२	५।००	४।४७	४।३२	४।१४	३।५२	३।४१	३।२९	३।१४	२।५८
२७	५।५९	५।४२	५।२३	५।०१	४।४८	४।३३	४।१५	३।५३	३।४१	३।२९	३।१५	२।५८
२८	५।५९	५।४२	५।२३	५।०१	४।४८	४।३३	४।१५	३।५३	३।४२	३।३०	३।१६	२।५८
२९	५।५९	५।४२	५।२३	५।०१	४।४८	४।३४	४।१६	३।५४	३।४२	३।३०	३।१६	३।००
३०	६।००	५।४२	५।२२	५।०२	४।४९	४।३४	४।१६	३।५४	३।४३	३।३१	३।१७	३।००
	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।

सूर्य उदय ज्ञान—नीचे उत्तरी अक्षांशों का लोकल (स्वदेशीय) समय अनुसार सूर्योदय दिया गया है इसमें अभीष्ट स्थान के रेखान्तर स्टैंण्डर्ड टाईम को युक्त-
वियुक्त करने से अभीष्ट स्थान का स्टैंण्डर्ड टाईम में सूर्योदय निकल आएगा। पूरा विवरण पृष्ठ ९ पर देख।

अं०	०°	१०°	२०°	३०°	३५°	४०°	४५°	५०°	५२°	५४°	५६°	५८°
जु०	६।००	५।४२	५।२४	५।००	४।४९	४।३४	४।१७	३।५४	३।४४	३।३२	३।१८	३।०१
२	६।००	५।४३	५।२४	५।०२	४।५०	४।३५	४।१७	३।५५	३।४४	३।३२	३।१९	३।०२
३	६।००	५।४३	५।२४	५।०३	४।५०	४।३५	४।१८	३।५६	३।४५	३।३३	३।२०	३।०३
४	६।००	५।४३	५।२५	५।०३	४।५१	४।३६	४।१८	३।५७	३।४६	३।३४	३।२०	३।०४
५	६।०१	५।४४	५।२५	५।०४	४।५१	४।३७	४।१९	३।५८	३।४७	३।३५	३।२१	३।०६
६	६।०१	५।४४	५।२५	५।०४	४।५१	४।३७	४।२०	३।५९	३।४८	३।३६	३।२२	३।०७
७	६।०१	५।४४	५।२६	५।०५	४।५२	४।३८	४।२०	४।००	३।४९	३।३७	३।२४	३।०८
८	६।०१	५।४४	५।२६	५।०५	४।५३	४।३८	४।२१	४।०१	३।५०	३।३८	३।२५	३।०९
९	६।०१	५।४५	५।२६	५।०६	४।५३	४।३९	४।२२	४।०२	३।५१	३।३९	३।२६	३।११
१०	६।०१	५।४५	५।२७	५।०६	४।५४	४।४०	४।२३	४।०३	३।५२	३।४०	३।२७	३।१३
११	६।०२	५।४५	५।२७	५।०७	४।५४	४।४०	४।२४	४।०४	३।५३	३।४१	३।२८	३।१५
१२	६।०२	५।४५	५।२८	५।०७	४।५५	४।४१	४।२४	४।०५	३।५४	३।४१	३।३०	३।१६
१३	६।०२	५।४६	५।२८	५।०८	४।५६	४।४२	४।२५	४।०६	३।५५	३।४४	३।३१	३।१८
१४	६।०२	५।४६	५।२८	५।०८	४।५६	४।४२	४।२६	४।०७	३।५६	३।४५	३।३३	३।२०
१५	६।०२	५।४६	५।२९	५।०९	४।५७	४।४३	४।२७	४।०८	३।५७	३।४६	३।३४	३।२१
१६	६।०२	५।४६	५।२९	५।०९	४।५७	४।४४	४।२८	४।०९	३।५८	३।४८	३।३६	३।२३
१७	६।०२	५।४७	५।२९	५।१०	४।५८	४।४५	४।२९	४।१०	४।००	३।४९	३।३७	३।२५
१८	६।०२	५।४७	५।३०	५।१०	४।५९	४।४५	४।३०	४।११	४।०१	३।५०	३।३९	३।२६
१९	६।०३	५।४७	५।३०	५।११	४।५९	४।४६	४।३१	४।१२	४।०२	३।५२	३।४०	३।२७
२०	६।०३	५।४७	५।३१	५।११	५।००	४।४७	४।३२	४।१३	४।०३	३।५३	३।४२	३।२८
२१	६।०३	५।४७	५।३१	५।१२	५।०१	४।४८	४।३३	४।१४	४।०५	३।५५	३।४३	३।३०
२२	६।०३	५।४७	५।३१	५।१३	५।०२	४।४९	४।३४	४।१५	४।०६	३।५६	३।४५	३।३२
२३	६।०३	५।४७	५।३२	५।१३	५।०२	४।५०	४।३५	४।१६	४।०८	३।५९	३।४७	३।३४
२४	६।०३	५।४८	५।३२	५।१४	५।०३	४।५१	४।३६	४।१८	४।०९	३।५९	६।४८	३।३६
२५	६।०३	५।४८	५।३२	५।१४	५।०४	४।५१	४।३७	४।१९	४।१०	४।०१	३।५०	३।३८
२६	६।०३	५।४८	५।३३	५।१५	५।०४	४।५२	४।३८	४।२०	४।१२	४।०३	३।५२	३।४०
२७	६।०३	५।४८	५।३३	५।१५	५।०५	४।५३	४।३९	४।२२	४।१३	४।०४	३।५४	३।४२
२८	६।०३	५।४८	५।३४	५।१६	५।०६	४।५४	४।४०	४।२३	४।१५	४।०६	३।५५	३।४४
२९	६।०३	५।४९	५।३४	५।१७	५।०७	४।५५	४।४१	४।२५	४।१७	४।०८	३।५६	३।४६
३०	६।०३	५।४९	५।३४	५।१७	५।०७	४।५६	४।४२	४।२६	४।१८	४।०९	३।५९	३।४८
३१	६।०३	५।४९	५।३५	५।१७	५।०८	४।५७	४।४३	४।२७	४।१९	४।११	४।०१	३।५०

अं०	०°	१०°	२०°	३०°	३५°	४०°	४५°	५०°	५२°	५४°	५६°	५८°
अग	६।०३	५।४९	५।३५	५।१८	५।०९	४।५८	४।४५	४।२८	४।२१	४।१२	४।०३	३।५२
२	६।०३	५।५०	५।३५	५।१९	५।०९	४।५९	४।४६	४।३०	४।२२	४।१४	४।०५	३।५४
३	६।०३	५।५०	५।३६	५।२०	५।१०	५।००	४।४७	४।३१	४।२४	४।१६	४।०७	३।५६
४	६।०२	५।५०	५।३६	५।२०	५।११	५।००	४।४८	४।३३	४।२५	४।१७	४।०८	३।५८
५	६।०२	५।५०	५।३६	५।२१	५।१२	५।०१	४।४९	४।३४	४।२६	४।१९	४।१०	४।००
६	६।०२	५।५०	५।३६	५।२२	५।१२	५।०२	४।५०	४।३६	४।२८	४।२१	४।११	४।०३
७	६।०२	५।५०	५।३७	५।२३	५।१३	५।०३	४।५१	४।३७	४।३०	४।२३	४।१४	४।०५
८	६।०२	५।५०	५।३७	५।२३	५।१४	५।०४	·।५३	४।३८	४।३२	४।२४	४।१६	४।०७
९	६।०२	५।५०	५।३८	५।२४	५।१५	५।०५	४।५४	४।४०	४।३३	४।२६	४।१८	४।०९
१०	६।०२	५।५०	५।३८	५।२५	५।१६	५।०६	४।५५	४।४२	४।३५	४।२८	४।२०	४।११
११	६।०१	५।५१	५।३८	५।२५	५।१६	५।०७	४।५६	४।४३	४।३७	४।३०	४।२२	४।१३
१२	६।०१	५।५१	५।३९	५।२६	५।१७	५।०८	४।५९	४।४४	४।३८	४।३२	४।२४	४।१५
१३	६।०१	५।५१	५।३९	५।२६	५।१८	५।०९	४।५९	४।४६	४।४०	४।३३	४।२६	४।१८
१४	६।०१	५।५१	५।३९	५।२७	५।१९	५।१०	५।००	४।४७	४।४२	४।३५	४।२८	४।२०
१५	६।०१	५।५१	५।४०	५।२८	५।१९	५।११	५।०१	४।४९	४।४३	४।३७	४।३०	४।२२
१६	६।०१	५।५१	५।४०	५।२८	५।२०	५।१२	५।०२	४।५०	४।४५	४।३९	४।३२	४।२४
१७	६।०१	५।५१	५।४०	५।२९	५।२१	५।१३	५।०३	४।५२	४।४६	४।४०	४।३४	४।२६
१८	६।००	५।५१	५।४१	५।२९	५।२२	५।१४	५।०४	४।५३	४।४८	४।४२	४।३६	४।२९
१९	६।००	५।५१	५।४१	५।३०	५।२२	५।१५	५।०६	४।५५	४।५०	४।४४	४।३८	४।३१
२०	६।००	५।५१	५।४१	५।३०	५।२३	५।१६	५।०७	४।५६	४।५१	४।४६	४।४०	४।३३
२१	६।००	५।५१	५।४१	५।३१	५।२४	५।१७	५।०८	४।५८	४।५३	४।४८	४।४२	४।३५
२२	६।५९	५।५१	५।४२	५।३२	५।२५	५।१८	५।०९	४।५९	४।५५	४।४९	४।४४	४।३७
२३	५।५९	५।५१	५।४२	५।३२	५।२५	५।१९	५।१०	५।०१	४।५६	४।५१	४।४६	४।३९
२४	५।५९	५।५१	५।४२	५।३३	५।२६	५।१९	५।१२	५।०२	४।५८	४।५३	४।४७	४।४१
२५	५।५९	५।५१	५।४२	५।३३	५।२७	५।२०	५।१३	५।०४	४।५९	४।५५	४।४९	४।४४
२६	५।५८	५।५१	५।४३	५।३४	५।२८	५।२१	५।१४	५।०५	५।०१	४।५७	४।५१	४।४५
२७	५।५८	५।५१	५।४३	५।३४	५।२८	५।२२	५।१५	५।०७	५।०३	४।५८	४।५३	४।४८
२८	५।५८	५।५१	५।४३	५।३५	५।२९	५।२३	५।१६	५।०८	५।०४	५।००	४।५५	४।५०
२९	५।५८	५।५१	५।४३	५।३५	५।३०	५।२४	५।१८	५।०९	५।०६	५।०२	४।५७	४।५२
३०	५।५७	५।५१	५।४४	५।३६	५।३१	५।२५	५।१९	५।११	५।०८	५।०४	४।५९	४।५४
४१	५।५७	५।५१	५।४४	५।३६	५।३१	५।२६	५।२०	५।१३	५।०९	५।०५	५।०१	४।५७

सूर्य उदय ज्ञान — नीचे उत्तरी अक्षांशों का लोकल [स्वदशीय] समय अनुसार सूर्योदय दिया गया है इस मे अभीष्ट स्थान के रेखान्तर स्टैंडडं टाईम को युक्त-वियुक्त करने से अभीष्ट स्थान का स्टैंडडं टाईम में सूर्योदय काल निकल आएगा। पूरा विवरण पृष्ठ ९ पर देखें।

अं०	०°	t१०°	t२०°	t३०°	t३५°	t४०°	t४५°	t५०°	t५२°	t५४°	t५६°	t५८°
सि.	५।५७	५।५१	५।४४	५।२७	५।२२	५।२६	५।२१	५।१६	५।११	५।०७	५।०२	४।५९
२	५।५६	५।५१	५।४४	५।३७	५।३३	५।२८	५।२२	५।१५	५।१२	५।०९	५।०५	५।०१
३	५।५६	५।५१	५।४५	५।३८	५।३४	५।२९	५।२४	५।१६	५।१४	५।११	५।०७	५।०३
४	५।५६	५।५०	५।४५	५।३८	५।३४	५।३०	५।२५	५।१९	५।१६	५।१३	५।०९	५।०५
५	५।५५	५।५०	५।४५	५।३९	५।३५	५।३१	५।२६	५।२०	५।१७	५।१४	५।११	५।०७
६	५।५५	५।५०	५।४५	५।३९	५।३६	५।३२	५।२७	५।२[illegible]	५।१९	५।१६	५।१३	५।०९
७	५।५५	५।५०	५।४६	५।४०	५।३७	५।३३	५।२८	५।२३	५।२१	५।१८	५।१५	५।१२
८	५।५४	५।५०	५।४६	५।४०	५।३७	५।३४	५।३०	५।२४	५।२२	५।२०	५।१७	५।१४
९	५।५४	५।५०	५।४६	५।४१	५।३८	५।३५	५।३१	५।२६	५।२४	५।२२	५।१९	५।१६
१०	५।५४	५।५०	५।४६	५।४२	५।३९	५।३६	५।३२	५।२८	५।२६	५।२३	५।२१	५।१८
११	५।५३	५।५०	५।४६	५।४२	५।३९	५।३७	५।३३	५।२९	५।२७	५।२५	५।२३	५।२०
१२	५।५३	५।५०	५।४७	५।४३	५।४०	५।३८	५।३४	५।३१	५।२९	५।२७	५।२५	५।२२
१३	५।५३	५।५०	५।४७	५।४३	५।४१	५।३८	५।३५	५।३२	५।३०	५।२९	५।२७	५।२४
१४	५।५२	५।५०	५।४७	५।४४	५।४२	५।३९	५।३७	५।३३	५।३२	५।३०	५।२९	५।२७
१५	५।५२	५।५०	५।४७	५।४४	५।४२	५।४०	५।३८	५।३५	५।३४	५।३२	५।३१	५।२९
१६	५।५२	५।५०	५।४७	५।४५	५।४३	५।४१	५।३९	५।३६	५।३५	५।३४	५।३३	५।३१
१७	५।५१	५।५०	५।४८	५।४५	५।४४	५।४२	५।४०	५।३८	५।३७	५।३६	५।३५	५।३३
१८	५।५१	५।५०	५।४८	५।४६	५।४५	५।४३	५।४२	५।३९	५।३९	५।३८	५।३६	५।३५
१९	५।५१	५।४९	५।४८	५।४६	५।४५	५।४४	५।४३	५।४१	५।४१	५।४०	५।३८	५।३७
२०	५।५०	५।४९	५।४८	५।४७	५।४६	५।४५	५।४४	५।४३	५।४२	५।४१	५।४०	५।३९
२१	५।५०	५।४९	५।४८	५।४७	५।४७	५।४६	५।४५	५।४४	५।४४	५।४३	५।४२	५।४२
२२	५।५०	५।४९	५।४९	५।४८	५।४८	५।४७	५।४६	५।४६	५।४५	५।४५	५।४४	५।४४
२३	५।४९	५।४९	५।४९	५।४९	५।४८	५।४८	५।४८	५।४७	५।४७	५।४७	५।४६	५।४६
२४	५।४९	५।४९	५।४९	५।४९	५।४९	५।४९	५।४९	५।४९	५।४८	५।४८	५।४८	५।४८
२५	५।४८	५।४९	५।४९	५।५०	५।५०	५।५०	५।५०	५।५०	५।५०	५।५०	५।५०	५।५०
२६	५।४८	५।४९	५।५०	५।५०	५।५०	५।५१	५।५१	५।५२	५।५२	५।५२	५।५२	५।५२
२७	५।४८	५।४९	५।५०	५।५१	५।५१	५।५२	५।५२	५।५३	५।५३	५।५४	५।५४	५।५५
२८	५।४७	५।४९	५।५०	५।५१	५।५२	५।५३	५।५४	५।५५	५।५५	५।५६	५।५६	५।५७
२९	५।४७	५।४९	५।५१	५।५२	५।५३	५।५४	५।५५	५।५७	५।५७	५।५७	५।५८	५।५९
३०	५।४७	५।४९	५।५१	५।५३	५।५४	५।५५	५।५६	५।५८	५।५८	५।५९	६।००	६।०१
	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।

अं०	t०°	t१०°	t२०°	t३०°	t३५°	t४०°	t४५°	t५०°	t५२°	t५४°	t५६°	t५८°
अक	५।४६	५।४९	५।५१	५।५३	५।५४	५।५६	५।५७	५।५९	६।००	६।०१	६।०२	६।०३
२	५।४६	५।४९	५।५१	५।५४	५।५५	५।५७	५।५९	६।०१	६।०२	६।०३	६।०४	६।०५
३	५।४६	५।४९	५।५१	५।५४	५।५६	५।५८	६।००	६।०२	६।०३	६।०५	६।०६	६।०८
४	५।४६	५।४८	५।५२	५।५५	५।५७	५।५९	६।०१	६।०४	६।०५	६।०७	६।०८	६।१०
५	५।४६	५।४८	५।५२	५।५५	५।५७	६।००	६।०२	६।०६	६।०७	६।०८	६।१०	६।१२
६	५।४६	५।४८	५।५२	५।५६	५।५८	६।०१	६।०४	६।०७	६।०८	६।१०	६।१२	६।१४
७	५।४६	५।४८	५।५२	५।५७	५।५९	६।०२	६।०५	६।०९	६।१०	६।१२	६।१४	६।१६
८	५।४५	५।४८	५।५३	५।५७	६।००	६।०३	६।०६	६।१०	६।१२	६।१३	६।१६	६।१८
९	५।४५	५।४८	५।५३	५।५८	६।०१	६।०४	६।०७	६।१२	६।१४	६।१६	६।१८	६।२१
१०	५।४५	५।४८	५।५३	५।५८	६।०१	६।०५	६।०९	६।१३	६।१५	६।१८	६।२०	६।२३
११	५।४४	५।४८	५।५३	५।५९	६।०२	६।०६	६।१०	६।१५	६।१७	६।२०	६।२२	६।२५
१२	५।४४	५।४८	५।५४	६।००	६।०३	६।०७	६।११	६।१७	६।१९	६।२१	६।२४	६।२७
१३	५।४४	५।४८	५।५४	६।००	६।०४	६।०८	६।१२	६।१८	६।२१	६।२३	६।२६	६।३०
१४	५।४३	५।४९	५।५४	६।०१	६।०५	६।०९	६।१३	६।२०	६।२२	६।२५	६।२८	६।३३
१५	५।४३	५।४९	५।५५	६।०२	६।०६	६।१०	६।१५	६।२१	६।२४	६।२७	६।३०	६।३४
१६	५।४३	५।४९	५।५५	६।०२	६।०६	६।११	६।१६	६।२३	६।२६	६।२९	६।३२	६।३६
१७	५।४२	५।४९	५।५५	६।०३	६।०७	६।१२	६।१८	६।२४	६।२८	६।३१	६।३५	६।३९
१८	५।४२	५।४९	५।५६	६।०४	६।०८	६।१३	६।१९	६।२६	६।२९	६।३३	६।३७	६।४१
१९	५।४२	५।४९	५।५६	६।०४	६।०९	६।१४	६।२०	६।२८	६।३१	६।३५	६।३९	६।४३
२०	५।४२	५।४९	५।५६	६।०५	६।१०	६।१५	६।२२	६।२९	६।३३	६।३७	६।४१	६।४५
२१	५।४२	५।४९	५।५७	६।०६	६।११	६।१६	६।२३	६।३१	६।३५	६।३९	६।४३	६।४८
२२	५।४२	५।४९	५।५७	६।०६	६।१२	६।१७	६।२४	६।३३	६।३६	६।४०	६।४५	६।५०
२३	५।४१	५।४९	५।५८	६।०७	६।१२	६।१८	६।२६	६।३५	६।३८	६।४२	६।४७	६।५२
२४	५।४१	५।४९	५।५८	६।०८	६।१३	६।१९	६।२७	६।३६	६।४०	६।४४	६।४९	६।५५
२५	५।४१	५।४९	५।५८	६।०८	६।१४	६।२०	६।२८	६।३८	६।४२	६।४६	६।५१	६।५७
२६	५।४१	५।४९	५।५९	६।०९	६।१५	६।२१	६।३०	६।३९	६।४३	६।४८	६।५३	६।५९
२७	५।४१	५।५०	५।५९	६।१०	६।१६	६।२२	६।३१	६।४२	६।४६	६।५०	६।५६	७।०२
२८	५।४१	५।५०	६।००	६।११	६।१७	६।२३	६।३३	६।४३	६।४७	६।५२	६।५८	७।०४
२९	५।४०	५।५०	६।००	६।११	६।१८	६।२४	६।३४	६।४५	६।४९	६।५४	७।०१	७।०६
३०	५।४०	५।५०	६।००	६।१२	६।१९	६।२५	६।३५	६।४६	६।५०	६।५६	७।०२	७।०९
३१	५।४०	५।५०	६।००	६।१३	६।२०	६।२७	६।३७	६।४७	६।५२	६।५८	७।०४	७।११

सूर्य उदय ज्ञान—नीचे उत्तरी अक्षांशो का लोकल (स्वदेशीय) समय अनुसार सूर्योदय दिया गया है इसमें अभीष्ट स्थान के रेखांतर स्टेंडर्ड टाईम को युक्त वियुक्त करने से उस अक्षांश का स्टैंडर्ड टाइम सूर्योदयकाल निकल आएगा। पूरा विवरण पृष्ठ ९ पर देखें।

अ०	०°	१०°	२०°	३०°	३५°	४०°	४५°	५०°	५२°	५४°	५६°	५८°	अ०	०°	१०°	२०°	३०°	३५°	४०°	४५°	५०°	५२°	५४°	५६°	५८°
नव	५।४०	५।५१	६।०१	६।१४	६।२१	[illegible]	६।३८	६।४९	६।५५	७।००	७।०६	७।१२	दि.	५।४५	६।०२	६।१९	६।३८	६।४८	७।०२	७।१८	७।३६	७।४५	७।५५	८।०६	८।१[illegible]
२	५।४०	५।५१	६।०२	६।१४	६।२[illegible]	६।३०	६।३९	६।५१	६।५६	७।०२	७।०८	७।१५	२	५।४६	६।०२	६।१९	६।३९	६।५०	७।०३	७।१९	७।३८	७।४७	७।५७	८।०८	८।२१
३	५।४०	५।५१	६।०२	६।१५	६।२[illegible]	६।३१	६।४१	६।५२	६।५८	७।०४	७।१०	७।१८	३	५।४६	६।०३	६।२०	६।४०	६।५१	७।०४	७।२०	७।३२	७।४८	७।५३	८।१०	८।२३
४	५।४०	५।५१	६।०३	६।१६	६।२[illegible]	६।३२	६।४[illegible]	६।५४	७।००	७।०६	७।१२	७।२०	४	५।४७	६।०३	६।२१	६।४१	६।५२	७।०५	७।२१	७।४०	७।४९	८।०१	८।११	८।२५
५	५।४०	५।५१	६।०३	६।१७	६।२४	६।३३	६।४३	६।५६	७।०१	७।०८	७।१५	७।२३	५	५।४७	६।०४	६।२१	६।४१	६।५३	७।०६	७।२२	७।४१	७।५१	८।०२	८।१३	८।२६
६	५।४०	५।५२	६।०४	६।१८	६।२५	६।३४	६।४५	६।५७	७।०३	७।१०	७।१७	७।२५	६	५।४७	६।०४	६।२२	६।४२	६।५४	७।०७	७।२३	७।४३	७।५२	८।०४	८।१४	८।२८
७	५।४०	५।५२	६।०४	६।१८	६।२६	६।३६	६।४६	६।५९	७।०५	७।१२	७।१९	७।२७	७	५।४८	६।०५	६।२२	६।४३	६।५५	७।०८	७।२४	७।४४	७।५३	८।०[illegible]	[illegible]	८।२९
८	५।४०	५।५२	६।०५	६।१९	६।२७	६।३७	६।४८	७।०१	७।०७	७।१४	७।२१	७।३०	८	५।४८	६।०५	६।२३	६।४४	६।५५	७।०९	७।२५	७।४५	७।५४	८।०६	८।१७	८।३०
९	५।४१	५।५३	६।०५	६।२०	६।२८	६।३८	६।४९	७।०२	७।०९	७।१५	७।२३	७।३२	९	५।४९	६।०६	६।२४	६।४४	६।५६	७।१०	७।२६	७।४६	७।५६	८।०७	८।१८	८।३१
१०	५।४१	५।५३	६।०६	६।२१	६।२९	६।३९	६।५०	७।०४	७।१०	७।१७	७।२६	७।३४	१०	५।४९	६।०६	६।२४	६।४५	६।५७	७।११	७।२७	७।४७	७।५७	८।०९	८।२०	८।३२
११	५।४१	५।५३	६।०७	६।२२	६।३०	६।४०	६।५२	७।०६	७।१२	७।१९	७।२७	७।३७	११	५।५०	६।०७	६।२५	६।४६	६।५८	७।१२	७।२८	७।४८	७।५८	८।१०	८।२१	८।३४
१२	५।४१	५।५४	६।०७	६।२२	६।३१	६।४१	६।५३	७।०७	७।१४	७।२१	७।३०	७।३९	१२	५।५०	६।०७	६।२५	६।४६	६।५८	७।१७	७।२९	७।४९	७।५९	८।११	८।२२	८।३५
१३	५।४१	५।५४	६।०८	६।२३	६।३२	६।४२	६।५४	७।०९	७।१६	७।२३	७।३२	७।४१	१३	५।५१	६।०८	६।२६	६।४७	६।५९	७।१३	७।३०	७।५०	८।००	८।१२	८।२३	८।३६
१४	५।४१	५।५४	६।०८	६।२४	६।३३	६।४४	६।५६	७।११	७।१८	७।२५	७।३४	७।४३	१४	५।५१	६।०८	६।२७	६।४८	७।००	७।१४	७।३१	७।५१	८।०१	८।१३	८।२४	८।३८
१५	५।४१	५।५५	६।०९	६।२५	६।३४	६।४५	६।५७	७।१२	७।१९	७।२७	७।३६	७।४६	१५	५।५२	६।०९	६।२७	६।४८	७।०१	७।१५	७।३१	७।५२	८।०२	८।१३	८।२५	८।३९
१६	५।४१	५।५५	६।०९	६।२६	६।३५	६।४६	६।५९	७।१४	७।२१	७।२९	७।३८	७।४८	१६	५।५२	६।०९	६।२८	६।४९	७।०१	७।१५	७।३२	७।५३	८।०३	८।१४	८।२६	८।४०
१७	५।४२	५।५५	६।१०	६।२७	६।३६	६।४७	७।००	७।१६	७।२३	७।३१	७।४०	७।५०	१७	५।५२	६।१०	६।२८	६।५०	७।०२	७।१६	७।३३	७।५३	८।०३	८।१५	८।२७	८।४१
१८	५।४२	५।५६	६।११	६।२७	६।३७	६।४८	७।०१	७।१७	७।२५	७।३३	७।४२	७।५२	१८	५।५३	६।१०	६।२९	६।५०	७।०२	७।१७	७।३३	७।५४	८।०४	८।१६	८।२८	८।४२
१९	५।४२	५।५६	६।११	६।२८	६।३८	६।४९	७।०३	७।१९	७।२६	७।३५	७।४४	७।५५	१९	५।५३	६।११	६।२९	६।५१	७।०३	७।१७	७।३४	७।५५	८।०५	८।१६	८।२९	८।४३
२०	५।४२	५।५७	६।१२	६।२९	६।३९	६।५१	७।०४	७।२०	७।२८	७।३६	७।४६	७।५७	२०	५।५४	६।११	६।३०	६।५१	७।०४	७।१८	७।३५	७।५५	८।०५	८।१७	८।३०	८।४३
२१	५।४२	५।५७	६।१२	६।३०	६।४०	६।५२	७।०५	७।२२	७।३०	७।३८	७।४८	७।५९	२१	५।५४	६।१२	६।३०	६।५२	७।०४	७।१८	७।३५	७।५६	८।०६	८।१८	८।३१	८।४४
२२	५।४३	५।५८	६।१३	६।३१	६।४१	६।५३	७।०७	७।२३	७।३१	७।४०	७।५०	८।०१	२२	५।५५	६।१३	६।३१	६।५२	७।०५	७।१९	७।३६	७।५६	८।०६	८।१८	८।३१	८।४५
२३	५।४३	५।५८	६।१४	६।३२	६।४२	६।५४	७।०८	७।२५	७।३३	७।४२	७।५२	८।०२	२३	५।५५	६।१३	६।३१	६।५३	७।०५	७।१९	७।३६	७।५७	८।०७	८।१९	८।३१	८।४६
२४	५।४३	५।५८	६।१४	६।३२	६।४३	६।५५	७।०९	७।२६	७।३५	७।४४	७।५४	८।०५	२४	५।५६	६।१३	६।३२	६।५३	७।०६	७।२०	७।३७	७।५७	८।०७	८।१९	८।३२	८।४६
२५	५।४३	५।५९	६।१५	६।३३	६।४४	६।५६	७।१०	७।२८	७।३६	७।४५	७।५६	८।०८	२५	५।५६	६।१४	६।३२	६।५४	७।०६	७।२०	७।३७	७।५८	८।०८	८।१९	८।३२	८।४६
२६	५।४३	५।५९	६।१५	६।३४	६।४५	६।५७	७।१२	७।२९	७।३८	७।४७	७।५७	८।१०	२६	५।५७	६।१४	६।३३	६।५४	७।०६	७।२१	७।३७	७।५८	८।०८	८।१९	८।३२	८।४६
२७	५।४४	६।००	६।१६	६।३५	६।४६	६।५८	७।१३	७।३१	७।३९	७।४९	७।५९	८।१२	२७	५।५७	६।१५	६।३३	६।५४	७।०७	७।२१	७।३८	७।५८	८।०८	८।१९	८।३२	८।४७
२८	५।४४	६।००	६।१७	६।३६	६।४७	६।५९	७।१४	७।३२	७।४१	७।५०	८।०१	८।१४	२८	५।५८	६।१५	६।३४	६।५५	७।०७	७।२१	७।३८	७।५८	८।०८	८।१९	८।३२	८।४७
२९	५।४५	६।०१	६।१७	६।३६	६।४८	७।००	७।१५	७।३४	७।४२	७।५२	८।०३	८।१५	२९	५।५८	६।१६	६।३४	६।५५	७।०७	७।२१	७।३८	७।५९	८।०८	८।१९	८।३२	८।४७
३०	५।४५	६।०१	६।१८	६।३७	६।४८	७।०१	७।१७	७।३५	७।४४	७।५४	८।०५	८।१७	३०	५।५९	६।१६	६।३४	६।५६	७।०८	७।२२	७।६८	७।५९	८।०८	८।१९	८।३२	८।४७
	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	३१	५।५९	६।१७	६।३४	६।५६	७।०८	७।२२	७।३८	७।५९	८।०८	८।१९	८।३२	८।४७

सकल साधरणापयोगी प्रश्न चक्र

नीचे लिखे हुए इन सात चक्रों में विवाह सम्बन्धी, सन्तान आदि ७ प्रकार के प्रश्न कहे हैं जिस प्रश्न की कामना हो उस प्रश्न चक्र पर अपने दहिने हाथ की अनामिका ऊंगली किसी कोष्ठ पर रखें जिस कोष्टक में जो अंक और जो अक्षर होगा उसी प्रश्न फल चक्र में उतने अंक के उस अक्षर के आगे उस प्रश्न का फल लिखा होगा वह ही फल प्रश्नकर्त्ता को प्राप्त होगा। जैसे किसी ने विवाह चक्र के अक्षर ३ कोष्टक के ऊपर ऊंगली को रखा ता विवाह फल चक्र में ३ अंक के सामने उसका फल लिखा है तुम्हारा विवाह बहुत जल्दी होने वाला है सो यही फल प्रश्नकर्त्ता को मिलेगा। इसी तरह अन्य प्रश्नों में भी शुभाशुभ विचार जान लेना चाहिए।

विवाह परीक्षा चक्रम् (१)

ए	ऋ	ओ	क	ख	ग	अ	ई	उ	ॠ	प्रश्नाक्षर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कोष्ठकाणि

रोजगार परीक्षा चक्रम् (५)

छ	ज	झ	ठ	ट	ढ	ड	त	थ	च	प्रश्नाक्षर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कोष्ठकाणि

सन्तान परीक्षा चक्रम् (२)

ॠ	ए	लृ	आ	क	ख	ग	अ	इ	उ	प्रश्नाक्षर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कोष्ठकाणि

व्यापार परीक्षा चक्रम् (६)

क	ख	अ	इ	ऊ	ऋ	ए	लृ	ओ		प्रश्नाक्षर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कोष्ठकाणि

रोग परीक्षा चक्रम (३)

ज	झ	उ	ट	ढ	ड	त	घ	च	छ	प्रश्नाक्षर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कोष्ठकाणि

नष्ट द्रव्य परीक्षा चक्रम् (७)

य	म	भ	प	थ	न	घ	द	ब	फ	प्रश्नाक्षर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कोष्ठकाणि

विद्या परीक्षा चक्रम् (४)

[illegible]	ओ	क	ख	ग	आ	इ	उ	ऋ	ए	प्रश्नाक्षर
[illegible]	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कोष्ठक

विवाह विचार फलम् (१)—१ ए| तुम्हारे मकान के दक्षिण की और विवाह होगा देर है। २ ऋ| कुछ देर है विवाह मकान के दक्षिण दिशा में होगा। ३ ओ विवाह बहुत जल्दी होने वाला है ऐसा जाना जाता है। ४क| मकान से पूर्व दिशा में विवाह होने वाला है। ५ख| विवाह तुम्हारा होगा परन्तु अभी देर से होगा। ६ग अभी विवाह नहीं होगा ऐसा जाना जाता है। ७अ| मकान के पूर्व दिशा में विवाह होने वाला है। ८ई| तुम्हारा विवाह मकान के उत्तर की ओर होगा। ९उ| विवाह मकान के उत्तर दिशा में कुछ देर से होगा। १ ॠ| तुम्हारा विवाह पश्चिम दिशा में जल्दी होगा।

सन्तान विचारफलम्(२)—१ॠ| तुम्हारे संतान होगी देरी है ईश्वर की ऐसी इच्छा है। २ए| कन्या होने का योग पाया जाता है जल्दी होगी। ३लृ| बहुत यत्न करने से कभी पुत्र की उत्पत्ति होगी। ४आ| कुछ समय के बाद आपके पुत्र उत्पन हो जावेगा ५क| तुम्हारे घर में शीघ्र कन्या उत्पन होने वाली है। ६ख| पुत्र प्राप्ति का योग है परन्तु कुछ अभी देरी है। ७ग| सुन्दर बालक होगा ऐसा जानने मेंआता है। ८अ|अभी तुम्हारे भाग्य में संतान नहीं है चिंता मत करो। ९इ| तीन संतान तुम्हारे घर में होंगी ऐसा योग है। १०उ| कन्या संतान होगी ऐसा योग पाया जाता है।

रोग विचारफलम्(३)—१ज पित्त के विकार से रोग हुआ है जल्दी ठीक होगा २झ नाड़ी में कफ का विकार है अच्छा हो जावेगा। ३उ गर्मी का विकार है भला होगा ऐसा निश्चय है। ४ट कफ विकार से बहुत कष्ट है आराम हो जावेगा। ५ढ पित्त के विकार से शरीर दूषित है भला हो जावेगा। ६ड वात और पित्त की व्याधि है कष्ट दूर होने वाला है ७त इडा नाम की नाडी में रोग हुआ है देरसे आराम होगा ८घो गर्मी और धातु का विकार है देर से भला होगा। ९च गर्मी अधिक होने से कष्ट है सो भला होगा। १०छ| शरीर में जो रोग है उसे देर से आराम होगा।

विद्या विचारफलम्(४)—१लृ बहुत परीश्रम करने से विद्या प्राप्त होगी। २ओ तुम्हारे भाग्य में विद्या बहुत है सफलता के योग है ऐसा योग। ३क जो विद्या पढोगे वह ही जल्दी से आ जावेगी। ४ख विद्या बहुत फलदायक है इसको पढ़ते जावो। ५ग विद्या पढ़ो देर से इसका फल मिल जावेगा। ६आ विद्या नहीं आवेगी कोई और काम करो। ७इ विद्या पढो अनेक प्रकार की विद्या प्राप्त होगी। ८उ विद्या भाग्य में नहीं है परिश्रम से प्राप्त होगी। ९ऋ विद्या कष्ट से प्राप्त होगी ऐसा योग है। १०ए| विद्या मध्यम दरजे की है ऐसा जाना जाता है।

रोजगार विचारफलम्(५)—१छ उद्यम करो रोजगार लग जावेगा कुछ देर है। २ज देर से रोजगार लगेगा भजन किया करो। ३झ रोजगार बहुत अच्छा लगेगा थोड़ीदेरहै। ४ठतुम्हारारोजगारबहुतअच्छा लग जावेगा। ५ट| चिंतामतकरोकारोबार बनने वाला है। ६ढ| रोजगार अच्छा बनेगा कुछ विलम्ब से होगा। ७ड तुम्हारा रोजगार परदेश में होगा ऐसा लिखा है। ८त रोजगार हो कर बिगड गया है फिर हो जायेगा। ९थ तुम्हारा रोजगार नहीं लगेगा कुछ नुकसान होगा। १०च रोजगार लगने वाला है इसकी चिन्ता मत करो।

व्यापार परीक्षाफलम्(६)—१क तुम को मूल द्रव्य के व्यापार से लाभ होगा। २ख इस व्यापार से लाभ होगा चिन्ता मत करो। ३ग तुम को जीव वस्तु के व्यापार से लाभ होगा। ४अ व्यापार मत करो इसमें तुम्हारा धन नष्ट होगा। ५इ तुम व्यापार करो इससे तुमको बहुत लाभ होगा। ६उ तुम व्यापार मत करो इससे नुकसान उठाओगे। ७ऋ तुम मन में व्यापार की इच्छा करते हो ठीक नहीं। ८ए मूल और जीव वस्तु का व्यापार लाभकारी है। ९ल व्यापार करने से अपने धन का भी नुकसान है। १०ओ व्यापार करो निश्चय ही तुम को बहुत लाभ होगा।

नष्ट द्रव्यफलम्(७)—१य जो वस्तु खो गई है बड़े कष्ट से मिलेगी। २म| मूल सहित धातु खो गया है सो घर में है। ३भ जो द्रव्य धातु खो गया है मिलेगा चिन्ता नहीं। ४प जो द्रव्य धातु खो गया है कठिनता से मिलेगा। ५थ मकान के पश्चिम उत्तर में खोई हुई वस्तु मिलेगी। ६न यह गई वस्तु तुमको कठिनता से मिलेगी। ७घ धातु द्रव्य खो गया है सो मित्र के पास है। ८द| तुम्हारी खोई हुई वस्तु देर से मिल जावेगी। ९फ धातु द्रव्य खो गया है खोजने से मिल जावेगा। १०ब मूल सहित धातु द्रव्य खो गया है घर में मिलेगा।

सम्पादक :--पन्नालाल शर्मा एम. ए.

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, स्टैंडर्ड टाइम और चर खण्ड

जिस स्थान का अन्तर (+) चिन्ह से दिखाया गया है वह नगर ८२½ रेखा से उतने मिनट पश्चिम में है और जिस स्थान पर (—) चिन्ह दिखाया है वह स्थान उतने मिट पूर्वमें है

पंजाब नाम शहर	अक्षांश	देशांतर मि. से	चरखण्ड	पंजाब नाम शहर	अक्षांश	देशांतर मि. से	चरखण्ड	पंजाब नाम शहर	अक्षांश	देशांतर मि. से	चरखण्ड	यू. पी. नाम शहर	अक्षांश	देशान्तर मि. से	चरखण्ड
अम्बाला	३०।२१	+२२।३२	७०।५६।२३	नाहन स्टेट	३०। ३	+२०।३६	६९।५६।२३	रिवाड़ी	२८।१२	+२३।२०	६४।५१।३१	इलाहाबाद	२५।२५	+ २।३२	५७।४६।१९
अटक	३३।५३	+३४।५०	८०।६४।२७	नाभा	३०।२५	+२५।२४	७०।५६।१३	रोहतक	२८।५४	+२३।४४	६६।५३।२२	उन्नाव	२६।४८	+ ७। ८	६१।४९।२०
अमृतसर	३१।३९	+३०।३२	७४।५९।२५	नारनौल	२८। २	+२५। ४	६४।५१।२१	लद्दाख	३५। ०	+२६। ०	८४।६७।२८	ऐटा	२७।३५	+१५।२०	६६।५०।२१
इस्लामाबाद	३३।४३	+२८।५२	८०।६४।१७	नालागढ़	३१। ३	+२३।१२	७२।५८।२४	लायलपुर	३१।२५	+३७।४०	७३।५९।२४	कन्नौज	२७। ३	+१०। ८	६१।४९।२०
करनाल	२९।४२	+२१।५२	६८।६५।२३	पटियाला	३०।१७	+२४।२०	७०।५६।२३	लालामूसा	३२।४०	+३३।५६	७७।६२।२६	कानपुर	२६।२८	+ ८।३६	६०।४८।२०
कपूरथला	३१।२३	+२८।२०	७३।५९।२४	पठानकोट	३२।१७	+२७।१२	७६।६१।२५	लुधियाना	३०।५५	+२८।४०	७४।५८।२४	कासगंज	२७।४३	+१५।३२	६३।५१।२१
कांगड़ा	३२। ५	+२८।२३	७५।६०।२५	पानीपत	२९।२३	+२२। ८	६७।५४।२२	लाहौर	३१।५५	+३३।२४	७२।५७।२४	काशी	२५।२०	— २। ८	५७।४५।१९
कालाबाग	३२।५८	+३६।४३	७८।६२।२६	पुन्छ	३३।४८	+३३।४०	८०।६४।२७	शाहपुर	३२।१६	+३९।५६	७६।६१।२५	खुरजा	२८।१५	+१८।४०	६४।५२।२१
काश्मीर	३४। ०	+२२। ०	८१।६५।२७	फगवाड़ा	३१।१३	+२६।५६	७३।५८।२४	शाहदरा	३१।१०	+३३।००	७२।५८।२४	गढ़वाल	२६।१३	+१८।४०	७०।५६।२३
कैथल	२९।४८	+२४।१६	६९।५५।२३	फरीदकोट	३०।४०	+३०।१२	७१।५७।२४	शोरकोट	३०।१०	+४१।३६	७२।५७।२४	गाजीपुर	२५।३५	+ ४।२०	५७।४६।१९
कैम्बलपुर	३३।४७	+४०।२८	८०।६४।२७	फिरोजपुर	३०।५५	+३१।२०	७२।५७।२४	श्रीनगर	३४। ६	+३०।४८	७९।६३।२६	गाजियाबाद	२८।४०	+२०। ८	६६।५३।२२
खुशहालगढ़	३२।२१	+४०।२४	७६।६१।२५	बटाला	३१।४९	+२९। ४	७४।६०।२५	सरगोधा	३२। ६	+३९।२०	७५।६०।२५	गोंडा	२७। ३	+ २। ८	६१।४९।२०
खैरपुर	२९।३४	+४०।५२	६८।५५।२३	बठिंडा	३०।११	+३०।१२	७०।५६।२३	साहीवाल	३१।५८	+४०।३२	७५।६०।२५	गोरखपुर	२६।४४	— ३।३६	६०। ८।२२
गढ़शंकर	३१।१३	+२५।१६	७३।५८।२४	बहावलपुर	२८।१४	+४२।५२	६५।५२।२२	शिमला	३१। ६	+२१।२४	७२।५८।२४	चन्दौसी	२८।२७	+१४।५२	६५।५२।२२
गिलगित	३५।५५	+३२।४८	८७।६९।२९	बारामूला	३४।१०	+३२। ०	८१।६५।२७	सिरसा	२९।३२	+२९।३२	६८।५४।२३	जौनपुर	२५।४६	— ७।५६	५७।५६।१९
गुजरात	३२।३६	+३३।४२	७७।६१।२६	बिलासपुर	३१।१९	+२२।४०	७३।५८।२४	सुकेत	३१।२४	+२२। ०	७५।५९।२४	झांसी	२५।२७	+१५।४४	५८।४६।१९
गुजरांवाला	३२।१०	+३३।४०	७५।७०।२५	भन्जीस्टेट	३१।१२	+२१।१२	७२।५८।२४	सुलतानपुर	३१।५८	+२८।३२	७५।६०।२५	देवप्रयाग	२३। ९	+१५।३६	७०।५६।२३
गुड़गांव	२८।३७	+२१।४४	६५।५२।२२	भिवानी	२८।४६	+२४।४८	६६।५३।२२	स्यालकोट	३२।३१	+३१।३६	७६।६१।२५	देवबन्द	२९।४२	+१९। ८	६८।५५।२३
गुरदासपुर	३२। ३	+२८।१२	७५।६०।२५	भेरा	३२।२९	+३८।१२	७६।६१।२५	हरिपुर	३४। ०	+३८। ८	८१।६५।२७	देहरादून	३०।१९	+१७।४८	७०।५६।२३
चनाव	३२। ०	+३७। ४	७५।६०।२५	मिटगुमरी	३०।५८	+३६।३१	७२।५८।२४	हिसार	२९।१०	+२७। ८	६७।५४।२२	नगीना	२९।२७	+१६। ४	६८।५४।२३
चम्बा	३२।२९	+२५।२०	७६।६१।२५	मंडी	३१।४३	+२२। ८	७४।५९।२५	होशियारपुर	३१।३२	+२६।१२	७४।५९।२५	नैनीताल	२९।२३	+१२। ०	६७।५४।२२
जम्मू	३२।४४	+३०।३२	७७।६२।२६	मरी	३३। ३	+४३।४४	७८।६२।२६	यू० पी०	—	—	—	पीलीभीत	२८।३८	+१०।३७	६६।५३।२२
जालन्धर	३१।२१	+२७।४४	७३।५८।२४	मलेरकोटला	३०।३१	+२६। ४	७१।५७।२४	अमरोहा	२८।५४	+१५।५६	६६।५३।२२	प्रतापगढ़	२५।३४	+ २। ४	५३।४३।१८
झींद	२९।१९	+२४।२८	६७।५४।२२	मीरपुर	३३।१२	+३५।३६	७८।६३।२६	अमेठी	२६। ८	+ २।४०	५९।४७।२०	फतेहगढ़	२७।२३	+११।४०	६२।५०।२१
झंग	३१।२८	+४०।४४	७३।५८।२४	मुजफरनगर	३०। ५	+४५। ४	६९।५६।२३	अयोध्या	२६।४८	+ १। ०	६१।४९।२०	फतेहपुर	२५।५५	+ ३।३२	५८।४७।१९
जेहलम	३२।५५	+३५। ८	७८।६३।२६	मुजफरपुर	२९।५७	+१९। ४	६८। ५।२३	अल्मोड़ा	२९।३७	+११।२०	६८।५५।२३	फरूखाबाद	२७। ३	+११।३२	६२।५०।२१
तक्षशिला	३३।४०	+३८।४०	८०।६४।२७	मुलतान	३०।१३	+४४। ४	७०।५६।२३	अलीगढ़	२७।५३	+१७।३६	६३।५१।२१	फैजाबाद	२६।४७	+ १।२८	६०।४८।२०
कुरुक्षेत्र	२९।५८	+२२।१६	६९।५५।२३	रामनगर	३२।५२	+२८।३२	७७।६३।२६	आगरा	२७।१०	+१७।५२	६२।४९।२१	बदायुं	२८। २	+१३। ०	६४।५१।२१
देहली	२८।३९	+२१। ८	६५।५२।२२	रावलपिंडी	३३।३७	+३७।४८	८०।६४।२७	आरामगढ़	२६। ३	+ २।५२	५९।४७।२०	बरेली	२८।२२	+१२।१४	६५।५२।२२
धर्मशाला	३२।१६	+२३।४८	७६।६१।२५	रियासी	३३। ५	+३०।४४	७८।६३।२६	इटावा	२६।४७	+१३।५२	५०।४८।२०	बलिया	२५।४४	— ६।४४	५८।४६।१९

बस्ती	२३।४८	— १। ४	५३।४२।१८	खैरगढ़	२१।२६	+ ५।५२	४७।४४।१६	आबू	२४।२३	+४१।३२	५५।४४।१८	कोहाड़	१७।१८	+३३।१२	३७।३०।१५
बहराइच	२७।३४	+ ३।२८	६३।५०।२१	गुना	२४।४०	+२०।४०	५५।४४।२८	किशनगढ	२७।५३	+४६।५२	६३।५१।२१	काठियावाड़	२२। ०	+४६। ०	४९।३६।१६
बान्दा	२५।२८	+ ६।४४	५७।४६।१९	गवालियार	२६।१२	+१७।२०	५९।४७।२०	उदयपुर	२४।३७	+३५। ४	५५।४४।१८	कोहलापुर	१६।४३	+३१।५६	३६।२१।१२
बाराबंकी	२६।५६	+ ५।१२	६१।४९।२०	चम्बलपुर	२४।४८	+२८।४४	५५।४४।२१	कोटा	२५। ९	+२६।२८	६६।४५।१९	खानदेश	२०।४५	+३०। ०	४५।३६।१०
बिजनौर	२९।२३	+१७।१६	६७।५४।२२	चांदा	२९।५६	+१२।३६	४३।३५।१४	चन्देरी	२४।४२	+१७।१६	५५।४४।१८	गुजरात	२३। ०	+३६।००	५१।४१।१७
बुलन्दशहर	२८।२४	+१८।२४	६५।५२।२२	छत्रपुर	२४।५४	+११।२८	५६।४५।१९	चूरु	२८।१९	+३०। ८	६५।५२।२२	कोंकण	१४।३२	+३१। ४	२१।२५।१७
मथुरा	२७।२८	+१९।१६	६०।५०।२१	छिन्दवाड़ा	२२। ३	+१४। ४	४९।४९।१६	जयपुर	२६।५६	+२६।४४	६१।४९।२०	चालीनगांव	२०।३३	+२९।२०	४५।३६।१५
मंसूरी	३०।२७	+१७।३६	७०।६५।२३	जबलपुर	२३। ९	+१०।१२	५१।४१।१७	जैंसलमेर	२६।५५	+४६।१२	६१।४९।२८	जंजीरा	१८।१५	+३८। ०	३१।३२।१३
मिर्जापुर	२५।१०	— ०।२८	५६।४५।१९	जावरास्टेट	२३।३७	+२९।२४	५२।४२।१७	टोंकस्टेट	२६।११	+२६।५२	५९।४७।२०	जलगांव	२१। ५	+२७।२०	४६।३७।१५
मुगलसराय	२५।१७	+ २।४४	५७।४५।१९	टीकमगढ़	२४।५४	+१४।३६	५५।४४।२८	धौलपुर	२६।४०	+१८।२८	६०।४८।२०	जामनगर	२२।२७	+४१।३२	४९।४०।१६
मुरादाबाद	२८।५१	+१४।४४	६६।५३।२२	दमोह	२३।५०	+१२। ४	५३।४२।१८	नाथद्वार	२४।५६	+३४।४४	५६।४५।१२	जूनागढ़	२१।२९	+४७।३६	४७।३८।१६
मेरठ	२८।५९	+१९।१६	६६।२३।२२	दुर्ग	२१। ०	+ ४।४८	४६।३६।१५	नवलगढ़	२७।५१	+२८।४८	६३।५१।२१	द्वारिका	२२।१५	+५४। ४	४९।३९।१६
मैनपुरी	२७।१४	+१३।४८	६२।४९।२१	देवगढ़	२१।५१	+१४।४०	४८।३९।१६	नशाराबाद	२६।१८	+३०।५६	५९।४७।२०	धारवाड़	१५।२३	+२९।५६	४३।२७।१६
रानीखेत	२९।४०	+११।४८	६८।५५।२३	धारस्टेट	२२।३६	+२८।४०	५०।४०।१७	पाली	२५।४६	+३६।२०	५८।४६।१९	नडियाद	२२।४१	+३८।२०	५०।४०।१७
रामपुरस्टेट	२८।४८	+१३।४८	६६।५३।२२	नरसिंह गढ़	२३।४४	+२१।२८	५३।४२।१८	प्रतापगढ़	२४। ६	+३१।२०	५३।४३।१८	नासिका	१९।५९	+३४।४८	४४।३५।१५
रायबरेली	२६।१४	+ ४।५६	५९।४७।२०	नरसिंह पुर	२२।५७	+१३। ०	५१।४१।१७	फतेगढ़	२८। ०	+२९।५२	६४।५१।२१	परशुराम	१७।३३	+३६। ०	३८।३०।१३
रुड़की	२९।५२	+१८।२८	६९।५५।२३	नागपुर	२१। ९	+१३।४०	४६।३७।१५	विसाऊ	२८।१५	+२९।४४	६४।५२।२१	पोरबन्दर	२१।३०	+५१।३२	४८।३८।१६
रुहेलखण्ड	२८।३०	+१४। ०	६६।५३।२०	नांदगांव	२१। ०	+ ६।४८	४६।३७।१५	बीकानेर	२८। १	+३६।४८	६४।५१।२१	बक्सर	२२।१९	+४६। ८	४७।३८।१६
लखनऊ	२६।५१	+ ६।१६	६१।४२।२२	नेमवाड़ा	२२।३०	+२२। ०	५०।४०।१७	बून्दी	२५।२७	+२७।३२	५७।४६।१९	बड़ोदास्टेट	१६।११	+३७। ८	३५।२८।००
लखीमपुर	२७।५७	+ ६।४४	६४।५१।२०	बुदेलखण्ड	२४।१०	+ २। ०	५४।४३।१८	भरतपुर	२७।१४	+२०। ०	६२।५०।२१	बागलकोट	१६।५०	+२७।१०	३५।२९।१२
शाहबाद	२७।३०	+ ९।४०	६२।५०।२१	बालाघाट	२१।५५	+ ९। ०	४८।३९।१६	रत्नपुर	२८। १	+३१।२४	६४।५१।२१	बीजापुर	१४।५२	+२७। ४	३६।२९।१२
शाहजहांपुर	२७।५४	+१०।११	६३।५१।२१	बिलासपुर	२२। ५	+ १। ८	४९।३९।१६	राजगढ़	२८।३९	+२८।१६	६५।५२।२२	बेलगांव	१८।५८	+३१।५६	३४।२७।११
श्रीनगर	३१। ९	+१५।३६	७०।५६।२१	बुन्देलखण्ड	२४।४०	+१०। ०	५५।४४।१८	रामगढ़	२८।१०	+३०। ०	६४।५१।२१	बम्बई	१६।५९	+३८।४४	४१।३३।१४
सहारनपुर	२९।५८	+१९।५८	६९।५५।२३	ब्रह्मपुर	२०।४०	+१०।१६	४५।३६।१६	माधोपुर	२५।५८	+२४। ०	५८।४७।१९	रत्नागिरि	२१।१२	+३६।४४	३७।२९।१२
सीतापुर	२७।३२	+ ७। ८	६२।५०।२१	भुसावल	२१। ३	+२६।४८	४६।३७।१५	सिहगढ़	२७। ८	+५०।१२	६१।४९।२०	सूरत	२१।१२	+३८।४०	४७।३७।१५
हरदोई	२९।२३	+ ९।२०	६२।५०।२१	भोपाल	२३।१८	+२०।१६	५१।४१।१७	सीकर	२७।३६	+२९। ०	६५।५०।२१	सोमनाथ	२१। ४	+४८।१६	४७।३७।१५
हरिद्वार	२९।५२	+१७।२८	६९।५५।२३	मालवा	२४। ०	+२६। ०	५२।४३।१८	सुजानगढ़	२७।४२	+३२।३६	६३।५०।२१	सोलापुर	१६।४०	+३६।२४	३६।२९।१२
हाथरस	२७।३६	+१७।३६	६३।५०।२०	रत्नपुर	२२।१७	+ १।१६	४९।३९।१६	हनुमानगढ़	२९।३५	+३२।३६	६९।५५।२३	मद्रास	—	—	—
				रतलाम	२३।२०	+२१।४८	५४।४३।१८	बम्बई	—	—	—	अदवानी	१७।५३	+२०।४४	३३।३१।१३
सी. पी.	—	—	—	रायगढ़	२१।४५	+ ३।४४	४८।३९।१६	अलीबाग	१८।३८	+३८।२२	४०।३२।१३	अनन्तपुर	१४।४१	+१९।२४	३१।२५।१०
अमरावती	२०।५५	+१९। ०	४६।३७।१५	रायपुर	२१।१५	+ ३।३६	४७।३७।१५	अहमदाबाद	१९। ७	+३०।४८	४१।३३।१४	अर्काट	१२।५८	+१२।२४	२८।२२। ९
अकोला	२०।४२	+२९।५२	४५।३६।१५	रीवां	२४।३२	+ ४।४८	५५।४४।१८	अहमदनगर	२३। २	+३९।२६	५१।४१।१८	उटकमण्ड	११।२७	+२३। २	२४।१९। ८
इटारसी	२२।३७	+१८।५६	५०।४०।१७	सागर	२३।५०	+१५। ०	५६।४५।१९	इडरस्टेट	२३।५०	+३७।५२	५३।४२।१७	कन्याकुमारी	८। ४	+१९।३६	२७।१४। ६
इन्दौरस्टेट	२२।४४	+२६।३६	५०।४०।१७	हुसंगाबाद	२२।४६	+१९। ८	५०।४०।१७	इन्दापुर	१८। ७	+३०। ३	३९।३१।१३	फमदम	१५।३४	+१२।४४	३३।२७।११
औरंगाबाद	१९।५२	+२८।२८	४३।३५।१४	राजपूताना	—	—	—	औंधस्टेट	१७।२४	+३०।२४	३८।३०।१३	कर्नूल	१५।४९	+१७।५०	३४।३७।११
कटनी	२३।४७	+ ८।१२	५३।४२।१७	अजमेर	२६।२८	+३१।२०	६०।४८।२०	कच्छभुज	२४। ०	+५०। ०	५३।४३।१८	[illegible]	११।१५	+२६।४४	२४।१९। ८
												[illegible]	[illegible]	[illegible]	२७।२२। ९

खण्डवा २१।५० +२४।२८ ४८।३८।१६

कृष्णा कावेरी	१२।३२	+१७	२२	२१	९
कोकोनाडा	१६।५७	+ १	३५	१९	१२
कोदरु	१४।४९	+२५	३८	२५	११
चामराज	११।५६	+२२	२९	२०	८
चिन्तूर	१३।१३	+१३	२६	२६	९
ट्रावनकोर	९। ०	+२२	१३	१५	६
त्रिचनापल्ली	१०।५४	+१५	२३	१९	८
त्रिवेन्द्रम	८।२९	+२३	१५	१४	६
नीलगीरी	११।२४	+२३	२२	१९	८
पाण्डीचरी	११।५६	+२६	२८	२०	८
बल्लारी	१५।१५	+२२	३८	२३	११
बंगलोर	१२।५८	+१९	२९	२२	९
मद्रास	१३। ६	+ ९	२४	२२	९
मदनापल।	१३।४४	+१५	२९	२६	१०
रामेश्वरम्	९।१८	+१३	२६	२६	६
विजागापट्टम	१७।४२	— ३	३८	३१	१६
विजयनगरम्	१८। ७	— ४	३९	३१	१३
श्री रंगम्	१०।५२	+१५	२३	१८	८
बिहारउड़ीसा।	—	—	—	—	—
आरा	२५।३४	— ९	५७	४६	१९
उड़ीसा	२१।२२	— ८	४७	३८	१६
कटक	२०।२८	+१४	४५	३६	१५
कोईटा	३०।१२	+६२	४०	४३	२३
गया	२४।४६	—१०	५४	४४	१८
गोपालपुर	२९।१६	—१०	४२	३४	१४
गोविन्दपुर	२३।५१	—१६	१३	४२	१८
छपरा	२५।४७	— ९	५८	४६	१९
जगन्नाथपुरी	१९।४६	—१४	४३	३५	१४
दरभंगा	२६। ८	—१४	५९	४७	२०
दुमका	२४।३०	—१९	५५	४४	१८
बांकीपुर	२५।४०	—११	५८	४६	१९

भागलपुर	२५।१३	—१८	५६	४५	१९
मुंगेर	२५।२३	—२६	५७	५	१९
मोतीहारी	२६।४०	— ९	३०	४८	२०
रांची	२३।२३	—११	५२	६२	१७
रानीगंज	२५।५२	—२१	५८	४७	१९
रामपुर	२१। ५	— ७	४६	३७	१९
वैद्यनाथ	२४।३०	—१५	५५	४४	१८
सीमा प्रांत	—	—	—	—	—
एबटाबाद	३४। ९	+३७	५१	६५	२७
कलात	२५।२१	+७४	५७	४५	१९
कराची	२४।५१	+६२	५५	४४	१८
काठमंडू	२६।४२	+११	६३	०	२१
कोहाट	३३।३६	+४४	८०	६४	२७
कोचीन	९।५८	+२५	२२	१८	७
कोलम्बो	६।५६	+१०	१४	१२	५
गोवा	१५।२७	+३६	२३	२७	११
चमन	३०।३५	+७६	५१	५८	२४
नौशहरा	३४। ०	+४२	८१	३५	२७
पेशावर	३४। १	+४४	८१	४५	२६
बन्नू	३३। ०	+४७	७८	५३	२७
सक्खर	२७।४२	+४४	६३	५०	२९
सीलोन	७। ९	+७६	१५	१२	३
बिलोचिस्तान	२७।३०	+ ८	३२	५०	२१
बंगाल					
आसनसोल	२३।४२	—१८	५३	४२	१८
कलकत्ता	२२।३४	—२३	४८	३९	३३
कूचबिहार	२६।२०	—२८	३०	४८	२०
चटगांव	२२। ९	—३८	४८	३९	१६
चन्द्रनगर	२२।५१	—२४	५१	४१	१७
चांदपुर	२३।१२	—३३	५१	४१	१७
चौबीसपरगना	२२।३०	—२४	५०	४०	१७

ढाका	२३।४५	—३२	५३	४२	१८
दारजिलिंग	२७।०४	—२३	६१	४९	१०
दिनाजपुर	७५।३७	—२५	५५	४७	१९
नारायणगंज	२३।३७	—३२	५२	४२	१७
पटना	२५।३३	—११	५७	४७	१९
पूरणीया	२४।४३	—२०	५८	४६	१९
बांकुर	२३।१४	—१८	५१	४१	१७
मिदनापुर	२२।२५	—१९	४९	४०	१६
मुर्शीदाबाद	२४।११	—२३	५५	४४	१८
मयमनसिंह	२५।४६	—३२	५५	४४	१८
ब्रह्मा	—	—	—	—	—
मांडले	२२। ०	—५५	४८	३१	१६
रंगून	१६।४८	—५५	३६	२१	१२
हैदराबाद	—	—	—	—	—
जस्मानाबाद	१८। ८	+२५	३९	३१	१३
गुल्लबर्ग	१७।२२	+२३	३८	३०	१५
गोलकुण्डा	१७।४७	+ ०	३८	३१	२३
दौलताबाद	१९।१२	+२९	४३	३५	१४
रायपुर	१६।१०	+२१	३५	२८	१२
शाहाबाद	१७।२०	+१७	३७	३०	१२
हैदराबाद	१७।२०	+१६	३७	३०	१२
आसाम					
आसाम	२६। ०	—४२	५८	४७	१९
कच्हार	२४।५०	—४१	५५	४४	८
गोलघाट	२६।३७	—४६	६०	४५	१९
चिरापुंजी	२५।१९	—३७	५७	४८	२०
डिब्रूगढ़	२७।२१	—५०	६२	५०	२१
नौगाव	२६।२३	—४१	५९	४८	२०
मणिपुरस्टेट	२४।४४	—४६	५५	४४	१८
शिलांग	२५।६३	—३८	५७	४६	१९
सिलहट	२४।५३	—३८	५६	४६	१९

केनिया	३७।५२	+२००
बगदाद	३३।२०	+१५२
मक्का	२१।२९	+१७०
अदन	१२।४६	+१५१
तेहरान	३५।५१	+१२४
काबुल	३४।३०	+ ५५
गजनी	३३।३४	+ ५६
कंधार	३१।३७	+ ६८
यारकन्द	५८।२४	— २१
पेकिंग	३९।५५	—१३६
नानकिंग	३२। ७	—१४५
हाँगकांग	२२।१२	—१२७
पानामा	२७।३२	— ३०
ल्हासा	२९।४०	— ३४
स्याम	१६। ०	— ०५
बैंकाक	१३।४२	— ७२
ओसाका	१२। ०	—२१९
सिंगापुर	१।१७	— ८५
जेनसन	३९।११	—१८०
टोकियो	३५।४०	—२३५
अण्डेमान	१२। ०	— ४१
योरुप		
ग्रीनविच	५१।५०	+३३०
लण्डन	५१।३०	+३३०
मानचेष्टर	५३।२८	+३२१
ग्लासगो	५५।५२	+३१३
डबलिन	५३।११	+३०५
ब्रूसेल्स	५०।४२	+३१३
कोपनहेगन	५५।४०	+२८०
बर्लिन	५२।६२	+२७५
हेमबर्ग	५३।३५	+२९०

वियाना	४८।१५	+२५३
रोम	४१।५५	+२८४
बेलग्रेड	४४।४०	+२४४
एथंस	३७।३४	+२१८
बुडापेस्ट	४३।२१	+२५५
सोफिया	४७।४०	+२३५
वारसा	५२।१२	+२४७
स्टाकहोम	५२।२०	+२५७
मास्को	५५।४५	+५८९
आइसलैंड	६५।००	+२६०
वाशिंगटन	३८।५५	+७०१
न्यूयार्क	४०।४३	+८१४
शिकागो	४२। ०	+७५९
ओटावा	४५।२७	+८०७
मक्सिको	२६। ०	+७४२
आस्ट्रेलिया	(द)	
फिजी	१६। ०	—३९०
सिडनी	३३।५२	—२७५
मेलबार्न	६७।५०	—२५०
वेलिंग्टन	४१।१६	—३९९
अफ्रीका	—	—
नरोबी	१।१८	+१८३
ट्रांसवाल	२५।००	+२१४
केपटाऊन	३३।५६	+२५६
लाहबोरिया	६। ०	+२२४
डरबन	२९।५२	+२०६
कैरो	३०। २	+२०५
अलग्जेंड्रिया	३१।१२	+२१०
स्वेज	३०। ०	—२००

विदेशों के स्टैं. टा. का भारत के स्टैं. टा. से अंतर घंटा मिटों में लिखा है। धन चिन्ह भारत से पश्चिम दिशा जानना धनचिन्ह (+) है। दूसरा चिन्ह ऋण (—) का है। पूर्व दिश ऋण अर्थात् पहले जानना।

अफगानिस्तान +१—०। बर्मा —१—०। मलाया —२—०। मिश्र +३ - ३०। इंगलैंड +५ - ३०। टर्की +३ - ३०। इराक +२ - ३०। ईरान +२ - ०। इटली +४ - ३०
अमरीका +१० — ३०। फ्रांस +५ - २०। जनेवा +५ - ००। सिंगापुर —१ - २५। कैनेडा +१२ - ३०। ब्राजील +९ - ००। जापान ३ - ००। कीनिया +३ - ००
फ्रांस + — ३०। पूर्व जर्मनी +४ - ३०। रूस +२ - ३०। चीन — २ - ३०। नैरोबी +३ - ३। योगेण्डा +३ - [illegible]। वाशिंगटन +१० - ४०। न्यूयार्क +१० — ३०। मास्को +३ — ००

आजकल अयनांश लगभग २३।३२' है जबकि, नीचे लिखी सारेणी २३।०० अयनांश की है। अपने इष्ट कालिक स्पष्ट में से ०।३२ कला घटा देने से शुद्ध लग्न-स्पष्ट निकल आवेगा। प्रकाशक-

लग्न सारणी जालन्धर

अंश	००	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष	०२	०२	०२	०२	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०३	०४	०४	०४
००	३१	४४	५१	५८	०५	११	१८	२५	३३	४१	४९	५७	०५	१३	२१
वृष	०६	०६	०६	०६	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०८	०८	०८	०८
०१	३०	३८	४६	५४	०२	१०	१८	२७	३६	४६	५६	०६	१६	२६	३६
मिथुन	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
०२	१४	२४	३४	४४	५४	०४	१४	२५	३६	४७	५८	१०	२२	३४	४५
कर्क	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९
०३	५१	०२	१४	२६	३७	४८	००	१२	२४	३६	४८	००	१२	२४	३६
सिंह	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५
०४	४७	५९	०२	१०	३४	४६	५८	०९	२१	३३	४५	५६	०८	२०	३२
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१
०५	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	००	१२	२४	३५	४७	५९	११	२२
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७
०६	३०	४१	५३	०५	१७	२९	४०	५१	०३	१५	२७	३९	५१	०३	१५
वृश्चिक	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३
०७	२५	३७	४९	०१	१३	२५	३६	४८	००	१२	२३	३४	४६	५७	०८
धन	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८
०८	१५	२६	३८	५०	०२	१२	२३	३४	४५	५५	०५	१५	२५	३५	४५
मकर	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३
०९	२३	३३	४३	५४	०४	१४	२४	३३	४२	५०	५८	०६	१४	२२	३०
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७
१०	३८	४५	५३	०१	०९	१७	२६	३४	४१	४९	५५	०२	०९	१६	२२
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	००	००	००
११	१२	१९	२६	३३	३९	४६	५३	००	०७	१३	२०	२७	३४	४१	४८

अंश	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२
मेष	०४	०४	०४	०४	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०५	०६	०६	०६
००	२९	३७	४५	५३	०१	०९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	०५	१३	२२
वृष	०८	०८	०९	०९	०९	०९	०९	०९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११
०१	४५	५५	०५	१५	२५	३५	४५	५५	०५	१५	२५	३५	४५	५५	०५
मिथुन	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६
०२	५७	०९	२०	३२	४३	५५	०६	१८	३०	४२	५३	०४	१६	२७	३९
कर्क	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२
०३	४८	००	१२	२४	३६	४८	००	१२	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५
सिंह	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
०४	४३	५५	०७	१९	३०	४२	५४	०५	१७	२९	४१	५३	०४	१५	२६
कन्या	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
०५	३४	४६	५८	०९	२१	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४३	५५	०७	१९
तुला	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
०६	२७	३९	५१	०३	१५	२७	३९	५१	०२	१४	२६	३८	५०	०२	१३
वृश्चिक	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
०७	२०	३२	४४	५५	०७	१९	३१	४३	५५	०६	१७	२९	४१	५२	०३
धन	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
०८	५५	०४	१४	२४	३४	४४	५४	०४	१४	२४	३४	४४	५५	०४	१३
मकर	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
०९	३८	४६	५४	०२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	०५	१४	२२	३०
कुम्भ	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१०	२९	३६	४३	४९	५६	०३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	०५
मीन	००	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०२
११	५५	०२	०९	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	०४	११	१८	२४	३०

लग्न सारिणी से देखने की रीति

जिस समय इस लग्न सारिणी से लग्न देखने की आवश्यकता हो तो उस समय का इष्ट बना कर उसमें उस दिन का सूर्य स्पष्ट जो कि पंचांग दिवाकर में प्रतिदिन का सूर्य स्पष्ट लिखा रहता है, जिस राशि के जितने अंश पर हो लग्न सारिणी के उस राशि के सामने और उतने अंशों के कोष्टक के नीचे जो घड़ी पल हों उनमें अपने इष्ट के घड़ी पल जोड देनें से लग्न के घड़ी पल हो जाते हैं तो यह घड़ी पल लग्न सारिणी में जिस राशि के सामने और जितने कोष्ठक के नीचे मिलेगे वह स्पष्ट लग्न राशि अंशादि होगा। उदाहरण- सं० २०२५ आषाढ़ प्र० ८ को इष्टघट्यादि १०।५ पर क्या लग्न होगा। इस दिन पचांग दिवाकर में सूर्य स्पष्ट राश्यादि २।६।५९।३८ हैं लग्न सारिणी में २ राशि के सामने और ७ अंश के नीचे के घट्यादि १२।२५ में इष्टघट्यादि १०।०५ जोड़ दिया तो २२।३० घट्यादि हुए लग्न सारिणी में इससे स्पष्ट कोष्ठक देखो तो ३ राशि २८ अंश के नीचे घट्यादि २२।२३ और इष्टयुक्त घट्यादि २२।३० अन्तर ७ पल तो अल्पकोष्ठ और अगले कोष्ठ के अन्तर १२ पल हैं, मालूम किया कि १२ पल का अन्तर ६० कला में तो ७ पल का अन्तर कितने में हो तो $\frac{६० \times ७}{१२}$ कला ३५ हुआ तो उस समय स्पष्ट लग्न राशि २८ अंश ३५ कला हुआ अर्थात् कर्क लग्न होगा।

जन्मपत्री मृतक की है या जीवित की

१. इस प्रश्न में जन्म, लग्न, अष्टम स्थान की राशि और प्रश्न लग्न इन तीन की संख्या को जोड़ कर जन्मकुण्डली के अष्टमेश की राशि और प्रश्न लग्न इन तीनों को जोड़ कर जन्मकुण्डली के अष्टमेश की राशि संख्या से गुणा कर लग्नेश की राशि संख्या से भाग देने पर विषम अंक १।३।५।७।९।११ शेष रहें तो जीवित की, सम अंक २।४।६।८।१०।१२ शेष रहें तो मृतक की पत्री होती है। २. जन्म, लग्न, प्रश्न लग्न और जन्म कुण्डली के अष्टमेश की राशि इन तीनों को जोड़ने से जो योगफल आये उसे अष्टमेश की राशि से गुणा करना चाहिए और गुणनफल में प्रश्न समय में सूर्य जिस नक्षत्र में हो उसकी संख्या से भाग देना चाहिए। सम शेष में मृतक की जन्मपत्री और विषय शेष में जीवित की जन्मपत्री होगी।

पुरुष स्त्री की जन्मपत्री का विचार

वर्षफल बनाने की सारणी

वर्ष	१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२	२
वार	०१	०२	०३	०५	०६	७	०१	३	४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०
घटी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०
पल	३१	०२	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३
विपच	३.	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३	००	३०
वर्ष		४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८
वार	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	६	०७	०१
घटी	१५	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१	४७	०२	१८	३३	४९	४	२०	३५
पल	३१	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४१	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२
विपल	३०	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	[illegible]	३०	०

वर्षफल साधन

जिस सम्वत्सर का वर्षफल निकालना हो उस सम्वत् से जन्म का सम्वत् घटाने से जो शेष हो वह गतवर्ष जानो। सारणी में जितने गतवर्ष हों उतने नीचे के वारादि अंकों में जन्म के वार और इष्ट के घटी पल जोड़ने से वर्ष का वार और इष्ट घड़ीपल हो जाते हैं इस इष्ट के अनुसार लग्न सारणी से लग्न बना लेना। वह वर्ष लग्न होगा।

मुन्था—गतवर्षों में जन्म लग्न जोड़ो १२ का भाग दें जो शेष बचे उस राशि में मुन्था लगावें।

त्रिपताकी चक्र—प्रवेश के वर्षों को ९ का भाग दें, जो शेष बचे जन्मराशि से उतने घर में चन्द्रमा लगावें शेष ग्रहों के लिये ४ का भाग देकर जन्म कुण्डली के ग्रहों से लगाना।

दशा—गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें दो घटायें ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो दशा जाननी, १ बचे तो सूर्य. २ से चन्द्रमा. ३ से मंगल ४ से राहु

स्वोच्चबल—सूर्य २।५ चन्द्र २।४ म १।८।१० बुध ३।६ बृहस्पति १२।९।४ शुक्र २.७।१२ शनि १० ११।७ इन राशियों में ५ बल देते हैं।

स्त्री पुरुष ग्रह—स्त्री ग्रह लग्न से १।२।३।७ ८।९ घर में ५ बल देते हैं और पुरुष ग्रह लग्न से ४।५।६।१०। ११।६२ घरों में ५ बल देते है। दिन में पुरुष ग्रह. रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सि	क.	तु	वृ	ध	म.	कु	मी.	राशि
सू.	शु	श.	शु	बु.	चं.	बु.	मं	श.	मं.	बृ	चं.	दिनपति
बृ	चं.	बु	मं.	सू	शु	श	शु	श	मं.	बृ	चं	रात्रिपति

वर्ष लग्न की जो राशि हो उसकी ऊपर की पंक्ति में राशि के सामने देखो और उसके नीचे यदि इष्ट दिन का हो तो दिनपति के सामने रात्रि का हो तो रात्रि-पंति के सामने और वर्ष लग्न की राशि के नीचे जो ग्रह

वर्ष
वह उ
दृष्टि
दृष्टि
४-१०
मित्र दृ
गुप्तमि
अशुभ
प्रत्य
शीघ्र स
इत्यादि
होती है
गुप्त
कुछ क

ग्रहों के छः प्रकार के फल

स्थान बल. दिग्बल. काल बल, नैसर्गिक बल, चेष्टा बल और दृग्बल यह छः प्रकार के बल है। फलित ज्ञान के लिये इन बलों को जान लेना आवश्यक है। **स्थान बल**—जो ग्रह उच्च, मित्रगृह. मूल त्रिकोणस्थ, स्वनवांशस्थ अथवा द्रेष्काणस्थ होता है. वह स्थान बली कहलाता है। **दिग्बल**—बुध और गुरु लग्न में रहने से, शुक्र और चन्द्रमा चतुर्थ में रहने से, शनि सप्तम में रहने से सूर्य और मंगल दशम स्थान में रहने से दिग्बली होते हैं। **कालबल**—रात में जन्म होते पर चन्द्र. शनि और मंगल तथा दिन में जन्म होने पर सूर्य. बुध और शुक्र कालबली होते हैं। मतान्तर मे बुध को सर्वदा काल बली माना जाता है। **नैसर्गिक बल**—शनि, मंगल. बुध, गुरु, शुक्र चन्द्र और सूर्य उत्तरोत्तर बली होते हैं। **चेष्टा बल**—मकर से मिथुन पर्यन्त किसी राशि में रहने से सूर्य और चन्द्रमा तथा मंगल, बुध, गुरु. शुक्र और शनि चन्द्रमा के साथ रहने से चेष्टाबली होते हैं। **दृग्बल**—शुभ ग्रहों से दृष्ट ग्रह दृग्बली होते हैं। बलवान् ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार जिस भाव में रहता है उस भाव का फल देता है। पाठकों को राशि स्वभाव और ग्रह स्वभाव दोनों का समन्वय कर फल अवगत करना चाहिए।

दशम स्पष्ट तथा द्वादशभाव साधन प्रकार

इष्ट धुत जिन अंकों को अपने लग्न स्पष्ट के लिये अपनी लग्नसारणी में जिस कोष्ठ में देखा है वही अंक उसी तरह दशम लग्न सारणी में भी न्यून कोष्टक मे देखो वह दशम स्पष्ट होता है शेष विधि लग्न स्पष्ट की तरह करें।

उदाहरण—उसे लग्नसारणी के साथ लग्न स्पष्ट के उदाहरण में इष्ट १०।५ में लग्न सारणी से प्राप्त अंक १२।१५ युक्त किया तो २२।३० घट्य.दि को दशम सारणी में देखा. तो मेष राशि के २४ अंश के नीचे हैं। अतएव दशम लग्न स्पष्ट ०। ४ हुआ। दशम भाव में ६ राशि युक्त करने से चतुर्थभाव और लग्न में ६ राशि युक्त करने से सप्तम भाव होता है। चतुर्थ भाव में लग्न को हीन करें तब जो शेष बचे उस में ६ से भाग दे लब्ध राश्यादि षष्ठांश को लग्न में युक्त करें तो लग्न और धन की सन्धि होगी. लग्न व धन की सन्धि युक्त करने से धन भाग होगा धन भाग में युक्त करने से धन और तृतीय की सन्धि होगी। धन तृतीया की सन्धि में युक्त करने से तृतीय भाव होगा तृतीय में षष्ठांश युक्त करने से तृतीय और चतुर्थ की सन्धि होगी तृतीय चतुर्थ की सन्धि में १ राशि युक्त करने से चतुर्थ पंचम की सन्धि होगी तृतीय में दो राशि युक्त करने से पंचम भाव. द्वितीय तृतीय की सन्धि में ३ राशि युक्त करने से पंचम और षष्ठ भाव की सन्धि द्वितीय भाव में ४ राशि युक्त करने से षष्ठ होगा, प्रथम द्वितीय की सन्धि में ५ राशियुक्त करने भाव से षष्ठ सप्तम की सन्धि फिर प्रथम में ६ राशि युक्त करने से सप्तम सब में क्रम पूर्वक ६ राशि सन्धि सहित करने से शेष भाव व सन्धियां बन जावेंगे।

लग्न सारणी बनाने की विधि

पाठकगण—हमने 'पंचांग दिवाकर' के पाठकों के लिए इस वर्ष प्रत्येक शहर के चर खंडे दे दिये हैं ताकि आप अपने शहर की लग्न सारणी बनाकर शुद्ध ल न बनालें।

फिर मेषादि राशियों के लंकोदय जोकि पंचागदिवाकर में दशम सारणी के साथ दिये

लग्न सारणी (देहली) चरखंड ६५।५२।२२

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
००	४३	५०	५७	५	१२	१९	२७	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३४	४२	५१	५९	८	१७	२५	३६
वृष	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
०१	४२	५१	५९	७	१६	२४	३२	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२१	३१	४१	५१	१	११	२१

	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५८	०२	११	१८	२२	३३	४१	४९	५७	०५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	०१	०९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	०५	१३	
वृष	०६	०६	०६	०६	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०७	०८	०८	०८	०८	०८	०८	०९	०९	०९	०९	०९	०९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	
०१	३०	३८	४६	५४	०२	१०	१८	२७	३६	४६	५६	०६	१६	२६	३६	४५	५५	०५	१५	२५	३५	४५	५५	०५	१५	२५	३५	४५	५५	
मिथुन	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	
०२	१४	२४	३४	४४	५४	०४	१४	२५	३६	४७	५८	१०	२२	३४	४५	५७	०९	२०	३२	४३	५५	०६	१८	३०	४२	५३	०४	१६	२७	३
कर्क	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२
०३	५१	०२	१४	२६	३७	४८	००	१२	२४	३६	४८	००	१२	२४	३६	४८	००	१२	२४	३६	४८	००	१२	२३	३५	४७	५९	११	२३	३
सिंह	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२
०४	४७	५९	०२	१०	३४	४६	५८	०९	२१	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४३	५५	०७	१९	३०	४२	५४	०५	१७	२९	४१	५३	०४	१५	२
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३
०५	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	००	१२	२४	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	०९	२१	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४३	५५	०७	१
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४
०६	३०	४१	५३	०५	१७	२९	४०	५१	०३	१५	२७	३९	५१	०३	१५	२७	३९	५१	०३	१५	२७	३९	५१	०२	१४	२६	३८	५०	०२	१
वृश्चिक	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
०७	२५	३७	४९	०१	१३	२५	३६	४८	००	१२	२३	३४	४६	५७	०८	२०	३२	४४	५५	०७	१९	३१	४३	५५	०६	१७	२९	४१	५२	०
धन	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५
०८	१५	२६	३८	५०	०२	१२	२३	३४	४५	५५	०५	१५	२५	३५	४५	५५	०४	१४	२४	३४	४४	५४	०४	१४	२४	३४	४४	५५	०४	१३
मकर	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
०९	२३	३३	४३	५४	०४	१४	२४	३३	४२	५०	५८	०६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	०२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	०५	१४	२२	३०
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१०	३८	४५	५३	०१	०९	१७	२६	३४	४१	४९	५५	०२	०९	१६	२२	२९	३६	४३	४९	५६	०३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	०५
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	००	००	००	००	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०१	०२	०२	०२	०२	०
११	१२	१९	२६	३३	३९	४६	५३	००	०७	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	०२	०९	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	०४	११	१८	२४	३०

४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	१९	३०	४२	५४
०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२३	२२	२२	२२
४	३६	४७	५८	९	२०	३२	४४	५५	७	१९	३१	२४
६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४४	५५	६	१८	२९
१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	७	१९	३०	४२	५३	४	१५	२६	३८	४९	१	१२
७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
९	५०	१	१३	२५	३७	४८	००	१२	२४	३६	४८	००
३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
०	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	२	१३	२४	३६	४७
	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५१
	९	१९	२९	३९	४९	५९	१०	२०	३०	४०	५०	००
३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
१	४९	५७	५	१४	२२	३०	३९	४७	५६	५	१३	२१
७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
	४४	५१	५८	६	१३	२०	२८	३५	४२	४९	५६	३
	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
०	१७	२४	३१	३८	४६	५६	००	७	१५	२२	२९	३६

जन्मपत्री मृतक की है या जीवित की

१. इस प्रश्न में जन्म, लग्न, अष्टम स्थान की राशि और प्रश्न लग्न इन तीन की संख्या को जो कर जन्मकुण्डली के अ जोड़ कर जन्मकुण्डली के अष्टमेश की राशि संख्या से गुणा कर लग्नेश की राशि संख्या से भाग देने पर विषम अंक १।३। २।४।६।८।१०।१२ शेष रहें तो मृतक की पत्री होती है। २. जन्म, लग्न, प्रश्न लग्न और जन्म कुण्डली के अष्टमेश की र उसे अष्टमेश की राशि से गुणा करना चाहिए यौर गुणनफल में प्रश्न समय में सूर्य जिस नक्षत्र में हो उसकी संख्या से. अ स और विषय शेष में जीवित की जन्मपत्री होगी।

पुरुष स्त्री की जन्मपत्री ...

...ा काली भद्रकाली कपालिनी दुर्गा क्षमा शिवा ...ोम दुर्गेदुर्गे रक्षिणि स्वाहा—इति नवाक्षर ...ीपच्छान्ति पूर्वकदीर्घायुर्विपुलधनपुत्रपौत्राद्यन- नवरात्रप्रतिपदि विहित कलशस्थापनदुर्गापूजा- ...स' इति यवान्निक्षिप्य 'आकलशेषु' इति ...षधी:' इति सर्वोषधी:' 'काण्डात् इति दूर्वा: ...ति फलं संप्तरत्नानि इति पंचरत्नानि हिरण्यं ...ं वरुणं संपूज्य दुर्गामावाह्य पूजयेत्।

वर्षफल बनाने की सारणी

वर्ष	१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	०१	०२	०३	०५	०६	७	०१	३	४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४
घटी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	०२	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपच	३.	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१
पल	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००
विपच	३०	००	३०	००	३०	००	३	००	३०	००	३०	०,	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष		४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
वार	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०३	०४
घटी	१५	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५
पल	३१	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४१	२१	५२	२४	५५	२७	५८
विपल	३०	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९
वार	०५	०६	०१	०२	०३	०४	६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०४	०७	०१
घटी	३१	४७	०२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४	३९	५५	१०	२६
पल	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	.	३०	०	३०	०	३०	००	३०	००	३०	०	३०	००	३०

वर्षफल साधन

जिस सम्वत्सर का वर्षफल निकालना हो उस सम्वत् से जन्म का सम्वत् घटाने से जो शेष हो वह गतवर्ष जानो। सारणी में जितने गतवर्ष हों उतने नीचे के वारादि अंकों में जन्म के वार और इष्ट के घटी पल जोड़ने से वर्ष का वार और इष्ट घड़ीपल हो जाते हैं इस इष्ट के अनुसार लग्न सारणी से लग्न बना लेना। वही वर्ष लग्न होगा।

मुन्था—गतवर्षों में जन्म लग्न जोड़ो १२ का भाग दें जो शेष बचे उस राशि में मुन्था लगावें।

त्रिपताकी चक्र—प्रवेश के वर्षों को ९ का भाग दें, जो शेष बचे जन्मराशि से उतने घर में चन्द्रमा लगावें शेष ग्रहों के लिये ४ का भाग देकर जन्म कुण्डली के ग्रहों से लगाना।

दशा—गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें दो घटायें ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो दशा जाननी, १ बचे तो सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ से शुक्र, की दशा जानें।

दशा दिनानि—सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा ३०, मंगल २१, राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ३० यह सब के दशा के दिन हैं।

स्थान बल—सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें शुक्र ५वें, शनि १२वें स्थान में हों तो ५ वर्ष बल देते हैं।

स्वोच्चबल—सूर्य २।५ चन्द्र २।४ म १।८।१० बुध ३।६ बृहस्पति१२।९।४ शुक्र २।७।१२ शनि १० ११।७ इन राशियों में ५ बल देते हैं।

स्त्री पुरुष ग्रह—स्त्री ग्रह लग्न से १।२।३।७ ८।९ घर में ५ बल देते हैं और पुरुष ग्रह लग्न से ४।५।६।१०। ११।१२ घरों में ५ बल देते है। दिन में पुरुष ग्रह, रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	बृ.	मि.	क.	सि	क.	तु	वृ	ध	म.	कु	मी.	राशि
सू.	शु	श.	शु	बु.	चं.	बृ.	मं	श.	मं.	बृ	चं.	दिनपति
बृ	चं.	बृ	मं.	सू	शु	श	शु	श	मं.	बृ	चं	रात्रिपति

वर्ष लग्न की जो राशि हो उसकी ऊपर की पंक्ति में राशि के सामने देखो और उसके नीचे यदि इष्ट दिन का हो तो दिनपति के सामने रात्रि का हो तो रात्रिपति के सामने और वर्ष लग्न की राशि के नीचे जो ग्रह हैं वही त्रिराशिपति होगा।

दृष्टि चक्र

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
प्रत्यक्षमित्र	५-९	५-९	५-९	५-९	५-९	५-९	५-९
गुप्त मित्र	३-११	३-११	३-११	३-११	३-११	३-११	३-११
प्रत्यक्षशत्रु	१-७	१-७	१-७	१-७	१-७	१-७	१-७
गुप्त शत्रु	४-१०	४-१०	४-१०	४-१०	४-१०	४-१०	४-१०

दृष्टि ज्ञान

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो वह उस भाव से पाँचवें ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से और ४-१० गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं। (१) प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि शुभ और बलवती होती है। (२) गुप्तमित्र दृष्टि सम है। (३) गुप्त शत्रु दृष्टि अशुभ है।

दृष्टि फल

प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि—इसका फल कार्य में शीघ्र सफलता सम्बन्धियों से सुख प्रेम और लाभ इत्यादि इससे जिन मनुष्यों के साथ पहले शत्रुता होती है उससे प्रेम उत्पन्न होता है।

गुप्त शत्रु दृष्टि—यह प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से कुछ कम फलदायक है। अर्थात् कार्य बड़ी कठिनता से सफलता को प्राप्त हों, परन्तु करने वाली गुप्त रूप से शत्रुता होती हैं।

गुप्त मित्र दृष्टि—इसका फल प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से कम होती है। यह भी कार्य में सफलता व लाभदायक है किन्तु प्रत्यक्ष न होकर गुप्त भाव से सफलता का कार्य सिद्ध होता है।

प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि—इसका फल शत्रुता उत्पन्न करना बनते काम को बिगाड़ना, मित्र से वैर धनहानि इत्यादि है।

॥ वर्ष कुण्डली में लग्नादि १२ भावों के फल

लग्न १	धन २	सहज ३	सुख ४	पुत्र ५	शत्रु ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
क्लेशभय चिन्ता	शोक राजभय	पराक्रमी धन लाभ	हानि भय	रोगभय पुत्र हानि	सुख शत्रुनाश	स्त्री कष्ट पीड़ा भय	शोक कष्ट भय	धर्म वृद्धि राज्यपद:	सुख धन लाभ	सुख धन लाभ	उद्वेग पीड़ा
कफज्वर पीड़ा	नेत्र पीड़ा धन लाभ	धन लाभ खर्ची	सुख शत्रु नाश	सुख सु ति	अंग पीड़ा व्यय	ज्वरादि भय	कष्ट	पुण्योदय धन लाभ	सुकर्मकर्ता [illegible]य प्राप्ति	यश धन लाभ-	व्यय नेत्रपीड़ा
वातार्ति व्रण	दृशारुक धन नाश	निरोग्य द्रव्य लाभ	व्यसन रोगभय	पुत्रार्ति: दुर्मति:	सुख शत्रु नाश	स्त्री नाश कष्ट	ज्वर व्रण	पुण्योदय यश	राज्यसेधन प्राप्ति	सुख जय	शत्रुभय कर्णपीड़ा
सुख धन लाभ	द्रव्य प्राप्ति सुख	सुख मान	सुख द्रव्य लाभ	अधन सुख प्राप्ति	रोग भय कलेश	धन लाभ सुख	व्यग्रता कफपीड़ा	धन लाभ कीर्ति	मौन सुख	धन पुत्र लाभ	शत्रु रोगभय
सुख यश धन लाभ	कीर्ति धन लाभ	जय सुख	सुख वाहन प्राप्ति	सुख पुत्र प्राप्ति	शत्रु रोग भय	सुख धन लाभ	कठिन रोग भय	सुख भाग्यउनत	राज्यसेवन लाभ	क्षेम धन लाभ	शोक रोगभय
मान धन लाभ	धन लाभ सुख	कीर्तिवर्धन धन लाभ	सुख धन लाभ	पुत्र प्राप्ति धन लाभ	कष्ट शत्रु भय	कलत्र सौख्यम	ज्वर पीड़ा	धर्ममतपर धन लाभ	मान जय [illegible]	धन पुत्र लाभ	व्यय नेत्र पीड़ा
शत्रु भय वातार्ति:	पीड़ाभ विरोध	धन प्राप्ति जय	धन सुख नाश कष्ट	पुत्र हानि पीड़ा	धन प्राप्ति मतिनाश	स्त्री कष्ट क्लेश	दुख रोग भय	भाग्यवृद्धि शत्रुनाश	धन हानि पीड़ा	पुत्र हानि लाभ	क्लेश चिन्ता
शिरोर्ति: कलह	नृपाद्भीत पीड़ा	शत्रु नाश सुख	वातार्ति दु:ख	बुद्धिनाश धन रहिय	शत्रुनाश आरोग्य	पीड़ा भय धन हानि	धन हानि रोगभय	धन धर्म में वृद्धि	वाहन नाश भय	पुत्रप्राप्ति लाभ	व्याधि भय
पीड़ा भय चिन्ता	क्लेश धन हानि	आरोग्य धन लाभ	कष्ट राज्य भय	पीड़ाभत दुर्मति	सुख धन लाभ	क्लेश रोग	ज्वरपीड़ा भय	भाग्यवश धन लाभ	कीर्ति धन लाभ	पुत्रकष्ट लाभ	शोक भय
सुख शत्रुनाश	यश धन लाभ	कार्यसिद्धि धन लाभ	अंग पीड़ा दु:ख	सदबुद्धि सख	रोग भय धन नाश	रोग भय व्यसन	दुर्व्यसन रोग भय	भाग्योदय	राज्यसुख धनो	धर्म लाभ	सुव्यय रोग

गर्भ योग

वर्ष कुण्डली में लग्नेश पांचवें या सातवें पढ़ा हो और पंचमेश वा सप्तमेश लग्न में पड़ा हो तो उस वर्ष गर्भयोग होता है।

शुभ ग्रह पांचवें हो और पंचमेश देखता हो तो गर्भयोग होता है। गुरू की राशि में चन्द्रमा हो और मंगल शुभ राशि में हो या शुक्र की राशि में स्थित हो और शुक्र अपनी राशि में बैठा हो तो गर्भ होता है।

मातृ-पितृ अरिष्ट योग

जन्मलग्न, राशि वर्ष कुण्डली में आठवें हो और मुन्था उसमें स्थित हो तो उस वर्ष में माता पिता को कष्ट होता है। जन्म राशि वर्षलग्न हो और शनि क्रूर ग्रहों के साथ चतुर्थ भाव में पड़ा हो तो माता पिता को कष्ट होता है। चौथे शनि, दशवें मगल, और चौथे दसवें घर के स्वामी अस्त हो तो इस वर्ष में माता पिता को कष्ट होता है।

वर्ष कुण्डली में अरिष्ट योग

जन्म लग्न हीं वर्ष लग्न हो तो दोजन्मा वर्ष होता है जो शुभ दायक नहीं है। यदि दो जन्मा लग्न में गुरू और चन्द्रमा शुभ स्थान में बैठे हों तो वह वर्ष अशुभ फलदायक नहीं होता यदि छटे आठवें गुरू और चन्द्रमा हों तो वह अरिष्ट फलदायक होता है।

यदि जन्म नक्षत्र भी वर्ष में आ जाये और दोजन्मा लग्न हो और गुरू चन्द्रमा आठवें हो और अशुभ ग्रह की इन पर दृष्टि हो और चन्द्रमा क्षीण हो तो मृत्यु योग होता है।

यदि जन्म लग्न वर्ष लग्न एक हों और गुरू आठवें हो और चन्द्रमा छटे हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

नेत्र योग कष्ट

लग्न से १२वें शुक्र सूर्य व मंगल हो तो इस वर्ष में नेत्रों को पीड़ा होती है।

दूसरे या बाहरवें या लग्न में या सातवें क्रूर ग्रह हों शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो वर्ष में नेत्रों को पीड़ा हो।

तरक्की व तबदीली के योग

यदि वर्ष कुण्डली में लग्नेश वा तृतीयेश, चतुर्थेश, नवमेश एक घर में हों या एक दूसरे को मित्र दृष्टि से देखते हों तो तबदीली होगी।

वर्षलग्न चर हो तो शीघ्र, स्थिर हो तो न हो, अथवा देरी से हो, द्विस्वभाव हो तो जाकर फिर वापिस आए। यदि लग्नेश वक्री हो तो ग्रह से मित्र दृष्टि रखता हो तबदीली होगी।

पंचांग दिवाकर कार्यालय माई हीरां गेट जालंधर शहर से प्राप्त होने वाली सर्वोपयोगी पुस्तकें

ज्योतिष ग्रन्थ

ज्योतिष की प्रथम पुस्तक—टेवा, वर्षफल बनाने की विधि सहित ४॥)
शिष्य मंत्रावली—मंत्रों की विधि, यंत्र आसन तथा विधि सहित ५)रु.
तनु भाव प्रकाश भा.टी.—तनुभाव पर सम्पूर्ण फलादेश एक ग्रह से पंचग्रही योगसहित ३॥)
धन भाव प्रकाश भा. टी.—केवल धन भाव पर इस पुस्तक के होते हुए इस भाव सम्बन्धी फलादेश के लिए अन्य पुस्तक की आवश्यकता नहीं ३॥)
सहज भाव प्रकाश भा. टी.—तीसरा भाव सम्बन्धी सम्पूर्ण फलादेश इस में दिया हुआ बहिन भाई कितने होंगे इत्यादि २)॥रु.
सुतभाव प्रकाश भा टी.—पंचभाव संतान, विद्या संबंधीपूर्ण फलादेश दिया हुआ है, ३॥)
स्त्रीभाव प्रकाश भा. टी.—सप्तम भाव विवाह सम्बन्धी फलादेश के लिए उत्तम है, ३॥)
कर्म भाव प्रकाश.—इसमें दशम भाव के विषय में पूर्ण योग व्यापार नौकरी आदि के विवरण दिये गये हैं २)
वर्षफल चन्द्रिका—वर्षफल बनाने, वृहत्पंचवर्गी, मुन्था, मुन्थेश, भावफल, दशाफल इत्यादि के लिए उत्तम पुस्तक है ५)
ग्रह विज्ञान * सं० १६०० से सं० २१०० तक के ग्रह स्पष्ट करने, की सारणियाँ दी हुई हैं इस से सुगमता से ग्रह स्पष्ट हो जाते हैं १५)
लग्नमन्दाकिनी *—लग्न स्पष्ट करने, उदय अस्त निकालने के लिए उत्तम पुस्तक है ३॥)
लग्न सारणी समुच्चय—तमाम बड़े बड़े शहरों की लग्न सारणियाँ इन में दी हुई हैं ३)॥
भुवन दीपक *—भा. टी. प्रश्न इत्यादि के लिए उत्तम पुस्तक है २॥)।
पुराने पंचांग—सं० १९७१ से १९८० तक मूल्य ५) सं० १९८१ से १९९० तक ४) सं० १९९१ से २००५ तक ८) रु० आठ रुपए
टेवा फार्म रंगीन—[illegible](५) रु० केवल वेलदार सादे १४ रु० सं० छोटी कापी साईज २५)सैं०
विवाह लग्न फार्म—७५) सैं० कापी साईज जन्म पत्री ७५) सैंकड़ा
मानसागरी—भा. टी. जन्म पत्री बनाने और फलादेश देखने के लिए उत्तम पुस्तक मू० १०)

ज्योतिष प्रश्न फलगणना १)	ज्योतिष सर्वसंग्रह ३)	घराचक्र भा. टी. * ॥)
प्रश्न मार्ग ३॥	जन्म पत्र प्रदीपिका ७॥)	पद्य कोष * ॥)
प्रश्न भूषण भा. टी. ४॥)	जातक परिजात * १२)	ग्रह गोचर ॥)
प्रश्न शिरोमणि ३॥)	*जातक शिरोमणि भा.टी.३॥)	ग्रह फल दर्पण ३॥)
प्रश्न प्रकाश ३॥)	त्रिकालज्ञ ज्योतिष ६)	*ग्रह लाघव(सं० हिंदी)३॥)
जातकाभरण भा. टी. १५)	अखण्ड भाग्योदय दर्पण ३)	गर्ग मनोरमा * ।)
जातकालंकार भा. टी. २॥)	बालबोध ज्योतिष भा.टी.२)	वृहज्जातक भा. टी. ४॥)
जैमिनीय सूत्र फ. हिंदी) ३)	ताजिक नीलकंठी भा.टी.४॥)	वृहज्ज्योतिषसार ५॥)
हस्तरेखा सामुद्रिक शास्त्र ५)	*दैवज्ञ कल्पद्रुम भा. टी. ५)	वृहत्होडाचक्र ३)

भाव प्रकाश भा. टी, १०॥)
भाव फलाध्याय भा.टी.*१॥)
भाव प्रकाश ज्योतिष ५॥)
भारतीय ज्योतिष * १२)
भृगुसंहिता पद्धति २०)
मुहूर्त्त चिंतामणी भा.टी.५॥)
मुहूर्त्त मार्तण्ड * ५॥)
मुहूर्त्त गणपति * ५)
लग्नचन्द्रिका भा.टी. ३॥)
लघुजातक भा. टी.* २॥)
लघुपाराशरीमध्यपाराशरी२॥
सर्वत्तोभद्र चक्र पुस्तक २॥)
शीघ्रबोध भा. टी, २॥
सर्वार्थ चिन्तामणि * ७)
शरीर सर्वांगलक्षणम् ५)
षट् पंचाशिका भा, टी. ३)
श्राद्धसंग्रह * १५)
सिद्धान्त शिरोमणि * १६)
सूर्यसिद्धान्त * १५)
हनुमान ज्योतिष २॥॥)
वास्तु रत्नावली * २॥
चेट कौतुकम् * २॥)
रमल नवरत्न * ५)
अन्त्य कर्म दीपक * ४)
महानिवारण तन्त्र * ८॥
अंक विद्या ४ कर्म विपाक ५)
अनन्त व्रत कथा १॥)
उपनयन पद्धति १॥)
कर्मकाण्डप्रवेशिका भा.टी.५)
कात्यायनी पितृतर्पण ॥)
करवाचौथ व्रत कथा १॥)
कुण्ड मण्डपसिद्धि भा.टी.४॥)
कात्यायनीशांति भा. टी. १।=)

कार्तिक स्त्रीप्रसूता शांति१।)
कुलदेवता स्थापन विधि १॥)
कुम्भविवाहकलशप्रतिष्ठा१॥)*
कृत्यशिरोमणि * ४)
कार्तिक महात्म्य ३)॥
कृष्ण जन्माष्टमी कथा १॥)
गायत्री पूजा पद्धति १॥)
गोदानपद्धतिपाटीचन्दन १॥)
नव ग्रह शांति ५)
गायत्री मंत्र जपविधि १॥)
गायत्री पंचांग ४॥)
चान्द्रायण व्रत कथा * ।)
दुर्गासप्तशती भा. टी. ५)
दशकर्मपद्धति भा. टी. २॥)*
धर्मशांति ३)
नित्यकर्मविधि भा. टी. २॥)
नारायण बली प्रयोग ४)
नित्यकर्म प्रयोग ४)
पाराशर स्मृति ४)
पितृकर्मनिर्णय व्रत कथा *४)
पंचभीष्म व्रत कथा २॥)
चमत्कार ज्योतिष * १॥)
पंचक शांति २॥)
पंचदान पद्धति * ॥)
सर्व देव महोदधि मूल *१२)
प्रेतमंजरी भा, टी. ३॥)
एकोद्दिष्ट श्राद्ध १॥=)
पार्वण श्राद्ध १॥=)
पार्थिव पूजन विधान १=)
प्रतिष्ठा संग्रह ७)
पूजापद्धति ४॥)
[illegible] भा. टी. ६)

महामृत्युञ्जय जपविधि १॥)
मूलाशांति पद्धति ॥)
मघारेवती शांति १।=)
महालक्ष्मी व्रत कथा १॥)
रामनवमी व्रतपूजापद्धति ॥)
वास्तु पूजा पद्धति २)॥
वशिष्ठहवनपद्धतिभा. टी .३)
विवाहपद्धति भा. टी. ३॥)
व्यतिपात कथा * १॥)
वामन द्वादशी कथा * १॥)
शिलान्यास पद्धति १)
व्रतराज * २०)
श्राद्ध चन्द्रिका संग्रह * ५)
श्री देवी भागवतभा.टी.*४०)
षोडशसंस्कारविधिभा.टी.५।)*
संकल्प सार प्रभा * १॥=)
आश्लेषा ज्येष्ठा शांति १।)
शिवार्चन पद्धति ३॥)
सहस्रशीर्षा * १॥)
स्वास्तिवाचन * ॥)
शुद्ध श्राद्धवा शय्यादान १।)
विवाह वृन्दावन * २॥)
श्री सत्यनारायण कथा ॥)
जन्मदिन पूजा पद्धति ॥)
तुलसी पूजा पद्धति * ॥)
तुलसी विवाह पद्धति * २॥)
हरितालिका व्रत भा. टी.॥)
वाल्मीकि रामायण १२)
हरिवंश पुराण भा. टी*४०)
हरिवंश पुराण भाषा १६)
देवीभागवतपुराणभाषाटी४०)*
दुर्गापाठ गुटका मूल * २।)
हल षष्ठी कथा * १=)

नोट * चिन्हित पुस्तकें अभी हमारे स्टॉक में उपलब्ध नहीं होंगी ॥ आर्डर भेजते समय आधी रकम पेशगी अवश्य भेजें ॥

*ध्यान्हित पुस्तकें प्राप्य न होंगी रद्द अए ध्यायों

उपयोगी पुस्तकें मंगवाएं

सोल एजैंट - जनरल बुक डिपो जालंधर

गरुड़ पुराण भा	३)
स्वर्वाल्क .टी.	३॥)
	३॥)
महर्षि पेवकीलम भाटी.	॥)
हिन्दी पढ़ो *	२॥)
फाशकी ज्योतिष *	८)

धार्मिक

गीतां ... ऐं	२॥)
भक्ति रत्नावली *	१॥)
विचार-चन्द्रोदय *	४)
विचार सागर *	५)
वैराग्य शतक	१)
भागवत खुला पत्रा *	५)
श्रीवाल्मीकि रामायण	
भाषा ,, दो भाग	२०) *
तुलसी रामायण (१०)	११)
सुखसागर	२०)-२२)
प्रेम सागर	४)
शिवपुराण	२१)
महाभारत	१८)
योगवशिष्ट दो भाग	२८)
भगवत गीता भाषा	३॥)
विष्णुगोपालसहस्रनाम	॥)
शिव स्वरोदय भा.टी.	१।)
रामायण तर्ज राधेश्याम	४॥)
ब्रह्मानन्द भजनमाला	२॥)
स्तोत्र रत्नाकर *	५॥)
शिवमहिम्न:शिवतांडव	=)
शिवरात्री व्रत कथा	२)
भगत माल ५) बड़ा	१०)
सूरदास.मीरा.तुलसी ॥) प्रति	

आर्य संगीत रामायण	१०)
आर्य संगीत महाभारत	१७)
संगीत हकीकतराए	५)
संगीत हरिश्चन्द्र	३)
गीता तर्ज राधेश्याम	) *
गणेश चतुर्थी व्रत कथा	=)
उपनिपद् प्रकाश *	३॥)
एकादशी व्रतोद्यापन *	३।)
एकादशीमहात्मयभाटी.	३॥)
...यि जातक *	२॥।)

प्राचीन ग्रन्थ [?]

दृष्टान्त महासागर	३॥)५)
स्वास्थ्य और योगासन	२॥)
वेताल पच्चीसी	२।)
सिंहासन पच्चीसी	२॥)
इन्द्रजाल	२॥)
चाणक्य नीति	२॥)
भर्तरी हरीशतक	२)
कोकशास्त्र	५॥)
कटाई सिलाई शिक्षा	३॥)
हारमोनियम शिक्षा	३॥)
हिन्दी इंगलिश टीचर	६॥)
वशीकरण मन्त्र	३)
स्त्रीं संबोधनी	१०)
भाव प्रकाश	१३)
रंगाईधुलाईड्राईक्लीनिंग	३)
फोटोग्राफी शिक्षा	४)
मोटर ड्राईविंग	४)
आधुनिक घड़ी साजी	६)
व्यापार दस्तकारी	५)
शार्गंधर संहिता वैद्यक *	५)

विदुर नीति *	२।)
बूटी प्रचार	४।)
अमृत सागर वैद्यक	७॥)
माधव निघान *	४॥)
पशुचिकित्सा	३॥)
घर का वैद्य	४)
नाड़ी विज्ञान	२)
भाव प्रकाश	१६)
मेघ विनोद *	६)
संस्कार पद्धति	१४)
आदित्य हृदय भा. टी.	१॥)
नासिकेत *	२)
लघु कौमदी *	३॥)
पंचतन्त्र	४)
पाराशर स्मृति बृहद्	२१॥)
सर्वदर्शन संग्रहभा.टी.	२५)
योगदर्शन	४)
वेदान्त दर्शन	४)
साँख्य दर्शन	६)
ऋग्वेद भा.टी,	२७
यजुर्वेद भा.टी.	१२)
अथर्व वेद	१३)
शुक्र नीति *	५)
चरक संहिता *	६०)
आदि पुराण	२)
जातक दीपक	३२॥)
जातक तत्त्व *	७॥)
तुलसी रामायण उर्दू	२४)
भागवत उर्दू	२४)
भर्तृहरि शतक भा.टी.	६)
भगवदगीता ला तिलक	*)
इलैक्ट्रिक वायरिंग	५)

ऐलोपैथिक डाक्टरी गा.	७)
श्राद्ध विवेक	५)
कर्मठ गुरु *	६)
व्रतोद्यापन प्रकाश	14)
शान्ति प्रकाश *	६॥)
सर्वदेव प्रतिष्ठा प्रकाश	१२)
धर्म सिन्धु *	१४)
व्रत राज *	१६)
मार्कण्डेय *	२०
गर्ग संहिता *	२४)
माघ महात्म्य	४)
वैशाख महात्म्य	४)
कार्तिक महात्म्य	४)
योग वसिष्ठ छोटा १५)	२०)
इन्द्रजाल बड़ा	५)
उड्डीश तन्त्र दत्तात्रेय	२॥)
सुश्रुत सहिता *	१८)
पशुचिकित्सा	४)
दृष्टान्त सागर	३॥)
केवड़े का जादू	२।)
वशीकरण मत्र	३)
रूप बसन्त	४)
पाक विज्ञान	४)
भजन सागर	४)
माडर्न ऐलोपैथिकगाइड	१०)
ऐलोपैथिक इंजैक्शन बुक	५)
ऐलोपैथिकमिटेरियामेडिका	५)
ऐलोपैथिक डाक्टरगाइड	७)
मैडीकल गाइड	४)
गीता भाषा	३॥)

वर्षफल चन्द्रिका

इस पुस्तक में वर्षफल बनाने के सुगम प्रकार दृष्टान्त और उसका फल, ग्रहों का वेध और फल, त्रिपताकी चक्र और उसका फल, सहम और सहमों का फल, पंचवर्ग और उसका फल, दशा फल, भाव फल और योग फल, अर्थात् वर्ष बनाने तथा ठीक फलादेश कहने के लिए उत्तम पुस्तक है। मूल्य ३)। डाक व्यय २ रु० पृथक्।

लग्न सारणी समुच्चय

इस पुस्तक में सब शहरों की लग्न सारणियां, चरखण्ड इत्यादि निकाल कर दिए हुए हैं। किसी भी स्थान का शुद्ध इष्ट जानने के लिए इसका पास होना अत्यावश्यक है। मूल्य ३)। डाक व्यय २) पृथक्।

दुर्गा सप्तशती भाषा टीका

हवन् विधि सहित

यह दुर्गासप्तशती २५० पृष्ठ से ऊपर की है इस में दुर्गा पूजन पाठ विधि, सम्पुट पाठ विधि, साधक के ध्यान योग्य बातें. नव चण्डी, शतचण्डी, हवन विधि तथा श्लोकों के साथ जिस जिस वस्तु की आहुति देनी है, लिखा गया है। ऐसी पुस्तक अभी तक नहीं छपी। मूल्य ५)

डाक व्यय २ रु० २५ पैसे

कम्पाउन्ड्री शिक्षा	४)	चुने हुए ज्योतिषयोग	५)
बृहदबूटीप्रचारवैद्यक	४)	फलित सूत्र	५)
गर्भ सूत्र	४)	ज्योतिष और रोग	५)
मोटर मकैनिक गाइड	६)	व्यवसाय का चुनाव	५)

आवश्यक सूचना } प्रत्येक आर्डर के साथ कम से कम पुस्तक की आधी कीमत मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेजें। अपना नाम व पता पूरा व साफ साफ लिखें।

वी॰पी॰ द्वारा मंगवाने का पता:- पन्ना लाल शर्मा एम॰ए॰ पंचांग दिवाकर कार्यालय माई हीरां गेट जालन्धर शहर।

दैनिक लग्न सारिणी (वैशाख मास) स्टैंडर्ड जालन्धर टाइम घंटा मिंट

ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
१	७ ३८	९ ३२	११ ४६	२ ८	४ २८	६ ४९	९ ११	११ ३१	१ ३५	३ १७	४ ४३	६ ५
२	७ ३४	९ २८	११ ४२	२ ४	४ २४	६ ४५	९ ७	११ २७	१ ३१	३ १३	४ ३९	६ १
३	७ ३०	९ २४	११ ३८	२ ०	४ २०	६ ४१	९ ३	११ २३	१ २७	३ ९	४ ३५	५ ५७
४	७ २६	९ २०	११ ३४	१ ५६	४ १६	६ ३७	८ ५९	११ १९	१ २३	३ ५	४ ३१	५ ५३
५	७ २२	९ १६	११ ३०	१ ५२	४ १२	६ ३३	८ ५५	११ १५	१ १९	३ १	४ २७	५ ४९
६	७ १८	९ १२	११ २६	१ ४८	४ ८	६ २९	८ ५१	११ ११	१ १५	२ ५७	४ २३	५ ४५
७	७ १४	९ ८	११ २२	१ ४४	४ ४	६ २५	८ ४७	११ ७	१ ११	२ ५३	४ १९	५ ४१
८	७ १०	९ ४	११ १८	१ ४०	४ ०	६ २१	८ ४३	११ ३	१ ७	२ ४९	४ १५	५ ३७
९	७ ६	९ ०	११ १४	१ ३६	३ ५६	६ १७	८ ३९	१० ५९	१ ३	२ ४५	४ ११	५ ३३
१०	७ २	८ ५६	११ १०	१ ३२	३ ५२	६ १३	८ ३५	१० ५५	१२ ५९	२ ४१	४ ७	५ २९
११	६ ५८	८ ५२	११ ६	१ २८	३ ४८	६ ९	८ ३१	१० ५१	१२ ५५	२ ३७	४ ३	५ २५
१२	६ ५४	८ ४८	११ २	१ २४	३ ४४	६ ५	८ २७	१० ४७	१२ ५१	२ ३३	३ ५९	५ २१
१३	६ ५०	८ ४४	१० ५८	१ २०	३ ४०	६ १	८ २३	१० ४३	१२ ४७	२ २९	३ ५५	५ १७
१४	६ ४६	८ ४०	१० ५४	१ १६	३ ३६	५ ५७	८ १९	१० ३९	१२ ४३	२ २५	३ ५१	५ १३
१५	६ ४२	८ ३६	१० ५०	१ १२	३ ३२	५ ५३	८ १५	१० ३५	१२ ३९	२ २१	३ ४७	५ ९
१६	६ ३८	८ ३२	१० ४६	१ ८	३ २८	५ ४९	८ ११	१० ३१	१२ ३५	२ १७	३ ४३	५ ५
१७	६ ३४	८ २८	१० ४२	१ ४	३ २४	५ ४५	८ ७	१० २७	१२ ३१	२ १३	३ ३९	५ १
१८	६ ३०	८ २४	१० ३८	१ ०	३ २०	५ ४१	८ ३	१० २३	१२ २७	२ ९	३ ३५	४ ५७
१९	६ २६	८ २०	१० ३४	१२ ५६	३ १६	५ ३७	७ ५९	१० १९	१२ २३	२ ५	३ ३१	४ ५३
२०	६ २२	८ १६	१० ३०	१२ ५२	३ १२	५ ३३	७ ५५	१० १५	१२ १९	२ १	३ २७	४ ४९
२१	६ १८	८ १२	१० २६	१२ ४८	३ ८	५ २९	७ ५१	१० ११	१२ १५	१ ५७	३ २३	४ ४५
२२	६ १४	८ ८	१० २२	१२ ४४	३ ४	५ २५	७ ४७	१० ७	१२ ११	१ ५३	३ १९	४ ४१
२३	६ १०	८ ४	१० १८	१२ ४०	३ ०	५ २१	७ ४३	१० ३	१२ ७	१ ४९	३ १५	४ ३७
२४	६ ६	८ ०	१० १४	१२ ३६	२ ५६	५ १७	७ ३९	९ ५९	१२ ३	१ ४५	३ ११	४ ३३
२५	६ २	७ ५६	१० १०	१२ ३२	२ ५२	५ १३	७ ३५	९ ५५	११ ५९	१ ४१	३ ७	४ २९
२६	५ ५८	७ ५२	१० ६	१२ २८	२ ४८	५ ९	७ ३१	९ ५१	११ ५५	१ ३७	३ ३	४ २५
२७	५ ५४	७ ४८	१० २	१२ २४	२ ४४	५ ५	७ २७	९ ४७	११ ५१	१ ३३	२ ५९	४ २१
२८	५ ५०	७ ४४	९ ५८	१२ २०	२ ४०	५ १	७ २३	९ ४३	११ ४७	१ २९	२ ५५	४ १७
२९	५ ४६	७ ४०	९ ५४	१२ १६	२ ३६	४ ५७	७ १९	९ ३९	११ ४३	१ २५	२ ५१	४ १३
३०	५ ४२	७ ३६	९ ५०	१२ १२	२ ३२	४ ५३	७ १५	९ ३५	११ ३९	१ २१	२ ४७	४ ९
३१	५ ३८	७ ३२	९ ४६	१२ ८	२ २८	४ ४९	७ ११	९ ३१	११ ३५	१ १७	२ ४३	४ ५

दैनिक लग्न सारिणी (ज्येष्ठ मास) स्टैंडर्ड जालन्धर टाइम घंटा मिंट

ता.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन	मेष
१	७ २८	९ ४२	१२ ४	२ २४	४ ४५	७ ७	९ २७	११ ३१	१ १३	२ ३९	४ १	५ ३४
२	७ २४	९ ३८	१२ ०	२ २०	४ ४१	७ ३	९ २३	११ २७	१ ९	२ ३५	३ ५७	५ ३०
३	७ २०	९ ३४	११ ५६	२ १६	४ ३७	६ ५९	९ १९	११ २३	१ ५	२ ३१	३ ५३	५ २६
४	७ १६	९ ३०	११ ५२	२ १२	४ ३३	६ ५५	९ १५	११ १९	१ १	२ २७	३ ४९	५ २२
५	७ १२	९ २६	११ ४८	२ ८	४ २९	६ ५१	९ ११	११ १५	१२ ५७	२ २३	३ ४५	५ १८
६	७ ८	९ २२	११ ४४	२ ४	४ २५	६ ४७	९ ७	११ ११	१२ ५३	२ १९	३ ४१	५ १४
७	७ ४	९ १८	११ ४०	२ ०	४ २१	६ ४३	९ ३	११ ७	१२ ४९	२ १५	३ ३७	५ १०
८	७ ०	९ १४	११ ३६	१ ५६	४ १७	६ ३९	८ ५९	११ ३	१२ ४५	२ ११	३ ३३	५ ६
९	६ ५६	९ १०	११ ३२	१ ५२	४ १३	६ ३५	८ ५५	१० ५९	१२ ४१	२ ७	३ २९	५ २
१०	६ ५२	९ ६	११ २८	१ ४८	४ ९	६ ३१	८ ५१	१० ५५	१२ ३७	२ ३	३ २५	४ ५८
११	६ ४८	९ २	११ २४	१ ४४	४ ५	६ २७	८ ४७	१० ५१	१२ ३३	१ ५९	३ २१	४ ५४
१२	६ ४४	८ ५८	११ २०	१ ४०	४ १	६ २३	८ ४३	१० ४७	१२ २९	१ ५५	३ १७	४ ५०
१३	६ ४०	८ ५४	११ १६	१ ३६	३ ५७	६ १९	८ ३९	१० ४३	१२ २५	१ ५१	३ १३	४ ४६
१४	६ ३६	८ ५०	११ १२	१ ३२	३ ५३	६ १५	८ ३५	१० ३९	१२ २१	१ ४७	३ ९	४ ४२
१५	६ ३२	८ ४६	११ ८	१ २८	३ ४९	६ ११	८ ३१	१० ३५	१२ १७	१ ४३	३ ५	४ ३८
१६	६ २८	८ ४२	११ ४	१ २४	३ ४५	६ ७	८ २७	१० ३१	१२ १३	१ ३९	३ १	४ ३४
१७	६ २४	८ ३८	११ ०	१ २०	३ ४१	६ ३	८ २३	१० २७	१२ ९	१ ३५	२ ५७	४ ३०
१८	६ २०	८ ३४	१० ५६	१ १६	३ ३७	५ ५९	८ १९	१० २३	१२ ५	१ ३१	२ ५३	४ २६
१९	६ १६	८ ३०	१० ५२	१ १२	३ ३३	५ ५५	८ १५	१० १९	१२ १	१ २७	२ ४९	४ २२
२०	६ १२	८ २६	१० ४८	१ ८	३ २९	५ ५१	८ ११	१० १५	११ ५७	१ २३	२ ४५	४ १८
२१	६ ८	८ २२	१० ४४	१ ४	३ २५	५ ४७	८ ७	१० ११	११ ५३	१ १९	२ ४१	४ १४
२२	६ ४	८ १८	१० ४०	१ ०	३ २१	५ ४३	८ ३	१० ७	११ ४९	१ १५	२ ३७	४ १०
२३	६ ०	८ १४	१० ३६	१२ ५६	३ १७	५ ३९	७ ५९	१० ३	११ ४५	१ ११	२ ३३	४ ६
२४	५ ५६	८ १०	१० ३२	१२ ५२	३ १३	५ ३५	७ ५५	९ ५९	११ ४१	१ ७	२ २९	४ २
२५	५ ५२	८ ६	१० २८	१२ ४८	३ ९	५ ३१	७ ५१	९ ५५	११ ३७	१ ३	२ २५	३ ५८
२६	५ ४८	८ २	१० २४	१२ ४४	३ ५	५ २७	७ ४७	९ ५१	११ ३३	१२ ५९	२ २१	३ ५४
२७	५ ४४	७ ५८	१० २०	१२ ४०	३ १	५ २३	७ ४३	९ ४७	११ २९	१२ ५५	२ १७	३ ५०
२८	५ ४०	७ ५४	१० १६	१२ ३६	२ ५७	५ १९	७ ३९	९ ४३	११ २५	१२ ५१	२ १३	३ ४६
२९	५ ३६	७ ५०	१० १२	१२ ३२	२ ५३	५ १५	७ ३५	९ ३९	११ २१	१२ ४७	२ ९	३ ४२
३०	५ ३२	७ ४६	१० ८	१२ २८	२ ४९	५ ११	७ ३१	९ ३५	११ १७	१२ ४३	२ ५	३ ३८
३१	५ २८	७ ४२	१० ४	१२ २४	२ ४५	५ ७	७ २७	९ ३१	११ १३	१२ ३९	२ १	३ ३४

लग्न के नीचे जो समय घण्टा मिन्टों में दिया हुआ है वह लग्न की समाप्ति का समय है

दैनिक लग्न सारणी (आषाढ़ मास) स्टैंण्डर्ड जालन्धर टाईम घण्टा-मिन्ट

ता	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	७ ३८	१० ००	१२ २०	२ ४१	५ ३	७ २३	९ २९	११ ९	१२ ३५	१ ५७	३ ३०	५ २४
२	७ ३४	९ ५६	१२ १६	२ ३७	४ ५९	७ १९	९ २३	११ ५	१२ ३१	१ ५३	३ २६	५ २०
३	७ ३०	९ ५२	१२ १२	२ ३३	४ ५५	७ १५	९ १९	११ १	१२ २७	१ ४९	३ २२	५ १६
४	७ २६	९ ४८	१२ ८	२ २९	४ ५१	७ ११	९ १५	१० ५७	१२ २३	१ ४५	३ १८	५ १३
५	७ २२	९ ४४	१२ ४	२ २५	४ ४७	७ ७	९ ११	१० ५३	१२ १९	१ ४१	३ १४	५ ८
६	७ १८	९ ४०	१२ ०	२ २१	४ ४३	७ ३	९ ७	१० ४९	१२ १५	१ ३७	३ १०	५ ४
७	७ १४	९ ३६	११ ५६	२ १७	४ ३९	६ ५९	९ ३	१० ४५	१२ ११	१ ३३	३ ६	५ ००
८	७ १०	९ ३२	११ ५३	२ १३	४ ३५	६ ५५	८ ५९	१० ४१	१२ ७	१ २९	३ २	४ ५६
९	७ ६	९ २८	११ ४८	२ ९	४ ३१	६ ५१	८ ५५	१० ३७	१२ ३	१ २५	२ ५८	४ ५२
१०	७ २	९ २४	११ ४४	२ ५	४ २८	६ ४९	८ ५१	१० ३६	११ ५९	१ २१	२ ५४	४ ४८
११	६ ५९	९ २१	११ ४१	२ १	४ २४	६ ४४	८ ४९	१० ३०	११ ५५	१ १८	२ ५१	४ ४५
१२	६ ५५	९ १७	११ ३७	१ ५८	४ २०	६ ४०	८ ४४	१० २६	११ ५१	१ १४	२ ४७	४ ४१
१३	६ ५१	९ १३	११ ३३	१ ५४	४ १६	६ ३६	८ ४०	१० २२	११ ४८	१ १०	२ ४३	४ ३७
१४	६ ४६	९ ९	११ २९	१ ५०	४ १२	६ ३२	८ ३६	१० १८	११ ४४	१ ६	२ ३९	४ ३३
१५	६ ४२	९ ५	११ २५	१ ४६	४ ८	६ २८	८ ३२	१० १४	११ ४०	१ २	२ ३५	४ २९
१६	६ ३९	९ १	११ २१	१ ४२	४ ४	६ २४	८ २८	१० १०	११ ३६	१२ ५८	२ ३१	४ २५
१७	६ ३५	८ ५७	११ १७	१ ३८	४ ०	६ २०	८ २४	१० ६	११ ३२	१२ ५५	२ २७	४ २१
१८	६ ३१	८ ५३	११ १३	१ ३४	३ ५६	६ १६	८ २०	१० २	११ २८	१२ ५१	२ २३	४ १७
१९	६ २८	८ ५०	११ १०	१ ३१	३ ५३	६ १३	८ १७	९ ५९	११ २५	१२ ४७	२ २०	४ १४
२०	६ २४	८ ४६	११ ६	१ २७	३ ४९	६ ९	८ १३	९ ५५	११ २१	१२ ४३	२ १६	४ १०
२१	६ २०	८ ४२	११ २	१ २३	३ ४५	६ ५	८ ९	९ ५१	११ १७	१२ ३९	२ १२	४ ६
२२	६ १७	८ ३८	१० ५८	१ १९	३ ४१	६ १	८ ५	९ ४७	११ १३	१२ ३५	२ ८	४ २
२३	६ १३	८ ३४	१० ५४	१ १५	३ ३९	५ ५७	८ १	९ ४३	११ ९	१२ ३१	२ ४	३ ५८
२४	६ ८	८ ३०	१० ५०	१ ११	३ ३३	५ ५३	७ ५७	९ ३९	११ ५	१२ २७	२ ००	३ ५४
२५	६ ४	८ २६	१० ४६	१ ७	३ २९	५ ४९	७ ५३	९ ३५	११ १	१२ २३	१ ५६	३ ५१
२६	६ १	८ २२	१० ४३	१ ४	३ २६	५ ४६	७ ५०	९ ३२	१० ५८	१२ २०	१ ५३	३ ४७
२७	५ ५७	८ १९	१० ३९	१ ००	३ २२	५ ४२	७ ४६	९ २८	१० ५४	१२ १६	१ ४९	३ ४३
२८	५ ५३	८ १५	१० ३५	१२ ५६	३ १८	५ ३८	७ ४२	९ २४	१० ५०	१२ १२	१ ४५	३ ३९
२९	५ ४९	८ ११	१० ३१	१२ ५२	३ १४	५ ३४	७ ३८	९ २०	१० ४६	१२ ८	१ ४१	३ ३५
३०	५ ४५	८ ७	१० २७	१२ ४८	३ १०	५ ३०	७ ३४	९ १६	१० ४२	१२ ४	१ ३७	३ ३१
३१	५ ४१	८ ३	१० २३	१२ ४५	३ ६	५ २६	७ ३०	९ १२	१० ३८	१२ ००	१ ३३	३ २९
३२	५ ३८	८ ००	१० २०	१२ ४१	३ २	५ २३	७ २७	९ ९	१० ३५	११ ५७	१ ३०	३ २४

दैनिक लग्न सारणी (श्रावण मास) स्टैंण्डर्ड जालन्धर टाईम घण्टा-मिन्ट

ता	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	७ ५६	१० १६	१२ ३७	२ ५९	५ १९	७ २३	९ ५	१० ३१	११ ५३	१ २६	३ २०	५ ३४
२	७ ५२	१० १२	१२ ३३	२ ५५	५ १५	७ १९	९ १	१० २७	११ ४९	१ २२	३ १६	५ ३०
३	७ ४८	१० ८	१२ २९	२ ५१	५ ११	७ १५	८ ५७	१० २३	११ ४५	१ १८	३ १२	५ २६
४	७ ४४	१० ४	१२ २५	२ ४७	५ ७	७ ११	८ ५३	१० १९	११ ४१	१ १४	३ ८	५ २२
५	७ ४०	१० ००	१२ २१	२ ४३	५ ३	७ ७	८ ४९	१० १५	११ ३७	१ १०	३ ४	५ १८
६	७ ३६	९ ५६	१२ १७	२ ३९	४ ५९	७ ३	८ ४५	१० ११	११ ३३	१ ६	३ ००	५ १४
७	७ ३२	९ ५२	१२ १३	२ ३५	४ ५५	६ ५९	८ ४१	१० ७	११ २९	१ २	२ ५६	५ १०
८	७ २८	९ ४८	१२ ९	२ ३१	४ ५१	६ ५५	८ ३७	१० ३	११ २५	१२ ५८	२ ५२	५ ६
९	७ २४	९ ४४	१२ ५	२ २७	४ ४७	६ ५१	८ ३३	९ ५९	११ २१	१२ ५४	२ ४८	५ २
१०	७ २०	९ ४०	१२ १	२ २३	४ ४३	६ ४७	८ २९	९ ५५	११ १७	१२ ५०	२ ४४	४ ५८
११	७ १६	९ ३६	११ ५७	२ १९	४ ३९	६ ४३	८ २५	९ ५१	११ १३	१२ ४६	२ ४०	४ ५४
१२	७ १२	९ ३२	११ ५३	२ १५	४ ३५	६ ३९	८ २१	९ ४७	११ ९	१२ ४२	२ ३६	४ ५०
१३	७ ८	९ २८	११ ४९	२ ११	४ ३१	६ ३५	८ १७	९ ४३	११ ५	१२ ३८	२ ३२	४ ४६
१४	७ ४	९ २४	११ ४५	२ ७	४ २९	६ ३१	८ १३	९ ३९	११ १	१२ ३४	२ २८	४ ४२
१५	७ ००	९ २०	११ ४१	२ ३	४ २३	६ २७	८ ९	९ ३५	१० ५७	१२ ३०	२ २४	४ ३८
१६	६ ५६	९ १६	११ ३७	१ ५९	४ १९	६ २३	८ ५	९ ३१	१० ५३	१२ २६	२ २०	४ ३४
१७	६ ५२	९ १२	११ ३३	१ ५५	४ १६	६ १९	८ १	९ २७	१० ४९	१२ २२	२ १६	४ ३०
१८	६ ४९	९ ९	११ ३०	१ ५२	४ १२	६ १६	७ ५८	९ २४	१० ४६	१२ १९	२ १३	४ २७
१९	६ ४५	९ ५	११ २६	१ ४८	४ ८	६ १२	७ ५४	९ २०	१० ४२	१२ १५	२ ९	४ २३
२०	६ ४१	९ १	११ २२	१ ४४	४ ४	६ ८	७ ५०	९ १६	१० ३८	१२ ११	२ ५	४ १९
२१	६ ३९	८ ५७	११ १८	१ ४०	४ ००	६ ४	७ ४६	९ १२	१० ३४	१२ ७	२ १	४ १५
२२	६ ३३	८ ५३	११ १४	१ ३६	३ ५६	६ ००	७ ४२	९ ८	१० ३०	१२ ३	१ ५७	४ ११
२३	६ २९	८ ४९	११ १०	१ ३२	३ ५२	५ ५६	७ ३८	९ ४	१० २६	११ ५९	१ ५३	४ ७
२४	६ २५	८ ४५	११ ६	१ २८	३ ४८	५ ५२	७ ३४	९ ००	१० २२	११ ५५	१ ४९	४ ३
२५	६ २१	८ ४१	११ २	१ २४	३ ४४	५ ४८	७ ३०	८ ५६	१० १८	११ ५१	१ ४५	३ ५९
२६	६ १९	८ ३७	१० ५८	१ २०	३ ४०	५ ४४	७ २६	८ ५३	१० १४	११ ४७	१ ४१	३ ५५
२७	६ १३	८ ३३	१० ५४	१ १६	३ ३६	५ ४०	७ २३	८ ४८	१० १०	११ ४३	१ ३७	३ ५१
२८	६ ९	८ २९	१० ५०	१ १२	३ ३२	५ ३६	७ १८	८ ४४	१० ६	११ ३९	१ ३३	३ ४७
२९	६ ५	८ २५	१० ४६	१ ८	३ २८	५ ३२	७ १४	८ ४०	१० २	११ ३५	१ २९	३ ४३
३०	६ १	८ २१	१० ४२	१ ४	३ २४	५ २८	७ १०	८ ३६	९ ५८	११ ३१	१ २५	३ ३४
३१	५ ५७	८ १८	१० ३८	१ ००	३ २०	५ २४	७ ६	८ ३२	९ ५४	११ २७	१ २१	३ ३१
	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००

[illegible] ...की सम्बन्धी फलादेश, कब विवाह होगा, कैसी स्त्री होगी, कितनी स्त्रियां होगी । बन्ध्या स्त्री आदि के योग तथा

लग्न का समय जो घण्टों-मिन्टों में दिया हुआ है वह लग्न की समाप्ति का समय है

दैनिक लग्न सारिणी (भाद्रपद) स्टैंडर्ड जालन्धर टाइम घंटा मिन्ट

ता.	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
१	८ १४	१० ३५	१२ ५७	३ १७	५ २१	७ ३	८ २९	९ ५१	११ २४	१ १८	३ ३२	५ ५४
२	८ १०	१० ३१	१२ ५३	३ १३	५ १७	६ ५९	८ २५	९ ४७	११ २०	१ १४	३ २८	५ ५०
३	८ ६	१० २७	१२ ४९	३ ९	५ १३	६ ५५	८ २१	९ ४३	११ १६	१ १०	३ २४	५ ४६
४	८ २	१० २३	१२ ४५	३ ५	५ ९	६ ५१	८ १७	९ ३९	११ १२	१ ६	३ २०	५ ४२
५	७ ५८	१० १९	१२ ४१	३ १	५ ५	६ ४७	८ १३	९ ३५	११ ८	१ २	३ १६	५ ३८
६	७ ५४	१० १५	१२ ३७	२ ५७	५ १	६ ४३	८ ९	९ ३१	११ ४	१२ ५८	३ १२	५ ३४
७	७ ५०	१० ११	१२ ३३	२ ५३	४ ५७	६ ३९	८ ५	९ २७	११ ०	१२ ५४	३ ८	५ ३०
८	७ ४६	१० ७	१२ २९	२ ४९	४ ५३	६ ३५	८ १	९ २३	१० ५६	१२ ५०	३ ४	५ २६
९	७ ४२	१० ३	१२ २५	२ ४५	४ ४९	६ ३१	७ ५७	९ १९	१० ५२	१२ ४६	३ ०	५ २२
१०	७ ३८	९ ५९	१२ २१	२ ४१	४ ४५	६ २७	७ ५३	९ १५	१० ४८	१२ ४२	२ ५६	५ १८
११	७ ३४	९ ५५	१२ १७	२ ३७	४ ४१	६ २३	७ ४९	९ ११	१० ४४	१२ ३८	२ ५२	५ १४
१२	७ ३०	९ ५१	१२ १३	२ ३३	४ ३७	६ १९	७ ४५	९ ७	१० ४०	१२ ३४	२ ४८	५ १०
१३	७ २६	९ ४७	१२ ९	२ २९	४ ३३	६ १५	७ ४१	९ ३	१० ३६	१२ ३०	२ ४४	५ ६
१४	७ २२	९ ४३	१२ ५	२ २५	४ २९	६ ११	७ ३७	८ ५९	१० ३२	१२ २६	२ ४०	५ २
१५	७ १८	९ ३९	१२ १	२ २१	४ २५	६ ७	७ ३३	८ ५५	१० २८	१२ २२	२ ३६	४ ५८
१६	७ १४	९ ३५	११ ५७	२ १७	४ २१	६ ३	७ २९	८ ५१	१० २४	१२ १८	२ ३२	४ ५४
१७	७ १०	९ ३१	११ ५३	२ १३	४ १७	५ ५९	७ २५	८ ४७	१० २०	१२ १४	२ २८	४ ५०
१८	७ ६	९ २७	११ ४९	२ ९	४ १३	५ ५५	७ २१	८ ४३	१० १६	१२ १०	२ २४	४ ४६
१९	७ २	९ २३	११ ४५	२ ५	४ ९	५ ५१	७ १७	८ ३९	१० १२	१२ ६	२ २०	४ ४२
२०	६ ५८	९ १९	११ ४१	२ १	४ ५	५ ४७	७ १३	८ ३५	१० ८	१२ २	२ १६	४ ३८
२१	६ ५४	९ १५	११ ३७	१ ५७	४ १	५ ४३	७ ९	८ ३१	१० ४	११ ५८	२ १२	४ ३४
२२	६ ५०	९ ११	११ ३३	१ ५३	३ ५७	५ ३९	७ ५	८ २७	१० ०	११ ५४	२ ८	४ ३०
२३	६ ४६	९ ७	११ २९	१ ४९	३ ५३	५ ३५	७ १	८ २३	९ ५६	११ ५०	२ ४	४ २६
२४	६ ४२	९ ३	११ २५	१ ४५	३ ४९	५ ३१	६ ५७	८ १९	९ ५२	११ ४६	२ ०	४ २२
२५	६ ३८	८ ५९	११ २१	१ ४१	३ ४५	५ २७	६ ५३	८ १५	९ ४८	११ ४२	१ ५६	४ १८
२६	६ ३४	८ ५५	११ १७	१ ३७	३ ४१	५ २३	६ ४९	८ ११	९ ४४	११ ३८	१ ५२	४ १४
२७	६ ३०	८ ५१	११ १३	१ ३३	३ ३७	५ १९	६ ४५	८ ७	९ ४०	११ ३४	१ ४८	४ १०
२८	६ २६	८ ४७	११ ९	१ २९	३ ३३	५ १५	६ ४१	८ ३	९ ३६	११ ३०	१ ४४	४ ६
२९	६ २२	८ ४३	११ ५	१ २५	३ २९	५ ११	६ ३७	७ ५९	९ ३२	११ २६	१ ४०	४ २
३०	६ १८	८ ३९	११ १	१ २१	३ २५	५ ७	६ ३३	७ ५५	९ २८	११ २२	१ ३६	३ ५८
३१	६ १५	८ ३६	१० ५८	१ १८	३ २२	५ ४	६ ३०	७ ५२	९ २५	११ १९	१ ३३	३ ५५

दैनिक लग्न सारिणी (आश्विन) मास स्टैंडर्ड जालन्धर टाइम घंठा मिन्ट

ता.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	८ ३५	१० ५६	१ १६	३ २०	५ २	६ २८	७ ५०	९ २३	११ १९	१ ३१	३ ५३	६ १३
२	८ ३०	१० ५२	१ १२	३ १६	४ ५८	६ २४	७ ४६	९ १९	११ १५	१ २७	३ ४९	६ ९
३	८ २६	१० ४८	१ ८	३ १२	४ ५४	६ २०	७ ४२	९ १५	११ ११	१ २३	३ ४५	६ ५
४	८ २२	१० ४४	१ ४	३ ८	४ ५०	६ १६	७ ३८	९ ११	११ ७	१ १९	३ ४१	६ १
५	८ १८	१० ४०	१ ०	३ ४	४ ४६	६ १२	७ ३४	९ ७	११ ३	१ १५	३ ३७	५ ५७
६	८ १४	१० ३६	१२ ५६	३ ०	४ ४२	६ ८	७ ३०	९ ३	१० ५९	१ ११	३ ३३	५ ५३
७	८ १०	१० ३२	१२ ५२	२ ५६	४ ३८	६ ४	७ २६	८ ५९	१० ५५	१ ७	३ २९	५ ४९
८	८ ६	१० २८	१२ ४८	२ ५२	४ ३४	६ ०	७ २२	८ ५५	१० ५१	१ ३	३ २५	५ ४५
९	८ २	१० २४	१२ ४४	२ ४८	४ ३०	५ ५६	७ १८	८ ५१	१० ४७	१२ ५९	३ २१	५ ४१
१०	७ ५८	१० २०	१२ ४०	२ ४४	४ २६	५ ५२	७ १४	८ ४७	१० ४३	१२ ५५	३ १७	५ ३७
११	७ ५४	१० १६	१२ ३६	२ ४०	४ २२	५ ४८	७ १०	८ ४३	१० ३९	१२ ५१	३ १३	५ ३३
१२	७ ५०	१० १२	१२ ३२	२ ३६	४ १८	५ ४४	७ ६	८ ३९	१० ३५	१२ ४७	३ ९	५ २९
१३	७ ४६	१० ८	१२ २८	२ ३२	४ १४	५ ४०	७ २	८ ३५	१० ३१	१२ ४३	३ ५	५ २५
१४	७ ४२	१० ४	१२ २४	२ २८	४ १०	५ ३६	६ ५८	८ ३१	१० २७	१२ ३९	३ १	५ २१
१५	७ ३८	१० ०	१२ २०	२ २४	४ ६	५ ३२	६ ५४	८ २७	१० २३	१२ ३५	२ ५७	५ १७
१६	७ ३४	९ ५६	१२ १६	२ २०	४ २	५ २८	६ ५०	८ २३	१० १९	१२ ३१	२ ५३	५ १३
१७	७ ३०	९ ५२	१२ १२	२ १६	३ ५८	५ २४	६ ४६	८ १९	१० १५	१२ २७	२ ४९	५ ९
१८	७ २६	९ ४८	१२ ८	२ १२	३ ५४	५ २०	६ ४२	८ १५	१० ११	१२ २३	२ ४५	५ ५
१९	७ २२	९ ४४	१२ ४	२ ८	३ ५०	५ १६	६ ३८	८ ११	१० ७	१२ १९	२ ४१	५ १
२०	७ १८	९ ४०	१२ ०	२ ४	३ ४६	५ १२	६ ३४	८ ७	१० ३	१२ १५	२ ३७	४ ५७
२१	७ १४	९ ३६	११ ५६	२ ०	३ ४२	५ ८	६ ३०	८ ३	९ ५९	१२ ११	२ ३३	४ ५३
२२	७ १०	९ ३२	११ ५२	१ ५६	३ ३८	५ ४	६ २६	७ ५९	९ ५५	१२ ७	२ २९	४ ४९
२३	७ ६	९ २८	११ ४८	१ ५२	३ ३४	५ ०	६ २२	७ ५५	९ ५१	१२ ३	२ २५	४ ४५
२४	७ २	९ २४	११ ४४	१ ४८	३ ३०	४ ५६	६ १८	७ ५१	९ ४७	११ ५९	२ २१	४ ४१
२५	६ ५८	९ २०	११ ४०	१ ४४	३ २६	४ ५२	६ १४	७ ४७	९ ४३	११ ५५	२ १७	४ ३७
२६	६ ५४	९ १६	११ ३६	१ ४०	३ २२	४ ४८	६ १०	७ ४३	९ ३९	११ ५१	२ १३	४ ३३
२७	६ ५०	९ १२	११ ३२	१ ३६	३ १८	४ ४४	६ ६	७ ३९	९ ३५	११ ४७	२ ९	४ २९
२८	६ ४६	९ ८	११ २८	१ ३२	३ १४	४ ४०	६ २	७ ३५	९ ३१	११ ४३	२ ५	४ २५
२९	६ ४२	९ ४	११ २४	१ २८	३ १०	४ ३६	५ ५८	७ ३१	९ २७	११ ३९	२ १	४ २१
३०	६ ३८	९ ०	११ २०	१ २४	३ ६	४ ३२	५ ५४	७ २७	९ २३	११ ३५	१ ५७	४ १७
३१	६ ३४	८ ५६	११ १६	१ २०	३ २	४ २८	५ ५०	७ २३	९ १९	११ ३१	१ ५३	४ १३

लग्न के नीचे जो समय घन्टा-मिन्टों में दिया हुआ है वह लग्न की समाप्ति का समय है

दैनिक लग्नसारणी (कार्तिक मास) स्टैंडर्ड टाइम जालन्धर घण्टा मिन्ट

ता.	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	८ ५३	११ १३	०१ १७	२ ५९	४ २५	५ ४७	७ २०	९ १४	११ २८	१ ५०	४ १०	६ ३१
२	८ ४९	११ ९	०१ १३	२ ५५	४ २१	५ ४३	७ १६	९ १०	११ २४	१ ४६	४ ६	६ २७
३	८ ४५	११ ५	०१ ९	२ ५१	४ १७	५ ३९	७ १२	९ ६	११ २०	१ ४२	४ २	६ २३
४	८ ४१	११ १	०१ ५	२ ४७	४ १३	५ ३५	७ ८	९ २	११ १६	१ ३८	३ ५८	६ १९
५	८ ३७	१० ५७	०१ १	२ ४३	४ ९	५ ३१	७ ४	८ ५८	११ १२	१ ३४	३ ५४	६ १५
६	८ ३३	१० ५३	१२ ५७	२ ३९	४ ५	५ २७	७ ०	८ ५४	११ ८	१ ३०	३ ५०	६ ११
७	८ २९	१० ४९	१२ ५३	२ ३५	४ १	५ २३	६ ५६	८ ५०	११ ४	१ २६	३ ४६	६ ७
८	८ २५	१० ४५	१२ ४९	२ ३१	३ ५७	५ १९	६ ५२	८ ४६	११ ०	१ २२	३ ४२	६ ३
९	८ २१	१० ४१	१२ ४५	२ २७	३ ५३	५ १५	६ ४८	८ ४२	१० ५६	१ १८	३ ३८	५ ५९
१०	८ १७	१० ३७	१२ ४१	२ २३	३ ४९	५ ११	६ ४४	८ ३८	१० ५२	१ १४	३ ३४	५ ५५
११	८ १३	१० ३३	१२ ३७	२ १९	३ ४५	५ ७	६ ४०	८ ३४	१० ४८	१ १०	३ २६	५ ५१
१२	८ ९	१० २९	१२ ३३	२ १५	३ ४१	५ ३	६ ३६	८ ३०	१० ४४	१ ६	३ ३०	५ ४७
१३	८ ५	१० २५	१२ २९	२ ११	३ ३७	४ ५९	६ ३२	८ २६	१० ४०	१ २	३ २२	५ ४३
१४	८ १	१० २१	१२ २५	२ ७	३ ३३	४ ५५	६ २८	८ २२	१० ३६	१२ ५८	३ १८	५ ३९
१५	७ ५७	१० १७	१२ २१	२ ३	३ २९	४ ५१	६ २४	८ १८	१० ३२	१२ ५४	३ १४	५ ३५
१६	७ ५३	१० १३	१२ १७	१ ५९	३ २५	४ ४७	६ २०	८ १४	१० २८	१२ ५०	३ १०	५ ३१
१७	७ ४९	१० ९	१२ १३	१ ५५	३ २१	४ ४३	६ १६	८ १०	१० २४	१२ ४६	३ ६	५ २७
१८	७ ४५	१० ५	१२ ९	१ ५१	३ १७	४ ३९	६ १२	८ ६	१० २०	१२ ४२	३ २	५ २३
१९	७ ४१	१० १	१२ ५	१ ४७	३ १३	४ ३५	६ ८	८ २	१० १६	१२ ३८	२ ५७	५ १९
२०	७ ३७	९ ५७	१२ १	१ ४३	३ ९	४ ३१	६ ४	७ ५८	१० १२	१२ ३४	२ ५४	५ १५
२१	७ ३३	९ ५३	११ ५७	१ ३९	३ ५	४ २७	६ ०	७ ५४	१० ८	१२ ३०	२ ५०	५ ११
२२	७ २९	९ ४९	११ ५३	१ ३५	३ १	४ २३	५ ५६	७ ५०	१० ४	१२ २६	२ ४६	५ ७
२३	७ २५	९ ४५	११ ४९	१ ३१	२ ५७	४ १९	५ ५२	७ ४६	१० ०	१२ २२	२ ४२	५ ३
२४	७ २१	९ ४१	११ ४५	१ २७	२ ५३	४ १५	५ ४८	७ ४२	९ ५७	१२ १८	२ ३८	४ ५९
२५	७ १७	९ ३७	११ ४१	१ २३	२ ४९	४ ११	५ ४४	७ ३८	९ ५२	१२ १४	२ ३४	४ ५५
२६	७ १३	९ ३३	११ ३७	१ १९	२ ४५	४ ७	५ ४०	७ ३४	९ ४८	१२ १०	२ ३०	४ ५१
२७	७ ९	९ २९	११ ३३	१ १५	२ ४१	४ ३	५ ३६	७ ३०	९ ४४	१२ ६	२ २६	४ ४७
२८	७ ५	९ २५	११ २९	१ ११	२ ३७	३ ५९	५ ३२	७ २६	९ ४०	१२ २	२ २२	४ ४३
२९	७ १	९ २१	११ २५	१ ७	२ ३४	३ ५५	५ २८	७ २२	९ ३६	११ ५८	२ १८	४ ३९
३०	६ ५८	९ १७	११ २२	१ ४	२ ३०	३ ५१	५ २५	७ १९	९ ३३	११ ५५	२ १५	४ ३६

दैनिक लग्न सारणी (मार्गशीर्ष मास) स्टैंडर्ड जालन्धर टाइम घण्टा-मिन्ट

ता.	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	९ १६	११ २०	१ २	२ २८	३ ५०	५ २३	७ १७	९ ३१	११ ५३	२ १३	४ ३४	६ ५६
२	९ १२	११ १६	१२ ५८	२ २४	३ ४६	५ १९	७ १३	९ २७	११ ४९	२ ९	४ ३०	६ ५२
३	९ ८	११ १२	१२ ५४	२ २०	३ ४२	५ १५	७ ९	९ २३	११ ४५	२ ५	४ २६	६ ४८
४	९ ४	११ ८	१२ ५०	२ १६	३ ३८	५ ११	७ ५	९ १९	११ ४१	२ १	४ २२	६ ४४
५	९ ०	११ ४	१२ ४६	२ १२	३ ३४	५ ७	७ १	९ १५	११ ३७	१ ५७	४ १८	६ ४०
६	८ ५६	११ ०	१२ ४२	२ ८	३ ३०	५ ३	६ ५७	९ ११	११ ३३	१ ५३	४ १४	६ ३६
७	८ ५२	१० ५६	१२ ३८	२ ४	३ २६	४ ५९	६ ५३	९ ७	११ २९	१ ४९	४ १०	६ ३२
८	८ ४८	१० ५२	१२ ३४	२ ०	३ २२	४ ५५	६ ४९	९ ३	११ २५	१ ४५	४ ६	६ २८
९	८ ४४	१० ४८	१२ ३०	१ ५६	३ १८	४ ५१	६ ४५	८ ५९	११ २१	१ ४१	४ २	६ २४
१०	८ ४०	१० ४४	१२ २६	१ ५२	३ १४	४ ४७	६ ४१	८ ५५	११ १७	१ ३७	३ ५८	६ २०
११	८ ३६	१० ४०	१२ २२	१ ४८	३ १०	४ ४३	६ ३७	८ ५१	११ १३	१ ३३	३ ५४	६ १६
१२	८ ३२	१० ३६	१२ १८	१ ४४	३ ६	४ ३९	६ ३३	८ ४७	११ ९	१ २९	३ ५०	६ १२
१३	८ २८	१० ३२	१२ १४	१ ४०	३ २	४ ३५	६ २९	८ ४३	११ ५	१ २५	३ ४६	६ ८
१४	८ २४	१० २८	१२ १०	१ ३६	२ ५८	४ ३१	६ २५	८ ३९	११ १	१ २१	३ ४२	६ ४
१५	८ २०	१० २४	१२ ६	१ ३२	२ ५४	४ २७	६ २१	८ ३५	१० ५७	१ १७	३ ३८	६ ०
१६	८ १६	१० २०	१२ २	१ २८	२ ५०	४ २३	६ १७	८ ३१	१० ५३	१ १३	३ ३४	५ ५६
१७	८ १२	१० १६	११ ५८	१ २४	२ ४६	४ १९	६ १३	८ २७	१० ४९	१ ९	३ ३०	५ ५२
१८	८ ८	१० १२	११ ५४	१ २०	२ ४२	४ १५	६ ९	८ २३	१० ४५	१ ५	३ २६	५ ४८
१९	८ ४	१० ८	११ ५०	१ १६	२ ३८	४ ११	६ ५	८ १९	१० ४१	१ १	३ २२	५ ४४
२०	८ ०	१० ४	११ ४६	१ १२	२ ३४	४ ७	६ १	८ १५	१० ३७	१२ ५७	३ १७	५ ४०
२१	७ ५६	१० ०	११ ४२	१ ८	२ ३०	४ ३	५ ५७	८ ११	१० ३३	१२ ५३	३ १४	५ ३६
२२	७ ५२	९ ५६	११ ३८	१ ४	२ २६	३ ५९	५ ५३	८ ७	१० २९	१२ ४९	३ ११	५ ३२
२३	७ ४८	९ ५२	११ ३४	१ ०	२ २२	३ ५५	५ ४९	८ ३	१० २५	१२ ४५	३ ६	५ २८
२४	७ ४४	९ ४८	११ ३०	१२ ५६	२ १८	३ ५१	५ ४५	७ ५९	१० २१	१२ ४१	३ २	५ २४
२५	७ ४०	९ ४४	११ २६	१२ ५२	२ १४	३ ४७	५ ४१	७ ५५	१० १७	१२ ३७	२ ५८	५ २०
२६	७ ३६	९ ४०	११ २२	१२ ४८	२ १०	३ ४३	५ ३७	७ ५१	१० १३	१२ ३३	२ ५४	५ १६
२७	७ ३२	९ ३६	११ १८	१२ ४४	२ ६	३ ३९	५ ३३	७ ४७	१० ९	१२ २९	२ ५०	५ १२
२८	७ २८	९ ३२	११ १४	१२ ४०	२ २	३ ३६	५ २९	७ ४३	१० ५	१२ २५	२ ४६	५ ८
२९	७ २३	९ २९	११ ९	१२ ३५	१ ५९	३ ३०	५ २४	७ ३८	१० ०	१२ २०	२ ४१	५ ३
३०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	०

दैनिक लग्न सारिणी (पौष मास) स्टैंडर्ड जालन्धर टाइम घण्टा मिन्ट

ता.	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
१	९ २५	११ ७	१२ ३३	१ ५५	३ २८	५ २२	७ ३६	९ ५८	१२ १८	२ ३९	५ १	७ २१
२	९ २१	११ ३	१२ २०	१ ५१	३ २४	५ १८	७ ३२	९ ५४	१२ १४	२ ३५	४ ५७	७ १७
३	९ १७	१० ५९	१२ २५	१ ४७	३ २०	५ १४	७ २८	९ ५०	१२ १०	२ ३१	४ ५३	७ १३
४	९ १३	१० ५५	१२ २१	१ ४३	३ १६	५ १०	७ २४	९ ४६	१२ ६	२ २७	४ ४९	७ ९
५	९ ०९	१० ५१	१२ १७	१ ३९	३ १२	५ ६	७ २०	९ ४२	१२ २	२ २३	४ ४५	७ ५
६	९ ५	१० ४७	१२ १३	१ ३५	३ ८	५ २	७ १६	९ ३८	११ ५८	२ १९	४ ४१	७ १
७	९ १	१० ४४	१२ ९	१ ३१	३ ४	४ ५८	७ १२	९ ३४	११ ५४	२ १५	४ ३७	६ ५७
८	८ ५७	१० ३९	१२ ५	१ २७	३ ०	४ ५४	७ ८	९ ३०	११ ५०	२ ११	४ ३३	६ ५३
९	८ ५३	१० ३५	१२ १	१ २३	२ ५६	४ ५०	७ ४	९ २६	११ ४६	२ ७	४ २९	६ ४९
१०	८ ४९	१० ३१	११ ५७	१ १९	२ ५२	४ ४६	७ ०	९ २२	११ ४२	२ ३	४ २५	६ ४५
११	८ ४५	१० २७	११ ५३	१ १५	२ ४८	४ ४२	६ ५६	९ १८	११ ३८	१ ५९	४ २१	६ ४१
१२	८ ४०	१० २३	११ ४८	१ १०	२ ४३	४ ३७	६ ५१	९ १३	११ ३३	१ ५४	४ १६	६ ३६
१३	८ ३६	१० १८	११ ४४	१ ६	२ ३९	४ ३३	६ ४७	९ ९	११ २९	१ ५०	४ १२	६ ३२
१४	८ ३२	१० १४	११ ४०	१ २	२ ३५	४ २९	६ ४३	९ ५	११ २५	१ ४६	४ ८	६ २८
१५	८ २८	१० १०	११ ३६	१२ ५८	२ ३१	४ २५	६ ३९	९ १	११ २१	१ ४२	४ ४	६ २४
१६	८ २४	१० ६	११ ३२	१२ ५४	२ २७	४ २१	६ ३५	८ ५७	११ १७	१ ३८	४ ०	६ २०
१७	८ २०	१० २	११ २८	१२ ५०	२ २३	४ १७	६ ३१	८ ५३	११ १३	१ ३४	३ ५६	६ १६
१८	८ १६	९ ५८	११ २४	१२ ४६	२ १९	४ १३	६ २७	८ ४९	११ ९	१ ३०	३ ५२	६ १२
१९	८ १२	९ ५४	११ २०	१२ ४२	२ १५	४ ९	६ २३	८ ४५	११ ५	१ २६	३ ४८	६ ८
२०	८ ७	९ ४९	११ १५	१२ ३७	२ १०	४ ४	६ १८	८ ४०	११ ०	१ २१	३ ४३	६ ३
२१	९ ३	९ ४५	११ ११	१२ ३३	२ ६	४ ०	६ १४	८ ३६	१० ५६	१ १७	३ ३९	५ ५९
२२	७ ५९	९ ४१	११ ७	१२ २९	२ २	३ ५६	६ १०	८ ३२	१० ५२	१ १३	३ ३५	५ ५५
२३	७ ५५	९ ३७	११ ३	१२ २५	१ ५८	३ ५२	६ ६	८ २८	१० ४७	१ ९	३ ३१	५ ५१
२४	७ ५१	९ ३३	१० ५९	१२ २१	१ ५४	३ ४८	६ २	८ २४	१० ४४	१ ५	३ २७	५ ४७
२५	७ ४७	९ २९	१० ५५	१२ १७	१ ५०	३ ४४	५ ५८	८ २०	१० ४०	१ १	३ २३	५ ४३
२६	७ ४३	९ २५	१० ५१	१२ १३	१ ४६	३ ४०	५ ५४	८ १६	१० ३६	१२ ५७	३ १९	५ ३९
२७	७ ३९	९ २१	१० ४७	१२ ९	१ ४२	३ ३६	५ ५०	८ १२	१० ३२	१२ ५३	३ १५	५ ३५
२८	७ ३५	९ १७	१० ४३	१२ ५	१ ३८	३ ३२	५ ४६	८ ८	१० २८	१२ ४९	३ ११	५ ३१
२९	७ ३०	९ १२	१० ३८	१२ ०	१ ३३	३ २७	५ ४१	८ ३	१० २३	१२ ४४	३ ६	५ २६
००	० ००	० ००	०० ०	० ००	० ००	० ००	० ००	० ००	०० ००	०० ००	० ०	० ००

दैनिक लग्न सारिणी (माघ मास) स्टैंडर्ड टाइम घण्टा मिन्ट

ता.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन
१	९ १२	१० ३८	१२ ०	१ ३३	३ २७	५ ४१	८ ३	१० २३	१२ ४४	३ ६	५ २६	७ ३०
२	९ ८	१० ३४	११ ५६	१ २९	३ २३	५ ३७	७ ५९	१० १९	१२ ४०	३ २	५ २२	७ २६
३	९ ४	१० ३०	११ ५२	१ २५	३ १९	५ ३३	७ ५५	१० १५	१२ ३६	२ ५८	५ १८	७ २२
४	९ ०	१० २६	११ ४८	१ २१	३ १५	५ २९	७ ५१	१० ११	१२ ३२	२ ५४	५ १४	७ १८
५	८ ५६	१० २२	११ ४४	१ १७	३ ११	५ २५	७ ४७	१० ७	१२ २८	२ ५०	५ १०	७ १४
६	८ ५२	१० १८	११ ४०	१ १३	३ ७	५ २१	७ ४३	१० ३	१२ २४	२ ४६	५ ६	७ १०
७	८ ४८	१० १४	११ ३६	१ ९	३ ३	५ १७	७ ३९	९ ५९	१२ २०	२ ४२	५ २	७ ६
८	८ ४४	१० १०	११ ३२	१ ५	२ ५९	५ १३	७ ३५	९ ५५	१२ १६	२ ३८	४ ५८	७ २
९	८ ४०	१० ६	११ २८	१ १	२ ५५	५ ९	७ ३१	९ ५१	१२ १२	२ ३४	४ ५४	६ ५८
१०	८ ३६	१० २	११ २४	१२ ५७	२ ५१	५ ५	७ २७	९ ४७	१२ ८	२ ३०	४ ५०	६ ५४
११	८ ३२	९ ५८	११ २०	१२ ५३	२ ४७	५ १	७ २३	९ ४३	१२ ४	२ २६	४ ४६	६ ५०
१२	८ २८	९ ५४	११ १६	१२ ४९	२ ४३	४ ५७	७ १९	९ ३९	१२ ०	२ २२	४ ४२	६ ४६
१३	८ २४	९ ५०	११ १२	१२ ४५	२ ३९	४ ५३	७ १५	९ ३५	११ ५६	२ १८	४ ३८	६ ४१
१४	८ २०	९ ४६	११ ८	१२ ४१	२ ३५	४ ४९	७ ११	९ ३१	११ ५२	२ १४	४ ३४	६ ३८
१५	८ १६	९ ४२	११ ४	१२ ३७	२ ३१	४ ४५	७ ७	९ २७	११ ४८	१ १०	४ ३०	६ ३४
१६	८ १२	९ ३८	११ ०	१२ ३३	२ २७	४ ४१	७ ३	९ २३	११ ४४	२ ६	४ २६	६ ३०
१७	८ ८	९ ३४	१० ५६	१२ २९	२ २३	४ ३७	६ ५९	९ १९	११ ४०	२ २	४ २२	६ २६
१८	८ ४	९ ३०	१० ५२	१२ २५	२ १९	४ ३३	६ ५५	९ १५	११ ३६	१ ५८	४ १८	६ २२
१९	८ ०	९ २६	१० ४८	१२ २१	२ १५	४ २९	६ ५१	९ ११	११ ३२	१ ५४	४ १४	६ १८
२०	७ ५६	९ २२	१० ४४	१२ १७	२ ११	४ २५	६ ४७	९ ७	११ २८	१ ५०	४ १०	६ १४
२१	७ ५२	९ १८	१० ४०	१२ १३	२ ७	४ २१	६ ४३	९ ३	११ २४	१ ४६	४ ६	६ १०
२२	७ ४८	९ १४	१० ३६	१२ ९	२ ३	४ १७	६ ३९	८ ५९	११ २०	१ ४२	४ २	६ ६
२३	७ ४४	९ १०	१० ३२	१२ ५	१ ५९	४ १३	६ ३५	८ ५५	११ १६	१ ३८	३ ५८	६ २
२४	७ ४०	९ ६	१० २८	१२ १	१ ५५	४ ९	६ ३१	८ ५१	११ १२	१ ३४	३ ५४	५ ५८
२५	७ ३६	९ २	१० २४	११ ५७	१ ५१	४ ५	६ २७	८ ४७	११ ८	१ ३०	३ ५०	५ ५४
२६	७ ३२	८ ५८	१० २०	११ ५३	१ ४७	४ १	६ २३	८ ४३	११ ४	१ २६	३ ४६	५ ५०
२७	७ २८	८ ५४	१० १६	११ ४९	१ ४३	३ ५७	६ १९	८ ३९	११ ०	१ २२	३ ४२	५ ४६
२८	७ २४	८ ५०	१० १२	११ ४५	१ ३९	३ ५३	६ १५	८ ३५	१० ५६	१ १८	३ ३८	५ ४२
२९	७ २०	८ ४६	१० ८	११ ४१	१ ३५	३ ४९	६ ११	८ ३१	१० ५२	१ १४	३ ३४	५ ३८
३०	७ १७	८ ४३	१० ५	११ ३८	१ ३२	३ ४६	६ ८	८ २८	१० ४९	१ १२	३ ३१	५ ३५

लग्न के नीचे जो समय घण्टा-मिन्टों में दिया हुआ है वह लग्न की समाप्ति का समय है

दैनिक लग्न सारिणी (फाल्गुन मास) स्टैंडर्ड जालन्धर टाइम घण्टा मिन्ट

ता.	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर
१	८ ४०	१० ०६	११ ३५	१ २६	३ ४३	६ ५	८ २५	१० ४६	१ ८	३ २८	५ ३२	७ १४
२	८ ३६	९ ५८	११ ३१	१ २५	३ ३९	६ १	८ २१	१० ४२	१ ४	३ २४	५ २८	७ १०
३	८ ३२	९ ५४	११ २७	१ २१	३ ३५	५ ५७	८ १७	१० ३८	१ ०	३ २०	५ २४	७ ६
४	८ २८	९ ५०	११ २३	१ १७	३ ३१	५ ५३	८ १३	१० ३४	१२ ५६	३ १६	५ २०	७ २
५	८ २४	९ ४६	११ १९	१ १३	३ २७	५ ४९	८ ९	१० ३०	१२ ५२	३ १२	५ १६	६ ५८
६	८ २०	९ ४२	११ १५	१ ९	३ २३	५ ४५	८ ५	१० २६	१२ ४८	३ ८	५ १२	६ ५४
७	८ १६	९ ३८	११ ११	१ ५	३ १९	५ ४१	८ १	१० २२	१२ ४४	३ ४	५ ८	६ ५०
८	८ १२	९ ३४	११ ७	१ १	३ १५	५ ३७	७ ५७	१० १८	१२ ४०	३ ०	५ ४	६ ४६
९	८ ९	९ ३१	११ ४	१२ ५८	३ १२	५ ३४	७ ५४	१० १५	१२ ३७	२ ५७	५ १	६ ४३
१०	८ ५	९ २७	११ ०	१२ ५४	३ ८	५ ३०	७ ५०	१० ११	१२ ३३	२ ५३	४ ५७	६ ३९
११	८ १	९ २३	१० ५६	१२ ५०	३ ४	५ २६	७ ४६	१० ७	१२ २९	२ ४९	४ ५३	६ ३५
१२	७ ५७	९ १९	१० ५२	१२ ४६	३ ०	५ २२	७ ४२	१० ३	१२ २५	२ ४५	४ ४९	६ ३१
१३	७ ५३	९ १५	१० ४८	१२ ४२	२ ५६	५ १८	७ ३८	९ ५९	१२ २१	२ ४१	४ ४५	६ २७
१४	७ ४९	९ ११	१० ४४	१२ ३८	२ ५२	५ १४	७ ३४	९ ५५	१२ १७	२ ३७	४ ४१	६ २३
१५	७ ४५	९ ७	१० ४०	१२ ३४	२ ४८	५ १०	७ ३०	९ ५१	१२ १३	२ ३३	४ ३७	६ १९
१६	७ ४२	९ ४	१० ३७	१२ ३१	२ ४५	५ ७	७ २७	९ ४८	१२ १०	२ ३०	४ ३४	६ १६
१७	७ ३८	९ ०	१० ३३	१२ २७	२ ४१	५ ३	७ २३	९ ४४	१२ ६	२ २६	४ ३०	६ १२
१८	७ ३४	८ ५६	१० २९	१२ २३	२ ३७	४ ५९	७ १९	९ ४०	१२ २	२ २२	४ २६	६ ८
१९	७ ३०	८ ५२	१० २५	१२ १९	२ ३३	४ ५५	७ १५	९ ३६	११ ५८	२ १८	४ २२	६ ४
२०	७ २६	८ ४८	१० २१	१२ १५	२ २९	४ ५१	७ ११	९ ३२	११ ५४	२ १४	४ १८	६ ०
२१	७ २२	८ ४४	१० १७	१२ ११	२ २५	४ ४७	७ ७	९ २८	११ ५०	२ १०	४ १४	५ ५६
२२	७ १८	८ ४०	१० १३	१२ ७	२ २१	४ ४३	७ ३	९ २४	११ ४६	२ ६	४ १०	५ ५२
२३	७ १५	८ ३७	१० १०	१२ ४	२ १८	४ ४०	७ ०	९ २१	११ ४३	२ ३	४ ७	५ ४९
२४	७ ११	८ ३३	१० ६	१२ ०	२ १४	४ ३६	६ ५६	९ १७	११ ३९	१ ५९	४ ३	५ ४५
२५	७ ७	८ २९	१० २	११ ५६	२ १०	४ ३२	६ ५२	९ १३	११ ३५	१ ५५	३ ५९	५ ४१
२६	७ ३	८ २५	९ ५८	११ ५२	२ ६	४ २८	६ ४८	९ ९	११ ३१	१ ५१	३ ५५	५ ३७
२७	६ ५९	८ २१	९ ५४	११ ४८	२ २	४ २४	६ ४४	९ ५	११ २७	१ ४७	३ ५१	५ ३३
२८	६ ५५	८ १७	९ ५०	११ ४४	१ ५८	४ २०	६ ४०	९ १	११ २३	१ ४३	३ ४७	५ २९
२९	६ ५१	८ १३	९ ४६	११ ४०	१ ५४	४ १६	६ ३६	८ ५७	११ १९	१ ३९	३ ४३	५ २५
३०	६ ४८	८ १०	९ ४३	११ ३७	१ ५१	४ १३	६ ३३	८ ५४	११ १६	१ ३६	३ ४०	५ २२
००	० ००	०० ००	०० ००	०० ००	० ००	० ००	० ००	०० ००	०० ००	० ००	० ००	० ००

दैनिक लग्न सारिणी (चैत्र मास) स्टैंडर्ड जालन्धर टाइम घंटा मिंट।

ता.	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ
१	८ ७	९ ४०	११ ३४	१ ४८	४ १०	६ ३०	८ ५१	११ १३	१ ३३	३ ३७	५ १९	६ ४५
२	८ ३	९ ३६	११ ३०	१ ४४	४ ६	६ २६	८ ४७	११ ९	१ २९	३ ३३	५ १५	६ ४१
३	७ ५९	९ ३२	११ २६	१ ४०	४ २	६ २२	८ ४३	११ ५	१ २५	३ २९	५ ११	६ ३७
४	७ ५५	९ २८	११ २२	१ ३६	३ ५८	६ १८	८ ३९	११ १	१ २१	३ २५	५ ७	६ ३३
५	७ ५१	९ २४	११ १८	१ ३२	३ ५४	६ १४	८ ३५	१० ५७	१ १७	३ २१	५ ३	६ २९
६	७ ४७	९ २०	११ १४	१ २८	३ ५०	६ १०	८ ३१	१० ५३	१ १३	३ १७	४ ५९	६ २५
७	७ ४३	९ १६	११ १०	१ २४	३ ४६	६ ६	८ २७	१० ४९	१ ९	३ १३	४ ५५	६ २१
८	७ ३९	९ १२	११ ६	१ २०	३ ४२	६ २	८ २३	१० ४५	१ ५	३ ९	४ ५१	६ १७
९	७ ३५	९ ८	११ २	१ १६	३ ३८	५ ५८	८ १९	१० ४१	१ १	३ ५	४ ४७	६ १३
१०	७ ३१	९ ४	१० ५८	१ १२	३ ३४	५ ५४	८ १५	१० ३७	१२ ५७	३ १	४ ४३	६ ९
११	७ २७	९ ०	१० ५४	१ ८	३ ३०	५ ५०	८ ११	१० ३३	१२ ५३	२ ५७	४ ३९	६ ५
१२	७ २३	८ ५६	१० ५०	१ ४	३ २६	५ ४६	८ ७	१० २९	१२ ४९	२ ५३	४ ३५	६ १
१३	७ १९	८ ५२	१० ४६	१ ०	३ २२	५ ४२	८ ३	१० २५	१२ ४५	२ ४९	४ ३१	५ ५७
१४	७ १५	८ ४८	१० ४२	१२ ५६	३ १८	५ ३८	७ ५९	१० २१	१२ ४१	२ ४५	४ २७	५ ५३
१५	७ ११	८ ४४	१० ३८	१२ ५२	३ १४	५ ३४	७ ५५	१० १७	१२ ३७	२ ४१	४ २३	५ ४९
१६	७ ७	८ ४०	१० ३४	१२ ४८	३ १०	५ ३०	७ ५१	१० १३	१२ ३३	२ ३७	४ १९	५ ४५
१७	७ ३	८ ३६	१० ३०	१२ ४४	३ ६	५ २६	७ ४७	१० ९	१२ २९	२ ३३	४ १५	५ ४१
१८	६ ५९	८ ३२	१० २६	१२ ४०	३ २	५ २२	७ ४३	१० ५	१२ २५	२ २९	४ ११	५ ३७
१९	६ ५५	८ २८	१० २२	१२ ३६	२ ५८	५ १८	७ ३९	१० १	१२ २१	२ २५	४ ७	५ ३३
२०	६ ५१	८ २४	१० १८	१२ ३२	२ ५४	५ १४	७ ३५	९ ५७	१२ १७	२ २१	४ ३	५ २९
२१	६ ४७	८ २०	१० १४	१२ २८	२ ५०	५ १०	७ ३१	९ ५३	१२ १३	२ १७	३ ५९	५ २५
२२	६ ४३	८ १६	१० १०	१२ २४	२ ४६	५ ६	७ २७	९ ४९	१२ ९	२ १३	३ ५५	५ २१
२३	६ ३९	८ १२	१० ६	१२ २०	२ ४२	५ २	७ २३	९ ४५	१२ ५	२ ९	३ ५१	५ १७
२४	६ ३५	८ ८	१० २	१२ १६	२ ३८	४ ५८	७ १९	९ ४१	१२ १	२ ५	३ ४७	५ १३
२५	६ ३१	८ ४	९ ५८	१२ १२	२ ३४	४ ५४	७ १५	९ ३७	११ ५७	२ १	३ ४३	५ ९
२६	६ २७	८ ०	९ ५४	१२ ८	२ ३०	४ ५०	७ ११	९ ३३	११ ५३	१ ५७	३ ३९	५ ५
२७	६ २३	७ ५६	९ ५०	१२ ४	२ २६	४ ४६	७ ७	९ २९	११ ४९	१ ५३	३ ३५	५ १
२८	६ १९	७ ५२	९ ४६	१२ ०	२ २२	४ ४२	७ ३	९ २५	११ ४५	१ ४९	३ ३१	४ ५७
२९	६ १५	७ ४८	९ ४२	११ ५६	२ १८	४ ३८	६ ५९	९ २१	११ ४१	१ ४५	३ २७	४ ५३
३०	६ ११	७ ४४	९ ३८	११ ५२	२ १४	४ ३४	६ ५५	९ १७	११ ३७	१ ४१	३ २३	४ ४९
३१	६ ७	७ ३९	९ ३३	११ ४७	२ ९	४ २९	६ ५१	९ १२	११ ३२	१ ३६	३ १८	४ ४४

पं० देवीदयाल

ज्योतिष कार्यालयमें उपलब्ध दुर्लभ ज्योतिष सम्बन्धी पुस्तकें

—ज्योतिष-सन्देश—

(स्वर्णजयन्ती के शुभ अवसर पर)

पं. देवी दयाल ज्योतिष अनुसन्धान केन्द्र द्वारा संचालित एक अनुपम पत्रिका जो जनवरी ई० १९७७ में प्रकाशित होकर मार्कीट में आ जावेगी। इसमें भारत के मूर्धन्य ज्योतिषियों के अनुभवों के साथ-साथ ज्योतिष सम्बन्धी अनेक प्राचीन एवं अर्वाचीन गूढ़ तथ्यों का उद्घाटन किया जावेगा।

ज्योतिष का काम करने वाले महानुभावों के लिए अत्यन्त उपयोगी पत्रिका है जिसमें फल-कथन सम्बन्धी सर्वोत्तम वैज्ञानिक प्रणालियों का दिग्दर्शन, योग-विचार, दशा पद्धति, मूक-प्रश्न विचार, मंगलीकादि कुण्डली मिलान, व्रत, पर्वादि धर्म-शास्त्र के विवादास्पद विषय, हस्तरेखा के प्राचीन व अर्वाचीन मूल सिद्धान्तों का सविस्तार विवरण दिया जावेगा। **ज्योतिष सीखने वाले विद्यार्थियों** (व्यापारियों को कौन सा व्यापार करने में लाभ रहेगा ?)

वार्षिक राशिफल ज्योतिष सम्बन्धी जटिल समस्याओं के प्रश्नोत्तर इत्यादि विभिन्नांगों पर प्रकाश डाला जावेगा। आज ही १५) रुपये वार्षिक शुल्क भेजकर "ज्योतिष संदेश" के मेम्बर बनें—

सम्पादक :—पं० पन्ना लाल ज्यो. एम. ए.

पं० देवी दयाल ज्योतिष अनुसन्धान केन्द्र

माई हीरां गेट जालन्धर

भृगुसंहिता (फलित खंड)

हस्त लिखित प्राचीन भृगु संहिता के आधार पर लिखा गया यह एक दुर्लभ ग्रंथ है। इस ग्रंथ की सहायता से साधारण पढ़ा लिखा व्यक्ति अथवा ज्योतिषी विश्व के किसी कोने में उत्पन्न व्यक्ति का भूत, भविष्य और वर्तमान बता सकता है। इसमें लगभग १६०० कुण्डलियाँ हैं। ग्रंथ की उपयोगिता स्वयं-सिद्ध है। मूल्य २२) रुपये।

बृहद् हस्त सामुद्रिक शास्त्र

जिस प्रकार एक कुशल डाक्टर या हकीम केवल जीभ वा नाड़ी देख कर रोग जान लेता है उसी भाँति हस्त रेखामें माहिर कोई व्यक्ति मनुष्यकी हस्त रेखाओं द्वारा उसके सम्पूर्ण जीवन का ज्ञान कर सकता है। प्रस्तुत पुस्तक में हस्त रेखा विज्ञान की सूक्ष्म तथा मुख्य समस्त शाखाओं का साँगोपाँग सचित्र वर्णन किया गया है जिनकी सहायता से आप प्रत्येक स्त्री या पुरुष का भाग्य जान सकते हैं। सम्पूर्ण बृहद पुस्तक सचित्र १५) रुपये डाक व्यय सहित। छोटी पुस्तक सचित्र ५) रुपये डाक व्यय अलग।

प्रश्न दर्पण—(अनूदित पं० पन्ना लाल ज्यो० एम० ए०, मूल लेखक स्वर्गीय पं० मोहनलाल ज्यो०, प्रवर्त्तक मुफीद आलम जन्त्री द्वारा रचित "प्रश्न आफताब उर्दू" का हिन्दी रूपान्तर) प्रश्न सम्बन्धी अत्यन्त दुर्लभ एवं मौलिक तथ्यों का उदघाटन करवाने वाली उक्त पुस्तक जो अब तक उर्दू पठित लोगों तक ही सीमित थी अब हिन्दी पठित जनों के लाभार्थ प्रकाशित करदी गई। इसमें मात्र अनुवाद न देकर प्रश्न ज्यो सम्बन्धी अनेक नवीन खोजों को भी समाविष्ट कर दिया गया है। मूल्य ७ रुपये।

मेषादि राशियों का वार्षिक फलादेश

प्रत्येक स्त्री-पुरुष आकाशीय द्वादश राशिचक्र से प्रभावित हो रहा है। विभिन्न राशियों में उत्पन्न व्यक्तियों पर प्रतिवर्ष ग्रहगोचर के अनुसार अलग-अलग प्रभाव पड़ता है अपनी राशि के अनुसार आगामी वर्ष का फल जानकर आप तदनुसार अपनी योजनाओं को अधिक सफल बना सकते हैं। मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, बृश्चिक, धन, मकर, कुम्भ, मीन—इन १२ राशियों में से आप अपनी जन्म तिथि अथवा नामानुसार राशिफल मंगवा कर वर्ष भर का फलादेश घर बैठे मंगवा सकते हैं। प्रत्येक का मूल्य ५)५० रुपए।

ज्योतिष सम्बन्धी कुछ अन्य पुस्तकें

✩ वर्षफल चन्द्रिका भा. टी.	मूल्य	५ रुपए
✩ धनभाव प्रकाश।	,,	५ ,,
✩ स्त्री भाव प्रकाश।	,,	५ ,,
✩ लग्न सारिणी समुच्चय।	,,	५ ,,
✩ तनुभाव प्रकाश।	,,	४ ,,
✩ मुहूर्त चिन्तामणि भाटी।	,,	८ ,,
✩ प्रश्न दर्पण।	,,	७ ,,
✩ रत्न परिचय।	,,	६ ,,
✩ मान सागरी भा. टी.	,,	१८ ,,
✩ लग्न चन्द्रिका भा. टी.	,,	७ ,,
✩ शीघ्र बोध० भा० टी०।	,,	५ ,,
✩ भृगु संहिता (सचित्र)।	,,	२२ ,,
✩ अंक विद्या।	,,	५ ,,
✩ कर्म विपाक भा. टी.	,,	१० ,,
✩ वृहतज्योतिषसार भा. टी.	,,	१२ ,,
✩ बृहज्जातक भा. टी.	,,	१५ ,,
✩ लघु पाराशरी भा. टी.	,,	३ ,,
✩ अखण्ड भाग्योदयदर्पण।	,,	४ ,,
✩ दशम भाव प्रकाश।	,,	५ ,,
✩ भारतीय ज्योतिष (हिन्दी)	,,	६ ,,
✩ बृहद होरा शास्त्रम् भाटी।	,,	३५ ,,
✩ ज्योतिष की प्रथम पुस्तक।	,,	५ ,,

जनरल बुक डिपो (पब्लिशर्ज) अड्डा होशियारपुर जालंधर शहर

मानव जीवन को सुधारने वाले धार्मिक ग्रन्थ

गो० तुलसी कृत रामायण (भाषा-टीका)

आठ काण्ड वाली सम्पूर्ण रामायण जिसमें गो० स्वामी तुलसी कृत दोहे व चौपाइयों को इतनी सरल भाषा में दिया गया है कि साधारण पढ़ा लिखा व्यक्ति भी श्रीराम चरित की महिमा को हृदयाँगम कर सकता है। इस पवित्र रामायण को पठन-पाठनार्थ घर में रखना अथवा दान-दहेज में देना पुण्य का काम समझा जाता है।

सुन्दर छपाई, चित्रों सहित व मोटे अक्षरो में इस रामायण की कीमत २५) रुपए। आर्डर के साथ ५) रुपए पेशगी अवश्य भेंजें। डाक खर्च ५ रुपए।

बाल्मीकि रामायण (सचित्र)

हिन्दी भाषा में सुन्दर मोटे अक्षरों में प्राप्य हैं। मूल्य २५) रुपए। ये सभी ग्रंथ पंजाबी भाषा में भी उपलब्ध है। मूल्य ३० रुपए।

श्री प्रेम सागर (सचित्र)

प्रेम, भक्ति और भावना से परिपूर्ण भगवान् श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं तथा उनके जीवन चरितों का सजीव एव सचित्र वर्णन जिसे धर्म में श्रद्धा रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति को पढ़ना चाहिए। मूल्य ८) रुपये डाक व्यय ३) रुपए अलग।

सुखसागर बड़ा

श्रीमद् भागवत पुराण के १२ स्कन्दों का सरल हिन्दी अनुवाद जिसमें भगवान् विष्णु के २४ अवतारों का विशद वर्णन, शुकदेव जी द्वारा राजा परीक्षत को श्री कृष्ण चरित का उपदेश, कलियुग वासी राजाओं के लक्षण, इत्यादि धर्म तत्वों को उदाहरण देकर समझाया गया है। इसके श्रवण और मनन मात्र से परम शान्ति प्राप्त हो जाती है। मूल्य सचित्र २५) रुपए आर्डर के साथ ५) रुपए पेशगी अवश्य भेजें।

महाभारत भाषा

महर्षि वेदव्यास की अमूल्य सम्पूर्ण रचना १८ पर्वो का सरल हिन्दी रूपान्तर हैं। जिसमें राजा परीक्षित की कथा, कौरव पाण्डवों की वंशोत्पत्ति, भीष्म प्रतिज्ञा से लेकर महाभारत के भयंकर युद्ध का साष्टाँग वर्णन दिया गया है। मूल्य केवल २१) रुपए। डाक खर्च ५) रु०

श्री दुर्गा सप्तशती (भाषाटीका)

भगवती देवी पर यह पुस्तक अनेक वर्षों से अप्रकाशित रही है जो कि अब पं० देवी दयालु ज्योतिष कार्यालय से प्रकाशित हो चुकी है। इसमें दुर्गा हवन विधि सिद्ध सम्पूट मन्त्र, नबार्ण मन्त्र, दुर्गा पाठ, शत चण्डी विधि, श्री दुर्गा पाठाध्याय के अतिरिक्त और भी बहुत सी विशेषताओं का समावेश कर दिया गया है। मूल्य केवल ५) रुपए डाक व्यय पृथक।

बड़ा भक्ति सागर

जिसमें नित्य कर्म पद्धति, ईश्वर प्रार्थना मन्त्र, स्तोत्र, चालीसे, सन्ध्या व आरतियों का अपूर्व संग्रह प्रस्तुत किया गया है। मूल्य केवल ६ रुपए।

श्रीमद्भगवत गीता (सचित्र).

भगवद् गीता विश्व ज्ञान का अपूर्व भण्डार है जिसमें कर्म, भक्ति और ज्ञान का अद्भुत समन्वय मिलता है। अर्जुन को दिया गया भगवान कृष्ण का परम ज्ञान जो प्रत्येक भारतीय के लिए आवश्यक है। १८ अध्याय वाली महात्म्य, व अनेक आरतियों सहित यह पूज्य ग्रंथ आज ही मंगवाएं मूल्य केवल ६) रुपए डाक व्यय सहित।

कुरान शरीफ हिन्दी

इस्लामी धर्म का प्रमुख ग्रंथ जिसमें मानव समाज को सत्य और प्रेम के अमर पैगाम दिये गए हैं। ईस्लामी लोगों को ही नहीं अपितु प्रत्येक भारतीय को इसका अवश्य अध्ययन करना चाहिए। मूल्य केवल १५) रुपए।

श्री शिव महापुराण (बड़ा) सचित्र

जिसमें शिव महिमा, पार्थिव पूजन, शिव पूजन विधि, सृष्टि वर्णन, योग वर्णन इत्यादि पौराणिक कथाओं सहित विस्तृत वर्णन दिया गया है। शिव-भक्ति में श्रद्धा रखने वालों के लिए अनिवार्य ग्रन्थ है। मूल्य केवल २२) रुपए। आर्डर के साथ ५) रुपए पेशगी अवश्य भेजें। डाक व्यय ४)५० पृथक

कुछ अन्य उपयोगी ग्रन्थ

दृष्टांत सागर बड़ा	मूल्य	६ रुपए
गरुड़ पुराण भाटी	,,	८ ,,
वैशाख महात्म्य	,,	४ ,,
माघ महात्म्य	,,	४ ,,
कार्तिक महात्म्य	,,	४ ,,
नित्य कर्म पाठमाला	,,	६ ,,
वसिष्ठ हवन पद्धति	,,	३ ,,
विवाहपद्धति देवीदयाल	,,	४ ,,
उपनिषद प्रकाश	,,	१४ ,,
उपनिषदें	,,	४ ,,
रामायण बलर्ज राधेश्याम	,,	६ ,,
श्री हरिवंश पुराण दो भागों	,,	२० ,,
श्री योग वसिष्ठ भाषा	,,	३५ ,,
मनुस्मृति	,,	७ ,,
कर्म काण्ड पद्धति	,,	१२ ,, ५० पैसे
कीर्तन भजन संग्रह	,,	३ ,,
महालक्ष्मी व्रत कथा	,,	३ ,,

अपने आर्डर के साथ ५) रुपए पेशगी अवश्य भेजें। अपना नाम व पता साफ व पूरा लिखें।

M/O वी० पी० द्वारा मंगवाने का पता—

जनरल बुक डिपो (पब्लिशर्ज) अड्डा होशियारपुर जालन्धर शहर

चिकित्सा सम्बन्धी लाभकारी पुस्तकें

होम्योपैथिक गाईड

होम्योपैथिक चिकित्सा प्रणाली आजकल अत्यधिक लोकप्रिय हो रही है क्योंकि इस प्रणाली में रोग का निदान करके जड़ से मिटा दिया जाता है। प्रस्तुत पुस्तक होम्योपैथिक पर सम्पूर्ण पुस्तक है। इसमें मानव शरीर के विभिन्न सूक्ष्म अंगों का सचित्र वर्णन दिया गया है तथा विभिन्न रोगों के कारण तथा होम्योपैथिक की सरल, सस्ती सर्वोपयोगी दवाओं के नाम दिए गए हैं। मूल्य डाक व्यय सहित १०)

सचित्र बूटी प्रचार

प्राचीनकाल में जड़ी बूटियों को शोधकर उनके द्वारा ही मनुष्य हर तरह के रोगों का उपचार कर लिया करते थे। आजकल के अनेक असाध्य रोगों के लिए जड़ी बूटियों द्वारा सभी प्रकार के रोगों का इलाज आप स्वयं कर सकते हैं। ऐसी अनमोल पुस्तक पहले दुर्लभ थी। मूल्य ८) रुपए मात्र।

घर का वैद्य (बड़ा)

इस पुस्तक की सहायता से आप प्रत्येक पंसारी से उपलब्ध होने वाली साधारण वस्तुओं के प्रयोग से सिरदर्द, खांसी पेटदर्द तथा अन्य पेचीदा बीमारियों का इलाज आप स्वयं कर सकते हैं। नमक, प्याज, मूली, गाजर, फिटकरी, त्रिफला, तुलसी इत्यादि वस्तुओं के गुण तथा सर्व प्रकार के रोगों में उनके उपयोग वर्णन किए गए हैं। मूल्य १०) रुपए।

चिकित्सा सम्बन्धी अन्य पुस्तकें

पशु चिकित्सा (सचित्र)	मूल्य 6	रुपए
अमृत सागर (वैद्यक)	,, 22	,,
माधव निदान भा. टी.	,, 25	,,
शारंगधर भा. टी.	,, 19	,,
ईलाजुलगुर्वा भा. टी.	,, 7	,,
रसराज महोदधि भाटी	,, 14	,,
शहद के गुण	,, 3	,,
होम्योपैथिक मैटीरिया मं०	,, 7	,,
घर का वैद्य (छोटा)	,, 3	,,
नाड़ी ज्ञान तरंगिनी	,, 7	,,
स्वास्थ्य शिक्षा	,, 5	,,
भोजन द्वारा स्वास्थ्य	,, 5	,,
गर्भवती प्रसूता व बालक	,, 5	,,
दाईगिरि शिक्षा	,, 6	,,
[illegible]नाजात गु०	,, 5	,,
[illegible]रक संहिता गु०	,, 22	,,
[illegible]रिष्ट संग्रह	,, 5	,,

माडर्न एलोपैथिक गाईड

प्रत्येक गृहस्थी तथा डाक्टरों के लिए एक आवश्यक पुस्तक जिसमें सम्पूर्ण शरीर रचना सम्बन्धी जानकारी स्त्री तथा पुरुषों के गुप्त रोग, बाल रोग, गर्भवती स्त्री के रोगों का विशुद्ध वर्णन, रोगोंके मूल कारण तथा उनके उपचार के बारे में विस्तार से उपाय बताए गये हैं। जिनको साधारण पढ़ा लिखा भी समझ सकता है। मूल्य बढ़िया सफेद कागज १५) रुपए डाक व्यय सहित।

कम्पाऊण्डरी शिक्षा व इंजैक्शन गाईड

एलोपैथिक गाईड से पहले कम्पाऊण्डरी (first Aid) यानि औषधालय सम्बन्धी जानकारी, नुस्खा बनाने का तरीका, रोग परीक्षा व चिकित्सा सम्बन्धी ज्ञान दिया गया है। एलोपैथिक तथा होम्योपैथिक का कुशल कम्पाऊण्डर बनने के लिए यह पुस्तक अवश्य मंगवायें मूल्य ८) रुपए।

[illegible]पने आर्डर के साथ ५) रुपए पेशगी अवश्य भेजें। अपना नाम व पता साफ व पूरा लिखें।
M/O वी० पी० द्वारा मंगवाने का पता —

जनर[illegible]क डिपो (पब्लिशर्ज) अड्डा होशियारपुर जालन्धर शहर

ज्योतिष जगत् का एक वस्तुतः संग्रहणीय अद्वितीय प्रकाशन :—

† गणक मार्त्तण्ड †

(सरल हिन्दी भाषा में गुरु की सहायता के बिना ज्योतिष का पूर्ण ज्ञान करा देने वाला महान् ग्रन्थ)

लेखक—प्रो. प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्त ज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य एवं डा. शक्तिधर शर्मा Ph.D. (अमेरिका). M.Sc., सिद्धान्त ज्योतिषाचार्य (बनारस), M.A., प्राध्यापक-फिजिक्स विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला)

"श्री मार्त्तण्ड पंचांग" के विद्वान् सम्पादकों द्वारा यह एक ऐसा मौलिक ग्रंथ हिन्दी भाषा में प्रकाशित किया जा रहा है. जिस के द्वारा ज्योतिष से सर्वथा अनभिज्ञ व्यक्ति भी ज्योतिष की प्रमख प्रमुख शाखाओं का आद्योपान्त पूरा ज्ञान किसी गुरु की सहायता के बिना ही स्वयं सरलता पूर्वक प्राप्त कर सकेगा । भले ही आप साधारण हिन्दी जानते हैं, ज्योतिष का तनिक भी ज्ञान आपको नहीं है. गणित में भी जोड़-घटाव ही जानते हैं. तो भी आपको यह ग्रन्थ ज्योतिष की पूर्ण शिक्षा सरलता से देगा । सर्व साधारण को ज्योतिष की शिक्षा देना इस ग्रन्थ के लेखकों का उद्देश्य है। इस ग्रन्थ में प्राचीन और नवीन ज्योतिष सम्बन्धी सभी विषयों का विस्तृत विवेचन है । इस महाग्रन्थ के "ज्योतिष परिचय" आदि अनेक प्रकरणों में दिए गए सैंकड़ों विषयों में से कुछेक का संक्षेप में दिग्दर्शन इस प्रकार है :—

(१) "ज्योतिष परिचय"—इस प्रकरण में भारतीय और पाश्चात्य ज्योतिष के सभी सिद्धान्तों एवं विषयों का सरल भाषा में विस्तृत विवेचन है। अक्षांश, रेखांश, साम्पातिक काल. स्थानीय मध्यम काल स्टैण्डर्ड काल, स्थानीय स्पष्ट काल, राशि, नक्षत्र अयनांश, सायन-निरयण पद्धति, तिथि, नक्षत्र, योग. करण, ग्रहस्पष्ट, ग्रहण आदि उन सभी विषयों का आमूलचूड़ स्पष्टीकरण है जिन्हे पढ़कर पंचांग एवं ज्योतिष ग्रन्थों में यत्र-तत्र प्राप्त होने वाले ज्योतिष सम्बन्धी सभी पारिभाषिक शब्दों तथा विषयों का पूरा ज्ञान पाठक को हो जाएगा ।

(२) "आकाश परिचय"—प्रकरण में अश्विनी आदि नक्षत्रों मेष आदि राशियों तथा मंगल आदि ग्रहों को आकाश में पहिचानने की अनेक विधियां चित्रों सहित दी गई हैं; जिनके द्वारा कोई भी व्यक्ति २८ नक्षत्रों, १२ राशियों. मंगल आदि पांच ग्रहों तथा अगस्त्य. लुब्धक. सप्तर्षि. देवयानि. ब्रह्महृदय आदि सभी प्रधान प्रधान तारों की आकाश में पहिचान बिना किसी शिक्षक के ही कुछ ही दिनों में आसानी से भली भान्ति कर सकता है । सभी नक्षत्रों की आकृतियां चित्रों द्वारा समझाई गई है. कौन सा नक्षत्र किस तारीख को किस समय आकाश में कहां दिखाई पड़ेगा—यह अनेक उपयोगी सारणियों द्वारा समझाया गया है ।

(३) "ज्योतिष यन्त्र परिचय"—प्रकरण में आठ-नौ महत्वपूर्ण और रोचक (धूपघड़ी. वेध यन्त्र. लग्न यन्त्र. आदि) यन्त्रों के निर्माण और प्रयोग की सरलतम विधियां सचित्र दी गई हैं, जिनके आधार पर आप इन यन्त्रों को नाम-मात्र के खर्चे से बनाकर ग्रहस्पष्ट, लग्न स्पष्ट. टाईम, ग्रहों की क्रांति-शर, तिथि, नक्षत्र तथा अयनांश आदि का ज्ञान चुटकियों में कर सकेंगे ।

(४) "मुहूर्त परिचय"—षोडश संस्कारों और अन्य यात्रा आदि सभी आवश्यक दैनिक उपयोग में आने वाले मुहूर्त्तों के ज्ञान की सरलतम विधियां. अद्भुत विस्तृत मेलापक सारणी तथा मुहूर्त्त शास्त्र में प्रयोग में आने वाले क्रकच, यमघण्ट, आदि सैंकड़ों पारिभाषिक शब्दों का अर्थ सहित कोष इस प्रकरण में आपको मिलेगा। स्पष्टता के लिए सर्वत्र उदाहरणों द्वारा मुहूर्त निकालने की विधियां दी गई हैं । सरलता और लाघव के लिए बीसों नई सारणियां बनाई गई हैं, जिनसे विवाह आदि कठिन मुहूर्त्तों का साधन भी बच्चों का खेल बन गया है ।

(५) "व्रत पर्व परिचय"—प्रकरण में सभी भारतीय व्रतपर्वों का विस्तृत विवेचन है। राम नवमी जन्माष्टमी. एकादशी, प्रदोष आदि व्रत पर्वों के निर्धारण की सप्रमाण विधियां दी गई हैं। हिन्दु-व्रत पर्वों में मतभेद के कारण एवं उनके निवारण के वैज्ञानिक उपाय भी दिए गए हैं ।

(६) "जन्म पत्रादि गणित परिचय"—में जन्मपत्री वर्षफल बनाने की पाश्चात्य और भारतीय विधियां बालबोध शैली में सोदाहरण दी गई हैं। विश्व के सभी प्रमुख-प्रमुख (७ हजार से भी अधिक) नगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैण्डर्ड अन्तर, साम्पातिक काल, १ से ६६ अक्षांश तक की सूक्ष्म लग्न सारणियां, द्वादश भाव-साधन-सारणियां, चन्द्रमा और अन्य ग्रह स्पष्ट करने की अनेक सारणियां विश्व भर के सूर्योदयास्त काल, चर सारिणी, सन्देहास्पद लग्न निर्णय, विश्व के सभी नगरों की दैनिक

लग्न सारणियां, दशा-भुक्तभोग्य साधन सारणी, अन्तर्दशा सारणियां षड्वर्ग-सप्तवर्ग-अष्टवर्ग, द्वादश-वर्ग, षोडश वर्ग, ज्ञानार्थ सारणियां, आयु साधन की अनेक सारणियां, केशवीय जातक-पद्धति के षड्बल साधन की सारणियां. वर्ष प्रवेश, पञ्च वर्ग, पात्यायनी दशा तथा अन्य बीसों श्रम-साध्य गणितीय विषयों को नितान्त सरल बना डालने वाली विलक्षण मौलिक सारणियां इस प्रकरण की अनुपम विशेषता है। जन्म पत्र-वर्ष फल सम्बन्धी कठिन से कठिन गणित इन सारणियों की मदद से आप बिना गुणा भाग के केवल मौखिक जोड़-घटाव से ही चुटकियों में कर डालेंगे इसमें तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं है। सारणियों से गणित करने की सरल विधियों को और भी स्पष्ट और सरल करने के लिए सर्वत्र कई-कई उदाहरण साथ-साथ दिए गए हैं।

इस प्रकरण में दी गई सारणियां सर्वथा मौलिक हैं जो आपको अन्यत्र कहीं भी नहीं मिलेंगी। विदेश के किसी भी नगर-गांव में उत्पन्न बच्चे की जन्मपत्री बनाने की विधि अत्यन्त बाल-बोध शैली में कई उदाहरणों द्वारा समझाई गई है। इन अद्भुत सारणियों के निर्माण के लिए कम्प्यूटर (बिजली से चलने वाली गणित की शक्तिशाली मशीन) की मदद ली गई है। सूक्ष्मता, सरलता और लाघव की दृष्टि से ये सारणियां अद्वितीय हैं। ग्रह स्पष्ट. भाव स्पष्ट, आयु स्पष्ट. षोडश वर्ग तथा केशवीय षड्बल आदि विषयों वाली बड़ी से बड़ी जन्मपत्री की पूरी गणित आप इन सारणियों की मदद से ४० मिनट से भी कम समय में बड़े आराम से जुबानी जोड़-घटाव द्वारा ही कर सकते हैं -यह हम प्रतिज्ञापूर्वक आपको विश्वास दिलाते हैं।

इस प्रकरण में लग्न स्पष्ट करने की अनेक नई-नई विधियां दी गई हैं. जिनसे लग्न साधन वस्तुतः अत्यन्त ही सरल बन गया है। प्रत्येक विधि को पूरी तरह स्पष्ट और सुबोध बनाने के लिए ५—५, ६—६ उदाहरण साथ में दिए गए हैं। इन विधियों से दुनियां भर के किसी भी नगर-गांव का लग्न स्पष्ट अधिक से अधिक एक मिनट में जाना जा सकता है भारतीय एवं अंग्रेजी-दोनों शैलियों से लग्न साधन की विधियां और सारणियां आपको इस प्रकरण में मिलेंगी।

इस प्रकरण में दी गई सारणियों द्वारा सर्वांग परिपूर्ण, बड़ी जन्मपत्री की लग्न साधन आदि गणित को अधिक से अधिक कितने-कितने समय में किया जा सकता है—इसका आश्चर्यजनक विवरण इस प्रकार है—

(१) सूर्योदय, सूर्यास्त, दिनमान... ...१ मिनट
(२) लग्न दशम साधन ... ...२ मिनट
(३) भाव साधन ... ...३ मिनट
(४) सभी ग्रह स्पष्ट, चन्द्र स्पष्ट सहित...२ मिनट
(५) दशा भुक्त भोग्य ... ...½ मिनट
(६) अन्तर्दशाएं ... ...१ मिनट

(८)

(७) केशवीयषड्बल... ... ... १० मिनट
(८) आयु साधन (जैमिनि-सत्याचार्यादि) १० मिनट
(९) नवांश द्रेष्काणादि कुण्डलियां .. ...५ मिनट

इस प्रकार पूरी जन्मपत्री की गणित ३५-४० मिनट से अधिक समय नहीं लेती। ध्यान रहे. केशवीय षड्बल तथा आयु साधन जैसी लम्बी एवं श्रमापेक्षी गणित वाली जन्मपत्री के निर्माण के लिए एक सुयोग्य, दक्ष ज्योतिषी कम से कम दो सप्ताह अवश्य लेता है।

इस ग्रन्थ के "ज्योतिष परिचय" आदि सभी प्रकरण अपने आप में अपने २ विषय का पूर्ण परिचय देने वाली अलग २ पुस्तकें हैं. जिन्हें एक ही जिल्द में बांध कर हम "गणक मार्तण्ड" के नाम से छाप रहे हैं।

यदि आप इस ग्रन्थ को प्रारम्भ से क्रमबद्ध पढ़ें, तो हम विश्वास दिलाते हैं कि —आपको इसमें कोई भी स्थल प्रकरण या शब्द ऐसा नहीं मिलेगा। जो आपके लिए अस्पष्ट हो। इस ग्रन्थ को ऐसी शैली में लिखा गया है कि जहां कहीं भी कोई भी कठिन पारिभाषिक शब्द या नया विषय उपस्थित हुआ हो उसे पूरी तरह स्पष्ट किए बिना लेखक आगे नहीं चले हैं क्योंकि इस ग्रन्थ को सर्वसाधारण के लिए उपयोगी बनाना विद्वान् लेखकों का उद्देश्य है।

ग्रन्थ में यत्र-तत्र सर्वत्र ऐसी अनेक बातों की ओर पाठक का ध्यान आकृष्ट किया गया है. जिन्हें भारत के अधिकतर ज्योतिषी नहीं जानते, जिसके कारण जन्म-पत्रादि बनाने में वे अक्सर अक्षम्य अशुद्धियां किया करते हैं।

उपरोक्त ९ प्रकरणों के अतिरिक्त अनेक ज्योतिष सम्बन्धी ("भृगु संहिता क्या है?"—आदि आदि) शोधपूर्ण निबन्ध भी इसमें आप पढ़ेंगे, जिन से पाठक को अनेक आश्चर्यकारी अज्ञात रहस्य ज्ञात होंगे।

ज्योतिष का व्यवसाय करने वाले तथा ज्योतिष का प्रारम्भिक और प्रौढ़ ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक महानुभावों के लिए यह ग्रन्थ समान रूप से परम उपयोगी है। ग्रन्थ छप रहा है। अप्रैल (सन् १९७७) के [illegible] ग्राहकों के हाथों में आ जाएगा।

क्योंकि ग्रन्थ बड़ा है, इसलिए इसकी केवल दो हजार प्रतियां ही प्रकाशित की जा रही हैं। जो महानुभाव इस ग्रन्थ को खरीदने की इच्छा रखते हैं उन्हें अपनी प्रति सुरक्षित करवा लेनी चाहिए। जो महानुभाव अपनी प्रति सुरक्षित करवा लेंगे, उन्हें यह ग्रन्थ निश्चित रूप से मिलेगा। [illegible] के लिए हम कुछ नहीं कह सकते।

अभी पेशगी मत भेजिए। मूल्य ५० रुपए

अपनी प्रति सुरक्षित करने के लिए इस पते पर पत्र दीजिए—

मैनेजर—श्री मार्त्तण्ड पंचांग कार्यालय, मु.पो. कुराली (रोपड़) पंजाब।